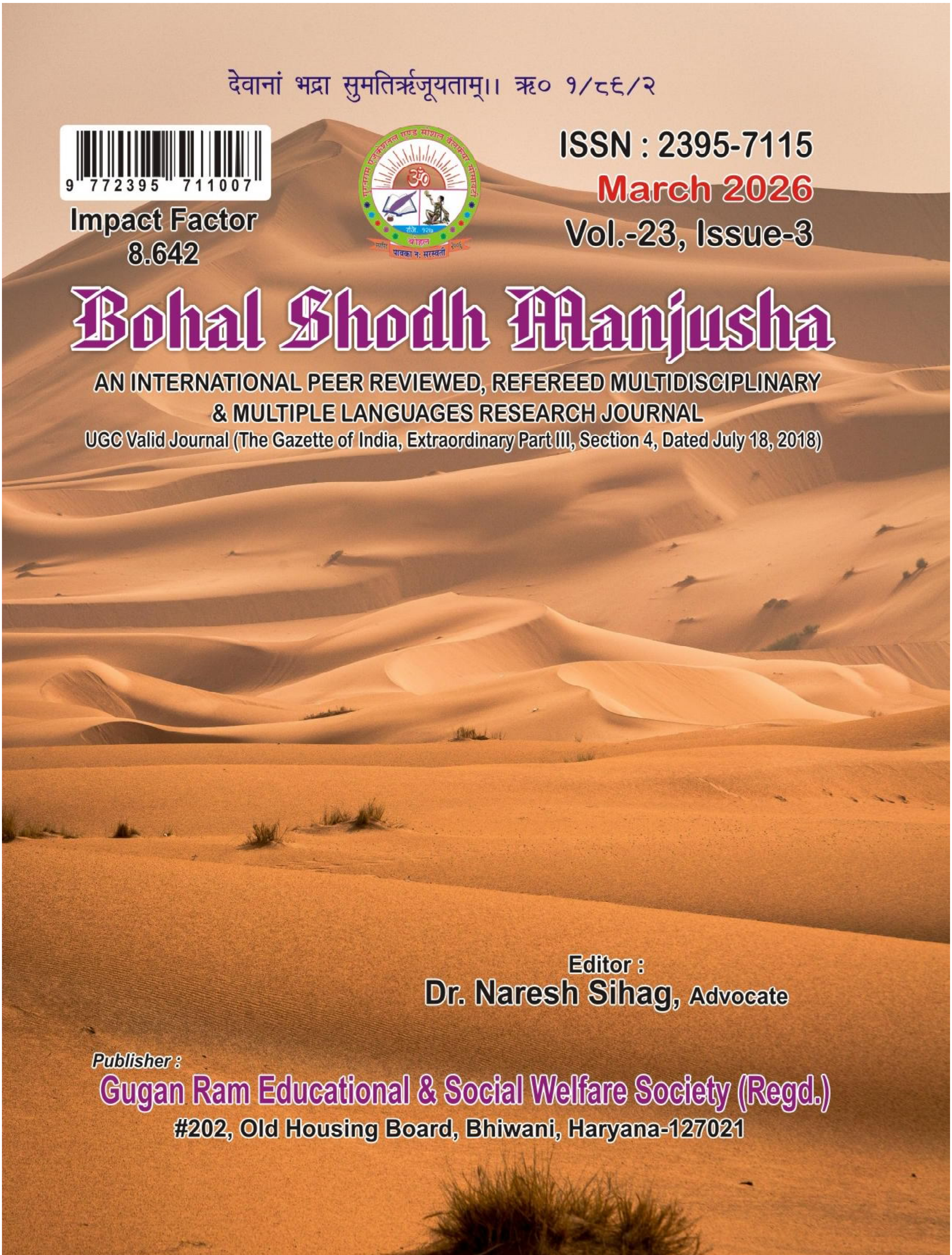

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८६/२

ISSN : 2395-7115
March 2026
Vol.-23, Issue-3
Impact Factor
8.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

Vol. 23 **ISSUE-3, Part-2** (मार्च 2026) **ISSN : 2395-7115**

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल

कार्यकारी सम्पादक :

प्रो. शकुन्तला चौहान

शामली, उत्तर प्रदेश।

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

<u>*Disclaimer :*</u>
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा 'शंकी'
पूर्व शिक्षा अधिकारी,
साहित्यकार,
चरखी दादरी (हरियाणा)

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि.
रोहतक (हरियाणा)

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

डॉ. कुमारी लक्ष्मी जोशी
हिन्दी विभाग, त्रिभुवन वि.वि.
काठमाण्डू, नेपाल।

डिल्लीराम शर्मा संग्रौला
विभागीय प्रमुख, संस्कृत, पत्रकारिता, हिंदी
पद्मकन्या बहुमुखी कैंपस, काठमांडू, नेपाल।

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. इस्पाक अली
पूर्व प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. वनिता कुमारी
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराम
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
श्रीराम कॉलेज,
नई दिल्ली।

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास।

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब।

श्री राकेश शंकर भारती
साहित्यकार व अनुवादक,
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. शबाना हबीब
गवर्नमेंट कॉलेज फॉर वूमैन
त्रिवन्तपुरम, केरल।

डॉ. शिवकरण निमल
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान
एसपीसी राजकीय महा. भीम, राजस्थान।

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
भारत कला भवन
वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

डॉ. मानसिंह दहिया
संस्कृत विभाग
हरियाणा सरकार।

डॉ. नीलम आर्या
संस्कृत विभाग
उत्तर प्रदेश।

डॉ. रवि सुण्डयाल
हॉयर एजुकेशन डिपार्टमेंट
जम्मू कश्मीर।

प्रो. नरेन्द्र सोनी
सूचना एवं जन सम्पर्क अधिकारी,
हरियाणा सरकार।

डॉ. रोहतास
एस.जी.पी.जी.आई.एम.एस.
लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य,
कैलिफोर्निया।

पठान चिन्ना जानी
सहायक प्राध्यापक
सी.एच.एस.डी. सेंट थेरेसा
महिला महाविद्यालय (ए)
एलुरु, आंध्र प्रदेश

डॉ. वैशाली सिंह
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग, एस.एम.टी. अनार देवी
टी.टी. कॉलेज, बखराना
(कोटपुतली) राजस्थान।

डॉ. रेखा रानी
गवर्नमेंट रणबीर कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. अंकिता चतुर्वेदी, प्रवक्ता
भीमसेन डिग्री कॉलेज
(आगरा यूनिवर्सिटी)

शिओंग छन श्यू
चीन

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२
ISSN : 2395-7115
बोहल शोध मञ्जूषा
Bohal Shodh Manjusha
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
www.bohalsm.blogspot.com grsbohal@gmail.com 8708822674 9466532152

अनुक्रमाणिका - मार्च 2026

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. नरेश सिहाग	09-09
2.	**Aurobindo Ghosh : Pioneering the Global Expansion of Indian Literature**	**Dr. Pushpita Dasgupta**	**10-21**
3.	हिन्दी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता : एक अवलोकन	डॉ. यतीन्द्र सिंह कुशवाहा	22-28
4.	डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' का विदेशी यात्रावृत्त लेखन	मीना कुमारी, डॉ. अजयपाल सिंह	29-39
5.	**Towards Gender Equality — Achieving SDG-5**	**Dr. Vidyavati**	**40-44**
6.	सीकर जिले का जनसंख्या प्रतिरूप : एक भौगोलिक अध्ययन	धूडाराम महरिया, डॉ. सचिन कुमार	45-51
7.	भारतीय शिक्षाविदों के शैक्षिक चिंतन के आलोक में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता : एक समकालीन अध्ययन	शिवानी व्यास, डॉक्टर प्रीति ग्रोवर	52-61
8.	**STUDY OF ZERO DISTRIBUTION AND MAXIMUM MODULUS OF ANALYTIC FUNCTIONS**	**Rajender Kumar, Dr. Arvinder Kumar Bhrdwaj**	62-75
9.	ब्रजभाषा काव्य में लोकगीतात्मकता	प्रो. विजय श्रीवास्तव, मनोज कुमार	76-79
10.	**Climate Change Litigation in India : Role of Judiciary and Green Tribunals**	**Dr. Sanjay Kulshrestha**	**80-84**
11.	**Judicial Interpretation of Pension Laws in India : An Analytical Study of Supreme Court and Madhya Pradesh High Court Decisions**	**Bhartendu Chaudhary**	**85-88**
12.	कवि निराला का निरालापन	प्रियंका सिंह, डॉ. विष्णु प्रसाद शुक्ल	89-92
13.	कबीरधाम जिले के स्थानीय निकायों में अनुसूचित वर्ग की महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अध्ययन	ओमप्रकाश, डॉ. नागरत्ना गनवीर, डॉ. शकील हुसैन	93-101
14.	बिहान योजना से संबद्ध महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन	धन्नू कुमार साहू, सुश्री रेणुका कुंजाम	102-112
15.	डिजिटल युग में साइबर युद्ध की चुनौतियाँ और भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा	डॉ. रामप्रसाद यादव	113-117

16.	तुलसीदास के काव्य में निहित समन्वय के विभिन्न आयाम	कपिल कुमार, डॉ. नीलम राणा	118–124
17.	पंचायती राज के सशक्तिकरण में एकात्म मानव दर्शन की भूमिका (भिण्ड जिले के विशेष संदर्भ में)	अजय कुमार उदय	125–128
18.	मानवता, सदाचार और जीवन-दर्शन : रज्जब अली के काव्य का पुनर्मूल्यांकन	डॉ. चारु आर्या	129–134
19.	चंबल के बीहड़ों के कायाकल्प में अटल प्रगति पथ की भूमिका (भिण्ड जिले के विशेष संदर्भ में)	छाया बरसेना	135–138
20.	हो लोक कथाओं में हो जनजाति के जीवन दर्शन	पाण्डु राम हाईबुरू	139–144
21.	मीरा का काव्य : भक्ति और विद्रोह का प्रतीक	डॉ. रीता	145–149
22.	1857 के राष्ट्रीय विद्रोह में नारी पराक्रम	डॉ. अशोक कुमार	150–155
23.	शिशुपालवध महाकाव्य में भाव एवं रसाभिव्यक्ति	डॉ. महेन्द्र कुमार	156–159
24.	सालवती और पुरूष चरित्रम	डॉ. नीतू गुप्ता	160–166
25.	हरियाणा में छठा पंचायती राज चुनाव : लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के परिप्रेक्ष्य में एक समालोचनात्मक अध्ययन	सरिता	167–170
26.	उपन्यास ''ट्रैन टू पाकिस्तान'' और ''तमस'' में अभिव्यक्त विभाजन की त्रासदी – तुलना	बिजी जे. वी.	171–176
27.	**Artificial Intelligence in Predictive Analytics for E-commerce : Leveraging Data to Forecast Market Trends**	**Dr. S. Jayanthi Sobhana, Ms. Vijaya Priya. A, Dr. C.Thangamani, Dr. S. Swarnalatha, Dr. Charlesbabu. J**	**177-181**
28.	रामगढ़ प्रखंड में प्राथमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति	सत्येन्द्र कमार	182–185
29.	**Impact of Contemporary Economic Policies of the USA on India**	**Dr. Satyawan Jatain, Sohit Jatain**	**186-191**
30.	हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की समुद्री निगरानी प्रणाली और तकनीकी विकास	कुमारी निधि कुमारी, डॉ० प्रवीन कुमार सिंह	192–196
31.	'शहर गवाह है' में पारिवारिक विघटन, राजनीतिक मोहभंग और सामाजिक चेतना	मनीषा पाठक, डॉ. वंदना चराटे	197–201
32.	झारखंड में औद्योगिक विकास की चुनौतियाँ	डेगलाल महतो	202–205
33.	डॉ० बालकिशन शर्मा के काव्य में ग्राम्य-जीवन का सौन्दर्यबोध और सांस्कृतिक अस्मिता	रिद्धि वधवा, डॉ० बाबूराम	206–211
34.	डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिन्दी साहित्य की संभावनाएँ	हर्षा, डॉ. अरविंद दीक्षित, डॉ. प्रवीन शर्मा	212–215

संपादकीय...

प्रिय विद्वत्जन, शोधार्थियों एवं पाठकगण,

हर्ष के साथ प्रस्तुत है बोहल शोध मंजूषा का मार्च 2026 अंक। ज्ञान–विमर्श की सतत यात्रा में यह अंक एक और महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। शोध की परंपरा तभी सार्थक होती है जब वह केवल शाब्दिक विस्तार न होकर समाज, समय और संवेदना से गहरे रूप में जुड़ी हो। इसी दृष्टि से बोहल शोध मंजूषा अपने प्रत्येक अंक में समकालीन विषयों को गंभीरता और शास्त्रीय अनुशासन के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास करता रहा है। वर्तमान समय अनेक प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और वैचारिक परिवर्तनों का साक्षी है। वैश्वीकरण, डिजिटल माध्यमों का विस्तार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव, बदलती पारिवारिक संरचनाएँ तथा मानवीय मूल्यों का पुनर्संयोजन ये सभी विषय आज शोध की प्राथमिकताओं में सम्मिलित हो चुके हैं। इस अंक में प्रकाशित शोध आलेख इन्हीं विविध आयामों को केंद्र में रखकर तैयार किए गए हैं।

इस बार के अंक की विशेषता यह है कि इसमें साहित्य के साथ–साथ शिक्षा, समाजशास्त्र, इतिहास और समकालीन विमर्शों पर आधारित शोधपत्र सम्मिलित हैं। हिंदी साहित्य में स्त्री–विमर्श, दलित चेतना, ग्रामीण जीवन का यथार्थ, पर्यावरणीय संकट, लोक–संस्कृति का संरक्षण तथा अंतर्जाल पर विकसित हो रही साहित्यिक प्रवृत्तियाँ इन सभी विषयों पर विद्वानों ने गंभीर और तथ्यपरक अध्ययन प्रस्तुत किए हैं। हमें प्रसन्नता है कि देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों से जुड़े शोधार्थियों एवं प्राध्यापकों ने अपने शोधपत्र भेजकर इस अंक को समृद्ध बनाया है। शोध की गुणवत्ता बनाए रखना किसी भी पत्रिका की सबसे बड़ी जिम्मेदारी होती है। इसी उद्देश्य से प्राप्त शोध पत्रों को विशेषज्ञ निर्णायक मंडल के पास समीक्षार्थ भेजा गया। समीक्षकों के सुझावों के आधार पर आवश्यक संशोधन करवाए गए, ताकि शोधपत्र अकादमिक मानकों पर खरे उतरें। हमारा विश्वास है कि समालोचनात्मक दृष्टि और प्रमाणिक संदर्भों के साथ प्रस्तुत लेख पाठकों को नवीन चिंतन की दिशा देंगे।

मार्च 2026 अंक में कुछ ऐसे शोधपत्र भी सम्मिलित हैं जो परंपरा और आधुनिकता के अंतर्संबंध को नई दृष्टि से देखने का प्रयास करते हैं। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की पुर्नव्याख्या, लोक और शास्त्र के संवाद, तथा आधुनिक समाज में नैतिकता के प्रश्नों पर गहन विमर्श किया गया है। इन आलेखों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि शोध केवल अतीत का विश्लेषण नहीं, बल्कि वर्तमान का मूल्यांकन और भविष्य की दिशा–निर्देशन भी है।

हमें यह भी अनुभव हो रहा है कि डिजिटल युग में शोध लेखन की चुनौतियाँ और अवसर दोनों बढ़े हैं। एक ओर संदर्भ–सामग्री सहज उपलब्ध है, तो दूसरी ओर मौलिकता बनाए रखना और स्रोतों की प्रामाणिकता सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक हो गया है। इस संदर्भ में हम सभी शोधार्थियों से अपेक्षा करते हैं कि वे शोध नैतिकता का पूर्ण पालन करें, संदर्भों का यथोचित उल्लेख करें तथा अकादमिक ईमानदारी को सर्वोच्च प्राथमिकता दें।

पत्रिका के इस अंक में नवोदित शोधार्थियों के साथ–साथ वरिष्ठ विद्वानों के लेख भी प्रकाशित किए गए हैं। हमारा उद्देश्य पीढ़ियों के बीच संवाद स्थापित करना है, ताकि अनुभवी विद्वानों का मार्गदर्शन युवा शोधकर्ताओं तक पहुँचे और युवा चिंतन की ऊर्जा अकादमिक जगत को नई दिशा प्रदान करे।

हम यह मानते हैं कि किसी भी शोध पत्रिका की प्रासंगिकता उसके पाठकों और लेखकों के सक्रिय सहयोग पर निर्भर करती है। बोहल शोध मंजूषा निरंतर आपके सुझावों, आलोचनाओं और रचनात्मक सहयोग की अपेक्षा करता है। आपके सुझाव ही हमारी आगे की दिशा तय करते हैं और पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं। अंत में, मैं संपादकीय मंडल, समीक्षकगण, तकनीकी सहयोगियों तथा उन सभी विद्वानों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिनके सहयोग से यह अंक संभव हो सका। विशेष धन्यवाद उन शोधार्थियों को, जिन्होंने समयबद्ध रूप से संशोधन कार्य पूर्ण कर पत्रिका की गरिमा बनाए रखने में योगदान दिया।

आशा है कि बोहल शोध मंजूषा का यह मार्च 2026 अंक शोध–जगत में सार्थक संवाद स्थापित करेगा और ज्ञान–विस्तार की दिशा में एक प्रेरक कदम सिद्ध होगा।

आप सभी के सतत सहयोग एवं विश्वास के लिए पुनः धन्यवाद।

–संपादक

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha
March 2026

ISSN : 2395-7115
Page No. : 10-21

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

Aurobindo Ghosh : Pioneering the Global Expansion of Indian Literature

Dr. Pushpita Dasgupta
Assistant Professor, Department of Science & Humanities,
Christian College of Engineering & Technology.

ABSTRACT :

Indian literature has long embodied profound philosophical inquiry, aesthetic sophistication, and civilizational continuity. However, its global reception was historically mediated through colonial interpretations and Eurocentric literary paradigms that often limited its intellectual autonomy. In this context, Sri Aurobindo emerges as a seminal figure who re-envisioned the global destiny of Indian literature in the early twentieth century. Moving beyond the boundaries of nationalist discourse, he conceptualized literature as a vehicle of spiritual evolution and universal consciousness. Through his epic *Savitri*, philosophical masterpiece *The Life Divine*, critical work *The Future Poetry*, and socio-political reflections in *The Ideal of Human Unity*, Aurobindo harmonized Vedantic metaphysics with Western literary structures, forging a distinctive model of spiritual modernity.

This paper examines how Aurobindo not only internationalized Indian literary expression but also challenged prevailing definitions of world literature. Drawing upon frameworks from postcolonial theory, comparative literature, and global literary studies, the study argues that Aurobindo's literary and philosophical project represents an early articulation of transnational humanism grounded in Indian epistemology. Rather than positioning Indian literature as peripheral to Western modernity, he proposed an integrative dialogue between civilizations, thereby expanding the conceptual and aesthetic horizons of global literary discourse. His vision demonstrates that Indian literature could participate in world literature not through imitation or resistance alone, but through transformative intellectual exchange and spiritual universality. Consequently, Aurobindo stands as a pioneering architect in the global expansion and redefinition of Indian literature within the sphere of world consciousness.

Keywords : Sri Aurobindo, Indian Literature, World Literature, Spiritual Modernity, Integral Philosophy, Postcolonial Aesthetics, Transnational Humanism, Savitri

Introduction :

Indian literature is one of the world's oldest and most continuous literary traditions, shaped by centuries of philosophical reflection, poetic experimentation, and spiritual inquiry. From the Vedic hymns to modern English writings, it has carried forward a civilizational memory rooted in metaphysics, ethics, and aesthetic refinement. Yet, despite its depth and diversity, Indian literature's entry into the global canon was largely filtered through colonial institutions and Eurocentric critical frameworks. During the nineteenth and early twentieth centuries, Indian texts were frequently interpreted either as mystical curiosities or as cultural artifacts, rather than as dynamic contributions to global modernity. It was within this intellectual climate that Sri Aurobindo articulated a radically different vision for Indian literary expression. Unlike many nationalist writers whose primary concern was political resistance, Aurobindo approached literature as a transformative force capable of shaping human consciousness itself. His literary and philosophical corpus—including the epic poem *Savitri*, the metaphysical treatise *The Life Divine*, the literary manifesto *The Future Poetry*, and the socio-political reflections in *The Ideal of Human Unity*—demonstrates a sustained attempt to reposition Indian thought within global intellectual discourse. Rather than imitating Western literary models or rejecting them outright, he engaged them in dialogue, integrating Vedantic metaphysics with modern poetic forms and philosophical inquiry.

This integrative approach allowed Aurobindo to move beyond the binary of East versus West. He proposed that Indian literature could contribute to what he envisioned as a spiritual evolution of humanity, thereby expanding the scope of world literature itself. His writings suggest that global literary exchange need not be hierarchical; instead, it can be dialogic, reciprocal, and transformative. By grounding universal human aspirations in Indian philosophical traditions while employing the English language as a medium of expression, Aurobindo anticipated what contemporary scholars describe as transnational humanism and spiritual modernity.This paper therefore examines how Aurobindo pioneered the global expansion of Indian literature not merely by achieving international readership, but by redefining its intellectual foundations. Through a postcolonial and comparative framework, the study explores how his work challenges Eurocentric models of world literature and asserts India's role as an active contributor to global cultural thought. In doing so, it argues that Aurobindo's literary project represents an early and profound reimagining of world literature as a space of civilizational dialogue and conscious evolution.

2. Review of Literature :

- Rabindranath Tagore's international reception opened global space for Indian literature, yet his lyrical humanism differs from Aurobindo's metaphysical epic vision.

- K. R. Srinivasa Iyengar identifies Aurobindo as a central figure in Indian English poetry, emphasizing his philosophical depth and stylistic innovation.
- Sisir Kumar Ghose situates Aurobindo within the Indian Renaissance, highlighting his synthesis of tradition and modernity.
- David Damrosch's theory of world literature provides a framework for understanding how texts enter global circulation beyond national boundaries.
- Pascale Casanova's concept of the "World Republic of Letters" explains how literary value has historically been centralized in European capitals, contextualizing the challenges faced by Indian writers.
- Edward Said's critique of Orientalism reveals how colonial discourse shaped Western perceptions of Eastern thought, indirectly affecting literary reception.
- Homi Bhabha's idea of cultural hybridity offers insight into Aurobindo's negotiation between Eastern metaphysics and Western literary forms.
- Scholars of comparative aesthetics note Aurobindo's concept of "mantric poetry" as a distinctive contribution to global poetics.
- Recent postcolonial scholarship acknowledges the need to revisit early Indian thinkers who proposed alternative modernity's.
- However, limited scholarship has systematically examined Aurobindo as a pioneer of global literary expansion rather than solely as mystic or nationalist.

3. Research Gap :

Although Sri Aurobindo has been extensively studied as a nationalist thinker, spiritual philosopher, and mystic poet, a significant gap remains in understanding his role in shaping the global trajectory of Indian literature within the framework of world literature studies. Existing scholarship often treats his epic *Savitri*, philosophical works like *The Life Divine*, and critical writings such as *The Future Poetry* in isolation—either as spiritual texts, metaphysical explorations, or nationalist interventions—without examining how these works collectively articulate a coherent project of internationalizing Indian literary consciousness. Moreover, postcolonial analyses frequently position Indian literature primarily in relation to colonial resistance, overlooking Aurobindo's forward-looking vision of transnational humanism and spiritual modernity. There is limited interdisciplinary engagement that situates his literary theory alongside contemporary debates in comparative literature and global literary studies, particularly regarding the redefinition of world literature beyond Eurocentric paradigms. Consequently, the integrative dimension of his thought—where Vedantic metaphysics, English literary form, and universalist philosophy converge—remains underexplored as a pioneering

model of civilizational dialogue. This study addresses that gap by examining Aurobindo not merely as a national figure, but as an architect of a new global literary imagination grounded in Indian epistemology yet dialogically engaged with modernity.

4. Aims of the Study :

- To critically investigate the role of Sri Aurobindo in advancing the global expansion and intellectual repositioning of Indian literature within the evolving discourse of world literature.
- To examine the ways in which his major works synthesize Indian philosophical traditions—particularly Vedantic metaphysics—with Western literary structures and modernist expression, thereby generating a distinctive model of spiritual modernity.
- To analyze his theoretical and creative writings as foundational contributions to rethinking the conceptual parameters of world literature beyond Eurocentric frameworks.
- To situate his literary and philosophical project within postcolonial and comparative literary paradigms, highlighting his dialogic engagement with global modernity rather than a binary oppositional stance.
- To reinterpret Sri Aurobindo as a pioneering architect of transnational humanism whose integrative vision redefines the cultural and epistemological place of Indian literature in global intellectual history.
- **Research Approach**

This study adopts an interdisciplinary and interpretative research approach to examine the literary and philosophical contributions of Sri Aurobindo within the broader framework of world literature. It combines textual analysis with comparative and postcolonial methodologies in order to understand how his major works—*Savitri*, *The Life Divine*, *The Future Poetry*, and *The Ideal of Human Unity*—collectively articulate a vision of spiritual modernity and transnational humanism. Close reading is employed to explore the thematic, philosophical, and aesthetic dimensions of these texts, while comparative analysis situates them alongside Western literary and theoretical traditions to highlight their dialogic engagement rather than derivative dependence. Drawing from postcolonial theory and global literary studies, the research further evaluates how Aurobindo challenges Eurocentric definitions of world literature by grounding universal ideas in Indian metaphysical thought. Rather than treating his writings as isolated spiritual or nationalist expressions, this approach views them as components of a unified intellectual project aimed at redefining the role of Indian literature in global discourse. By integrating literary criticism, philosophical inquiry, and cultural analysis, the study seeks to present a holistic understanding of Aurobindo's pioneering contribution to the international expansion and conceptual transformation of Indian literature.

6. Interdisciplinary Theoretical Perspectives

Reimagining the Epic: *Savitri* and Global Myth :

In *Savitri*, Sri Aurobindo reshapes a relatively brief narrative episode from the Mahabharata into one of the most ambitious spiritual epics of the twentieth century. What was originally a concise tale of conjugal devotion and triumph over death becomes, in his creative re-envisioning, a vast philosophical exploration of existence itself—of suffering and endurance, love and sacrifice, mortality and transcendence. Extending to nearly twenty-four thousand lines and composed in English blank verse, *Savitri* stands as a monumental poetic undertaking that bridges civilizational traditions. It does not merely retell a myth; it universalizes it. The ancient Indian narrative becomes a symbolic drama of the human soul confronting ignorance, limitation, and death in its quest for divine realization.

Aurobindo's transformation of the source material is both literary and metaphysical. By expanding the inner psychological and spiritual dimensions of the characters, he converts a mythic episode into an allegory of cosmic evolution. Savitri herself becomes more than a devoted wife; she emerges as the embodiment of divine consciousness descending into the world to confront the forces of negation. Her dialogue with Death transcends narrative tension and becomes a philosophical debate about the meaning of existence, suffering, and destiny. In this sense, the poem is not confined to religious symbolism but speaks to universal human anxieties and aspirations.

The poem's formal structure deliberately situates it within the global epic tradition. Through the disciplined use of blank verse—an inheritance of English poetic lineage—Aurobindo enters into an implicit dialogue with Western epic conventions. However, unlike classical Western epics grounded in fixed theological cosmologies or heroic conquest, *Savitri* unfolds within an evolutionary vision rooted in Vedantic philosophy. Reality is not predetermined by divine decree; it is dynamic and progressive. Consciousness, rather than fate, becomes the shaping force of existence. This shift from fatalism to spiritual evolution marks a decisive philosophical intervention into the epic form.
By articulating an expanding spiritual cosmology within a modern poetic framework, Aurobindo repositions Indian metaphysics within the lineage of world epics. He challenges the implicit assumption that universality belongs exclusively to Western narratives and demonstrates that Indian myth can sustain philosophical reflection on a global scale. The epic thus becomes a site of civilizational dialogue rather than cultural imitation. English, once the language of colonial authority, is transformed into a vehicle for expressing Indian spiritual ontology, thereby reversing inherited hierarchies of cultural influence.

Moreover, *Savitri* redefines the very purpose of epic poetry. Traditional epics often celebrate martial valor, divine intervention, or the founding of nations. In contrast, Aurobindo foregrounds

inner struggle and spiritual awakening. The heroism in *Savitri* lies not in conquest of territory but in conquest of ignorance and despair. The battlefield is internal, the victory metaphysical. Through this reorientation, the epic expands from national narrative to universal meditation, from historical memory to cosmic aspiration.

Ultimately, *Savitri* exemplifies how myth can be reimagined as a living and evolving form rather than a static inheritance. It bridges ancient narrative and modern philosophical inquiry, integrating Indian metaphysical insight with global poetic form. In doing so, Aurobindo does more than contribute a significant literary text; he reconstructs the epic as a medium for articulating humanity's spiritual future. The poem stands as a testament to the capacity of Indian literature to participate in, and reshape, the discourse of world literature through intellectual depth, aesthetic innovation, and spiritual universality.

Visionary Poetics and the Evolution of Consciousness :

In *The Future Poetry*, Sri Aurobindo develops a far-reaching vision of poetic evolution that moves beyond the literary debates of his time. Observing the trajectory of English poetry from the Romantic era through Victorian refinement and into early modernist fragmentation, he recognizes both achievement and limitation. Victorian poetry, in his assessment, often cultivated musical beauty and emotional intensity but sometimes lapsed into decorative excess, where ornament overshadowed spiritual depth. Conversely, emerging realist and naturalist tendencies reduced poetry to external observation, privileging accuracy and material detail over inward revelation. For Aurobindo, neither aesthetic ornamentation nor empirical precision alone could fulfill the highest purpose of poetry.
In response, he advances the idea of visionary poetry, concept deeply rooted in the Indian understanding of mantra as sacred utterance. A mantra, in the Vedic sense, is not simply a word or phrase but a sound-form that carries spiritual energy and has the power to awaken consciousness. Aurobindo reinterprets this principle within a modern literary framework. He argues that the highest poetry arises when rhythm, sound, and meaning converge to express deeper truths of existence. In such moments, language transcends intellectual communication and becomes a vehicle of direct experiential insight. The poem does not merely convey thought; it embodies it in a luminous and transformative form.

This vision expands the scope of global poetics in profound ways. Poetry, under this paradigm, is no longer confined to imitation of nature, representation of society, or subjective emotional expression. Instead, it becomes an act of revelation. The poet assumes the role of seer rather than chronicler, articulating realities that lie beyond ordinary perception. In this sense, poetry participates in humanity's spiritual evolution, assisting in the unfolding of higher awareness.

Importantly, Aurobindo does not reject modernity; he seeks to deepen it. By engaging English literary tradition while infusing it with Vedantic metaphysics, he demonstrates that modern poetic form can carry ancient spiritual insight without regression into mysticism or obscurity. His theory thus challenges the assumption that progress in literature requires detachment from metaphysical inquiry. On the contrary, he envisions the future of poetry as one in which artistic innovation and spiritual depth are inseparable.

Through this synthesis, Aurobindo redefines literature's role within world culture. Poetry becomes illumination rather than description, awakening rather than imitation. It is not an escape from reality but an expansion of it Through this consciousness-centered aesthetic, Sri Aurobindo proposes a new paradigm for global literary modernity in which artistic expression becomes a medium of inner illumination and spiritual evolution.

Spiritual Modernity and Integral Philosophy :

In *The Life Divine*, Sri Aurobindo presents a sweeping philosophical vision that seeks to reconcile the apparent divide between modern scientific thought and ancient spiritual wisdom. Writing in an era deeply influenced by Darwinian evolution, positivism, and materialist interpretations of reality, Aurobindo does not dismiss these intellectual developments. Instead, he absorbs them into a broader metaphysical framework. While Darwinian theory convincingly explains biological transformation through natural selection, Aurobindo argues that such explanations address only the outer mechanism of evolution. Beneath the physical process, he perceives a deeper movement—the gradual unfolding of consciousness within matter.

Drawing from Vedantic metaphysics, particularly the conception of Brahman as both transcendent and immanent, Aurobindo proposes that existence is fundamentally a manifestation of conscious force. Matter is not inert substance but a concealed form of spirit; life and mind emerge not as accidental phenomena but as progressive disclosures of a hidden divinity. In this evolutionary schema, human beings occupy a transitional stage. Humanity is neither the endpoint nor the pinnacle of development but a bridge toward higher states of consciousness. This reinterpretation transforms evolution from a purely biological narrative into a spiritual journey of increasing awareness and integration.

Aurobindo names this comprehensive vision "integral philosophy," emphasizing its refusal to fragment reality into opposing domains. Reason and intuition, science and spirituality, matter and spirit are not antagonistic categories but complementary dimensions of a unified truth. By synthesizing evolutionary science with Vedantic insight, he challenges the dominant modern assumption that rational inquiry must exclude metaphysical depth. Instead, he proposes that intellectual rigor and spiritual

realization can coexist within a more expansive epistemology.

Through this synthesis, Aurobindo repositions Indian philosophy within modern global discourse. Rather than presenting Vedanta as a relic of the past or a mystical escape from material concerns, he demonstrates its dynamic relevance to contemporary intellectual challenges. His philosophy engages directly with questions raised by modernity—about progress, human destiny, suffering, and collective development—while offering an alternative foundation grounded in consciousness. In doing so, he affirms that Indian thought is not peripheral to modern debates but capable of reshaping their underlying assumptions.

Importantly, Aurobindo's concept of spiritual modernity does not negate scientific achievement or technological progress. He acknowledges their transformative potential but warns that material advancement without inner growth can lead to alienation and crisis. True progress, in his vision, requires the evolution of consciousness alongside external development. Spiritual realization becomes not a retreat from the world but a means of transforming it.

Thus, *The Life Divine* stands as more than a philosophical treatise; it is a reimagining of modernity itself. By integrating Darwinian evolution with Vedantic metaphysics, Aurobindo offers a model of progress rooted in spiritual emergence rather than material accumulation. His integral philosophy affirms that the future of humanity depends on harmonizing outer advancement with inner awakening. In this way, he constructs a vision of modernity that is at once global, dialogic, and deeply grounded in Indian metaphysical tradition, contributing significantly to the intellectual reconfiguration of world thought.

From National Consciousness to Global Human Unity :

In *The Ideal of Human Unity*, Sri Aurobindo carries his intellectual project beyond metaphysics and aesthetics into the domain of political and civilizational philosophy. Although his early career was marked by active participation in India's nationalist movement, his later reflections reveal a widening horizon of thought. Nationalism, for Aurobindo, was historically necessary: it awakened collective self-respect, cultural confidence, and the psychological will for freedom. Under colonial domination, such awakening was indispensable. Yet he insists that nationalism cannot remain the final stage of human organization. When it hardens into exclusivism or rivalry, it contradicts the deeper evolutionary impulse toward unity that shapes human history.

In tracing the development of societies from tribal communities and city-states to empires and modern nation-states. Aurobindo interprets history as a progressive enlargement of collective identity. Each stage reflects an expansion in the scale of human association. However, he carefully distinguishes between external unification and inner integration. Political alliances, economic

networks, or administrative federations may create structural unity, but without a corresponding growth in consciousness they remain unstable. True human unity, he argues, must arise from an inward recognition of shared spiritual identity. It is this spiritual foundation that transforms unity from coercive uniformity into voluntary harmony.

Aurobindo's concept of global unity is therefore neither imperial nor homogenizing. He resists the idea that cultural differences must dissolve into a single global culture. Instead, he envisions a world in which distinct civilizations retain their unique psychological and spiritual characteristics while participating in a larger cooperative whole. Diversity becomes an expression of the creative richness of humanity. Each culture embodies particular strengths, insights, and sensibilities that contribute to the collective evolution of the species. Unity, in this framework, is not achieved by erasing difference but by harmonizing it.

This perspective anticipates modern debates about globalization and intercultural dialogue, yet it differs in its grounding. Whereas contemporary discussions often emphasize economic interdependence or political institutions, Aurobindo situates the possibility of global solidarity in the evolution of consciousness itself. The transformation required is not merely institutional but psychological and spiritual. Humanity must outgrow narrow identifications and cultivate a more expansive awareness of its shared destiny.

Importantly, this political vision is deeply connected to Aurobindo's literary and philosophical thought. The principle of integral evolution that governs the growth of individual consciousness also informs the development of collective life. Literature, myth, and philosophy become vehicles for imagining and preparing this expanded unity. Through creative expression, societies articulate their deepest aspirations and reshape their self-understanding. Thus, Aurobindo's literary project cannot be separated from his political philosophy; both seek to foster a transition from fragmentation to integration.

By moving from national consciousness toward global human unity, Aurobindo advances a form of transnational humanism that transcends colonial binaries and ideological divisions. Indian philosophy, in his interpretation, becomes a resource for articulating universal values without imposing cultural dominance. His thought proposes a dialogic world order in which civilizations meet as equals, contributing to a shared future grounded in mutual respect and spiritual growth.

In this way, *The Ideal of Human Unity* strengthens the broader argument of his intellectual corpus: that the destiny of humanity lies in conscious evolution. Political structures, cultural production, and philosophical inquiry must converge toward a higher integration of life. Aurobindo's vision thus bridges literature, metaphysics, and global political imagination, offering not only a critique

of narrow nationalism but a constructive and forward-looking model of planetary solidarity rooted in evolving consciousness.

Implications for World Literature :

The intellectual and creative vision of Sri Aurobindo offers a profoundly humane and expansive framework for rethinking world literature. Instead of defining world literature merely as texts that circulate beyond their national origins, Aurobindo's perspective invites us to see it as a living expression of humanity's evolving inner life. Literature, in his understanding, is not confined to cultural documentation or aesthetic experimentation alone; it is a medium through which civilizations articulate their deepest experiences of existence. When approached through this lens, world literature becomes a shared spiritual and imaginative dialogue—an ongoing conversation across time and space about the nature of reality, identity, suffering, aspiration, and transcendence.

Aurobindo's own creative practice exemplifies this integrative vision. In *Savitri*, he reimagines an ancient Indian legend through the disciplined form of English epic verse. This act is not a mere adaptation but a meaningful synthesis. By writing in English while remaining rooted in Vedic and Upanishadic philosophy, he transforms the colonial language into a vehicle of Indian metaphysical insight. Such a gesture carries major implications for global literary studies. It demonstrates that literary modernity need not be defined exclusively by Western paradigms; rather, it can emerge from cross-cultural fertilization where traditions meet on equal terms. His work challenges inherited hierarchies that often place European literary forms at the center and non-Western traditions at the margins. Instead, he proposes a reciprocal model in which each culture contributes creatively to a shared global canon.

His reflections in *The Future Poetry* deepen these implications. There, he envisions poetry not as imitation of external reality but as a force capable of awakening consciousness. Literature, according to him, should not merely describe the world; it should illuminate it. If poetry can elevate perception and refine awareness, then its global circulation acquires transformative significance. Reading across cultures becomes more than academic comparison—it becomes participation in a collective growth of understanding. World literature, therefore, assumes an ethical dimension: it fosters empathy, enlarges imagination, and cultivates an awareness of interconnected human destiny.

Aurobindo's thought also anticipates many contemporary concerns within comparative and postcolonial literary theory. His model of synthesis avoids both cultural isolationism and uncritical assimilation. He neither rejects Western literary heritage nor subordinates Indian tradition to it. Instead, he demonstrates how engagement across traditions can produce new aesthetic possibilities without erasing cultural identity. In doing so, he offers an early articulation of what might be called transnational

humanism—a vision in which literature transcends political boundaries while honoring historical and cultural rootedness. Furthermore, his philosophy of human unity reframes the role of literature in an increasingly globalized yet fragmented world. Technological interconnectedness has brought cultures into unprecedented proximity, but ideological, religious, and political tensions persist. Within such a context, literature can either deepen divisions or cultivate shared understanding. Aurobindo envisions it as a force of integration—not through homogenization, but through conscious harmony. Each tradition retains its unique rhythm and voice, yet participates in a larger human symphony. World literature thus becomes a field of mutual illumination rather than competitive dominance.

Ultimately, Aurobindo redefines the meaning of universality itself. Universality, in his philosophy, is not the imposition of a single cultural standard but the realization of an underlying unity expressed through diversity. By placing consciousness at the center of artistic creation, he expands the theoretical foundations of world literature. He invites scholars to move beyond purely economic or institutional models of globalization and to consider the deeper psychological and spiritual dimensions of literary exchange. In doing so, he secures a vital place not only within Indian literary history but within the evolving discourse of global literary modernity—offering a vision that is integrative, ethically grounded, and forward-looking.

Conclusion :

The intellectual and creative legacy of Sri Aurobindo reveals a thinker who cannot be confined within the boundaries of nationalism, mysticism, or literary experimentation alone. His work represents a sustained effort to reinterpret Indian philosophical traditions in dialogue with modern global thought, while simultaneously reshaping the purpose and potential of literature. Through poetry, prose, and philosophical reflection, he constructs a vision in which cultural rootedness and universal aspiration coexist harmoniously. His contribution, therefore, extends beyond the history of Indian literature into the broader discourse of world literature and global intellectual history.

Aurobindo's synthesis of Vedantic metaphysics with evolutionary thought repositions Indian philosophy within modern debates about progress, consciousness, and human destiny. By arguing that evolution is not merely biological but spiritual, he introduces a transformative dimension into discussions of modernity. This insight allows literature to be understood not just as aesthetic production but as a participant in humanity's inner growth. His theory of spiritually charged or revelatory poetry further expands this idea, suggesting that the poetic word can awaken deeper layers of awareness and serve as a vehicle for illumination rather than imitation. Literature, in this framework, becomes an instrument of consciousness rather than a mirror of external reality alone.

His reflections on nationalism and human unity complete this intellectual arc. While recognizing the

historical necessity of nationalism in resisting colonial domination, he refuses to accept it as the final form of collective identity. Instead, he envisions a gradual movement from limited communal bonds toward a broader spiritual internationalism grounded in inner unity. This transition from national awakening to global humanism reinforces his broader literary and philosophical project: the affirmation of unity without erasing diversity. Such a perspective offers an alternative to both cultural isolation and homogenizing globalization.

In the field of world literature, Aurobindo's work anticipates contemporary conversations about transnationalism, hybridity, and decolonization. Yet his vision goes beyond theoretical categories. He proposes a model of universality rooted in consciousness—one that honors cultural specificity while seeking deeper harmony. By creatively blending Indian mythic imagination with Western literary forms, he demonstrates that modernity can be plural, dialogic, and spiritually grounded.

Ultimately, Aurobindo stands as a pioneer of transnational humanism. His thought challenges scholars to rethink global literary modernity not as a hierarchy of dominant and peripheral traditions, but as a collaborative evolution of civilizations. Literature, in his view, participates in shaping the ethical and spiritual future of humanity. Through this integrative vision, he secures a lasting place not only in Indian intellectual history but in the unfolding narrative of world literature itself—offering a humane, expansive, and forward-looking paradigm for understanding culture in an interconnected world.

References :

1. Aurobindo, Sri. *The Future Poetry*. Sri Aurobindo Ashram Publication Department, 2004.
2. —. *The Ideal of Human Unity*. Sri Aurobindo Ashram Publication Department, 2005.
3. —. *The Life Divine*. Sri Aurobindo Ashram Publication Department, 2005.
4. —. *Savitri: A Legend and a Symbol*. Sri Aurobindo Ashram Publication Department, 2006.
5. Bhabha, Homi K. *The Location of Culture*. Routledge, 2004.
6. Chaudhuri, Indrani Datta. "The 'Coming' Epic of Freedom: Reading Sri Aurobindo's *Savitri* as a Mythopoesis in Opposition to Sovereign Control." *SMART MOVES Journal IJELLH*, vol. 9, no. 2, 2021, pp. 201–218.
7. Damrosch, David. *What Is World Literature?* Princeton UP, 2003.
8. Kumar, Nikhil. "'Spaceless Self' in *Savitri*: The Eternal Self of Supramental Man in Sri Aurobindo's Epic." *European Journal of Literary Studies*, vol. 4, no. 2, 2023, pp. 45–59.
9. Said, Edward W. *Culture and Imperialism*. Vintage International, 2003.
10. Spivak, Gayatri Chakravorty. *Death of a Discipline*. Columbia UP, 2003.
11. Upadhyay, Suneeta. "*Savitri*: A Beacon of Hope for Women in the Modern Age." *IOSR Journal of Humanities and Social Science*, vol. 28, no. 10, 2023, pp. 88–91.
12. Varma, R. S. "Spiritual Modernity and Integral Humanism in Sri Aurobindo's Political Thought." *Journal of Postcolonial Writing*, vol. 55, no. 6, 2019, pp. 742–756.

E-mail : dasgupta.pushpita@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 22-28
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

हिन्दी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता : एक अवलोकन

डॉ. यतीन्द्र सिंह कुशवाहा
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,
डी. ए.वी. कॉलेज, कानपुर।

शोध सार :

भाषा के सन्दर्भ में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई) का प्रयोग किया जा रहा है। इसके द्वारा व्यक्तिगत अनुभव, वास्तविक समय प्रतिक्रिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता संचालित अनुवाद प्रमुखता से प्राप्त होते हैं। पाठ्य–पुस्तकें, वीडियो और ऑडियो रिकॉर्डिंग में भाषा सम्बंधी उपयोगी सामग्री शामिल तो होती हैं, किन्तु उनमें वैयक्तिकता की कमी होती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक इन विषयों का समाधान कर सकती है। वर्तमान में भाषा सिखाने हेतु अनेक ऐप्स उपलब्ध हैं जिनका प्रयोग कर भाषा अधिगम को प्रभावशाली बना सकते है।

यह युग सूचना, तकनीक और डिजिटल नवाचारों का युग है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence AI) ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। हिंदी भाषा के अध्ययन में AI का प्रयोग एक नवीन बहुविषयी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जिसमें भाषाविज्ञान, साहित्य, कंप्यूटर विज्ञान, संचार अध्ययन और समाजशास्त्र का समन्वय दिखाई देता है। यह हिंदी भाषा के शिक्षण, अनुवाद, शब्दकोश निर्माण और संरक्षण में AI की भूमिका का अध्ययन करता है तथा इसके अवसरों, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डालता है। कृत्रिम बुद्धिमता के द्वारा हिन्दी भाषा ने अनेक आयाम स्थापित किए हैं। विश्व स्तर पर हिंदी को स्थापित करने में इस कृत्रिम मेधा की बड़ी भूमिका है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने भाषायी अन्तराल को दूर कर हिन्दी को अधिक व्यापक एवं सक्षम बनाया है।

बीज शब्द : कृत्रिम बुद्धिमत्ता, हिंदी भाषा, भाषा मॉडल, प्रौद्योगिकी, डेटाबेस।

भाषा मानव जीवन की मूलभूत एवं सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है जिसके माध्यम से विचारों, भावनाओं, अनुभवों और ज्ञान का आदान–प्रदान किया जाता है। यह मात्र संचार का माध्यम नहीं है अपितु सांस्कृतिक पहचान भी होती है। जैसे–जैसे मानव ने विज्ञान और सूचना–प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उन्नति की वैसे–वैसे भाषा के स्वरूप में भी परिवर्तन आये हैं। हिंदी भाषा भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक और साहित्यिक चेतना की वाहक रही है।

21वीं सदी में तकनीकी क्रांति के युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence या AI) नामक एक नई शक्ति का आविष्कार हुआ। आज इसने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश कर लिया है अथवा निकट भविष्य में करने वाली है और भाषा भी इससे अछूती नहीं है। यह न केवल भाषाओं के संरक्षण और पुर्नजीवन में सहायक

हो रहा है बल्कि अनुवाद, भाषा शिक्षा और अन्तर्भाषिक संवाद प्रयोग को नवीन आयाम दे रहा है। भाषा सीखने वाले एप्लिकेशन्स, मशीनी अनुवाद, वॉयस असिस्टेंट, ऑटोमैटिक ट्रांसक्रिप्शन आदि ने सभी क्षेत्रों में भाषा को प्रभावित किया है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक ऐसी तकनीक है, जो मानव की बौद्धिक क्षमताओं जैसे सीखना, विश्लेषण करना, निर्णय लेना और सृजन करना आदि का अनुकरण करती है। यह कंप्यूटर विज्ञान की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत ऐसे यंत्र तथा सॉफ्टवेयर विकसित किए जाते हैं जो मानव बुद्धि की भाँति कार्य कर सकें यद्यपि यह अनुकरण मात्र करती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग भाषा प्रसंस्करण (Natural Language Processing), मशीनी अनुवाद, पाठ विश्लेषण, साहित्यिक डेटा आदि के क्षेत्र में हो रहा है।

वर्तमान डिजिटल युग में भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के मध्य महत्वपूर्ण संबंध स्थापित हुआ है। जहाँ भाषा संचार का माध्यम है, वहीं कृत्रिम बुद्धिमत्ता उस संचार को समझने, समझाने, विश्लेषण करने और उत्तर देने में सक्षम एक तकनीकी तंत्र है। "भाषाई कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), एआई की एक विशिष्ट शाखा है जो कंप्यूटरों को मानव भाषा को समझने, संसाधित करने और उत्पन्न करने में सक्षम बनाती है, जिससे तकनीक के साथ बातचीत अधिक स्वाभाविक और सहज हो जाती है।"[1] भाषाई कृत्रिम बुद्धिमत्ता विभिन्न भाषाओं में सामग्री के निर्माण, प्रबंधन, अनुवाद और व्याख्या की विधियों में संशोधन कर रही है, जिससे आधुनिक तकनीक की पहुँच और दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि संभव हो रही है।

भाषा अधिगम में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग अग्राकिंत के आधार पर समझा जा सकता है – प्रथम, भाषा सीखने को व्यक्तिगत बनानाय द्वितीय, स्व अध्ययन की सुविधाय तृतीय, भाषा सीखने के अनुभव में सुधार, चतुर्थ, शिक्षण सामग्री का अनुकूलन, पंचम, सटीक प्रतिक्रिया प्रदान करना, षष्ठ, भाषा सीखने के मूल्यांकन में मदद करना, सप्तम, भाषा सीखने के कौशल का विकास करना, अष्टम, कृत्रिम बुद्धिमत्ता विभिन्न छात्रों को स्वयं सीखने की शैली व शिक्षण विधि उपलब्ध कराता है, नवम, वास्तविक समय में प्रतिक्रिया देना संभव बनाता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित चैटबॉट और अन्य उपकरण तुरंत प्रतिक्रिया दे सकते हैं, जिससे छात्रों को अपनी गलतियों को पहचानने और सुधारने में मदद मिलती है, दशम, अनुकूलनशीलता में वृद्धि करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता छात्रों की प्रगति और सीखने के पैटर्न के आधार पर शिक्षण सामग्री को अनुकूलित कर सकता है, जिससे उन्हें जटिल विषयों को आसानी से समझने में मदद मिलती है, एकादश, भाषा सीखने के ऐप्स और प्लेटफॉर्म कई भाषा सीखने के ऐप्स और प्लेटफॉर्म कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करते हैं ताकि छात्रों को अंतःक्रिया द्वारा भाषा सीखने में मदद मिल सके, द्वादश, अनुभवजन्य शोध को प्रोत्साहित करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता भाषा सीखने के क्षेत्र में अनुभव आधारित अनुसंधान को बढ़ावा देने में सहायता कर सकता है ताकि अनुसंधानकर्ता अनुसंधान कार्य को प्रभावी बना सके।

प्रारंभिक स्वरूप में भाषाई एआई एक मशीनी अनुवाद (MT) है। यह एक ऐसी तकनीक है जो स्वचालित रूप से पाठ या वक्तव्य का एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करती है। अनेक तकनीकी विकास के पश्चात इसका वर्तमान रूप न्यूरल मशीनी अनुवाद (NMT) है, जिसे अनुवाद उपकरणों में शामिल किया गया है और अनेक वैश्विक संगठनों द्वारा इसका लाभ उठाया जा रहा है।

न्यूरल मशीनी अनुवाद के विकास क्रम में एक महत्वपूर्ण विकास ट्रांसफॉर्मर का आगमन था, जिसने इस

प्रणाली को जटिल शब्दों को अधिक प्रभावी ढंग से पकड़ने में सक्षम बनाया, जिससे अधिक धाराप्रवाह और सटीक अनुवाद संभव हुआ। इस प्रकार, वृहद भाषा मॉडल (LLM) का निर्माण हुआ जैसे ओपन ए.आई. का जी.पी.टी. (जेनरेटिव प्री–ट्रेन्ड ट्रांसफॉर्मर) और ला.एम.डी.ए. (संवाद अनुप्रयोगों के लिए भाषा मॉडल) शामिल हैं।

हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के भाषा मॉडलों की दक्षता अंग्रेजी, चाइनीज, स्पेनिश, फ्रेंच और जर्मन आदि भाषा मॉडलों की तुलना में बहुत कम है। हिंदी के अतिरिक्त बंगाली, मराठी, तमिल, तेलुगु और गुजराती में भी यह काम करने लगा है लेकिन सवाल इसकी सटीकता का है, जो कि भारतीय भाषाओं में तुलनात्मक रूप से कम है। स्वाभाविक तौर पर अंग्रेजी में इन भाषा मॉडलों का प्रदर्शन सबसे अच्छा है। अंग्रेजी बाद फ्रेंच का स्थान है। तीसरा स्थान स्पेनिश का है। चाइनीज जैसी जटिल भाषा में ये भाषा–मॉडल ठीक–ठाक काम करने लगे हैं। हालांकि अंग्रेजी और फ्रेंच की तुलना में चाइनीज में इसकी सटीकता थोड़ी कम है। यह चीन द्वारा बनाए गए देशी भाषा मॉडल का कमाल है। इसके अलावा जर्मन में भी ये भाषा मॉडल अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। भाषा मॉडलों की सफलता भाषा की जटिलता और डेटा की उपलब्धता पर निर्भर करती है। अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश और जर्मन की तुलना में हिंदी भाषा अधिक जटिल भाषा है। हिन्दी के व्याकरणिक नियमों लिंग, वचन, कारक, विभक्ति आदि जटिल अवधारणाएँ सम्मिलित हैं। लिपि में वर्णों की अधिक संख्या और जटिलता भी इसे कठिन बनाते हैं।

भाषा मॉडल के अन्तर्गत शब्दों को छोटे–छोटे टोकनों में विभक्त किया जाता है इसे टोकेनाइजेशन (टोकनीकरण) कहा जाता है। अंग्रेजी की तुलना में हिंदी में टोकनों की संख्या 3–4 गुना अधिक होती है। इसके प्रमुख कारण हैं हिन्दी में शब्दों के रूपों में लिंग, वचन और कारकों के आधार परिवर्तन, शब्दों का दोहराव, विराम चिह्न, हिंदी वाक्य में दो शब्दों के बीच के अंतराल (स्पेस) को भी एक टोकन रूप में गिना जाना, वाक्य क्रम में परिवर्तन के पश्चात भी अर्थ की समानता आदि।

डेटा की अनुपलब्धता हिन्दी की एक अन्य महत्वपूर्ण समस्या है। डेटा कम होने पर भाषा मॉडल की सक्रियता तथा प्रभावशीलता प्रभावित होती है। हिन्दी में डेटा की गुणवत्ता पर भी प्रश्नचिन्ह है। यह खराब गुणवत्ता वाला, अपूर्ण, असंगठित और अनियंत्रित है। उनमें तथ्यात्मक गलतियां, अविश्वसनीय स्रोतों से जानकारी, विषय से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारियों का अभाव तथा व्याकरणिक त्रुटियां हैं। किसी भाषा में अच्छे डेटा की उपलब्धता इस तथ्य पर निर्भर करती है कि उस भाषा के विभिन्न अनुशासनों में कितना लेखन और शोधकार्य हो रहा है तथा उसकी इंटरनेट पर कितनी उपलब्धता है तथा उस डेटा को सुनियोजित रूप से संग्रहित करने वाले विविध ऑनलाइन मंच कितने हैं। हिंदी के पिछड़ने के एक अन्य कारण हिंदी में शिक्षित लोगों की संख्या का अन्य भाषाओं की तुलना में कम होना है। ऐसे शिक्षित लोगों की संख्या उस अनुपात में कम है जो इंटरनेट पर अपनी लेखनी चला रहे हों।

भारत सरकार ने भारतीय भाषाओं में एआई के विकास के लिए पर्याप्त धन आवंटित किया है। हिंदी के नये भाषा–मॉडलों में 'हनुमान', 'ऐरावत', 'कुरुतरिम' और 'ओपन हाथी' प्रमुख हैं। इनमें से 'हनुमान' को रिलायंस के मुकेश अंबानी का, और 'ऐरावत' को नंदन नीलकेणि का वरदहस्त प्राप्त है। जबकि 'ओपन हाथी' को बेंगलुरु में 2023 शुरु हुआ चर्चित स्टार्टअप 'सर्वम् एआई' बना रहा है। 'कुरुतरिम' (KURUTRIM) को भारतीय टैक्सी कंपनी ओला बना रही है।

भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का हिन्दी के माध्यम से प्रयोग करके भारत की

साहित्यिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा शैक्षणिक संपदा को वैश्विक पहचान दिलाई जा सकती है। 'जिस अविश्वसनीय और चमत्कारिक अंदाज में कृत्रिम बुद्धिमत्ता चीजों को बदल रही है, उसे देखते हुए अगले एक दो दशकों में हम भाषा–निरपेक्ष विश्व की ओर बढ़ सकते हैं। ऐसा विश्व जिसमें हिंदी जैसी भाषाएँ बोलने–लिखने वाला व्यक्ति अवसरों से वंचित न हो क्योंकि प्रौद्योगिकी एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद को इतना सटीक, सहज, सरल तथा सार्वत्रिक बना सकती है कि आप अंग्रेजी की सामग्री को हिंदी में पढ़ सकेंगे और हिन्दी की सामग्री को अंग्रेजी में। आप हिंदी में बोलेंगे और लोग आपको अंग्रेजी में सुन सकेंगे जबकि अंग्रेजी बोलने वाले व्यक्ति को आप हिंदी में सुन सकेंगे।'[2]

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित एप्लिकेशन और डिजिटल प्लेटफॉर्म हिंदी भाषा सीखने की विधि को सरल और प्रभावी बना रहे हैं। उच्चारण सुधार, व्याकरण अभ्यास, शब्द भंडार वृद्धि, वाक्य विन्यास जैसे कार्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से संभव हो रहे हैं। भाषा शिक्षण के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने नवीन संभावनाओं को जन्म दिया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रौद्योगिकी ने भाषा सीखने की प्रक्रिया को अधिक सरल, रोचक और प्रभावी बनाया है। स्मार्ट एप्लिकेशन और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से विद्यार्थी अपनी गति और क्षमता के अनुसार भाषा का अभ्यास कर सकते हैं।

हिंदी अनुवाद में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से भाषा के क्षेत्र में सबसे बड़ा कार्य संभव हो सकता है कि अन्य भाषाओं के साथ हिंदी के संबंधों को विकसित किया जा सकता है। अनुवादिनी, Google Translater, Microsoft Translator और अन्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित अनुवादक अब हिंदी और अंग्रेजी सहित विभिन्न भाषाओं के बीच तीव्र, शुद्ध और सटीक अनुवाद कर सकते हैं। अनुवाद की गुणवत्ता में निरन्तर सुधार हो रहा है। जिससे तकनीकी, शैक्षणिक, साहित्यिक और वैज्ञानिक सामग्री का हिंदी में रूपांतरण आसान हुआ है।

मशीनी अनुवाद कृत्रिम बुद्धिमत्ता की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। मशीनी अनुवाद ने से भाषाओं के मध्य दूरी को कम कर विश्वग्राम की संकल्पना को चरितार्थ कर दिया है। मशीनी अनुवाद की गुणवत्ता निरंतर बेहतर हो रही है। बालेन्दु शर्मा दाधीच लिखते हैं– 'कुछ वर्षों के भीतर हम ऐसे मशीन अनुवाद की स्थिति में पहुँच सकते हैं जो मानवीय अनुवाद की ही टक्कर का होगा। सबसे बड़ी बात यह है कि यह अत्यंत स्वाभाविक रूप से उपलब्ध होगा कंप्यूटर तथा मोबाइल के जरिए ही नहीं बल्कि दर्जनों किस्म के डिजीटल उपकरणों के जरिए जो हमारे घरों, दफ्तरों, विद्यालयों और यहाँ तक कि रास्तों और इमारतों में भी मौजूद होंगे।'[3]

मशीन अनुवाद प्रणाली ने हिंदी को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अनुवाद टूल्स विभिन्न भाषाओं से हिंदी और हिंदी से अन्य भाषाओं में त्वरित अनुवाद प्रदान करते हैं। हिंदी में जो विषय में अच्छी अध्ययन सामग्री के अभाव से जूझते रहे हैं। डिजिटल हिंदी शब्दकोश, थिसॉरस, कॉर्पस और भाषा डेटाबेस शब्दकोश और भाषा संसाधन के क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने महत्वपूर्ण कार्य किया है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से शिक्षण कार्य हेतु उपयोगी तथा गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री को निर्मित करना भी संभव है तथा हिन्दी की सामग्री को अन्य भाषाओं में प्रयोग किया जा सकता है। इससे उन विषयों में पर्याप्त अध्ययन सामग्री उपलब्ध हो जाएंगी। 'हिंदी में पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण आसान हो जाएगा। वाचिक ज्ञान को डिजिटल स्वरूपों में सहेजा जा सकेगा। हिंदी भाषी लोग वैश्विक संस्थानों में पढ़ सकेंगे,

भाषाओं की सीमाओं से मुक्त रहते हुए कौशल प्राप्त कर सकेंगे और विश्व को अपनी सेवाएँ दे सकेंगे। हिन्दी बोलने वाला व्यक्ति प्रौद्योगिकी के प्रयोग से अंग्रेजी, जापानी, चीनी, स्पैनिश, फ्रेन्च या अन्य भाषा–भाषी लोगों को कन्टेन्ट और सेवाएँ उपलब्ध करा सकेगा, बिना उन भाषाओं की जानकारी रखे।'[4]

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भाषाओं के अस्तित्व के संकट पर गंभीर चिन्ता व्यक्त की है। वैश्वीकरण, शहरीकरण, और प्रमुख भाषाओं के बढ़ते प्रभुत्व ने स्थानीय और जनजातीय भाषाओं के अस्तित्व को संकट में डाल दिया है। ऐसी स्थिति में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) भाषा संरक्षण और पुनर्जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण बन सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने डिजिटल माध्यम से भाषाओं के संरक्षण पर बल दिया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से भाषाई डेटा का डिजिटलीकरण और संग्रहण, भाषण और टेक्स्ट रिकग्निशन, स्वचालित अनुवाद और भाषा मॉडलिंग, भाषा सीखने वाले ऐप्स और टूल्स, सांस्कृतिक सामग्री का संरक्षण आदि कार्य संभव हुए है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन में एक बहुविषयी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह न केवल अध्ययन को वैज्ञानिक और व्यापक बनाती है, बल्कि भाषा और साहित्य को नए पाठकों और शोधकर्ताओं तक पहुँचाने में भी सहायक है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश कर लिया है। संस्कृति और भाषा का एक–दूसरे से अटूट सम्बन्ध है। इसने व्यक्ति की वैचारिकता, अभिव्यक्ति, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान को प्रभावित किया है। इससे सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रभाव अग्राकिंत हैं– प्रथम, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकों जैसे वॉयस असिस्टेंट, स्पीच–टू–टेक्स्ट तथा मशीन ट्रांसलेशन ने अशिक्षित, दिव्यांग लोगों के लिए भाषाई असमानता और समावेशन में सुधार करने में सहायता की है, तृतीय, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित टूल्स प्रमुख भाषाओं में अधिक विकसित होते हैं, यह टूल्स हिन्दी में तो उपलब्ध होते हैं किन्तु हिन्दी की बोलियों का अस्तित्व संकट में आ गया है जिससे स्थानीय और अल्पसंख्यक भाषाओं की उपेक्षा होती है, जिससे सामाजिक असमानता और भाषाई वर्चस्व में वृद्धि होती है, चतुर्थ, कृत्रिम बुद्धिमत्ता संवाद की शैली में परिवर्तन के साथ संवाद करते समय लोग अपनी भाषा को अधिक साधारण, स्पष्ट और 'मशीन के अनुकूल' बना देती है। इससे प्राकृतिक भाषा शैली और स्थानीय बोलियों पर प्रभाव पड़ता है, और लोग धीरे–धीरे अपने स्वाभाविक भाषाई व्यवहार में परिवर्तन करने लगते हैं, पंचम, कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा संचालित ऐप्स (जैसे Duolingo, Google Translate) भाषा सीखने को आसान बना देते हैं, जिससे सामाजिक गतिशीलता और व्यावसायिक अवसरों में वृद्धि हो रही है किन्तु पारंपरिक शिक्षण पद्धति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

षष्ठ, कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपकरण अक्सर सामान्यीकृत भाषा मॉडल पर आधारित होते हैं, जो स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों और अभिव्यक्तियों को समझने में सीमित अधिकार रखते हैं। इससे क्षेत्रीय भाषाएं, मुहावरे, कहावतें और सांस्कृतिक प्रतीक कमजोर हो सकते हैं। यह सांस्कृतिक विविधता को खतरे डाल रही है, सप्तम, कृत्रिम बुद्धिमत्ता से भाषा किसी भी संस्कृति की आत्मा होती है। जब लोग की वजह से अंग्रेजी या अन्य वैश्विक भाषाओं को प्राथमिकता देने लगते हैं, तो धीरे–धीरे अपनी मातृभाषा और संस्कृति से दूरी बनने लगती है, अष्टम, भाषा का डिजिटलीकरण और संरक्षण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग ने डिजिटल आर्काइव, भाषा संसाधन डेटाबेस, और वॉयस मॉडलिंग के लिए किया जा रहा है, जिससे कई भाषाओं को डिजिटल रूप में संरक्षित किया जा रहा है, नवम, लोक साहित्य और मौखिक परंपराओं पर प्रभाव कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुवाद टूल्स और कंटेंट

जनरेशन प्लेटफॉर्मस अभी भी लोक भाषा, जनश्रुतियों और मूल कहानियों की आत्मा को पूरी तरह समझ नहीं पाते। इससे सांस्कृतिक विरासत की सहजता और मौलिकता में कमी आ सकती है, दशम, कृत्रिम बुद्धिमत्ता टूल्स में प्रयुक्त शब्दकोश और व्याकरण संबंधी डेटा सीमित और अशुद्ध हो सकता है। इससे हिंदी लेखन की शुद्धता और व्याकरणिक त्रुटियाँ होने की आशंका बनी रहती है।

इस सम्बन्ध में बालेन्दु शर्मा दधीच कहते हैं कि "ए आई की तकनीक पर काम करने वाले ऐप, चैटबॉट या असिस्टेंस यूजर की उन्नति पर नजर रख सकते हैं और पता कर सकते हैं कि उन्हें दिक्कत कहां हो रही है। उसके बाद सटीक अभ्यास और संसाधन सुझाए जा सकते हैं। इससे शिक्षार्थी उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं जिनमें सुधार की आवश्यकता है, जिससे सीखने की प्रक्रिया अधिक कुशल और प्रभावी हो जाती है। इसमें चैट जीपीटी, गूगल जैमिनी, मेटा एआई और माइक्रोसॉफ्ट को–पायलट आदि महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।"[5]

कृत्रिम बुद्धिमत्ता तेजी से विकसित हो रहा है, लेकिन इसे कई तकनीकी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। उदाहरण के लिए, कई मामलों में AI द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा बहुत अस्पष्ट होती है, और इस प्रकार उपयोगकर्ता के लिए समझना भ्रमित करने वाला होता है। इसके अलावा, एक ब्लैक बॉक्स समस्या है जिसमें AI आउटपुट की भाषा में पारदर्शिता और व्याख्या की कमी है। इसके अलावा, जैसे–जैसे AI चैटबॉट्स के प्रीमियम संस्करण आगे आते हैं, वे वेब से डेटा स्क्रैप कर सकते हैं, जिससे उनके द्वारा प्रस्तुत जानकारी में पूर्वाग्रह हो सकते हैं। AI मॉडल गलती से उस भाषा (शब्दों और वाक्यों) के आधार पर राय बना सकते हैं जिससे उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है। यह एक तटस्थ सोच वाले AI के लिए अवांछनीय है।

इसका उद्देश्य भविष्य में इन सीमाओं और चुनौतियों पर विजय प्राप्त करना है, क्योंकि मॉडल बातचीत और प्राप्त जानकारी के माध्यम से और अधिक भाषा सीखते हैं। इससे भाषा निर्माण को बल मिलेगा और एआई के संवादात्मक कौशल और समझ में सहायता मिलेगी, जिसे बाद में एक स्वीकार्य मानक पर लागू किया जा सकेगा।

यह अनेक अवसर प्रदान करती है, वहीं कुछ चुनौतियाँ भी उपस्थित करती है जिसमें साहित्यिक मौलिकता का प्रश्न, मानवीय संवेदना का अभाव, भाषा की सांस्कृतिक बारीकियों की उपेक्षा बौद्धिक संपदा अधिकार आदि। "पारंपरिक अर्थशास्त्र में उत्पादन के चार प्रमुख कारक श्रम, पूंजी, भूमि और तकनीक माने गए हैं। तकनीक ने हमेशा श्रम को सहयोग प्रदान किया है। प्रत्येक तकनीकी संक्रमण उत्पादकता एवं पारिश्रमिक बढ़ाने के साथ ही मांग के विस्तार और नई नौकरियों का माध्यम बना है। इससे कुछ असुविधा होती भी थी तो बस तात्कालिक ही न कि स्थायी, मगर एआई से यह रुझान पलट सकता है। पहली बार तकनीक सीधे तौर पर श्रम को प्रतिस्थापित करती दिख रही है। न केवल शारीरिक श्रम, बल्कि बौद्धिक, पेशेवर और रचनात्मक कामकाज के मामले में भी एआइ प्रभुत्व दिखा रही है।"[6]

हिंदी भाषा कृत्रिम मेधा के साथ जुड़कर भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो सकती है। इस दिशा में कुछ प्रगति हुई है और बहुत कुछ अभी शेष है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिन्दी भाषा के लिए नए रास्ते खोल सकती है और अस्तित्व को सुरक्षित रखने में योगदान दे सकती है। माइक्रोसॉफ्ट में भारतीय भाषाओं के प्रभारी श्री बालेंदु शर्मा दाधीच लिखते हैं– 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिन्दी के स्थायी भविष्य को सुनिश्चित कर सकती

है। यूनेस्को ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा था कि दुनिया की 7200 भाषाओं में से लगभग आधी इस शताब्दी के अंत तक विलुप्त हो जाएगी। अगर हम हिन्दी को विलुप्त होने वाली इन भाषाओं की सूची में नहीं देखना चाहते तो हमें कृत्रिम मेधा को खुले दिल से अपनाना चाहिए। वजह यह है कि यह प्रौद्योगिकी भाषाओं के बीच दूरियाँ समाप्त करने में सक्षम है। आज हम अंग्रेजी की प्रधानता से त्रस्त हैं और कृत्रिम मेधा तथा दूसरी आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अंग्रेजी के दबदबे से मुक्त होने में हमारी मदद कर सकती हैं।'[7]

कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन में एक बहुविषयी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह न केवल अध्ययन को वैज्ञानिक और व्यापक बनाती है, बल्कि भाषा और साहित्य को नए पाठकों और शोधकर्ताओं तक पहुँचाने में भी सहायक है, आवश्यक है कि हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता को मानव सृजनात्मकता का पूरक मानें, न कि उसका विकल्प।

सृजन की आत्मा मानव अनुभव और भावनाओं में निहित होती है, जिसे पूर्णतः तकनीक से प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता। इसलिए आवश्यक है कि हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता को मानव सृजनात्मकता हेतु पूरक माने न कि उसका विकल्प। प्रोद्योगिकी सेवक तो हो सकती है स्वामी बनने पर विनाश ही होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. डॉ. विनय प्रताप सिंह एवं डॉ. रेणुका साहू, भाषा के विकास में AI की भूमिका, Indian Streams Research Journal, अगस्त 2025
2. बालेन्दु शर्मा दाधीच, 'हिन्दी विमर्श की मुख्यधारा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता', साहित्य परिक्रमा, जुलाई–2023, पृष्ठ 21
3. वही, पृष्ठ 20
4. वही, पृष्ठ 20
5. वही, पृष्ठ 21
6. अजय कुमार, एआई के खतरों से सावधान रहें, दैनिक जागरण, संपादकीय पृष्ठ, दिनांक 12 फरवरी 2026)
7. बालेन्दु शर्मा दाधीच, 'हिन्दी विमर्श की मुख्यधारा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता', साहित्य परिक्रमा, जुलाई–2023, पृष्ठ 21
8. Vandana. (2024, September 9). हिंदी में AI का भविष्य : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के फायदे और उपयोग. Bankers Adda.
9. https://hindi.bankersadda.com/hindi-me-ai-ka-bhavishya-artificial-intelligence-ke-fayde-aur-upyog/
10. Anshu. (2024, September 14). हिंदी दिवस एआई : हिंदी को सक्षम बनाएगी तकनीक, गिरेगी भाषा की दीवार Business Standard.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 29-39

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' का विदेशी यात्रावृत्त लेखन

मीना कुमारी, शोधार्थी
डॉ. अजयपाल सिंह, शोध निर्देशक, अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग, देश भगत विश्वविद्यालय मंडी गोबिन्दगढ़, पंजाब।

सारांश :

यात्रायें मानव के लिए एक रस भरे जीवन को रूचिकर और ज्ञानवर्द्धक बनाये रखने के साथ–साथ नैराश्य भाव से बाहर लाने में भी मददगार साबित होती है। विविध स्थानों में जाकर वहां की विविध संस्कृति परम्पराओं, समाज से रूबरू होने का मौका मिलता है।

डॉ० निशंक ने सक्रिय राजनीति में रहने के बावजूद साहित्य के परिप्रेक्ष्य में अपनी विदेश यात्रायें की हैं।

1. 'जर्मनी प्रवास के दौरान डॉ० निशंक की कहानी संग्रह भीड़ साक्षी है' के अंग्रेजी संस्करण 'The Crowed bears Witnes' का विमोचन सुप्रसिद्ध लेखक डेविड फ्राउले ने किया।'
2. 'जर्मनी के हैम्बर्ग विश्वविद्यालय में बतौर विजिटिंग प्रोफेसर डॉ० निशंक ने भारतीय साहित्य संस्कृति और समाज पर व्याख्यान दिया।'
3. 'मॉरीशस में डॉ० निशंक की पुस्तक 'स्पर्श गंगा' का विमोचन मॉरीशस के तत्कालीन राष्ट्रपति सर अनिरूद्ध जगन्नाथ के हाथों हुआ।'
4. 'वर्ष 2016 में डॉ0 निशंक के कहानी संग्रह वाह जिंदगी के अंग्रेजी संस्करण 'Celebrating Life' विमोचन यूगाण्डा प्रवास के दौरान यूगाण्डा के तत्कालीन प्रधानमंत्री रूहकाना रुगाण्डा ने किया।'
5. 'नवम्बर 2016 में ही नेपाल यात्रा के दौरान निशंक की पुस्तक प्रलय के बीच का नेपाली संस्करण का विमोचन नेपाल के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री पुष्पदहल प्रचण्ड के हाथों से हुआ।'
6. 'वर्ष 2017 मई में अपनी थाईलैण्ड यात्रा के दौरान पुस्तक सपने जो सोने न दे के अंग्रेजी संस्करण का विमोचन थाईलैण्ड की राजकुमारी राजादरशी जयकुंश ने किया।'
7. 'जापान प्रवास के दौरान टोक्यो के दायतो वांका विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि पर व्याख्यान।'
8. 'इण्डोनेशिया के सृजनवीयता विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति पर व्याख्यान।'
9. 'भूटान के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री शोरिंग तोगबे ने डॉ० निशंक को साहित्य के माध्यम से लोगों के दुःख दर्द को समझने और समाजसेवा के माध्यम से समाज में खुशियां बांटने के लिए उन्हें विश्व के खुशियों के ब्रांड एंबेसडर कहकर सम्बोधित किया और उन्हें भूटान के सर्वोच्च अर्वाड 'हैप्पीनेस अवार्ड' से सम्मानित किया।'

मूल शब्द : प्रलय, खुशियों के ब्रांड एंबेसडर, नैराश्य भाव, विजिटिंग प्रोफेसर।

डॉ० निशंक का विदेशी यात्रावृत्त लेखन : विदेशी यात्रावृत्त लेखन निम्न है :

ब्रुसेल्स की यात्रा :

बेल्जियम को देखने की उत्सुकता लंबे समय से थी, इसलिए अपनी यूरोपियन यात्रा के दौरान फ्रांस का कार्यक्रम समाप्त कर मैंने ब्रुसेल्स जाने की योजना बनाई। मुझे बेल्जियम स्थित भारतीय एसोसिएशन द्वारा लंबे समय से आमंत्रित किया जा रहा था। एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री तरसेम सिंह शेरगिल भारत में मुझसे मिलकर कई बार आमंत्रण दे चुके थे।

पेरिस से ब्रुसेल्स जाने के तीन विकल्प हैं–सड़क मार्ग से, हवाई मार्ग से और रेल मार्ग से सबसे सुविधाजनक यहाँ के लिए सीधी उड़ान है। ब्रुसेल्स पेरिस उड़ान का समय 55 मिनट है। जाहिर तौर पर स्टॉपओवर के साथ कनेक्टिंगस फ्लाइट्स और सीधी उड़ानों को नॉन– स्टॉप उड़ानों की तुलना में अधिक समय लगता है। मुझे यह जानकर अच्छा लगा कि पेरिस ब्रुसेल्स के मध्य सीधी बस सेवा भी है। ये बसें हर दो घंटे में प्रस्थान करती हैं और हर रोज चलती हैं। यात्रा लगभग 4 घंटे की होती है। एक आरामदायक विकल्प के रूप में ट्रेन भी है, जो पेरिस से ब्रुसेल – ज्यूड / ब्रुसेल्स मिडी तक का सफर लगभग 1 घंटा 30 मिनट में पूरा करती है। यह ट्रेन जापान की बुलेट ट्रेन की तरह अत्यंत तेज गति से चलनेवाली आरामदायक ट्रेन है। ब्रुसेल्स पेरिस के मध्य कई गाड़ियाँ चलती हैं और इनका किराया भी अपेक्षाकृत किफायती रहता है। देखा जाए तो सर्वाधिक आरामदायक ट्रेन का सफर है।

बेल्जियम की एक समृद्ध ऐतिहासिक विरासत और संस्कृति रही है, जिसका चित्रों, संगीत, साहित्य, नक्शानवीसी और वास्तुकला में साक्षात् दर्शन कर सकते हैं। बेल्जियम भले ही सबसे छोटे यूरोपीय देशों में से एक है, फिर भी इसके पर्यटन स्थल पर्यटकों से भरे रहते हैं। ये पर्यटन स्थल इस देश के समृद्ध इतिहास और परंपराओं की कहानियाँ बयाँ करते हैं। बेल्जियम के बारे में कई अनूठी, बेजोड़ बातें हैं, जो अनायास ही सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। बेल्जियम में दुनिया की सबसे बड़ी संख्या में प्रति वर्गमीटर महल हैं। कुछ क्षेत्रों में प्रति गाँव दो महल भी हैं। इनमें से कुछ को यूनेस्को द्वारा धरोहर घोषित किया गया है। बेल्जियम में विश्व के श्रेष्ठ संस्थानों के कॉर्पोरेट मुख्यालयों की बड़ी संख्या है। बेल्जियम में समृद्ध विरासत एवं परपंराएँ, विश्वविद्यालय, स्थापत्य कला को समेटे भवन, शिक्षा के उत्कृष्ट केंद्र, युद्ध स्मारक, मनमोहक प्राकृतिक छटा के अतिरिक्त अत्यंत दोस्ताना संबंध वाले लोग हैं। प्रस्तुत पुस्तक बेल्जियम के विषय में एक हैंडबुक है जो वहाँ की संपूर्ण जानकारी कम शब्दों में, रोचक शैली में देती है।

पेरिस की सडकों पर ट्रैफिक :

बेल्जियम के लिए मेरे विशेष आकर्षण का एक बड़ा कारण यह देखना भी था कि इस छोटे देश ने कैसे अपने को यूरोप के महत्त्वपूर्ण और समृद्ध देशों में शुमार कर संपूर्ण विश्व में जीवन की तुलनात्मक रूप से उच्च गुणवत्ता के लिए ख्याति प्राप्त की है। बेल्जियम की महत्ता का कारण यह भी है कि यह उन छह देशों में से एक है, जिसने यूरोपीय संघ की स्थापना में मुख्य भूमिका निभाई। यूरोजोन एवं नाटो के संस्थापक सदस्य के रूप में बेल्जियम यूरोप की राजनीति का महत्त्वपूर्ण स्तंभ है, ब्रुसेल्स – राजधानी क्षेत्र बेल्जियम की सबसे बड़ी नगरपालिका और ऐतिहासिक केंद्र है और बेल्जियम की राजधानी है। यह यूरोपीय संघ का प्रशासनिक केंद्र है।

ब्रुसेल्स की सड़कों पर घूमते हुए वहाँ के भवनों की स्थापत्य कला काफी प्रभावित करती है। ब्रुसेल्स में आर्ट नोव्यू और आर्ट डेको इमारतों की बहुतायत है।

आर्ट नोव्यू की शैली 1890 से 1920 के काल की वास्तुकला, डिजाइन और ग्राफिक्स में पाई जाती है। बेल्जियम आर्ट नोव्यू के विकास में सबसे महत्त्वपूर्ण देशों में से एक है, जैसा कि नाम से पता चलता है, शैली को पारंपरिक डिजाइन के साथ एक व्यवधान माना मुझे बताया गया कि औद्योगिक क्रांति के पश्चात् जाता था। यह फूलों और पौधों जैसा प्राकृतिक आकृतियों से प्रेरित था। ब्रुसेल्स विज्ञान और कला के लिए एक केंद्र बन गया।

पूँजीपति वर्ग ने भवन निर्माण की इस नई शैली में पैसा लगाया और ये शानदार भवन आज भी कमोवेश ब्रुसेल्स की सड़कों को सुशोभित करते हैं। आम लोगों के घर बेहद खूबसूरत लगते हैं, भारत के विपरीत इन घरों में बहुत कम लोग दिखाई दे रहे थे, जो लोग दिख रहे थे, उनमें वृद्ध ज्यादा थे।

हमारे मेजबान द्वारा बताया गया कि यहाँ पर जनसंख्या घनत्व काफी कम है। लोग संयुक्त परिवारों में नहीं रहते। अकेले रहने में लोगों में अकसर डिप्रेशन या अवसाद की शिकायत रहती है, इसलिए यहाँ पर लोग पालतू जानवरों को ज्यादा पालते हैं। बेल्जियम की एक लंबी और समृद्ध ऐतिहासिक विरासत और संस्कृति है, जिसे चित्रों, संगीत, साहित्य, नक्शानवीशी और वास्तुकला में चित्रित किया गया है।

मुझे बेल्जियम की इस खासियत ने हमेशा से प्रभावित किया है कि वहाँ पर विश्व के श्रेष्ठ संस्थानों के कॉरपोरेट मुख्यालय की बड़ी उपस्थिति है। बेल्जियम अंतरराष्ट्रीय कॉरपोरेट जगत् की उपस्थिति को बड़ा महत्त्व देता है और उन्हें आकर्षित करने के लिए हर संभव प्रयास करता है। कॉरपोरेट मुख्यालय को आकर्षित करने में बेल्जियम कि विशेषज्ञता न केवल एक क्षेत्र को लाभान्वित करती है, बल्कि यह अपने आप में एक क्रॉस–सेक्टर गतिविधि मानी जाती है। बेल्जियम अपने यहाँ पर सकारात्मक वातावरण देकर इस उच्च मूल्यवर्धित सेवा गतिविधि का सफलतापूर्वक निर्वहन कर रहा है। जिससे न केवल बेल्जियम, बल्कि अन्य देश लाभान्वित होते हैं। ब्रुसेल्स कंपनियों के लिए अपना यूरोपीय और क्षेत्रीय मुख्यालय स्थापित करने के आकर्षक स्थान है। वैश्वीकरण के इस दौरे में यह दिलचस्प है कि अपनी रणनीतिक कुशलता से बेल्जियम ने इस दौर में कंपनियों को बेल्जियम में अपना कॉरपोरेट मुख्यालय स्थापित करने के लिए प्रेरित करने में सफलता पाई है।

चाहे परिवहन हो, ढाँचागत अवस्थापना हो, स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार हो या चाहे संचार अवसंरचना हो, बेल्जियम इन क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवाओं की पेशकश करते दिखता है। सैकड़ों अमेरिकी, जापानी और अन्य बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने पहले ही बेल्जियम में अपने यूरोपीय मुख्यालय की स्थापना की है। जनरल इलेक्ट्रिक, आई.बी.एम., टोयोटा, माइक्रोसॉफ्ट, मोनसेंटो, फाइजर और लेवीस्ट्रॉस एंड कंपनी, जैसे बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने ब्रसेल्स में यूरोपीय या क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित किए हैं। बेल्जियम यूरोपीय और क्षेत्रीय मुख्यालय है, जो दुनिया भर की बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा स्थापित किया गया है। हमारे मेजबानों ने हमें बताया कि प्रसिद्ध शहर जेंट शहर ब्रसेल्स से ई– 40 के माध्यम से एक घंटे की ड्राइव है। समय के अभाव के कारण हम यहाँ नहीं जा पाए। प्रसिद्ध जेंट विश्वविद्यालय इसी स्थान पर है, जहाँ पर काफी भारतीय बच्चे पढ़ते हैं। शहर एक आकर्षक सांस्कृतिक केंद्र है, जो अपने उत्कृष्ट शैक्षणिक संस्थानों के लिए जाना जाता है। यहाँ के लोग गर्मजोशी के साथ मेहमान नवाजी के लिए एवं चिंतामुक्त व्यवहार के लिए जाने जाते हैं।

बेल्जियम-फ्रांस सीमा पर प्रथम विश्वयुद्ध का स्मारक :

सुंदर क्रूज और जेंट के विपरीत पर्यटकों की भीड़ के साथ ब्रुसेल्स बेल्जियम का मुख्य सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक केंद्र है, जो शहर को अन्य शहरों की तुलना में अधिक व्यस्ततम बनाता है। बेल्जियम के शहरी जीवन को दरशाते इसके शानदार रेस्तराँ और कैफे संस्कृति की एक झलक देते हैं। संग्रहालयों और कला दीर्घाओं के साथ ही कलात्मक स्थलों के साथ ब्रुसेल्स आगंतुकों को बाँधे रखने में सक्षम है। ब्रुसेल्स में घूमने के लिए कुछ बेहतरीन जगहों में पुराने शहर के क्वार्टर पुरानी वास्तुकला के कुछ अद्भुत अवशेष आपका ध्यान बरबस अपनी ओर आकर्षित करते हैं। ब्रुसेल्स में घूमने के लिए कुछ बेहतरीन स्थानों में निश्चित रूप से कुछ विश्व स्तरीय संग्रहालयों, कला दीर्घाओं और पुराने शहर के क्वार्टर हैं, जो पुरानी समृद्ध वास्तुकला के अवशेष है।

विश्वयुद्ध में शहीद भारतीय सैनिकों का शिलापट्ट :

बेल्जियम में भारतीयों की संख्या के बारे में बताया गया कि यह बीस हजार से कुछ ज्यादा है, अधिकतर लोग पेशेवर हैं, विशेषकर आई.टी. के क्षेत्र में काफी लोग यहाँ पर हैं। पहले के मुकाबले विद्यार्थियों की अच्छी–खासी संख्या यहाँ पर है। गुजरात के पालनपुर जिले के प्रवासियों के एक वर्ग ने डायमंड व्यवसाय में यहूदी समुदाय के साथ काम करने के लिए एंटवर्प के बंदरगाह शहर में प्रवेश किया, आखिरकार उन्होंने अपना स्वयं का काम पूरी तरह से जमा लिया।

मेरे मित्रों में से दो सज्जन एंटवर्प से आए थे। मुझे बताया गया कि बड़ी संख्या में यहाँ पर हीरे के कारोबार में भारतीय लोग लगे हुए हैं। बेल्जियम में हीरे का व्यापार भारतीयों के नियंत्रण में है। यह भी बताया गया कि इस व्यापार में गुजराती लोगों का वर्चस्व है। इतने दूरदराज के देश में अपने लोगों की श्रेष्ठता देखकर खुशी होती है।

अशोक चिह्न के साथ :

जब हम एंटवर्प में हीरा उद्योग में गुजरातियों के बारे में बात करते हैं तो वास्तव में सिर्फ दो समुदायों का जिक्र करते हैं, जो पूरा व्यापार चला रहे हैं – पालपुरी जैन और कटियावाड़ी पटेल। एंटवर्प बेल्जियम का दूसरा सबसे बड़ा शहर और दुनिया की हीरे की राजधानी है। दुनिया भर में बेचे जानेवाले हीरों में से आधे से अधिक इस शानदार शहर से होकर गुजरते हैं। एंटवर्प फ्लैंडर्स में सबसे अधिक आबादी वाला शहर है और इसका बंदरगाह यूरोप में दूसरा सबसे बड़ा बंदरगाह है। एंटवर्प के हीरे के व्यापार को लंबे समय से यहूदी समुदाय द्वारा नियंत्रित किया गया था, जो बड़े पैमाने पर उस समय रूढ़िवादी समुदाय माना जाता था; हालाँकि दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान शहर की पैंसठ प्रतिशत यहूदी आबादी खत्म हो गई थी, लेकिन जो लोग रह गए थे, वे वहाँ से भाग गए। हजारों मील दूर आकर गुजराती लोग कैसे इस व्यापार में सफल हुए इसका मुख्य श्रेय उनकी मेहनत, आपसी सहयोग, विश्वसनीयता और काम में महारथ को दिया जा सकता है। प्रतिस्पर्धा को कम करने के लिए क्रेडिट पर लंबी अवधि की खरीदारी की पेशकश, गुजरातियों को एंटवर्प में अपना वर्चस्व बनाने में सहायक रही।

भूटान की त्रिदिवसीय अविस्मरणीय यात्रा :

भूटानी अपनी संस्कृति और आतिथ्य के सार को खूबसूरती से दर्शाती है। उनकी भाषा में अलविदा शब्द का अभाव संबंध और एकता पर उनके जोर को दर्शाता है। लेकिन गहन तीन दिवसीय यात्रा ने निषंक के दिल

और दिमाग पर एक अमिट छाप छोड़ी, जो हिमालय के लोगों में निहित सादगी, प्रेम, स्नेह और गहरे सम्मान को दर्शाती है। आपका अवलोकन कि भूटानी लोग भारतीय हिमालय के निवासियों के समान गुणों को अपनाते हैं, इस अद्वितीय क्षेत्र में चलने वाली सादगी, ईमानदारी और अंतरंगता के सामान्य धागे को उजागर करते हैं। जैसे ही आपने पारो से थिम्पू तक शांत पारोचु नदी के किनारे यात्रा की, राजसी हिमालय के पहाड़ों के बीच सुरम्य परिदृश्य और पारंपरिक भूटानी वास्तुकला के मिश्रण ने एक मनोरम पृष्ठभूमि प्रदान की, जो वास्तव में आपको भूटान की सुंदरता और संस्कृति में डुबो देती है। आपका अनुभव इस क्षेत्र के आकर्षण और यहां के लोगों की वास्तविक गर्मजोशी का प्रमाण है।

भूटान में पारो हवाई अड्डे की चुनौतियों और विशिष्टता का आपका विस्तृत विवरण वास्तव में आकर्षक है। दिल्ली से सुबह–सुबह प्रस्थान और उतरने पर हिमालय क्षेत्र की धूप की सुंदरता के बीच का अंतर एक मनोरम छवि है। दुनिया के सबसे कठिन और खतरनाक हवाई अड्डों में से एक के रूप में पारो हवाई अड्डे की प्रतिष्ठा वहां की किसी भी यात्रा में रोमांच की भावना जोड़ती है।

अपनी भूटान यात्रा के दौरान, मेने देखा कि दिल्ली–देहरादून की तुलना में जलवायु अपेक्षाकृत ठंडी थी, जिसने आपको एक गर्म कप चाय का आनंद लेने के लिए प्रेरित किया होगा। भूटान के विदेश सेवा अधिकारी श्री सोनम के साथ आपकी बातचीत तब जारी रही जब आप थिम्पू में 'ली मेरिडियन' होटल के लिए रवाना हुए, जो शहर के केंद्र में स्थित है। आपका स्वागत भूटान की समृद्ध परंपराओं के अनुरूप किया गया।

अपनी छोटी आबादी के बावजूद, भूटान महत्वपूर्ण रणनीतिक महत्व रखता है। हिमालय क्षेत्र के अन्य देशों की तरह, भूटान की सांस्कृतिक विरासत में एक मंत्रमुग्ध कर देने वाली अपील है जो पूरी दुनिया का ध्यान खींचती है। यह सांस्कृतिक समृद्धि और रणनीतिक स्थान भूटान को एक अद्वितीय और आकर्षक गंतव्य बनाता है।

भूटान में बुद्ध डोर्डेन्या की मूर्ति की यात्रा एक उल्लेखनीय अनुभव रही है। यह प्रतिमा बहुत महत्व रखती है, क्योंकि इसे भूटान के चौथे राजा जिग्मे सिंग्ये वांगचुक के साठवें जन्मदिन के उपलक्ष्य में स्थापित किया गया था। यह प्रतिमा अपने आप में विस्मयकारी है, यह 51.5 मीटर ऊंची दुनिया की सबसे बड़ी बौद्ध प्रतिमा है। जो बात इसे और भी प्रभावशाली बनाती है वह यह है कि इसमें कांस्य से बनी भगवान बुद्ध की 1.25 लाख से अधिक मूर्तियाँ हैं, जिन पर सोने की परत लगाई गई है। अपनी यात्रा के दौरान आपने देखा कि कई विदेशी और भूटानी लोग अपने बच्चों के साथ भगवान बुद्ध की इस जीवित प्रतिमा की बड़ी श्रद्धा से परिक्रमा कर रहे थे। तेज़ हवाओं और ठंडे मौसम के बावजूद लोगों का उत्साह कम नहीं हुआ। आंतरिक मंदिर, एक ही डिजाइन में भगवान बुद्ध की हजारों मूर्तियों से सुसज्जित, वास्तव में एक उल्लेखनीय दृश्य रहा होगा। इतनी विशाल प्रतिमा के निर्माण और फिर उसके अंदर भगवान बुद्ध की एक लाख पच्चीस हजार से अधिक प्रतिमाएं रखने के कार्य की विशालता मानव शिल्प कौशल और समर्पण का प्रमाण है। इस विशाल बौद्ध प्रतिमा के निर्माण के लिए चीन के साथ सहयोगात्मक प्रयास इस उल्लेखनीय परियोजना में एक अंतरराष्ट्रीय आयाम जोड़ता है, जिससे सांस्कृतिक आदान–प्रदान और सहयोग के मामले में भूटान और चीन के बीच संबंध और मजबूत होते हैं। भूटान में बुद्ध दोरदेन्या की मूर्ति की आपकी यात्रा एक बहुत ही मार्मिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध अनुभव रही है, जहाँ आपने मूर्ति की भव्यता और इसे देखने आने वाले लोगों की गहन भक्ति दोनों देखी है।

बुद्ध दोरदेन्या की प्रतिमा :

इस मूर्ति के भागों को चीन में निर्मित कर भूटान लाया गया। यह मूर्ति पूरे थिंपू शहर को आशीर्वाद देती

प्रतीत होती है। इस स्थान को बौद्धा डोरमा भी कहा जाता है। मुझे बताया गया कि महान् योगी सोनम सांगपो ने इस क्षेत्र में एक बौद्ध प्रतिमा की बात कही थी। ऐसी मान्यता है कि गुरु पदमसंभव ने भी इस मूर्ति की चर्चा आठवीं शताब्दी में की थी। इसके पश्चात् हम थिंपू के प्राचीनतम मंदिर चांग गंश्वका मठ गए। बारहवीं शताब्दी में बना यह मंदिर एवं इसका परिसर अपनी स्थापत्य कला, नैसर्गिक सौंदर्य के कारण विख्यात है। इस स्थान पर माता–पिता अपने नवजात शिशुओं को लेकर आते हैं और उनका नामकरण करते हैं। इस मंदिर के अधिष्ठाता देव तामद्रिन हैं। मंदिर के गर्भगृह के भीतर बच्चों के साथ माता–पिता जा सकते हैं, किंतु सामान्य लोगों के लिए यहाँ के गर्भगृह में प्रवेश वर्जित है। ऐसी मान्यता है कि तिब्बत के लामा फाजो द्रकगोम शिपगो ने बारहवीं शताब्दी में इसकी स्थापना की। इस मंदिर के भीतर का डिजाइन समृद्ध भूटानी काष्ठकला का नमूना प्रस्तुत करता है। मंदिर के बाहर परिसर में खड़े होकर जहाँ आप मंदिर की स्थापत्य कला की सुंदरता निहार सकते हैं, वहीं ऊँची पहाड़ियों से घिरे परिसर के बीच से पूरे थिंपू शहर का सुंदर नयनाभिराम नजारा भी देख सकते हैं।

मंदिर के पश्चात् हम थिंपू के राष्ट्रीय स्मारक पहुँचे। यह भूटान के तीसरे राजा ड्यूक ग्यालपो जिग्मे दोरजी वांगचुक का स्मारक है। इस स्मारक को एक स्तूप का आकार दिया गया है, जहाँ पर तीसरे नरेश की फोटो और उनकी शाही पोशाक देखी जा सकती है। वर्ष 2008 में इस स्थान का पुनरुद्धार किया गया। भारतीय सेना के अस्पताल के निकट स्थित यह स्मारक थिंपू शहर के बीचोबीच सन् 1974 में निर्मित किया गया। भूटान के तीसरे नरेश को आधुनिक भूटान का जनक कहा जाता है। जब हम वहाँ पहुँचे तो बड़ी संख्या में भूटान के लोग हाथ में माला लिये हुए मन–ही–मन मंत्रों का जाप करते हुए इस स्मारक की परिक्रमा कर रहे थे। अत्यंत श्रद्धाभाव से बैठे अनेक लोग परिसर में जप कर रहे थे, तभी चीफ प्रोटोकॉल का फोन आया कि हमें डोचुला पास अवश्य जाना चाहिए। थिंपू से पुनारवा सड़क पर स्थित यह सुरम्य स्थल अपने 108 स्तूपों के लिए जाना जाता है। ड्रक वाग्यांल चोर्टन कहे जानेवाले इन स्तूपों का निर्माण राजमाता आशी डोरजी वांगमो वांगचुक ने किया। शाही बोटेनिकल गार्डन के निकट स्थित इन स्तूपों के अग्र भाग में दोचुला ड्रक वाग्यांल उत्सव का आयोजन किया जाता है। यहाँ पर चौथे भूटान नरेश जिग्मे सिंगे वांगचुक के सम्मान में एक मंदिर का निर्माण किया गया है।

ग्यालपो दोरजी स्मारक :

सर्द हवाओं के बावजूद कई पर्यटक इस स्थान पर प्राकृतिक सौंदर्य के बीच इस आध्यात्मिक केंद्र को देखकर मंत्रमुग्ध थे। कई श्रद्धालु हाथ जोड़कर विनयपूर्वक स्तूपों की परिक्रमा में लीन थे। घूमते–घूमते सायं साढ़े छह बज चुके थे। हमने वापस होटल जाने का निर्णय किया। रास्ते में हमारे प्रोटोकॉल अधिकारी बताते रहे कि किस प्रकार भूटान के लोगों के जीवन में अध्यात्म एवं धर्म का महत्त्व है। जीवन के प्रत्येक संस्कार को धर्म के अनुसार अनुष्ठान पूर्वक संपन्न करना उनकी प्राथमिकता होती है। शाम को एक घंटे बाद हम होटल ली मेरिडियन लौट आए।

रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट का व्याख्यान, भूटान राष्ट्रीय एसेंबली के अध्यक्ष का रात्रिभोज, स्पर्श गंगा कार्यक्रम, सभी कुछ होना था, इसलिए अगले दिन सुबह आठ बजे मिलने की बात कहकर प्रोटोकॉल अधिकारी से विदा ली। भूटान की यात्रा का विवरण आपके द्वारा खोजे गए स्थानों के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व को उजागर करता है। ठंडी हवाओं के बावजूद, पर्यटक और श्रद्धालु इन स्थानों की शांत सुंदरता और

आध्यात्मिकता से समान रूप से मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। रास्ते में, आपके प्रोटोकॉल अधिकारी ने भूटानी लोगों के जीवन में आध्यात्मिकता और धर्म के गहरे महत्व के बारे में जानकारी प्रदान की जीवन के हर पहलू को अपनी धार्मिक मान्यताओं के अनुसार अनुष्ठानिक रूप से संचालित करने की उनकी प्रतिबद्धता भूटान की मजबूत सांस्कृतिक और आध्यात्मिक नींव का प्रमाण है।

भूटान नरेश से मेरी चर्चा हिमालय से जुड़े मुद्दों पर हुई। हम दोनों इस बात से सहमत थे कि हिमालय संसाधनों से युक्त होकर भी गरीबी की मार झेल रहा है, जिसके लिए मानव संसाधन का विकास आवश्यक है। नरेश ने भूटान में हिमालयी विश्वविद्यालय की स्थापना करने की आवश्यकता पर जोर दिया। सबसे अच्छी बात यह है कि भूटान नरेश भारत में भी उतने ही लोकप्रिय हैं, जितने कि वे अपने देश में हैं। भूटान के चौथे नरेश जिग्मे अपने देशवासियों के लिए एक आदर्श हैं। संपूर्ण भूटान में नरेश और उनकी पत्नी के चित्र उनके आदर्श को इंगित करते हैं।

मेरी भूटान नरेश से कई द्विपक्षीय मुद्दों पर बात हुई। उन्होंने इस बात पर सहमति जाहिर की कि हिमालय क्षेत्र की आवश्यकता बिल्कुल अलग है। हिमालय के समुचित नियोजन के लिए यह आवश्यक है कि विकास के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण का ध्यान रखकर एक समन्वय स्थापित किया जाए। उन्होंन उनकी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि हिमालय के लोगों में प्रखरता, शालीनता, पराक्रम, विनम्रता के साथ कर्तव्य के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव है। उन्होंने कहा कि हिमालय के लोग अपनी विशिष्ट कार्यशैली के लिए जाने जाते हैं। भूटान नरेश ने इस बात पर चिंता प्रकट की कि युवा पीढ़ी अपने सांस्कृतिक मूल्यों को तिलांजलि देकर पश्चिमी रंग–ढंग से प्रभावित हो रही है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हम अपनी पहचान को न खोकर अपने आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों की रक्षा करें। नरेश ने यह भी बताया कि भूटान का बौद्ध धर्म हिंदू और बौद्ध धर्म का सुंदर समावेश है। उन्होंने मुझे बताया कि यहाँ भी भगवान् शंकर, माँ पार्वती, भगवान् विष्णु की पूजा की जाती है। उन्होंने विश्व परिदृश्य में बढ़ते भारतीय प्रभाव पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ अपनी हाल की मुलाकातों का उल्लेख किया।

मैं अपने साहित्य के विषय में अकसर कहा करता हूँ कि टूटे–फूटे शब्दों के माध्यम से मैं अपने अनुभव अपने लोगों के बीच बाँटने का प्रयत्न करता हूँ। अनुभवों की इस यात्रा को अपने पाठकों के साथ साझा करते हुए अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति होती है। इन अनुभवों में विभिन्न पात्रों से पाठक अपने को जुड़ा महसूस करते हैं, यह मेरे लिए संतोष की बात है। मेरी बहुत रचनाएँ हिमालय क्षेत्र के जनजीवन, वहाँ की चुनौतियों एवं वहाँ के संघर्ष के आसपास केंद्रित रहती हैं, ऐसे में हिमालय से किसी भी तरह का संबंध रखनेवाला व्यक्ति स्वतः ही मेरी रचनाओं से जुड़ाव महसूस करता है। इस दृष्टि से सारा हिमालय मुझे अपना घर लगता है और हिमालय से जुड़ा हर व्यक्ति अपने वृहद् परिवार का सदस्य लगता है।

भारत–भूटान : साझी संस्कृति :

निशंक जी ने 'साझी संस्कृति से जुड़े भूटान और भारत' इस व्याख्यान में उन्होंने भारत और भूटान के सदियों पुराने संबंधों का उल्लेख किया। जब गुरु रिंपोचे या पद्मसंभव आठवीं सदी के आस–पास भूटान की यात्रा पर आए थे तो उन्होंने भूटान में बौद्ध धर्म की नींव रखी थी। भूटान में गुरु पद्मसंभव को गुरु रिंपोचे के नाम से जाना जाता है। भूटान में आस्था व अध्यात्म का कोई केंद्र है तो वह गुरु रिंपोचे को माना जा सकता

है। हिंदू बौद्ध धर्म की साझी विरासत का उल्लेख करते हुए उन्होंन 'सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः' के मंत्र को विश्व कल्याण की भावना बतलाया।

उन्होंने बताया कि किस प्रकार हम समूचे विश्व को अपना परिवार मानते हैं। 'वसुधैव कुटुंबकम' के विचार को चरितार्थ करते हमने संपूर्ण विश्व को अपने परिवार के रूप में देखा है। भगवान् बुद्ध के अहिंसा के पाठ को हमारे राष्ट्रों ने पूरे विश्व में फैलाया है। हमारी साझी संस्कृति हमें प्रकृति के संरक्षण तथा संवर्धन के लिए प्रेरित करती है। हम पीपल, तुलसी, चंदन, आम आदि वृक्षों की पूजा करते हैं, तो वहीं हम गाय की भी पूजा करते हैं।

उन्होंने कहा कि हमारी साझी संस्कृति विश्व में हमें अद्वितीय स्थान प्रदान करती है। उन्होंन बताया कि हजारों वर्ष पुरानी हमारी संस्कृति अजर–अमर है। भारतीय उपमहाद्वीप में चार धर्मों ने जन्म लिया, जिसमें सिख, हिंदू, बौद्ध, जैन प्रमुख हैं। भारतीय रीति–रिवाज, भारतीय दर्शन, भारतीय कला, भारतीय खान–पान, भारतीय परिधान का आज पूरे विश्व में डंका बजता है। उन्होंन यह भी बताने का प्रयास किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दावोस में विश्व आर्थिक फोरम में विश्व के सम्मुख तीन महत्त्वपूर्ण चुनौतियों को इंगित किया। इन चुनौतियों में मौसम परिवर्तन, पर्यावरण संरक्षण और आतंकवाद प्रमुख हैं। उन्होंन बताने का प्रयास किया कि किस प्रकार हिमालय के लोग अपनी सोच से, दर्शन से, मेहनत से, क्रियाकलापों से तथा अपने पराक्रम से इन चुनौतियों से निपटने का रास्ता बता सकते हैं।

उन्होंने कहा कि भूटान हिमालयी क्षेत्र के लोगों के विकास के लिए प्रतिबद्ध है और भविष्य में भी कृतसंकल्प रहेगा। अत्यंत सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुई इस मुलाकात के पश्चात् हम दिल्ली के लिए रवाना हो गए। डॉ निशंक ने अपने भूटान के यात्रावृतांत के माध्यम से भूटान और भारत के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विषेषताओं का वर्णन किया है।

इंडोनेशिया की अविस्मरणीय यात्रा :

डॉ निशंक इस प्राचीन शहर की समृद्ध संस्कृति और परंपराओं का पता लगाने के लिए यात्रा पर निकले हैं, यहॉ पर अतिथियों का स्वागत हर्षोल्लास से किया जाता है। मानव सभ्यता और परंपराओं की जड़ों की खोज में उनकी वास्तविक रुचि को देखना हृदयस्पर्शी है, विशेषकर उस दुनिया में जो अक्सर भौतिकवाद से प्रेरित लगती है। हवाई अड्डे पर गरुड़ शब्द से सजे इंडोनेशियाई एयरलाइंस के विमानों की उपस्थिति देश की संस्कृति और विरासत से जुड़ाव का प्रतीक है, जो आपको गर्व और खुशी से भर देती है। विदेश यात्रा करते समय राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक सराहना की यह भावना वास्तव में प्रेरणा का स्रोत है।

सबसे अच्छी बात मुझे यह लगी कि सैकड़ों डिजाइनवाली ये कमीजें अत्यंत सस्ते दामों में उपलब्ध थीं। सभी ने कमीजें खरीदीं और रास्ते में इंडोनेशिया के भोजन के लिए सब लोग एशियन भोजन के रेस्तराँ में दोपहर भोज के लिए रुके। इंडोनेशिया के खाने में मांस और समुद्री उत्पाद की भरमार होती है। सबसे रंगीन, मसालेदार और विविध प्रकार के भोज्य पदार्थों के लिए मशहूर इंडोनेशिया के भोजन में चाव (रुचि) का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। कोकोनट मिल्क, तेल का ज्यादा–से–ज्यादा उपयोग एवं आलू–टमाटर, मछली सेलरी, लीक, शेलेट्स, हरी सब्जियाँ, उबले आलू, सोया बीफ एवं अंडे का यहाँ के भोजन में बहुतायत में प्रयोग होता है।

प्रोफेसर यूलिया के साथ यात्रा न केवल जानकारीपूर्ण थी बल्कि उनके विश्वविद्यालय और बाली की आगामी यात्रा के बारे में उत्साह से भरी थी। अपने विश्वविद्यालय की खूबियों को गिनाने में उनका वास्तविक

उत्साह एक युवा छात्र की याद दिलाता था रास्ते में हम लोगों ने उनके विश्वविद्यालय के भवनों को भी देखा, जो कि शांत व प्रेरक विश्वविद्यालय परिसर का भान स्वतः करा रहे थे। प्रोफेसर यूलिया ने कहा कि हम लोगों को बाली अवश्य जाना चाहिए था, क्योंकि वहाँ की सुंदरता, संस्कृति और वहाँ का वैभव अद्वितीय है। उन्होंने बताया कि देनपसार हम जहाज से जा सकते हैं। देनपसार बाली की राजधानी है और सबसे बड़ा शहर होने के कारण यहाँ काफी रौनक रहती है। विभिन्न संस्कृतियों के समागमवाला यह शहर बाली का मुख्य द्वार और मंदिर, संग्रहालयों, महलों और उद्यानों का शहर है। देनपसार शहर ग्राम्य और शहरी जीवन की झलक प्रस्तुत करता है। उन्होंने वहाँ के दर्शनीय स्थलों की चर्चा भी की। बादुगराजा बाली राष्ट्रीय संग्रहालय, पुरा जगतनाथ पुरा, सेंट जोसफ चर्च और एलन पापुतान इस शहर के मुख्य दर्शनीय स्थल हैं। शहर में एक ओर आप जहाँ सारे सरकारी महकमों को देख सकते हैं तो दूसरी ओर मॉल और आधुनिक स्टोर हैं।

परंपरागत मंदिरों के बीच बाली के दक्षिण में स्थित देनपसार पुरा बलानजोंग मंदिरों की छटा देखते ही बनती है। शहर के संग्रहालयों में आप बाली की जीवन शैली के जीवंत दर्शन कर सकते हैं। देनपसार की जनसंख्या दस लाख के आसपास है। सत्तर प्रतिशत हिंदुओं के साथ यहाँ चौबीस प्रतिशत मुस्लिम, सात प्रतिशत ईसाई और दो प्रतिशत बौद्ध हैं।

उन्होंने अपने इंडोनेशिया के यात्रावृतांत में बताया है कि इंडोनेशिया का सबसे बड़ा शहर जकार्ता, एक आधुनिक शहर होने के साथ–साथ पारंपरिक शहर भी है। यहाँ पर आपको बड़ी–बड़ी अट्टालिकाओं के बीच मस्जिदें, डच उपनिवेशवादी भवन और परंपरागत दुकानें दिखाई देंगी। जावा द्वीप के उत्तर–पश्चिम तट पर स्थित इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता शहर का पूरा क्षेत्र विशेष राजधानी जकार्ता क्षेत्र कहलाता है। इंडोनेशिया की संस्कृति और कला व आर्थिकी का केंद्र यह शहर उच्च जीवन स्तर और बेहतर सुविधाओं के लिए जाना जाता है। मुझे यह भी मालूम हुआ कि जकार्ता आर्थिक औद्योगिक क्षेत्र में तेजी से बढ़ रहा है। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि यहाँ क्वालालांपुर, बीजिंग और बैंकॉक की अपेक्षा ज्यादा विकास दर देखी गई है।

जकार्ता के विशेष राजधानी क्षेत्र में पुराना कोटा टुउवा नाम से परंपरागत ऐतिहासिक शहर है और यहाँ पर चीनी आबादी अधिक देखने को मिलती है। यहाँ पर जावा, माले, चीनी, अरबी, हिंदी और यूरोपियन संस्कृतियों का सुंदर मिश्रण देखने को मिलता है। कुल मिलाकर जकार्ता विभिन्न संस्कृतियों का संगम है। उन्होने अपने व्याख्यान में हिमालय, गंगा, पर्यावरण, भारतीय संस्कृति और सामाजिक जीवन के कई आयामों को विस्तार से विद्यार्थियों के सम्मुख रखा। मैंने सनातन धर्म की उत्पत्ति और रामायण–महाभारत का संदर्भ देते हुए उसे इंडोनेशिया और भारत के संबंधों से जोड़ा। मुझसे विश्व में इस्लामिक कट्टरता, रोहिंग्या रिफ्यूजी, धार्मिक उन्माद व युवाओं की भूमिका पर कई सवाल पूछे गए और उन्होने सबको संतुष्ट करने का प्रयास किया।

उन्हाने अपने भाषण में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर व श्री देवनतारा के भारतीय और इंडोनेशिया की स्वतंत्रता यात्रा का स्मरण करते हुए दोनों महानुभावों के शिक्षा क्षेत्र में योगदान का स्मरण किया। उन्हे बेहद प्रसन्नता थी कि इंडोनेशिया सरकार एवं भारत सरकार द्वारा गुरुदेव की यात्रा की 90वीं वर्षगाँठ पर इतने शानदार कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और श्री देवनतारा की मित्रता की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि इन दोनों की दूरदृष्टि का परिणाम है कि आज सर्जनवीयता और शांतिनिकेतन विश्वविद्यालय इंडोनेशिया और भारत में

अपनी उत्कृष्ट षैक्षणिक उपलब्धियों के लिए जाने जाते है।

बोरोबुदुर मंदिर :

डॉ निशंक ने अपनी पुस्तक में बोरोबुदुर मंदिर का भी वर्णन किया जो कि शैलेंद्र राजवंश द्वारा निर्मित यह बोरोबुदुर मंदिर बौद्ध जवाई स्थापत्य कला का न केवल जीता–जागता वैभवपूर्ण नमूना है, बल्कि हिंदू धर्म, जिसमें पूर्वजों की पूजा की जाती है एवं बौद्ध अवधारणा के मिश्रित रूप का प्रतीक है। बौद्ध दर्शन के तीन प्रतीकात्मक स्तरों की व्याख्या करता यह विहार उस समय में बौद्ध मंदिर, विहार और शिक्षा केंद्र का हिस्सा लगता है।

भारत के पूर्व उप–प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी जी ने जब विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लिया था तो उस समय उन्होंने इंडोनेशिया पर भारतीय संस्कृति के प्रभाव के विषय में बताया था। उन्हें यह भी पता चला है कि बाली में घटोत्कच की मूर्ति स्थापित की गई है। उन्हें यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि इंडोनेशिया में घटोत्कच इतना लोकप्रिय है। उन्हें लगता है कि भारत में सब घटोत्कच को मात्र भीम और हिडिंबा के पुत्र के रूप में याद करते हैं, परंतु घटोत्कच की वीरता, शौर्य, पराक्रम, मातृ–पितृ भक्ति और कर्तव्यपरायणता को बहुत कम लोग जानते हैं, लेकिन इंडोनेशिया में घटोत्कच की पूजा की जाती है।

बोरोबुदुर बौद्ध मंदिर, योगयकार्ता नगर से लगभग 40 किलोमीटर दूर और सुरकर्ता नगर से 86 किलोमीटर दूर स्थित है। यह दो जुड़वाँ ज्वालामुखियों, सुंदोरो – सुम्बिंग और मेर्बाबु– मेरापी एवं दो नदियों – प्रोगो और एलो के बीच एक ऊँचे क्षेत्र में स्थित है। इस क्षेत्र को 'केदू का मैदान' भी कहा जाता है। स्थानीय मिथकों एवं दंतकथाओं के अनुसार केदू का मैदान जावा के पवित्र स्थलों में से एक है।

इस क्षेत्र की उच्च कृषि उर्वरता के कारण इसे 'दि गार्डन ऑफ जावा' अर्थात् 'जावा का बगीचा' भी कहा जाता है। 20वीं सदी में मरम्मत कार्य के दौरान यह पाया गया था कि इस क्षेत्र के तीनों बौद्ध मंदिर बोरोबुदुर, पावोन और मंदुत एक सीधी रेखा में स्थित हैं। ऐसा माना जाता है कि तीनों मंदिर किसी धार्मिक कारण से एक सीध में बनाए गए थे। विश्व के अनेक स्थानों पर ऐसे पिरामिड पाए गए हैं, जो एक सीधी रेखा में स्थित हैं और यह माना जाता है कि ये पिरामिड धरती के मनुष्यों ने नहीं बनाए थे, अपितु दूसरे ग्रहों से धरती पर आए परग्रही इनसानों ने बनाए थे।

डॉं निशंक के इंडोनेशिया के यात्रावृतांत में गुमनामी के अँधेरे में गुम बोरोबुदुर का वर्णन :

928 ई. से 1006 के बीच मेरापी पहाड़ में श्रृंखलाबद्ध ज्वालामुखियों फूट पड़ने के कारण राजा मपु सिनदोक ने माताराम राजवंश (इसे संजय राजवंश भी कहते हैं) की राजधानी को पूर्वी जावा में स्थानांतरित कर दिया। इस कारण बोरोबुदुर का क्षेत्र निर्जन हो गया और यह मंदिर कई सदियों तक ज्वालामुखी राख तथा जंगल के बीच छिपा रहा। इस स्मारक का अस्पष्ट उल्लेख मध्यकाल में 1365 ई. के लगभग मधु प्रपंचा की पुस्तक 'नगरकरेतागमा' में मिलता है, जो कि मजापहित काल में लिखी गई। इसमें बुदुर में विहार होने का उल्लेख है। मनुष्यों की दृष्टि से ओझल हो जाने के बावजूद यह स्मारक लोककथाओं में जीवित रहा और इसके साथ कई दंतकथाएँ जुड़ गईं।

14वीं सदी में जावा में हिंदू राजवंश का पतन हो गया, जिसके कारण जावाई लोगों को इस्लाम धर्म स्वीकार करना पड़ा। इस कारण 14वीं शताब्दी में इस द्वीप पर समस्त निर्माण कार्य बंद हो गए। अधिकतर लोग मुसलमान बन चुके थे तथा बचे हुए बौद्ध जान बचाकर बाली द्वीप तथा भारत आदि देशों की ओर भाग गए थे।

इसलिए बोरोबुदुर की सुध लेने वाला भी कोई नहीं रहा। इसी बीच जावा द्वीप पर कई राजनीतिक उतार–चढ़ाव आए और सत्ताओं के परिवर्तन होते रहे।

18वीं सदी के दो प्राचीन बाबाद (जावाई वृत्तांत) में इस स्मारक के साथ जुड़ी हुई असफलताओं की कथा का उल्लेख मिलता है। बाबाद तनाह जावी (अर्थात् जावा का इतिहास) के अनुसार 1709 ई. में माताराम साम्राज्य राजा पकुबुवोनो प्रथम के खिलाफ विद्रोह करना मासडाना के लिए घातक सिद्ध हुआ। इसमें लिखा है कि रेडी बोरोबुदुर पहाड़ी की घेराबंदी की गई। इसमें विद्रोहियों की पराजय हुई तथा राजा ने उन्हें मौत की सजा सुनाई। बाबाद माताराम (माताराम साम्राज्य का इतिहास) में बोरोबुदुर बौद्ध स्मारक को 1757 ई. योगयकार्ता सल्तनत के युवराज मोंचोनागोरो के दुर्भाग्य से जोड़ा गया है। इसके अनुसार स्मारक में प्रवेश निषेध होने पर भी वे एक छिद्रित स्तूप के भीतर छिप गए। अपने महल में वापस आने के बाद वे बीमार हो गए और अगले दिन उनका निधन हो गया। सोक्मोने नामक एक लेखक ने 1976 ई. में लौकिक मत का उल्लेख करते हुए लिखा है कि जब 15वीं सदी में जावा के लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया तो इस मंदिर को उजाड़ना आरंभ कर दिया गया। डॉ निशंक को इंडोनेशिया की यात्रा से काफी कुछ सीखने को मिला, वहीं इंडोनेशिया के प्रति उनकी धारणा में परिवर्तन आया। भारत से हजारों मील जुड़ा यह मुस्लिम राष्ट्र हमारे दिल के इतने करीब है, यह मैंने इस यात्रा में ही सीखा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. अरुणा, नंदकिशोर ढौंडियाला, ''डॉ0 'निशंक' का रचना संसार'', डायमण्ड पोकेट बुक्स, 2006, पृष्ठ 26–35।
2. टीमयुथउत्तराखंड, ''हिमालय का महाकुम्भः नंदा देवी राज जात'', फेयर फेस्टिवल्स, 2018, पृष्ठ 1–3।
3. सुनीता मोहन लखेरा, ''स्पर्श गंगा धरती का स्वर्ग उत्तराखण्ड'', 2020, पृष्ठः 1–4।
4. डॉ रमेष पोखरियाल, ''निषंक' केदारनाथ आपदा की सच्ची कहानियां'', अपनी बात, पृ0 8।
5. वन्दना, ''रमेश पोखरियाल 'निशंक' के काव्य में राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता चेतना'', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 9(2), 2019, पृष्ठः 1–11।
6. डॉ0 रमेश पोखिरियाल निशंक,''चॉकलेट की वैश्विक राजधानी, बेल्जियम'', प्रभात प्रकाशन, 2021,पृष्ठ 9
7. डॉ0 रमेश पोखिरियाल निशंक, ''चॉकलेट की वैश्विक राजधानी, बेल्जियम'', प्रभात प्रकाशन, 2021, पृष्ठ 10।
8. डॉ0 रमेश पोखिरियाल निशंक, ''चॉकलेट की वैश्विक राजधानी, बेल्जियम'', प्रभात प्रकाशन, 2021, पृष्ठः 13।
9. डॉ0 रमेश पोखिरियाल निशंक, ''चॉकलेट की वैश्विक राजधानी, बेल्जियम'', प्रभात प्रकाशन, 2021, पृष्ठः 14।
10. डॉ0 रमेश पोखिरियाल निशंक, ''चॉकलेट की वैश्विक राजधानी, बेल्जियम'', प्रभात प्रकाशन, 2021, पृष्ठः 15।
11. डॉ रमेश पोखरियाल निशंक, ''खुशियों का देश भूटान'', प्रभात प्रकाशन, 2019, पृष्ठः16।
12. डॉ रमेश पोखरियाल निशंक, ''खुशियों का देश भूटान'', प्रभात प्रकाशन, 2019, पृष्ठः 20।
13. डॉ रमेश पोखरियाल निशंक, ''खुशियों का देश भूटान'', प्रभात प्रकाशन, 2019, पृष्ठः 21।
14. डॉ रमेश पोखरियाल निशंक, ''खुशियों का देश भूटान'', प्रभात प्रकाशन, 2019, पृष्ठः 30।
15. डॉ रमेश पोखरियाल निशंक, ''खुशियों का देश भूटान'', प्रभात प्रकाशन, 2019, पृष्ठः 38।
16. डॉ रमेश पोखरियाल निशंक, ''भारतीय संस्कृति का संवाद इंडोनेशिया'', प्रभात प्रकाशन, 2020, पृष्ठः 18।

E.MAIL-YASHSHEKHAWAT.AJAY@GMAIL.COM

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642
Bohal Shodh Manjusha
March 2026
ISSN : 2395-7115
Page No. : 40-44
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

Towards Gender Equality — Achieving SDG-5

Dr. Vidyavati
Assistant Professor, S.V.P.G. COLLEGE, DEORIA.

1. Introduction :

Gender equality is a fundamental human right and a necessary foundation for a peaceful, prosperous, and sustainable world. Despite significant progress over recent decades, gender-based inequalities persist across economic, social, political, and cultural spheres. Recognizing the centrality of gender equality to sustainable development, the United Nations incorporated it as a standalone goal—**Sustainable Development Goal 5 (SDG 5): Achieve gender equality and empower all women and girls**—within the 2030 Agenda for Sustainable Development adopted in 2015 (United Nations, 2015).

SDG 5 not only addresses discrimination and violence against women but also emphasizes women's leadership, access to resources, reproductive rights, and equal participation in decision-making processes. Gender equality is cross-cutting in nature, influencing progress across all other SDGs, including poverty reduction (SDG 1), quality education (SDG 4), decent work and economic growth (SDG 8), and peace, justice, and strong institutions (SDG 16). This chapter critically examines SDG 5, its targets, progress achieved so far, persistent challenges, and strategies for advancing gender equality in the 21st century.

Keywords : Discrimination, Equality, Rights, Empowerment, Sustainable development.

2. Conceptual Framework of Gender Equality :

Gender equality refers to a state in which individuals of all genders enjoy the same rights, responsibilities, and opportunities. It differs from gender equity, which emphasizes fairness and justice in the distribution of benefits and responsibilities, often requiring targeted measures to overcome historical disadvantages (UN Women, 2020). SDG 5 adopts both perspectives by calling for equal rights while recognizing structural inequalities that disproportionately affect women and girls.

From a theoretical standpoint, gender equality is rooted in feminist theories, human rights discourse, and development economics. Feminist scholars argue that patriarchal social structures

systematically marginalize women, reinforcing unequal power relations in households, labour markets, and political institutions (Connell, 2009). Human rights frameworks emphasize women's rights as indivisible and universal, while development approaches highlight the instrumental role of gender equality in improving development outcomes such as productivity, health, and education (World Bank, 2012).

3. Overview of SDG 5 and Its Targets :

SDG 5 comprises **nine targets and fourteen indicators**, addressing both outcomes and means of implementation. The key targets include :

- **5.1** : End all forms of discrimination against women and girls everywhere.
- **5.2** : Eliminate all forms of violence against women and girls.
- **5.3** : Eliminate harmful practices such as child marriage and female genital mutilation.
- **5.4** : Recognize and value unpaid care and domestic work.
- **5.5** : Ensure women's full participation and equal leadership.
- **5.6** : Ensure universal access to sexual and reproductive health and rights.
- **5.a–5.c** : Reforms to give women equal rights to resources, technology, and policy support.

These targets collectively aim to dismantle legal, economic, and social barriers that prevent women from achieving their full potential.

4. Global Progress Towards Gender Equality :

Since the adoption of SDG 5, countries have made measurable progress in several areas. Girls' access to education has improved globally, with near parity achieved at the primary level in many regions (UNESCO, 2023). Women's representation in national parliaments has increased, reaching approximately 26 percent globally in 2023, compared to 22 percent in 2015 (Inter-Parliamentary Union, 2023).

Legal reforms have also advanced gender equality. Many countries have enacted laws prohibiting gender-based discrimination, domestic violence, and workplace harassment. According to the World Bank's *Women, Business and the Law* report, legal equality has improved in areas such as employment, entrepreneurship, and property rights, although gaps remain (World Bank, 2023).

Despite these gains, progress has been uneven and fragile. The COVID-19 pandemic exposed and exacerbated gender inequalities, disproportionately affecting women through job losses, increased unpaid care work, and rising domestic violence (UN Women, 2021).

5. Persistent Challenges to Achieving SDG 5

5.1 Gender-Based Violence :

Violence against women and girls remains one of the most pervasive human rights violations

worldwide. One in three women globally has experienced physical or sexual violence in her lifetime (WHO, 2021). Conflict situations, humanitarian crises, and weak law enforcement further intensify vulnerability. Cultural norms, stigma, and underreporting continue to impede effective responses.

5.2 Economic Inequality and Unpaid Care Work :

Women are disproportionately represented in informal, low-paid, and insecure employment. Globally, women earn on average 20 percent less than men (ILO, 2022). Additionally, women perform over three times more unpaid care and domestic work than men, limiting their participation in education, employment, and public life (OECD, 2021).

5.3 Political Underrepresentation :

While women's political participation has improved, they remain underrepresented in leadership roles at national and local levels. Structural barriers, including patriarchal norms, lack of financial resources, and gender-based harassment in politics, restrict women's access to decision-making spaces (Krook, 2020).

5.4 Inter-sectionality and Multiple Discrimination :

Gender inequality intersects with other forms of discrimination based on class, caste, ethnicity, disability, and geography. Marginalized women and girls often face compounded disadvantages, highlighting the need for intersectional approaches in policy design and implementation (Crenshaw, 1989).

6. Gender Equality and Sustainable Development :

Gender equality is both a driver and an outcome of sustainable development. Studies show that empowering women contributes to economic growth, improved health outcomes, and environmental sustainability. For instance, women's participation in the labour force increases household income and national productivity, while women's education is strongly linked to lower fertility rates and improved child health (Kabeer, 2016).

In environmental governance, women often play a critical role in natural resource management and climate adaptation. However, their contributions remain undervalued and underrepresented in decision-making processes related to climate change and sustainability (Agarwal, 2018).

7. Policy Strategies for Advancing SDG 5 :

7.1 Legal and Institutional Reforms :

Governments must strengthen legal frameworks to eliminate discriminatory laws and ensure effective enforcement mechanisms. Gender-responsive budgeting and accountability systems can help translate commitments into action.

7.2 Education and Capacity Building :

Investing in girls' education, particularly at secondary and tertiary levels, is essential for long-term gender equality. Education fosters economic independence, political participation, and social empowerment.

7.3 Economic Empowerment :

Policies promoting equal pay, access to credit, entrepreneurship, and social protection are crucial. Recognizing, reducing, and redistributing unpaid care work through public services and social infrastructure can significantly enhance women's economic participation.

7.4 Technology and Innovation :

Digital technologies offer new opportunities for women's empowerment through access to information, markets, and financial services. Bridging the digital gender divide is critical for inclusive development.

8. Role of International Organizations and Civil Society :

International organizations such as UN Women, the World Bank, and the International Labour Organization play a vital role in setting norms, providing technical assistance, and mobilizing resources. Civil society organizations and grassroots movements are equally important in advocating for women's rights, holding governments accountable, and driving social change at the community level.

9. Conclusion :

Achieving gender equality under SDG 5 is both a moral imperative and a strategic necessity for sustainable development. While progress has been made, persistent structural inequalities, socio-cultural norms, and emerging global challenges continue to hinder transformative change. Addressing these challenges requires sustained political commitment, inclusive policies, adequate financing, and active participation from all stakeholders.

Gender equality must be understood not as a women's issue alone but as a collective responsibility that benefits societies as a whole. As the 2030 deadline approaches, accelerating progress towards SDG 5 is essential to realizing the broader vision of an equitable, inclusive, and sustainable world.

References :

1. Agarwal, B. (2018). *Gender equality, food security and the sustainable development goals*. Current Opinion in Environmental Sustainability, 34, 26–32.
2. Connell, R. (2009). *Gender: In World Perspective*. Polity Press.
3. Crenshaw, K. (1989). Demarginalizing the intersection of race and sex. *University of Chicago*

Legal Forum, 1, 139–167.

4. International Labour Organization (ILO). (2022). *Global Wage Report 2022–23*. Geneva: ILO.
5. Inter-Parliamentary Union. (2023). *Women in National Parliaments*. Geneva.
6. Kabeer, N. (2016). Gender equality, economic growth, and women's agency. *Feminist Economics*, 22(1), 295–321.
7. OECD. (2021). *Unpaid Care Work: The Missing Link in the Analysis of Gender Gaps*. Paris: OECD.
8. UN Women. (2020). *Progress of the World's Women 2020–2021*. New York: UN Women.
9. UN Women. (2021). *COVID-19 and Its Economic Toll on Women*. New York.
10. United Nations. (2015). *Transforming Our World: The 2030 Agenda for Sustainable Development*. New York: UN.
11. UNESCO. (2023). *Global Education Monitoring Report*. Paris: UNESCO.
12. World Bank. (2012). *World Development Report: Gender Equality and Development*. Washington, DC.
13. World Bank. (2023). *Women, Business and the Law 2023*. Washington, DC.
14. World Health Organization (WHO). (2021). *Violence Against Women Prevalence Estimates*. Geneva.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 45-51
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

सीकर जिले का जनसंख्या प्रतिरूप : एक भौगोलिक अध्ययन

धूड़ाराम महरिया, शोधार्थी,
डॉ. सचिन कुमार, शोध निदेशक,
भूगोल विभाग, श्री खुशालदास विश्वविद्यालय हनुमानगढ राजस्थान।

शोध आलेख सार :–

जनसंख्या किसी क्षेत्र विशेष का मूलभूत संसाधन होती है तथा किसी क्षेत्र के मानवीय संसाधन पर ही उस क्षेत्र का विकास निर्भर करता है। वर्तमान समय में जनसंख्या जिस तीव्र गति से बढ रही है, वास्तव में वह चिन्ता का विषय है। प्रस्तुत शोध में सीकर जिले की जनसंख्या की समस्त जनांकिकी विषेषताएं जैसे जनसंख्या, जनसंख्या वृद्वि दर, जनसंख्या घनत्व, महिला पुरूष जनसंख्या, लिंगानुपात, ग्रामीण नगरीय जनसंख्या का अध्ययन करके अध्ययन क्षेत्र में होने वाली समस्याओं का समाधान एवं सुझाव प्रस्तुत कर शोध पत्र को प्रभावी बनाने का प्रयास किया गया है। जनसंख्या प्रतिरूप को विभिन्न प्रभागों में विभक्त कर जनसंख्या वितरण को सुस्पष्ट तरीके से समझने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्द :– जनसंख्या, जनसंख्या वृद्वि समस्या एवं सुझाव।

प्रस्तावना :–

जनसंख्या किसी देश का सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है जिससे न केवल प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग संभव होता है अपितु कुशल प्रशिक्षित तथा मेहनती श्रम शक्ति द्वारा आर्थिक विकास का मार्ग भी प्रषस्त होता है। जनसंख्या में जनसंख्या वितरण, जनसंख्या वृद्वि, जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता, ग्रामीण–नगरीय जनसंख्या आदि का विवेचन करते है। कभी–कभी जनसंख्या वृद्वि एक अहम समस्या का रूप धारण कर लेती है। जनसंख्या वृद्वि के आंकलन से किसी भी क्षेत्र विषेष के सामाजिक आर्थिक और सामाजिक पर्यावरण के तथ्यों को समझने और जानने में सहयोग मिलता हैं। इससे क्षेत्र की समस्याओं का समाधान करना आसान हो जाता है। जनसंख्या और संसाधन संबंध पर सर्वप्रथम विचार प्लेटो से प्रारम्भ हुआ लेकिन इसे व्यवस्थित रूप ये माल्थस द्वारा समझाया जिसे माल्थस का जनसंख्या सिद्वान्त कहा गया। जनसंख्या किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास सामाजिक स्तर सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के रूप में प्रस्तुत होती है। किसी भी क्षेत्र का समग्र विकास उस क्षेत्र के मानव संसाधन पर आश्रित रहता है। मानव ही प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करता है जिसके कारण मानव

भी एक संसाधन है। इसलिए किसी भी क्षेत्र के मानव संसाधन का अध्ययन तथा उसका विष्लेषण करना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

अध्ययन क्षेत्र :–

शोध अध्ययन के लिए राजस्थान के सीकर जिले का चयन किया गया है जो कि राजस्थान के उतरी भाग में स्थित है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 7732 वर्ग किमी है जो राज्य का 2.25 प्रतिषत भू–भाग है। इसका अक्षांषीय विस्तार $27^0$21 से $28^0$12 उतरी अक्षांष तथा देषान्तरीय विस्तार $74^0$44 पूर्वी देषान्तर से $75^0$25 पूर्वी देषान्तर के मध्य है। जिले की उतर से दक्षिण लम्बाई लगभग 96 किमी तथा पूर्व से पष्चिम चौड़ाई 74 किमी है।

सीकर जिले की उतरी सीमा झुंझुनू जिले व हरियाणा राज्य से, पूर्वी व द.पू सीमा जयपुर जिले से, दक्षिणी–पष्चिमी सीमा नागौर जिले से तथा पष्चिमी सीमा चुरू जिले से लगती है। प्रषासनिक दृष्टि से जिले को 11 उपखण्डो, 12 पंचायत समितियों, तथा 354 ग्राम पंचायतो में विभक्त किया गया है। क्षेत्रफल की दृष्टि से जिले का राज्य में 19 वा स्थान है। जिले में कुल 1004 ग्राम है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार सीकर जिले के कुल जनसंख्या 26.77 लाख है जिसमें 51.45 प्रतिषत पुरूष तथा 48.55 प्रतिषत महिला है। यहां का जनसंख्या घनत्व 346 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी तथा लिंगानुपात 944 है। जिले की साक्षरता 71.19 प्रतिषत है।

सीकर जिले की जलवायु अर्द्वषुष्क जलवायु की श्रेणी में आती हैं जहां गर्मियो के दौरान अधिकतम तापमान 48^0 सेल्सियस पहुँच जाता है जबकि सर्दियो में तापमान न्यून्तम 1^0 सेल्सियस तक गिर जाता है। वार्षिक वर्षा औसत 45 सेमी. होती है।

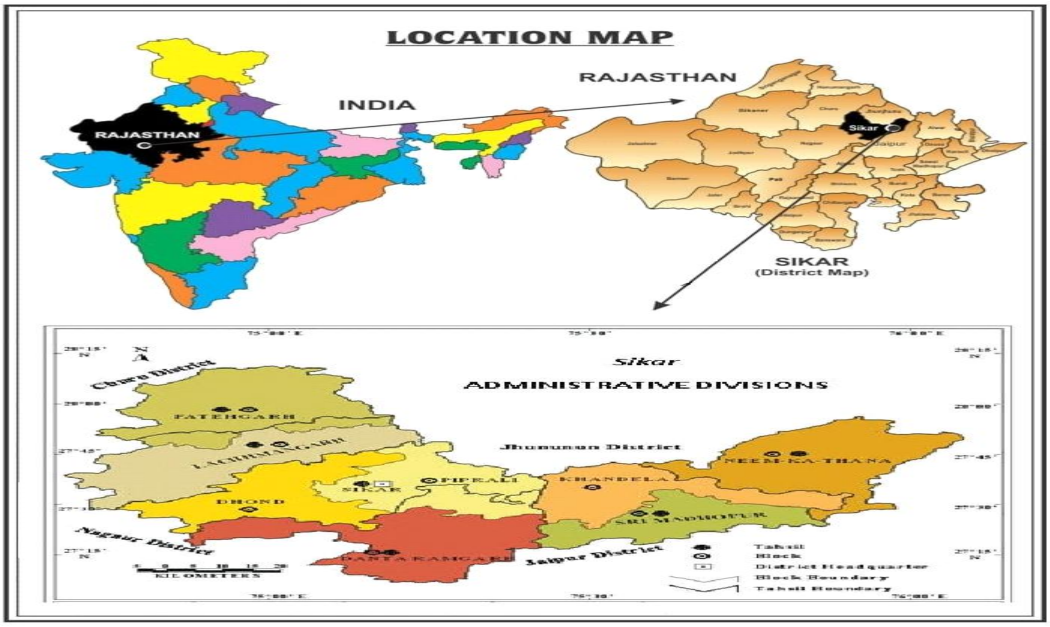

साहित्य का पुनरावलोकन :–

जनसंख्या भूगोल में किये गये शोध विषय अध्ययनों से यह स्पष्ट हो जाता है कि जनसंख्या वृद्धि एवं नगरीयकरण पर अनेक विद्वानों ने शोध एवं अनुसंधान कार्य किया है। अब तक जनसंख्या भूगोल में जनसंख्या

वृद्धि व नगरीकरण शीर्षक पर अनेक साहित्य पढ़ने को मिले है। जिनमें एच.एल. सिंह और बबीता सिंह (2009) आर.पी. चान्दना, बाला 1986 दुबे 1990, मुखर्जी ए.बी. (1988) (षर्मा 1991) सिंह यू. 1960 आदि विद्वानों के कार्य प्रषंसनीय है। गोसल और चान्दना ने 1969–72 के मध्य किये गए शोधों का लेखा जोखा प्रस्तुत करते हुऐ हाल के जनगणना आकार पर सम्पूर्ण भारत के जनसंख्या वितरण का अध्ययन करने पर बल दिया। भारत में जनसंख्या भूगोल का ढांचा सर्वप्रथम गोसल (1956) ने अपने डॉक्टरेट थीसिस में दिया जिसे उन्होंनें ट्रिवार्था में मार्गदर्षन में पूर्ण किया था। गोसल ने पंजाब विष्वविद्यालय में अपने मार्ग दर्षन में जनसंख्या भूगोल की नींव रखी और बींसवी सदी के छठे दषक के प्रारम्भिक वर्षो में अपने मार्गदर्षन में शीघ्र कार्य करवाया (कृष्ण 1968 चान्दना 1970, मेहता 1971) सिंह, एच. एल. और बबीता (2009) ने प्रतापगढ जिला में जनसंख्या वृद्धि प्रारूप का अध्ययन किया है इन्होंनें उपयुक्त आंकडों का विष्लेषण कर जनसंख्या वृद्धि को दर्षाया है तथा जनसंख्या से उत्पन्न समस्याओं के बारे में अध्ययन किया है।

प्रो. पूरण मल ने (2010) नीमकाथाना तहसील में बढती जनसंख्या एवं पेयजल समस्याऐं चुनौतियों एवं निस्तारण पर शोध पर प्रस्तुत किया है इसमें इन्होंने वर्षा की कमी तथा बढती जनसंख्या के विशेष संदर्भ में व वर्तमान पेयजल समस्याओं और उनके समाधान हेतु चलाई जा रही विभिन्न सरकारी योजनाओं की तुलनात्मक अध्ययन किया है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

प्रस्तुत लघु शोध में सीकर जिले में जनसंख्या प्रवृति का भौगोलिक अध्ययन करना है ताकि प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से योजनाकर, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रषासक व अन्य व्यक्ति लाभांवित हो सके। इस संदर्भ में प्रस्तुत शोधकार्य के महत्वपूर्ण उद्देष्य निम्नलिखित है –

प्रस्तुत शोध कार्य के महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नलिखित है :

- सीकर जिले में जनसंख्या वृद्धि प्रारूप का कालिक व स्थानिक दृष्टि से अध्ययन करना है।
- जनसंख्या में वृद्धि स्थापित करने वाले कारको की पहचान करना।
- जिले में जनसंख्या वितरण एवं घनत्व को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
- जिले में जनसंख्या नियंत्रण हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध अध्ययन विधितंत्र एवं आंकडों के स्त्रोत :–

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। द्वितीयक स्तर के आंकडो का संकलन मुख्यतः विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी विभागों से किया गया है। शोध अध्ययन राज्य की विभिन्न सरकारी संस्थाओं, जिले की प्रमुख संस्थाओं और प्रतिदर्ष तहसीलो, विकास खण्डों से सूचनाएँ एवं आंकड़े एकत्रित किये गये है। शोध कार्य तालिका, आरेख एवं मानचित्र उपर्युक्त संस्थाओं कार्यालयों से प्राप्त आंकडों पर आधारित है। शोध में इन्टरनेट के माध्यम से विभिन्न विभागों की वेबसाईट से भी उपयोगी आंकडे प्राप्त किये जायेंगे। पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित समय–समय पर प्रकाशित जनसंख्या संबंधी आंकडे भी शोध में उपयोगी साबित हुये हैं। साथ ही प्रिंट मीडिया में तत्संबंधी समस्याओं पर आधारित प्रकाशित विभिन्न लेख भी निष्कर्ष हेतु उपयोगी है।

जनसंख्या प्रारूप :

सीकर जिला : मानव संसाधन

	राजस्थान		सीकर	
	2001	2011	2001	2011
जनसंख्या वृद्धि दर (प्रतिषात)	28.41	21.44	24.14	17.03
लिंगानुपात (प्रति हजार)	921	926	951	947
जनसंख्या घनत्व (प्रति वर्गकिमी)	165	201	296	346
कुल साक्षरता (प्रतिषात)	60.40	67.06	70.50	71.91
महिला साक्षरता (प्रतिषात)	43.9	52.66	56.10	58.23
पुरूष साक्षरता (प्रतिषात)	75.70	80.51	84.30	85.11

स्त्रोत : जिला जनगणना प्रतिवेदन (2001–2011) सीकर

1951 में सीकर जिले की जनसंख्या 6,76,318 थी जो 2011 में बढ़कर 26,77,333 हो गयी है। वहीं 2001 से 2011 के दषक में सीकर जिले में जनसंख्या वृद्वि दर 17.03 प्रतिषत रही। जबकि इसी काल में राजस्थान में जनसंख्या वृद्विदर 21.44 रही। कृषि जन संसाधन से सबसे अधिक प्रभावित होती है। क्योंकि यदि किसी क्षेत्र में मानव संसाधन क्षेत्रफल के अनुपात में अधिक होता है, तो अधिक जनसंख्या के कारण कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होने लगती हैं और यदि जनसंख्या क्षेत्रफल के अनुपात में कम हो तो उससे भी आर्थिक क्रियाएँ प्रभावित होती हैं। इसलिए अनुकूलतम जनसंख्या ही कृषि के विकास में सहायक सिद्व होती है।

जनसंख्या वितरण व जनसंख्या घनत्व :–

जिस प्रकार राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में जनसंख्या वितरण व घनत्व अलग–अलग है। उसी प्रकार सीकर जिले का जनसंख्या घनत्व भी असमान है क्योकि जहाँ श्रीमाधोपुर तहसील सर्वाधिक जनसंख्या वाला क्षेत्र है। वही फतेहपुर तहसील सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाला क्षेत्र है। जनसंख्या असमान वितरण को कई कारक प्रभावित करते हैं। जिनमें जिले के उच्चावच, वर्षा, परिवहन, रोजगार आदि प्रमुख कारक है। श्रीमाधोपुर तहसील में जिले की अधिकतम जनसंख्या का कारण वहाँ की समतल उपजाउ कृषि योग्य भूमि तथा जल की पर्याप्त आपूर्ति है जो यहाँ के लोगों को पर्याप्त रोजगार देने में सहायक है। लेकिन जिस प्रकार उपजाउ मिट्टी जनसंख्या वितरण की असमानता को प्रभावित करती है उसी प्रकार क्षेत्र की जलवायु में असमानता के कारण जनसंख्या घनत्व में असमानता पायी जाती है।

सीकर जिला– जनसंख्या वितरण व घनत्व (तहसीलवार) 2011

कं सं.	त्हसील	जनसंख्या	जनसंख्या घनत्व
1	फतेहपुर	305638	285
2	लक्ष्मणगढ	320956	263
3	सीकर	644186	425
4	दातारामगढ	423314	309
5	श्रीमाधोपुर	583328	423
6	नीमकाथाना	399911	337
	जिला सीकर	2677333	346

स्त्रोत :– जिला सांख्यिकी रूपरेखा सीकर

वर्ष 1951 की जनगणना के अनुसार सीकर जिले में जनसंख्या घनत्व 87 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. था जो 2001 में बढकर 296 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. तथा नवीनतम जनगणना 2011 के अनुसार 346 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. हो गया। जो राजस्थान के जनसंख्या घनत्व 201 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी की तुलना में काफी अधिक है यहाँ नगरों का जनसंख्या घनत्व गांवों की अपेक्षा अधिक है।

जनसंख्या वृद्वि :-

जनसंख्या वृद्वि की समस्या में सीकर जिला भी अछूता नही है पिछले दषकों में जिले की जनसंख्या में तीव्र वृद्वि दर्ज की गई। 1931 में जिले की कुल जनसंख्या 5.21 लाख थी जो 1941 में 6.14 लाख (17.93 प्रतिषत), 1951 में 6.76 लाख (10.04 प्रतिषत), 1961 में 8.20 लाख (21.29 प्रतिषत), 1971 में 10.42 लाख (27. 11 प्रतिषत), 1981 में 13.77 लाख (32.09 प्रतिषत), 1991 में 18.42 लाख (33.81 प्रतिषत), 2001 में 22.87 लाख (24.14 प्रतिषत तथा 2011 में 17.03 प्रतिषत वृद्वि के साथ 26.77 लाख हो गई है। इस दषक में जनसंख्या वृद्वि में कमी परिवार नियोजन कार्यक्रम, षिक्षा का प्रसार एंव जागरूकता के कारण हुई है।

सारणी : सीकर जिला दशकीय जनसंख्या वृद्वि (1931–2011)

वर्ष	स्त्री	पुरूष	योग	प्रतिषात वृद्वि
1931	248726	272433	521159	
1941	294423	320161	614584	17.93
1951	333434	342885	676318	10.04
1961	402523	417163	820286	21.29
1971	510998	531650	1042648	27.11
1981	675467	701778	1377245	32.09
1991	895682	947232	1842914	33.81
2001	1115035	1172753	2287788	24.14
2011	1300617	1377120	2677737	17.03

स्त्रोत : जिला जनगणना प्रतिवेदन (1931—2011) सीकर

साक्षरता :-

मानव संसाधनों में साक्षरता एक ऐसा आधा है जिससे किसी क्षेत्र के गुणात्मक विकास की जानकारी प्राप्त होती है। साक्षरता से क्षेत्र विषेष की कुषल व षिक्षित मानव शक्ति की जानकारी मिलती है क्योंकि कुषल व षिक्षित मानव शक्ति किसी भी अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक होता है। क्षेत्र का सामाजिक, राजनीतिक एंव आर्थिक विकास भी उस क्षेत्र की षिक्षित मानव शक्ति से प्रभावित होता है। यदि षिक्षित मानव शक्ति किसी क्षेत्र में होती है तो वह कृषि में भी नये—नये प्रयोग काम में लेती है जिससे उत्पादन क्षमता में वृद्वि होती है। जैसे पष्चिमी देषों में साक्षरता अधिक होने के कारण प्रति हेक्टयर उत्पादन भी भारत की तुलना में अधिक होता है। राजस्थान में साक्षरता की कमी है लेकिन तुलनात्मक रूप से सीकर जिला साक्षरता में अग्रणी जिलों में है।

पिछले दषकों में जिले की साक्षरता के स्वरूप में बदलाव आया है। 1971 में सीकर की कुल साक्षरता मात्र 19.61 प्रतिषत थी, जो 2011 में बढ़कर 72.98 प्रतिषत हो गयी है। साक्षरता में सर्वाधिक वृद्वि 1991—2001 के दषक में दर्ज की गयी। 1991 में जिलें में साक्षरता दर 42.49 प्रतिषत थी, जो 2001 में बढ़कर 70.47 प्रतिषत

हो गई। इसी तरह 1971 में जिले की पुरूष व महिला क्रमषः 32.16 एवं 6.57 प्रतिषत थी जो 2011 में बढ़कर क्रमषः 85.11 एंव 58.23 हो गयी है।

सीकर जिला साक्षरता (प्रतिशत में)

वर्ष	ग्रामीण साक्षरता			नगरीय साक्षरता			कुल साक्षरता		
	पुरूष	स्त्री	कुल	पुरूष	स्त्री	कुल	पुरूष	स्त्री	कुल
1971	29.20	4.12	16.92	46.56	18.47	32.76	32.16	6.57	19.61
1981	38.28	6.01	22.43	52.44	21.25	37.23	41.46	9.08	25.43
1991	42.14	11.15	39.03	73.25	31.75	55.40	64.13	19.88	42.49
2001	84.10	55.27	69.86	85.19	89.34	72.74	84.34	56.11	70.47
2011							85.11	58.23	71.91

स्त्रोत : जिला जनगणना प्रतिवेदन (1971–2011) सीकर

वर्ष 1971 में जिले की ग्रामीण साक्षरता 16.92 प्रतिषत थी जिसमें 29.20 प्रतिषत पुरूष साक्षरता तथा 4. 12 प्रतिषत महिला साक्षरता थी जो 2001 में बढ़कर 69.86 प्रतिषत हो गयी है। जिसमें 84.10 प्रतिषत पुरूष तथा 55.27 प्रतिषत महिला साक्षरता है। इसी तरह यदि नगरीय साक्षरता के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्रारम्भ में जिले में नगरीय साक्षरता ग्रामीण साक्षरता की तुलना काफी अधिक थी। लेकिन वर्तमान समय में ग्रामीण साक्षरता वृद्धि नगरीय साक्षरता की तुलना में बढ़ रही है। 1971 में जिले में कुल नगरीय साक्षरता 32.76 प्रतिषत थी जिसमें पुरूष साक्षरता 46.56 प्रतिषत तथा महिला साक्षरता 18.47 प्रतिषत थी जो 2001 में बढ़कर क्रमषः 72.74 प्रतिषत, 85.19 प्रतिषत तथा 59.34 प्रतिषत हो गयी। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जिले में साक्षरता वृद्वि दर में हो रही है। इस दृष्टि से 2011 की जनगणना के अनुसार सीकर जिला राजस्थान में चौथे स्थान पर रहा जबकि 2001 में तीसरे स्थान पर था। इसी तरह पुरूष साक्षरता में जहाँ सीकर 2001 में तीसरे स्थान पर था वह 2011 में पांचवें स्थान पर पहुंच गया।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व :–

वर्तमान में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि के कारण विष्व के सामने अनेक विकट समस्याएँ उत्पन्न हो गयी है। मानव ने अपनी बढती संख्या की असीमित आवष्यकताओं की पूर्ति का दबाव विभिन्न प्रकृति प्रदत्त पदार्थो पर प्रेषित कर अनेक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म दिया है। समय के साथ बढती जनसंख्या सम्बन्धी समस्याऐं जटिल व भयावह होती जा रही है। जिससे निरन्तर जीविकोपार्जन साधन उपलब्ध करा पाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो गया है। शोध अध्ययन की मुख्य उपयोगिता यह होगी की जिले की विभिन्न विकास योजनाओ में संलग्न व्यक्तियों व संस्थाओं को जिले में वर्तमान मानव संसाधन स्तर ज्ञात होगा जिससे कि जिले के भावी विकास हेतु उपयुक्त योजना का निर्धारण कर सके और संसाधनों का समुचित उपयोग करते हुए लोक कल्याण की ओर अग्रसर हो सके।

निष्कर्ष एवं सुझाव :–

जिले में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि से कई प्रकार की कठिनाईया दिन–प्रतिदिन सामने आ रही है। जनसंख्या में तीव्र वृद्धि से राज्य विकास, आर्थिक प्रगति, भौगोलिक संसाधनों के समूचित एवं सन्तुलित उपभोग आदि पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। जिले में जनसंख्या वृद्धि से आवास, पानी, रोजगार संसाधनों के सरंक्षण आदि

की समस्याऐ उभरकर आती है इन्ही से जुडी हुई षिक्षा, प्रोद्योगिकी, स्वास्थ, परिवहन स्वच्छता आदि की समस्याऐ भी जुडी हुई है।

जनसंख्या समस्या का समाधान मात्र परियोजनाओं के निर्माण एवं प्रषासनिक जुमले के आधार पर संभव नही है। इसे जन चेतना, जन भागीदारी एवं जन समुह का आन्दोलन बनाने पर ही समस्या का समाधान सम्भव है। अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या समस्या हेतु निम्न सुझाव कारगर सिद्ध हो सकते है –

- जनसंख्या की विषालता की समस्या की भयावहता तथा सम्भावी दुष्परिणामों के प्रति आमजन को जागरूक किया जाना आवष्यक है।
- परिवार नियोजन की नवीन विधियों तथा महत्व को अनमानस तक प्रभावी तरीके के संप्रेषित किया जाना चाहिए सामाजिक चेतना द्वारा संतति निग्रह के उपायों को वांछित सफलता मिल सकेगी।
- जब तक 14–16 वर्ष लड़कियॉ कम उम्र में मां बनकर लगातार जन्म दर एवं प्रजनन अवधि में विस्तार करती रहेगी तक तक जनसंख्या वृद्धि नही रोकी जा सकती। अतः बाल विवाह प्रथा को समूल नष्ट करना होगा आज भी अक्षया तृतीया, पीपल पूर्णिमा आदि अबूझ सावों पर बहुत अधिक मात्रा में बाल विवाह होते है।
- षिक्षा प्रसार, उद्योगों का विकास, जनचेतना, गरीबी उन्मूलन आदि ऐसे कारण है जिनमें सुधार होने से स्वयं ही जनसंख्या वृद्धि मे रोक लग जाती है। जनता का स्तर उपर उठ जाता है तथा जनमानस अधिक जनसंख्या के प्रभावों को समझ सकती है।

सन्दर्भ सूची :–

- चांदना आरसी (2006) जनसंख्या भूगोल कल्याणी पब्लिषर्स।
- मौर्य एस.डी. जनसंख्या भूगोल (2011)
- भल्ला एल.आर. (2010) राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिषिंग हाउस, जयपुर।
- शर्मा एच.एच. और एम.एल–(2010) राजस्थान का भूगोल, पंचषील प्रकाषन, जयपुर।
- जिला सांख्यिकी रूपरेखा, सीकर।
- सुजस, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, जयपुर।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 52-61

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

भारतीय शिक्षाविदों के शैक्षिक चिंतन के आलोक में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता : एक समकालीन अध्ययन

शिवानी व्यास, रिसर्च स्कॉलर,
डॉक्टर प्रीति ग्रोवर, प्रोफेसर,
षिक्षा विभाग, टाटिया यूनिवर्सिटी गंगानगर, राजस्थान।

शोध सार :-

प्रस्तुत शोध भारतीय शैक्षिक दार्षनिकों मुख्यतः अरविंद घोष, जी, कृष्णमूर्ति एम. एन. राय एवं डॉ ए.पी. जे अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का समालोचनात्मक अध्ययन करते हुए उनके दर्षन की भारतीय षिक्षा व्यवस्था में प्रासंगिकता स्पष्ट करता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन करता है, कि षिक्षाविदों के विचार में षिक्षा मात्र ज्ञान अर्जन का माध्यम न होकर मानव के बौद्धिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक, नैतिक एवं सामाजिक विकास का माध्यम है। श्री अरविंद घोष, जी, कृष्णमूर्ति एम. एन. राय और अब्दुल कलाम के शैक्षिक दृष्टिकोण भारतीय षिक्षा को उपरोक्त संदर्भ में आध्यात्मिक, सामाजिक और व्यावहारिक आयाम प्रदान करते हैं। अरविंद घोष की एकीकृत षिक्षा की अवधारणा, जी. कृष्णमूर्ति के आंतरिक परिवर्तन और मुक्ति की अवधारणा, एम.एन. रॉय की रेडिकल ह्यूमैनिज्म, स्वतंत्रता और तार्किकता की अवधारणा तथा अब्दुल कलाम की मन और शरीर के समन्वय के साथ आध्यात्मिकता और समस्या समाधान की अवधारणा, भारतीय षिक्षा को कल्याण केंद्रित बनाती है, साथ ही व्यक्ति को माइंडफूलनेस के साथ आंतरिक शक्ति प्रदान करते हुए सामाजिक अधिगम एवम् सामूहिक प्रगति सुनिष्चित करती है। अरविंद घोष का समग्र विकास और आध्यात्मिक षिक्षा दर्षन विद्यार्थी के मानसिक संतुलन और आत्म जागरूकता को प्रेरित करता है, वही जी. कृष्णमूर्ति की सजग चेतन आधारित षिक्षण पद्धति, स्वजागरूकता और आत्मा विकास के साथ नैतिक चेतना के विकास पर बल देता है। एम.एन. रॉय का नव मानवतावाद तथा डॉक्टर कलाम के मूल्य आधारित नवाचार उन्मुख शैक्षिक दृष्टिकोण षिक्षकों और षिक्षार्थियों में बहुआयामी एवं जीवन उपयोगी कौषल को विषेष महत्व देते हैं। यह शोध भारतीय षिक्षा प्रणाली के कल्याण और माइंडफूलनेस आधारित शैक्षिक दृष्टिकोण को न केवल प्रोत्साहित करता हैं बल्कि संवेदनषील, उत्तरदायी और जागरूक समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध होता है।

मुख्य पारिभाषिक शब्दावली :-

कल्याण, माइंड फुलनेस, सामाजिक अधिगम, समग्र षिक्षा, रेडिकल ह्यूमैनिज्म, राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020, सामाजिक-संवेगात्मक अधिगम।

çLrkouk

वर्तमान षिक्षा में जहां हम विद्यार्थियों में तनाव, चिंता और सामाजिक अलगाव की समस्याओं को निरंतर प्रभावी होते देख रहे हैं। इन समस्याओं के समाधान स्वरूप माइंडफुलनेस और सामाजिक सदभावना अधिगम परिभाषित किये जा रहे हैं। भारतीय षिक्षा दर्षन की प्राचीन शैक्षिक परंपराएं योग, ध्यान, उपनिषद, दर्षन तथा भागवत गीता जहां विष्व को आत्मज्ञान, स्वजागरूकता, आत्म नियंत्रण और सार्वभौमिक कल्याण से जोड़ती है, वहीं भारतीय दार्षनिकों की समग्र कल्याण युक्त, भय मुक्त षिक्षा विद्यार्थी को आत्म अन्वेषण पर जोर देती है जो माइंडफुलनेस का प्रत्यक्ष रूप प्रतीत होता है। आधुनिक विष्व में षिक्षा, ज्ञानार्जन के साथ व्यक्ति का समग्र कल्याण, भावनात्मक संतुलन, आंतरिक शांति और सामाजिक सद्भाव को सुनिष्चित करती है। यह व्यक्ति को तनाव, चिंता, अवसाद, सामाजिक प्रभाव जैसी समस्याओं से दूर करते हुए उनके समाधान के रूप में माइंडफूलनेस और सामाजिक भावनात्मक अधिगम के साथ कल्याण को प्रभावी बनाती है। यहां माइंडफूलनेस से तात्पर्य वर्तमान क्षण में पूर्ण जागरूकता के साथ अपने विचारों के निरीक्षण और भावनाओं की स्वीकृति पर बल देना है, जो व्यक्ति को उसकी आंतरिक शक्ति प्रदान करता है और सामाजिक अधिगम के साथ सामाजिक संबंधों में सहानुभूति, करुणा और जिम्मेदारी की भावना को विकसित करता है।

भारतीय षिक्षा दर्षन में इन तत्वों को विख्यात करने और समकालीन संदर्भ में स्थापित करने का मुख्य श्रेय श्री अरविंद घोष, जी. कृष्णमूर्ति एम.एन.राय और ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को जाता है, जिन्होंने क्रमष: अपनी समग्र षिक्षा, भय मुक्त षिक्षा और आंतरिक जागृति, नव मानवतावाद और नैतिक विज्ञान एवं युवा सषक्तिकरण के साथ षिक्षा को जोड़ा। इन विचारकों ने षिक्षा को मात्र बौद्धिक विकास का साधन ना मानकर व्यक्ति के समग्र कल्याण का माध्यम माना। उनके अनुसार हमारी राष्ट्रीय षिक्षा नीतियों में समग्र षिक्षा, बहू विषयक दृष्टिकोण, मूल्य आधारित अधिगम, सामाजिक भावनात्मक विकास को मुख्य स्थान दिया गया है। राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 की 5 + 3 + 3 + 4 संरचना और निपुण भारत मिषन एवं मूल्यांकन सुधार इन अवधारणाओं को व्यवहारिक स्वरूप प्रदान करते हैं।

कल्याण एक बहु आयामी अवधारणा है जिसमें शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक आयाम को शामिल किया गया है। यह विद्यार्थी में तनावहीनता, सकारात्मक अनुभव और संतोष की भावना को विकसित करता है। साधारण शब्दों में कल्याण को मानसिक संतुलन, भावनात्मक स्थिरता जीवन की उच्च गुणवत्ता और सकारात्मक सामाजिक संबंधों के समन्वय के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसके अनुसार स्वस्थ एवं समायोजित छात्रों का अधिगम अन्य छात्रों की तुलना में बेहतर होता है साथ ही वे समाज में अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हैं। अनेक शैक्षिक शोध माइंडफुलनेस को विद्यार्थी के वर्तमान लक्ष्य पर जागरूक रहने, ध्यान केंद्रित करने के रूप में समझाते हैं। सरल शब्दों में माइंडफुलनेस से तात्पर्य व्यक्ति के सचेत रूप से वर्तमान क्षण को पूर्वाग्रह रहित होकर ध्यान देने और अनुभव को स्वीकार करने से है। माइंडफुलनेस विद्यार्थियों को उनकी भावनाओं, विचारों और शारीरिक संवेदनाओं के प्रति सजग करता है। माइंडफुलनेस के द्वारा विद्यार्थी आत्मज्ञान, स्वनियमन एवं एकाग्रता को उत्तरोत्तर बढाने के साथ तनाव प्रबंधन की क्षमता का अधिगम करते हैं, जिससे षिक्षण अधिगम और सामाजिक भावनात्मक कौषल का विकास होता है। इसका प्रारंभ आध्यात्मिक परंपराओं से हुआ, जो आज आधुनिक षिक्षा में भी प्रासंगिक है।

शोध की तृतीय अवधारणा सामाजिक भावनात्मक अधिगम से तात्पर्य उस षिक्षण प्रक्रिया से है, जिसके माध्यम से विद्यार्थी अपने व्यवहार, विचार और भावनाओं को समझता है, उन्हें नियंत्रित करता है। सामाजिक भावनात्मक अधिगम के माध्यम से विद्यार्थी दूसरों के साथ सकारात्मक संबंध बनाकर एक जिम्मेदार स्पष्ट निर्णय लेने वाले और चुनौतियों का सामना करने वाले व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। सोषल इमोषनल लर्निंग अर्थात SEL के माध्यम से विद्यार्थी एक जिम्मेदार संवेदनषील व्यक्तित्व का निर्माण करता हैं। भारतीय षिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में सामाजिक भावनात्मक अधिगम को बालक में आत्म जागरूकता, आत्म नियमन, सहानुभूति, सामाजिक कौषल और उत्तरदाई निर्णय लेने के लिए षिक्षा के आवष्यक घटक के रूप में अंगीकृत किया गया है।

संक्षेप में कल्याण जहां विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य को संतुलित करते हुए, उसे जीवन की संतुष्टि प्रदान कर गुणवत्ता में वृद्धि करता है, वही माइंडफुलनेस विद्यार्थी के ध्यान, सजगता और आत्मनिर्माण को बढाते हुए अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामाजिक भावनात्मक अधिगम हमारी षिक्षा प्रणाली को विद्यार्थी के सामाजिक रूप से समायोजित करने और उन्हें एक उत्तरदाई नागरिक बनाने के साथ–साथ उनमें संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक कौषल के विकास के लिए प्रेरित करता है। उपरोक्त तीनों अवधारणाओं का समन्वय विद्यार्थी को पूर्ण मानव विकास की ओर ले जाने का माध्यम है, जिसे राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 में प्राथमिकता दी गई है।

शोध के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध में भारतीय विचारकों के योगदान का विष्लेषण करते हुए अधोलिखित उद्देष्यों की पूर्ति की गई है -

1. षिक्षाविदों श्री अरविंद घोष, जी. कृष्णमूर्ति एम. एन. राय और अब्दुल कलाम के शैक्षिक दर्षन एवं अवधारणाओं का विष्लेषण।
2. नैतिक मूल्यों की अवधारणा का दार्षनिक संबंध।

अनुसंधान पद्धति :–

प्रस्तुत शोध भारतीय षिक्षा व्यवस्था में नैतिक मूल्यों की अवधारणा के लिए कल्याण, माइंडफुलनेस और सामाजिक भावनात्मक अधिगम में भारतीय षिक्षाविदों के शैक्षिक विचारों का गुणात्मक, दार्षनिक, विष्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन पर अधारित है।

शोध समीक्षा :–

आधुनिक षिक्षा जहां विद्यार्थियों में तनाव पैदा कर रही है उससे निपटने के लिए कल्याण का उद्देष्य दुनिया की जटिल अनिष्चित से दूर करने का एकमात्र साधन है। कल्याण के शैक्षिक संदर्भ में विद्यार्थी की शारीरिक कल्याण, मानसिक कल्याण एवं सामाजिक कल्याण को शामिल करते हैं। शारीरिक कल्याण के द्वारा विद्यार्थी स्वास्थ्य, व्यायाम और अच्छे पोषण की ज्ञान प्राप्ति करते हैं। उचित मानसिक कल्याण विद्यार्थियों को षिक्षा संबंधी तनाव के प्रबंधन, परिस्थितियों एवं समस्याओं के प्रति सकारात्मक सोच एवं समस्याओ के सकारात्मक हल प्रस्तुत करते हैं। वहीं सामाजिक कल्याण से विद्यार्थी समाज में स्वस्थ संबंधों का निर्माण कर समुदाय में अपने योगदान को बढाते हैं। माइंडफुलनेस की प्राचीन अवधारणा मुख्यतः बौद्ध परंपराओं से प्राप्त की गई और इसे आधुनिक मनोविज्ञान में वैज्ञानिक रूप से शामिल किया गया हैं। माइंडफुलनेस का तात्पर्य है -

वर्तमान क्षण में पूर्ण जागरूकता । इससे व्यक्ति अपने विचार भावनाओं और शारीरिक संवेदनाओं को बिना आहत किये निर्णय करता है, *क्या हो रहा है* का अवलोकन करता है, विचारों को स्वीकार करने की क्षमता को बढाता है, ध्यान, मेडिटेषन, स्वास्थ्य, व्यायाम और दैनिक क्रिया के माध्यम से तनाव को कम कर एकाग्रता को बढाकर व्यक्ति में भावनात्मक संतुलन करता है। सामाजिक भावनात्मक अधिगम ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें विद्यार्थी अपनी भावनाओं को समझकर पूर्ण प्रबंधन करता है और लक्ष्य निर्धारित करते हुए सकारात्मक एवं जिम्मेदार निर्णय लेकर कार्य करता है। सोषल इमोषनल लर्निंग के मुख्य पांच घटकों में विद्यार्थी द्वारा *स्वप्रबंधन, स्वजागरूकता, सामाजिक जागरूकता संबंध कौषल तथा जिम्मेदार निर्णय लेने की क्षमता* को विकसित करता है। सामाजिक भावनात्मक अधिगम संबंधी षिक्षा भारत में विद्यार्थियों और युवाओं के लिए अति आवष्यक है, जिसके माध्यम से गरीबी चक्र को तोडा जा सकता है और सामाजिक गतिषीलता को बढावा मिलता है। आधुनिक षिक्षा के केंद्र शैक्षिक कल्याण, माइंडफुलनेस और सामाजिक भावनात्मक अधिगम तीनों अवधारणा न केवल बालक की बौद्धिक विकास पर बल देती है, बल्कि व्यक्तिगत, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास को उन्नत बनती है।

डॉज, 2012 के अनुसार कल्याण, माइंडफुलनेस और सामाजिक भावनात्मक अधिगम आधुनिक षिक्षा में विद्यार्थी के समग्र विकास को संबर्धित कर उसका सामाजिक संतुलन बनाते हैं और सकारात्मक कार्य क्षमता को विकसित करते है। इन अवधारणाओं के माध्यम से बालक में सीखने की क्षमता और सामाजिक सहभागिता में वृद्धि होती है। **कबात जिन 2003 एवं जेनर 2014** ने माइंडफुलनेस को विद्यार्थी में आत्म जागरूकता भावनात्मक नियंत्रण और तनाव प्रबंधन के साथ एकाग्रता को विकसित करने वाले साधन के रूप में परिभाषित किया है। उनके अनुसार माइंडफुलनेस विद्यार्थी के शैक्षिक उपलब्धि और मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ करता है। **कासेल 2020** ने सामाजिक भावनात्मक अधिगम को विद्यार्थी में आत्म जागरूकता, आत्मनिर्माण, संबंध निर्माण, सहानुभूति और उत्तरदाई निर्णय क्षमता जैसे कौषल को विकसित करने वाली प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है। उनके अनुसार सामाजिक भावनात्मक अधिगम की अवधारणा विद्यार्थी में उनकी व्यक्तिगत सफलता दिलवाने के साथ उन्हें सामाजिक रूप से उत्तरदाई बनाने में सक्षम है। **MOE, 2020** के अनुसार कल्याण, माइंडफूलनेस और सामाजिक भावनात्मक अधिगम की अवधारणाएं विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य, योग, ध्यान, जीवन कौषल और अनुभव आधारित अधिगम को पुर्नबलित कर उसे संवेदनषील और भविष्य उन्मुख बनती है। हमारी **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** उपरोक्त तीनों अवधारणाओं को षिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार करती है।

श्री अरविंद के शैक्षिक दर्शन में नैतिक मूल्यों की अवधारणा का दार्शनिक संबंध :

श्री अरविंद का शैक्षिक दर्षन जो पूर्ण योग पर आधारित है और मानव विकास का साधन माना गया है। षिक्षा को शारीरिक मानसिक प्राणिक बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास की ओर एकीकृत करता है उनका मत था कि षिक्षा मानव को अति मानव अर्थात सुपरमैन में परिवर्तित कर सकती है। अरविंद द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक सिद्धांत में चित, मानस, बुद्धि और आत्मा का विकास अर्थात समग्र विकास, को बढावा मिलता है। अरविंद का शैक्षिक दर्षन में अंतर्निहित विद्यार्थी स्वअनुषासन, षिक्षक की मार्गदर्षन भूमिका जो उसकी आंतरिक शक्तियों को जागृत करें, भारतीय संस्कृति, योग, ध्यान और आध्यात्मिक साधना पर आधारित पाठ्यक्रम में माइंडफुलनेस और सामाजिक भावनात्मक अधिगम की मूल अवधारणा का समावेष है। श्री अरविंद का पूर्ण योग माइंडफुलनेस को ज्ञान एवं आत्म अवलोकन के रूप में प्रदर्षित करता है उनके समग्र विकास में भावनात्मक प्रबंधन और सामाजिक

संबंध का दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। उनके अनुसार कल्याण उनके दर्षन का मूल मंत्र है। उनके शैक्षिक दर्षन में षिक्षा को कल्याण और आध्यात्मिक उत्थान के लिए बताया गया है। इस प्रकार यह तीनों अवधारणाएं घोष के शैक्षिक दर्षन का मूल हिस्सा रही है जहां षिक्षा केवल ज्ञान का साधन नहीं बल्कि जीवन के परिवर्तन का आधार है। निष्कर्ष अनुसार श्री अरविंद का शैक्षिक दर्षन नई षिक्षा नीति की अवधारणा में शामिल कल्याण माइंडफूलनेस और एस ई एल को गहराई से जोडता है और षिक्षा को मात्र बौद्धिक साधन नहीं बल्कि समग्र मानवीय विकास का माध्यम मानता है। श्री अरविंद के इस सिद्धांत को द लाइफ डिवाइन और इंटीग्रल एजुकेषन में भी शामिल किया गया है। श्री अरविंद के दर्षन में यह अवधारणा परस्पर जुडी हुई है उनके इंटीग्रल एजुकेषन में इनका एकीकरण स्पष्ट झलकता है जहां षिक्षा दिव्या जीवन की ओर ले जाती है। समकालीन संदर्भ में राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 और वैष्विक षिक्षा सुधारो के अंतर्गत श्री अरविंद का दर्षन पष्चिम और पूर्वी विचारों का संयोजन करते हुए व्यवहारिक चुनौतियों का सामना करता है और अपनी प्रासंगिकता सिद्ध करता है।

जुलासकी 2017, ने इंटीग्रल एजुकेषन के पांचो आयाम शारीरिक, बौद्धिक, जैविक, मानसिक और आध्यात्मिक पर विष्लेषण कर कल्याण को व्यक्ति की आंतरिक पूर्णता और जीवन की सकारात्मक गुणवत्ता से जुडा हुआ पाया। इसी प्रकार राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 के साथ श्री अरविंद के शैक्षिक दर्षन को जोड़ते हुए हॉलिस्टिक डेवलपमेंट और वेल बीइंग की अवधारणा को प्राथमिकता दी गई। **उदितम 2025** के अनुसार ध्यान इंटीग्रल योग का केंद्र है, जो तनावग्रस्तता को शांत कर उच्च स्तरीय स्थायित्व और चेतना तक पहुंचता है। सामाजिक भावनात्मक अधिगम के पांच घटक *सेल्फ अवेयरनेस, सेल्फ मैनेजमेंट, सोषल अवेयरनेस, रिलेषनषिप स्किल और रिस्पांसिबल डिसीजन मेकिंग* श्री अरविंद के प्राणिक षिक्षा में अंतर निहित है, जहां भावनाओं का प्रबंधन परानुभूति, धैर्य और सामाजिक जिम्मेदारी से किया जाता है। उपरोक्त साहित्य स्पष्ट करते हैं कि श्री अरविंद के शैक्षिक दर्षन ने आधुनिक षिक्षा की चुनौतियों के लिए समाधान प्रदान किया है, जो हॉलिस्टिक और मूल्य आधारित आध्यात्मिक षिक्षा का केंद्र है। 21वीं सदी की षिक्षा में घोष का दर्षन समाहित कर षिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकते हैं।

एम. एन. रॉय के शैक्षिक दर्शन में नैतिक मूल्यों की अवधारणा का दार्शनिक संबंध :

क्रांतिकारी, मार्क्सवादी विचारक, रेडिकल ह्यूमैनिज्म के संस्थापक एमएन रॉय षिक्षा को तर्कसंगत, वैज्ञानिक और मानवतावादी परिवर्तन का माध्यम मानते थे। राय का शैक्षिक दर्षन मानव स्वतंत्रता, तर्क और नैतिकता पर केंद्रित हैं। उन्होंने सामाजिक क्रांति व्यक्तिगत विकास और मानव उत्थान के लिए षिक्षा को प्रबल साधन कहा। राय के अनुसार षिक्षा का मूल उद्देष्य व्यक्ति में तर्कसंगत सोच और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करना है, ताकि अंधविष्वास और असमानता को दूर किया जा सके, अतः वे व्यक्ति को वैज्ञानिक षिक्षा के माध्यम से तर्कषील और नैतिक बनाना चाहते थे। रॉय के रेडिकल ह्यूमैनिज्म में व्यक्ति को नैतिक इकाई मानते हुए उसमें षिक्षा के माध्यम से आंतरिक क्षमता को जागृत कर तर्कसंगत और नैतिक मनुष्य बनाने में मदद करता है। राय के अनुसार सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक क्रांति का मूल आधार षिक्षा है, जिससे व्यक्तिगत और सामूहिक कल्याण किया जा सकता है। षिक्षा के माध्यम से लोकतांत्रिक विकेंद्रीकृत व्यक्ति सामाजिक रूप से अधिक जिम्मेदार बनता है। उनका तर्कषील वैज्ञानिक दृष्टिकोण माइंडफूलनेस को वर्तमान वास्तविकता से जोड़ता है।

चंद्रा, 1992 के अनुसार उनका रेडिकल ह्यूमैनिज्म कल्याण को मानव मुक्ति के रूप में परिभाषित करता है। रेडिकल ह्यूमैनिज्म से प्रेरित राय का शैक्षिक दर्षन सामाजिक भावनात्मक अधिगम के पांच घटकों से मेल खाता है और स्पष्ट करता है, की षिक्षा सामाजिक क्रांति के लिए भावनात्मक संतुलन स्थापित करती है। राय की कल्याण की अवधारणा आधुनिक कल्याण की अवधारणा से पूर्णतय मेल खाती है और सामाजिक असमानता को दूर कर सामूहिक कल्याण को सुनिष्चित करती है। **सीबी 2020** के अनुसार राय के दर्षन में कल्याण, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक प्रगति से जुड़ा है। कल्याण, माइंडफूलनेस और सामाजिक भावनात्मक अधिगम की अवधारणाएं राय के शैक्षिक दर्षन रेडिकल ह्यूमैनिज्म में अंतर निहित है जहां कल्याण, समग्र विकास, जागरूकता और नैतिकता समावेषित है। **नारिंसेती, 2004** के अनुसार राय की तर्कसंगत जागरूकता और क्रिटिकल थिंकिंग, माइंडफूलनेस के पर्याय है। जहां व्यक्ति तर्कसंगत जीवन तनाव से मुक्ति और संतुष्टि प्राप्त करता है। साहित्य से पूर्णतया स्पष्ट है कि राय का शैक्षिक दर्षन आधुनिक षिक्षा को चुनौतियों का समाधान प्रदान करते हुए उसे तर्कसंगत नैतिक और मानव केंद्रित बनता है। उनका दर्षन आज के सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरणादायक है। राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 की मूल्य आधारित षिक्षा में राय के विचार पूर्णतया प्रासंगिक है।

जी. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में नैतिक मूल्यों की अवधारणा का दार्शनिक संबंध :

जी. कृष्णमूर्ति दार्षनिक और षिक्षाविद है, जिन्होंने षिक्षा को आंतरिक परिवर्तन और स्वतंत्रता का माध्यम कहा। उनके शैक्षिक दर्षन में समग्र षिक्षा, *हॉलिस्टिक एजुकेषन* को केंद्रीय स्थान दिया गया, जो व्यक्ति के पूर्ण विकास - शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक को लक्ष्य मानता है। उनका मानना था कि षिक्षा व्यक्ति को सामाजिक, संस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक अनुबंधन से मुक्त कर रचनात्मक जीवन जीने के लिए तैयार करती है। उनके शैक्षिक दर्षन में व्यक्ति की आंतरिक स्वतंत्रता और परिवर्तन पर बल दिया गया है। जिससे वह महत्वाकांक्षा और प्रतिस्पर्धा से मुक्त होकर जीवन की पूर्णता को प्राप्त करें। उनके अनुसार षिक्षा बौद्धिकता के साथ—साथ भावनात्मक शारीरिक और आध्यात्मिक विकास को एकीकृत करती है। कृष्णमूर्ति ने *हेड एंड हार्ट के मध्य संतुलन* का सिद्धांत दिया, जिससे विज्ञान और धार्मिकता को जोड़ा। उनके अनुसार वर्तमान षिक्षा स्वयं खंडित होने के कारण व्यक्ति को असंतुलित बनाती है। कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्षन में षिक्षक मार्गदर्षक न होकर छात्र का सहयात्री है जिसमें दोनों साथ सीखते हैं और सीखने में भय को कोई स्थान नहीं देते। कृष्णमूर्ति ने पारंपरिक विषयों के साथ आत्मचिंतन, ध्यान और प्रकृति से जुडाव किया। इनके दर्षन में कल्याण, आंतरिक शांति, प्रेम और जीवन की पूर्णता शामिल है। वे कल्याण को जीवन की समझ मानते हैं, जिसमें व्यक्ति भय मुक्त और संघर्षषील होकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति करता है। कृष्णमूर्ति के दर्षन में माइंडफूलनेस की अवधारणा *चॉइसलैस अवेयरनेस और ध्यान* के रूप में अंतरनिहित है। उनके अनुसार ज्ञान और आत्मनिरीक्षण व्यक्ति को विचार और भावनाओं को अवलोकित करने में सक्षम बनाता है अर्थात माइंडफूलनेस के समान वर्तमान क्षण में रहना और मन की शांति को प्राप्त करना कृष्णमूर्ति के दर्षन का मूल आधार है। भावनाओं की समझ और संबंध निर्माण पर आधारित सामाजिक भावनात्मक अधिगम कृष्णमूर्ति के दर्षन में करुणा और भावनात्मक विकास के रूप में परिलक्षित होता है। उनके अनुसार षिक्षा भय मुक्त संबंध बनाने पर और सहानुभूति विकसित करने पर जोर देती है और सामूहिक कल्याण एवं सामाजिक परिवर्तन पर केंद्रित रहती है। स्पष्ट है कि कृष्णमूर्ति का

शैक्षिक दर्षन कल्याण माइंडफूलनेस और सामाजिक भावनात्मक अधिगम से पूर्णतया जुडा है और वर्तमान विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य संकट को समाप्त के लिए पूर्णतया प्रासंगिक है।

शर्मा, 2024 के अनुसार राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 में कृष्णमूर्ति के दर्षन का मूल आधार एकीकृत पाठ्यक्रम, भय मुक्त वातावरण, अनुभव आधारित षिक्षा और गैर प्रतिस्पर्धी मूल्यांकन पूर्णतया शामिल किया गया है। **सिंह, 2020** ने अपने शोध में बताया कि कृष्णमूर्ति के दर्षन में कल्याण आंतरिक शांति प्रेम और जीवन की पूर्णता से जुड़ा है। **मेश्राम, 2024** के अनुसार कृष्णमूर्ति का समग्र विकास की अवधारणा राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 में प्रतिबिंबित होती है जो कि सामाजिक कल्याण और सद्भाव पर आधारित है। कृष्णमूर्ति की चोईसलैस अवेयरनेस का सिद्धांत माइंडफूलनेस को प्रदर्षित करता है। **कौर और दास 2018** के अनुसार कृष्णमूर्ति की चॉइसलेस अवेयरनेस षिक्षा में आत्मनिरीक्षण और ध्यान को समाहित करती है और बालकों को तनाव मुक्त कर उसकी एकाग्रता को बढाती है। सामाजिक भावनात्मक अधिगम का समावेष कृष्णमूर्ति के भावनात्मक विकास करुणा और उसके संबंधों से जुड़ा है। उपरोक्त साहित्य से स्पष्ट है कि कृष्णमूर्ति का शैक्षिक दर्षन शैक्षिक चुनौतियां मुख्यतः भावनात्मक असंतुलन और मानसिक अस्वस्थता के लिए समाधान प्रदान करता है। यह समग्र भय मुक्ति, जागरूकता आधारित दर्षन सामाजिक भावनात्मक अधिगम को आध्यात्मिक गहराई प्रदान करता है।

डॉ एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक दर्शन में नैतिक मूल्यों की अवधारणा का दार्शनिक संबंध :

डॉक्टर कलाम का शैक्षिक दर्षन आदर्षवादी, यथार्थवादी और व्यावहारिक विचारों का संयोजन है, जो व्यक्ति में राष्ट्र विकास की सषक्त भावना को जागृत करता है। उनके अनुसार षिक्षा जीवन की यात्रा है, जिसमें व्यक्ति नैतिक, वैज्ञानिक और रचनात्मक ऊंचाइयों की ओर जाता है। कलाम के सिद्धांत में षिक्षा चरित्र निर्माण, वैज्ञानिक सोच, रचनात्मकता राष्ट्रीय एकता को बढाने वाला शक्तिषाली हथियार है। उन्होंने जीवन भर सिखाने वाली षिक्षा को प्रोत्साहित किया ना की मात्र परीक्षा में उत्तीर्ण होने को। कलाम के अनुसार पाठ्यक्रम छात्र केंद्रित षिक्षा पर आधारित होना चाहिए, जिसमें रचनात्मकता, मूल्य आधारित षिक्षा समावेषिका अंतर विषय दृष्टिकोण और जीवन भर सीखने पर जोर दिया गया हो। वे मूल्यांकन में सुधार लाने के लिए सतत एवं निरंतर मूल्यांकन को प्रोत्साहित करते थे। कलाम के अनुसार षिक्षक एक प्रेरक मार्गदर्षक और जीवन भर सीखने वाला होना चाहिए जो छात्रों में सपने देखने, महत्वाकांक्षी होने और असफलताओं से सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। वे चाहते थे कि षिक्षक छात्रों को अपने सपनों को विचारों में बदलकर उन विचारों को कार्य में परिवर्तित करें। जिसके लिए छात्रों का सक्रिय भागीदार होना अति आवष्यक है। कलाम के दर्षन के मुख्य तीन स्तंभ में रचनात्मकता, धार्मिकता और सहानुभूति शामिल है, जो षिक्षा को नैतिक और सामाजिक रूप से मजबूत बनाते है। उनका दर्षन षिक्षा के द्वारा राष्ट्र को सुपर पावर बनाने की प्रेरणा देता है। कलाम के दर्षन में कल्याण व्यक्ति के समग्र विकास से जुड़ा है और षिक्षा तनाव मुक्ति, नैतिक संतुष्टि और सामाजिक योगदान प्रदान करती है।

कलाम के अनुसार कार्य तनाव कम करता है और संतुष्टि प्रदान करता है। वहीं मूल्यांकन में सुधार नैतिक षिक्षा, कल्याण को सुनिष्चित करता है। उनके अनुसार षिक्षा व्यक्ति को गरीबी से मुक्त कर आर्थिक और भावनात्मक कल्याण प्रदान करती है। माइंडफूलनेस अर्थात वर्तमान में जागरूकता कलाम के दर्षन में वैज्ञानिक सोच, आत्म चिंतन और असफलता से सीखने के रूप में अंतरनिहित है। कलाम का कार्य में पूर्ण एकाग्रता का सिद्धांत माइंडफूलनेस के तरह ही चिंता और तनाव को काम करता है। उनके अनुसार षिक्षा में आत्मनिरीक्षण

और जीवन भर सीखना व्यक्ति को वर्तमान चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाती है। इस प्रकार कलाम का वैज्ञानिक दृष्टिकोण माइंडफूलनेस को अधिक व्यावहारिक बनता है। सामाजिक भावनात्मक अधिगम अर्थात भावनाओं की समझ और संबंध निर्माण कलाम के दर्षन में स्वानुभूति धार्मिकता और सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में परिलक्षित होते है। उनके अनुसार षिक्षा चरित्र निर्माण करती है और सहानुभूति करना और नैतिक निर्णय को सीखकर व्यक्ति को दूसरों की जरूरत के प्रति संवेदनषील बनाती है। जिससे सामाजिक सद्भाव बढता है और यही सोषल इमोषनल लर्निंग के मूल घटकों स्वजागरूकता और संबंध कौषल को बढावा देते हैं। इस प्रकार कलाम का शैक्षिक दर्षन सामाजिक भावनात्मक अधिगम के बेहतर संबंध और काम संघर्ष को पूर्णतः प्रासंगिक बनाता है। डॉक्टर कलाम का दर्षन राष्ट्र निर्माण के लिए आज भी प्रेरणादायक है।

कलाम 2002 और त्रिवेदी 2017 के अनुसार डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम का शैक्षिक दर्षन समग्र विकास मूल्य आधारित षिक्षा वैज्ञानिक सोच राष्ट्र निर्माण और रचनात्मक पर केंद्रित है। उनके अनुसार षिक्षा व्यक्ति को आत्मसम्मान और सार्वभौमिक भाईचारे से जोडती है। **कौर और दास 2018** नें कलाम के दर्षन को व्यावहारिक और दृष्टिकोण पूर्ण बताया है। कलाम के अनुसार षिक्षा के तीन स्तंभ रचनात्मक धार्मिकता और सहानुभूति व्यक्ति को नैतिक और तकनीकी रूप से मजबूत बनाते हैं। **सरवन कुमार एवं साथी (2022)**. कलाम के दर्षन में कल्याण की अवधारणा, उनके उद्देष्य पूर्ण कार्य, तनाव मुक्ति और सामाजिक योगदान से जुड़ा है।

त्रिवेदी स्पष्ट करते हैं कि षिक्षा व्यक्ति को आत्मसम्मान, गरिमा और खुषी प्रदान करती है। उनके अनुसार किया गया कार्य मानसिक स्वास्थ्य और संतुष्टि प्रदान करता है। कलाम की इस अवधारणा को समग्र कल्याण से जोडा गया है। कलाम का वर्तमान वर्तमान लक्ष्य पर जागरूक रहने, ध्यान केंद्रित करने, आत्म चिंतन और असफलताओं से सीखने का संबंध माइंडफूलनेस का मूल आधार है। षिक्षा में वैज्ञानिक सोच और जीवन भर सीखना व्यक्ति को वर्तमान चुनौतियां से लड़ने की क्षमता प्रदान करता है। कलाम के दर्षन में सामाजिक भावनात्मक अधिगम की अवधारणा सहानुभूति धार्मिकता और सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में शामिल की गई है। **अख्तर 2021** के अनुसार कलाम के तीन स्तंभों में सोषल इमोषनल लर्निंग के घटकों को भावनात्मक संतुलन और सामाजिक सद्भाव से जोड़ा गया है। उपरोक्त साहित्य स्पष्ट करता है कि कलाम का दर्षन आधुनिक षिक्षा में समग्रता, मूल्य केंद्रता और नवाचार आधारित सामाजिक भावनात्मक अधिगम, माइंडफूलनेस और कल्याण को व्यवहारिक गहराई प्रदान करता है और राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 में इसका स्पष्ट समावेष प्रदर्षित होता है।

आधुनिक शिक्षा में शैक्षिक दर्शन में नैतिक मूल्यों की अवधारणा का समावेश :

उपरोक्त तीनों अवधारणाएं आधुनिक षिक्षा के केंद्र में रहते हुए छात्रों के समग्र विकास को सुनिष्चित करती है। राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 में योग, मूल्य आधारित षिक्षा और जीवन कौषल के माध्यम से एकीकृत किया गया है। उपरोक्त अवधारणाएं कुछ शोध पत्रों, नीतियों एवं विद्वानों की चर्चा के अंतर्गत सीमित न रहे इसलिए व्यावहारिक रूप से लागू करना आवष्यक है। इसके लिए विद्यालय पाठ्यक्रम के एक कालाष के रूप में शामिल किया जाए, जिससे विद्यार्थी का शारीरिक और मानसिक कल्याण सुनिष्चित हो। विद्यालयों में होने वाली अनेक गतिविधियों में माइंडफुल वर्क और काउंसलिंग सेषंस शामिल किए जाएं जिससे छात्र को तनाव और चिंता से दूर होकर अपनी एकाग्रता और सीखने की क्षमता को बढाने में प्रोत्साहन मिले। विद्यालयों में अकादमिक प्रगति के साथ–साथ स्वास्थ्य प्रगति की आदतों को शामिल कर छात्रों का समग्र कल्याण सुनिष्चित किया जा सकता

है। षिक्षक संबंधी कल्याण हेतु विभिन्न संगोष्ठियां, सेमिनार, वर्कषॉप्स आयोजित की जाए, ताकि उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं बौद्धिक स्तर को उत्तरोत्तर प्रभावी बनाया जाए जिससे वह छात्रों के तनाव को पहचान कर उनका स्वयं समाधान कर पाए। माइंडफुलनेस अर्थात वर्तमान में पूर्ण जागरूकता के लिए छात्र अपने विचार और भावनाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने वाले बने। इसके लिए आवष्यक है कि छात्रों की एकाग्रता की कमी और मानसिक विचलन जैसे तनाव को दूर करने के लिए श्री अरविंद घोष और जीतू कृष्णमूर्ति के समग्र षिक्षा पूर्ण योग के आयाम को षिक्षा प्रणाली में विस्तृत रूप से शामिल किया जाए विद्यालयों में ध्यान सत्र आयोजित किए जाएं। विद्यालयों में शांत कोना बनाया जाए जहां छात्र अपना तनाव कम करने के लिए बैठे और षिक्षकों के साथ बातचीत के माध्यम से भावनात्मक संतुलन प्राप्त करें। षिक्षकों के लिए माइंडफूलनेस के कोर्स षिक्षक प्रषिक्षण कार्यक्रमों में शामिल किए जाए ताकि षिक्षक विद्यार्थियों के साथ सामाजिक भावनात्मक संबंध स्थापित करें और उनके मानसिक तनाव, चिंता, विचलन को कम करने में सक्षम हो। हमारे पाठ्यक्रम में स्वजागरूकता, स्वप्रबंधन पर आधारित कालांषों को शामिल किया जाए जिससे छात्रों में व्याप्त सामाजिक कौषल की कमी सहयोग भावनात्मक का संतुलन की भावना को नियंत्रित किया जा सके। विद्यालय में आयोजित सामूहिक गतिविधियां जैसे रोलप्ले टीम प्रोजेक्ट साप्ताहिक अथवा पाक्षिक रूप में आयोजित किए जाएं जिससे छात्रों में सहानुभूति आधारित व्यवहार के साथ–साथ पर अनुभूति व्यवहार का प्रादुर्भाव हो। षिक्षक छात्रों की भावनाओं को पहचाने और उनका मार्गदर्षन करें जैसा की एमएन रॉय कि स्वजागरूकता और तर्कषीलता के सिद्धांत में कहा भी गया है कि अधिनायकताबाद को समाप्त करके ही षिक्षक और विद्यार्थी संबंध को सुधारा जा सकता है और उसे एक नए आयाम पर ले जाया जा सकता है।

निष्कर्ष %

श्री अरविंद घोष, राय, जी. कृष्णमूर्ति और डॉ एपीजे अब्दुल कलाम ने षिक्षा को ज्ञान संचय एवं बौद्धिकता का माध्यम न मानकर व्यक्ति के समग्र विकास, आंतरिक परिवर्तन, सामाजिक, नए राष्ट्र निर्माण का सषक्त साधन माना है। इनके दर्षन में कयाण, माइंडफूलनेस और सामाजिक भावनात्मक अधिगम की अवधारणा स्पष्ट अंतरनिहित है और राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 में परिलक्षित होती है। श्री अरविंदो घोष की इंटीग्रल एजुकेषन परानुभूति से संबंधित शैक्षिक दर्षन राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 के हॉलिस्टिक डेवलपमेंट अर्थात समग्र विकास, योग, एकीकरण और भारतीय ज्ञान प्रणाली से जुड़ा हुआ है। उनके दर्षन में कल्याण, आध्यात्मिक उत्थान, माइंडफूलनेस, ध्यान और सामाजिक भावनात्मक अधिगम प्राणीक षिक्षा से सीधा संबंध रखता है। राय का रेडिकल ह्यूमैनिज्म, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नैतिक विकास और तर्कसंगत्ता के साथ राष्ट्रीय षिक्षा नीति के संवैधानिक मूल्य और सामाजिक जिम्मेदारी को दर्षाता है। जी. कृष्णमूर्ति की समग्र एवं भय मुक्त षिक्षा व्यक्ति की आंतरिक जागरूकता और आंतरिक स्वतंत्रता पर बल देता है और राष्ट्रीय षिक्षा नीति के चॉइसलेस अवेयरनेस, योग, ध्यान एवं भय मुक्त षिक्षा भावनात्मक विकास को प्रेरित करता है। वही डॉक्टर कलाम का रचनात्मक और उद्देष्य पूर्ण कार्य पर आधारित शैक्षिक दर्षन राष्ट्रीय षिक्षा नीति में जीवन कौषल और राष्ट्र निर्माण को बढावा देता है। स्पष्ट है कि इन चार प्रमुख भारतीय षिक्षाविदों के शैक्षिक दर्षन राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 के 5 मार्गदर्षन स्तंभों *एक्सेस इक्विटी क्वालिटी अफॉर्डेबिलिटी और अकाउंटेबिलिटी* से सीधा संबंध रखते हैं और राष्ट्रीय षिक्षा नीति में योग, मूल्य आधारित षिक्षा, बहुविषय दृष्टिकोण, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक भावनात्मक अधिगम, अनुभव

आधारित अधिगम और भारतीय परंपराओं के एकीकरण पर प्रकाष डालते हैं। राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 में इन दर्षनों का आधुनिक संदर्भ षिक्षा को अधिक संतुलित और परिवर्तनकारी बनता है जिसके द्वारा व्यक्ति न केवल बौद्धिक रूप से सषक्त बनता है बल्कि उसमें भावनात्मक संतुलन, जागरूकता सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना का भी विकास होता है। अंततः राष्ट्रीय षिक्षा नीति में षिक्षाविदों के शैक्षिक दर्षन के साथ कल्याण, माइंडफूलनेस और सामाजिक भावनात्मक अधिगम की अवधारणा का समावेष भारतीय षिक्षा में आधुनिकता, जीवंतता, व्यक्तिगत कल्याण, राष्ट्र कल्याण को सुनिष्चित करता है।

ग्रंथ सूची :

- जुलास्की, जे. (2015). एक संपूर्ण एकीकृत षिक्षा : पाँच प्रमुख पहलू। इंटीग्रल रिव्यू, 13(1)।
- CASEL- (2020). SEL क्या है? अकादमिक, सामाजिक और भावनात्मक अधिगम के लिए सहयोगात्मक कार्यक्रम।
- डॉज, आर., डेली, ए. पी., ह्यूटन, जे., और सैंडर्स, एल. (2012). कल्याण को परिभाषित करने की चुनौती। इंटरनेषनल जर्नल ऑफ वेलबीइंग, 2(3), 222—235।
- कबाट—जिन, जे. (2003). संदर्भ में माइंडफुलनेस—आधारित हस्तक्षेप। क्लिनिकल साइकोलॉजी : साइंस एंड प्रैक्टिस, 10(2), 144—156।
- षिक्षा मंत्रालय (MoE). (2020). राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020. भारत सरकार।
- जेनर, सी., हेर्नलेबेन—कुर्ज, एस., और वालाच, एच. (2014). विद्यालयों में माइंडफुलनेस आधारित हस्तक्षेप। फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 5, 603।
- जुलास्की, जे. (2017). एक संपूर्ण एकीकृत षिक्षा : पाँच प्रमुख पहलू। इंटीग्रल रिव्यू, 13(1)।
- चंद्र, पी. (1992). एम. एन. रॉय का राजनीतिक दर्षन। सरूप एंड संस।
- नरिसेट्टी, आई. (2004). एम.एन. रॉय : कट्टरपंथी मानवतावादी : चयनित रचनाएँ। प्रोमेथियस बुक्स।
- सिबी, के. जे. (2020). कट्टरपंथी मानवतावाद और लोकतंत्र पर एम. एन. रॉय के विचार। इंटरनेषनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोषल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटीज, 10(2)।
- मेश्राम, एस.के. (2024)। जे. कृष्णमूर्ति का शैक्षिक सतत विकास। इंजीनियरिंग प्रबंधन और विज्ञान में प्रगतिषील अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल।
- शर्मा, ए. (2024)। जि. कृष्णमूर्ति का षिक्षा दर्षन और राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020। षिक्षण संषोधन, 1—12।
- सिंह, एस. (2020). जि. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्षन की प्रासंगिकता। जेतिर. JETIR
- कौर, एस., और डैष, एन. (2018). आधुनिक षिक्षा प्रणाली के विषेष संदर्भ में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का शैक्षिक दर्षन। इंटरनेषनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 6(1), 609—614।
- परीक, एच. पी. एन. (2015). षिक्षा के बारे में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का दृष्टिकोण। स्रोतों से प्रासंगिक प्रकाषन विवरण।
- सरवनकुमार, ए. आर., राधा, आर., और अन्य (2022). षिक्षा पर अब्दुल कलाम के बहुआयामी दृष्टिकोण। रिसर्चगेट।
- अख्तर शमीम (2021). डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों और योगदानों का अन्वेषण करने वाला एक अध्ययन। इंटरनेषनल जर्नल ऑफ ट्रेंड इन साइंटिफिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 5(4)।

drpreetigrover6@gmail.com, 7597387963, joshisharad@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 62-75
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

STUDY OF ZERO DISTRIBUTION AND MAXIMUM MODULUS OF ANALYTIC FUNCTIONS

RAJENDER KUMAR, RESEARCH SCHOLAR,
DR. ARVINDER KUMAR BHARDWAJ, ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF MATHEMETRICS, SHRI KHUSHAL DAS UNIVERSITY, HANUMANGARH.

ABSTRACT

Complex analysis is an important branch of mathematics that deals with analytic functions of complex variables. Analytic functions possess several remarkable properties such as infinite differentiability, power series expansion, and strong structural behavior. These functions play a fundamental role in various areas of mathematics, physics, and engineering.

In this research paper, we present a detailed study of the zero distribution and maximum modulus of analytic functions. Using fundamental tools such as the Cauchy Integral Formula, Taylor series expansion, and the Maximum Modulus Principle, the structural and growth behavior of analytic functions is examined. It is shown that zeros of analytic functions are isolated unless the function is identically zero. Furthermore, it is established that the maximum modulus of a non-constant analytic function occurs only on the boundary of the domain.

This study provides deeper insight into the geometric and structural properties of analytic functions. The results are useful in conformal mapping, fluid dynamics, signal processing, and theoretical physics. The present work also provides a foundation for further research in meromorphic functions, Hardy spaces, and advanced complex function theory.

Keywords

Analytic functions, Complex analysis, Zero distribution, Maximum modulus principle, Cauchy integral formula, Growth of analytic functions

1. INTRODUCTION

Complex analysis is one of the most elegant and powerful branches of mathematics. It deals with functions of complex variables and their properties. A function defined on a complex domain is said to be analytic if it is differentiable at every point in that domain. Analytic functions exhibit remarkable behavior that distinguishes them from real-valued functions.

Let f(z)

Analytic functions have several important properties:

- They are infinitely differentiable.
- They can be expressed as a power series.
- They satisfy important integral formulas such as Cauchy's Integral Formula.
- Their behavior is completely determined by their values in a small region.

One of the most important aspects of analytic functions is the study of their zeros. A complex number is called a zero of the function if

$f(z_0) = 0$

The distribution of zeros provides important information about the structure of analytic functions. Another fundamental concept in complex analysis is the Maximum Modulus Principle. This principle states that if a function is analytic and non-constant in a domain, then its maximum modulus cannot occur in the interior of the domain. Instead, it occurs on the boundary.

The main objectives of this research paper are:

- To study the zero distribution of analytic functions

- To examine the Maximum Modulus Principle
- To analyze the growth behavior of analytic functions
- To present important theorems and their proofs

This study contributes to a deeper understanding of analytic function theory and its applications in science and engineering.

2. PRELIMINARIES

In this section, we introduce the basic definitions and fundamental concepts that are essential for the study of analytic functions, their zero distribution, and the Maximum Modulus Principle.

Definition 2.1: Complex Function

A complex function is a function of the form

$f : D \subset \mathbb{C} \rightarrow \mathbb{C}$

where D is a subset of the complex plane $\mathbb{C}$, and for each complex number $z \epsilon D$, the function assigns a complex value $f(z)$.

Definition 2.2: Analytic Function

A function is said to be analytic in a domain if it is differentiable at every point in that domain.

That is, the limit

$f'(z) = \lim_{h \to 0} \frac{f(z+h)-f(z)}{h}$

exists for all $z \epsilon D$.

Analytic functions are also called holomorphic functions.

Definition 2.3: Entire Function

If a function is analytic over the entire complex plane $\mathbb{C}$, then it is called an entire function.

Examples: e^z, $\sin z$, $\cos z$, z^n

Definition 2.4: Zero of an Analytic Function

A complex number is called a zero of the function if

f(z_0) = 0

If there exists a positive integer such that

f(z) = $(z - z_0)^n g(z)$

where g(z_0) $\neq$ 0, then z_0 is called a zero of order n .

Definition 2.5: Isolated Zero

A zero z_0 is called an isolated zero if there exists a neighborhood around z_0 in which no other zeros of the function exist.

This means there exists a radius r$>$ 0 such that

f(z) $\neq$ 0 for all $0 < |z - z_0| < r$

Definition 2.6: Modulus of a Complex Function

The modulus of a complex function is defined as

$$|f(z)| = \sqrt{(Re(f(z))^2 + (Im(f(z))^2}$$

This represents the magnitude of the complex function.

Definition 2.7: Maximum Modulus

Let f(z) be analytic in a domain D. The maximum modulus is defined as

M(r) = $max_{|z|=r}$ |f(z)|

This represents the maximum value of the function on a circle of radius r .

Definition 2.8: Taylor Series Expansion

If f(z) is analytic at a point z_0 , then it can be expressed as a Taylor series:

f(z) $=\sum_{n=0}^{\infty} a_n(z-z_0)^n$ where $a_n = \frac{f^{(n)}(z_0)}{n!}$

This representation is fundamental in studying zero distribution and growth behavior.

3. Cauchy Integral Formula

The Cauchy Integral Formula is one of the most important results in complex analysis. It provides the value of an analytic function inside a closed contour in terms of an integral over the contour.

Theorem 3.1: Cauchy Integral Formula

If f(z) is analytic inside and on a simple closed contour , then for any point a inside C ,

f(a) $=\frac{1}{2\pi i}\int_C \frac{f(z)}{z-a}dz$

Higher Order Derivative Formula

$$f^{(n)}(a) = \frac{n!}{2\pi i}\int_C \frac{f(z)}{(z-a)^{n+1}}dz$$

Importance of Cauchy Integral Formula

This formula helps in:

- Finding derivatives of analytic functions
- Studying zero distribution
- Proving Maximum Modulus Principle
- Estimating function growth

4. Maximum Modulus Principle

The Maximum Modulus Principle is one of the most fundamental and powerful results in complex analysis. It describes the behavior of the modulus of analytic functions inside a domain.

Theorem 4.1: Maximum Modulus Principle

Let f(z) be analytic and non-constant in a bounded domain D and continuous on its boundar ∂D . Then the maximum value of |f(z)| occurs only on the boundary of the domain.

That is, $max_{z \, \epsilon D} |f(z)| = max_{z \epsilon \partial D} |f(z)|$

and not in the interior of the domain, unless the function is constant.

Proof

Suppose that f(z) is analytic and non-constant in a domain D .

Assume, for contradiction, that |f(z)| attains its maximum value at an interior point $z_0 \in D$.

Let

$|f(z_0)| = M$ be the maximum value.

Since f(z) is analytic, it can be represented by a Taylor series around z_0 :

$f(z) = a_0 + a_1(z - z_0) + a_2(z - z_0)^2 + \cdots$

where $a_0 = f(z_0)$

Now consider a small circle centered at z_0 :

$|z - z_0| = r$

By the Cauchy Integral Formula , $f(z_0) = \frac{1}{2\pi i} \int_C \frac{f(z)}{z - z_0} dz$

Taking modulus on both sides:

$$|f(z_0)| \leq \frac{1}{2\pi i} \int_C \frac{|f(z)|}{|z - z_0|} |dz|$$

$$\text{Since } \; |f(z)| \leq M,$$

$$|f(z_0)| \leq M$$

This implies equality holds only if f(z) is constant.

Thus, if the maximum occurs inside the domain, the function must be constant.

This contradicts our assumption.

Therefore, the maximum modulus must occur on the boundary.

Hence proved.

Corollary 4.1

If an analytic function attains its maximum value inside the domain, then the function must be constant.

Geometrical Interpretation

This theorem implies that analytic functions cannot have local maxima inside the domain unless they are constant.

This property distinguishes analytic functions from real-valued functions.

5. Zero Distribution of Analytic Functions

The study of zeros of analytic functions is important for understanding their structure and behavior.

Theorem 5.1: Zeros of Analytic Functions are Isolated

If f(z) is analytic in a domain D and is not identically zero, then its zeros are isolated.

Proof

Suppose f(z) is analytic in domain D and

f(z_0) = 0

Since f(z) is analytic, it has a Taylor series expansion around z_0 :

f(z) = $a_n(z - z_0)^n + a_{n+1}(z - z_0)^{n+1} + \cdots$

where $a_n \neq 0$

Factorizing:

f(z) = $(z - z_0)^n g(z)$

where $g(z_0) \neq 0$

Since g(z) is analytic and non-zero near z_0 , there exists a neighborhood around z_0 where g(z)≠0 .

Thus,

f(z) ≠ 0   except z_0 at .

Therefore, zeros are isolated.

Hence proved.

Example :

f(z) = z^3- 1

Zeros are:

z = 1, $z = e^{\frac{2\pi i}{3}}$, $z = e^{4\pi i/3}$

These zeros are isolated.

6. Relationship Between Zeros and Maximum Modulus

Let   f (z) =$\sum_{n=0}^{\infty} a_n z^n$

If the modulus increases, the function grows faster.

Zeros influence the growth and structure of analytic functions.

The Maximum Modulus Principle helps estimate the size and distribution of zeros.

7. Growth of Analytic Functions

The study of the growth of analytic functions is an important aspect of complex analysis. It describes how the magnitude (modulus) of an analytic function behaves as the complex variable increases in magnitude.

Let f(z) be an analytic function defined in a domain. The maximum modulus of the function on the circle |z|=r is defined as:

M(r) = $max_{|z|=r} |f(z)|$

This function M(r) provides important information about the growth behavior of f(z) .

The growth of analytic functions is closely related to the coefficients of their Taylor series expansion.

Theorem 7.1: Cauchy Inequality

Let f(z) be analytic inside and on the circle , and suppose that |f(z)| ≤ M

for all |z|=r . If

f(z) =$\sum_{n=0}^{\infty} a_n z^n$

is the Taylor series expansion of f(z), then the coefficients satisfy the inequality:

$$|a_n| \leq \frac{M}{r^n}$$

Proof

By Cauchy's Integral Formula for coefficients,

$a_n = \frac{1}{2\pi i} \int_C \frac{f(z)}{z^{n+1}} dz$

Taking modulus on both sides,

$$|a_n| \leq \frac{1}{2\pi} \int_C \frac{|f(z)|}{|z|^{n+1}} |dz|$$

Since

|f(z)| ≤ M and |z| = r

we obtain: $|a_n| \leq \frac{M}{r^n}$

Thus, the theorem is proved.

Importance of Growth Analysis

This result shows that the growth of an analytic function is controlled by its maximum modulus. If the function is bounded, its coefficients must decrease rapidly.

This helps in:

- Estimating analytic functions
- Studying convergence
- Understanding structural behavior

8. Liouville's Theorem

Liouville's Theorem is one of the most important results in complex analysis. It provides a powerful characterization of bounded entire functions.

Theorem 8.1: Liouville's Theorem

If f(z) is an entire function and bounded in the complex plane, then f(z) must be constant.

That is, if there exists a constant M such that

$|f(z)| \leq M$ for all $z \in \mathbb{C}$

Then f(z) = constant

Proof

Since f(z) is entire, it has a Taylor series expansion:

$f(z) = \sum_{n=0}^{\infty} a_n z^n$

Using Cauchy's inequality, $|a_n| \leq \frac{M}{r^n}$

for any $r > 0$.

Letting $r \to \infty$, we obtain: $|a_n| \to 0$

Thus, $a_n = 0$ for all $n \geq 1$

Therefore,

$f(z) = a_0$ which is constant.

Hence proved.

Significance of Liouville's Theorem

Liouville's Theorem has several important consequences:

1. It proves that bounded entire functions are constant.

2. It is used in the proof of the Fundamental Theorem of Algebra.

3. It helps classify analytic functions based on growth.

4. It plays an important role in advanced complex analysis.

9. Applications of Maximum Modulus Principle

The Maximum Modulus Principle has several important applications in complex analysis and related fields. It is a fundamental tool used to study analytic functions and their behavior.

9.1 Application in Proving Liouville's Theorem

The Maximum Modulus Principle is used to prove that a bounded entire function must be constant. Since the function cannot attain a maximum inside the domain unless it is constant, bounded entire functions have constant modulus everywhere.

9.2 Application in Fundamental Theorem of Algebra

The Fundamental Theorem of Algebra states that every non-constant polynomial has at least one zero in the complex plane.

This theorem can be proved using Liouville's Theorem, which is based on the Maximum Modulus Principle.

9.3 Application in Conformal Mapping

Analytic functions preserve angles locally. The Maximum Modulus Principle helps determine the behavior of conformal mappings and ensures stability in geometric transformations.

This is useful in:

- Fluid dynamics
- Aerodynamics
- Engineering design

9.4 Application in Engineering and Physics

Analytic functions and their growth behavior are used in:

- Signal processing
- Electromagnetic field theory
- Control systems
- Quantum mechanics

The Maximum Modulus Principle helps ensure stability and boundedness of solutions.

10. Results and Discussion

In this research paper, the structural and growth behavior of analytic functions has been examined using fundamental principles of complex analysis.

The main results obtained are as follows:

Result 1: Maximum Modulus Principle

It has been established that if a function is analytic and non-constant in a domain, then its maximum modulus cannot occur in the interior of the domain.

This result provides important information about the boundary behavior of analytic functions.

Result 2: Isolated Zeros of Analytic Functions

It has been proved that the zeros of analytic functions are isolated unless the function is identically zero.

This property is essential for understanding the structure and distribution of zeros.

Result 3: Growth Control Using Cauchy Inequality

The Cauchy Inequality provides a bound on the coefficients of analytic functions. This shows that the growth of analytic functions is controlled and predictable.

Result 4: Characterization of Entire Functions

Using Liouville's Theorem, it has been shown that bounded entire functions must be constant.

This result plays a key role in complex function theory.

Discussion

These results demonstrate that analytic functions possess highly structured and predictable behavior.

Their growth, zero distributionul distribution, and maximum modulus are closely related. The Maximum Modulus Principle plays a central role in understanding these relationships.

The results are consistent with classical theories of complex analysis and provide a foundation for advanced research.

11. Conclusion

In this research paper, a detailed study of the zero distribution and maximum modulus of analytic functions has been presented.

It has been shown that analytic functions exhibit highly structured behavior, and their properties can be studied using fundamental tools such as the Cauchy Integral Formula, Maximum Modulus Principle, and Liouville's Theorem.

One of the most important findings is that the maximum modulus of an analytic function occurs on the boundary of the domain unless the function is constant. This provides important insight into the growth and stability of analytic functions.

It has also been established that the zeros of analytic functions are isolated, which helps in understanding their structural properties.

Furthermore, the growth of analytic functions is closely related to their Taylor series coefficients, and bounded entire functions must be constant.

These results have important applications in mathematics, physics, and engineering.

This study provides a strong theoretical foundation for further research in:

- Meromorphic functions
- Harmonic functions
- Complex dynamical systems
- Advanced analytic function theory

12. References

1. Lars Ahlfors, Complex Analysis, McGraw-Hill

2. John B. Conway, Functions of One Complex Variable, Springer

3. Walter Rudin, Real and Complex Analysis, McGraw-Hill

4. E. C. Titchmarsh, Theory of Functions, Oxford University Press

5. Serge Lang, Complex Analysis, Springer

6. E. M. Stein and R. Shakarchi, Complex Analysis, Princeton University Press

7. Theodore Gamelin, Complex Analysis, Springer

8. Churchill and Brown, Complex Variables and Applications, McGraw-Hill

9. Hille, Analytic Function Theory, Chelsea Publishing

10. Markushevich, Theory of Functions of a Complex Variable

11. Cartan, H., Elementary Theory of Analytic Functions of One or Several Complex Variables, Dover Publications.

12. Conway, J. B., Functions of One Complex Variable I, Springer-Verlag.

13. Conway, J. B., Functions of One Complex Variable II, Springer-Verlag.

14. Freitag, E., and Busam, R., Complex Analysis, Springer.

15. Greene, R. E., and Krantz, S. G., Function Theory of One Complex Variable, American Mathematical Society.

16. Krantz, S. G., Complex Analysis: The Geometric Viewpoint, Mathematical Association of America.

17. Narasimhan, R., Complex Analysis in One Variable, Birkhäuser.

18. Remmert, R., Theory of Complex Functions, Springer-Verlag.

19. Saff, E. B., and Snider, A. D., Fundamentals of Complex Analysis, Pearson.

20. Shabat, B. V., Introduction to Complex Analysis, American Mathematical Society.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 76-79
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

ब्रजभाषा काव्य में लोकगीत्मकता

प्रो. विजय श्रीवास्तव, प्राचार्य,
मनोज कुमार, शोधार्थी
हिंदी विभाग, आर. बी. एस. कॉलेज, आगरा।

सारांश (Abstract)

ब्रजभाषा काव्य हिंदी साहित्य की भक्तिकालीन परंपरा की एक सशक्त, जनमुखी और लोकधर्मी काव्यधारा है। इसकी रचना–भूमि लोकजीवन, लोकसंस्कृति और लोकसंवेदना से गहराई से जुड़ी हुई है। ब्रजभाषा काव्य की सबसे विशिष्ट विशेषता इसकी लोकगीत्मकता है, जो भाषा की सहजता, गेयता, भावात्मक सरलता तथा सामूहिक लोकचेतना के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य ब्रजभाषा काव्य में निहित लोकगीत्मक तत्वों का बहुआयामी विश्लेषण करना है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार भक्तिकालीन ब्रजभाषा कवियों 'विशेषतः सूरदास, नंददास और रसखान' के काव्य में लोकगीतों की भावभूमि, शिल्प, लय और सांस्कृतिक चेतना साहित्यिक गरिमा प्राप्त करती है। यह अध्ययन ब्रजभाषा काव्य को लोक और शास्त्र के मध्य एक सशक्त सेतु के रूप में स्थापित करता है तथा यह प्रतिपादित करता है कि ब्रजभाषा काव्य भारतीय लोकसंस्कृति का साहित्यिक रूपांतरण है।

बीज शब्द (Keywords) : ब्रजभाषा, लोकगीत्मकता, लोकसंस्कृति, भक्तिकाल, गेयता, लोकचेतना।

1. भूमिका :

हिंदी साहित्य का भक्तिकाल सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक क्रांतिकारी युग माना जाता है। यह वह कालखंड है, जिसमें साहित्य अभिजात वर्ग और राजाश्रय की सीमाओं से बाहर निकलकर जनसामान्य की अनुभूति, विश्वास और भावनात्मक आवश्यकताओं से जुड़ता है। इसी ऐतिहासिक संदर्भ में ब्रजभाषा काव्य का उदय और उत्कर्ष होता है।

ब्रजभाषा उस समय उत्तर भारत की एक सजीव लोकभाषा थी, जिसमें लोकगीत, लोककथाएँ, धार्मिक आख्यान और दैनिक जीवन की अनुभूतियाँ अभिव्यक्त होती थीं। भक्तिकालीन कवियों ने इसी लोकभाषा को काव्य की भाषा बनाया, जिससे साहित्य और लोकजीवन के बीच की दूरी समाप्त हो गई। रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, "भक्तिकालीन काव्य की शक्ति उसकी लोकधर्मिता में निहित है।"

ब्रजभाषा काव्य की लोकप्रियता, व्यापकता और दीर्घजीविता का मूल कारण उसकी लोकगीतात्मक प्रवृत्ति है। लोकगीतों की सहजता, गेयता और सामूहिक भावबोध ब्रजभाषा काव्य में इस प्रकार घुल–मिल गए हैं कि वह जनमानस का काव्य बन जाता है।

2. लोकगीत्मकता : अवधारणा, परिभाषा और सैद्धांतिक आधार :

लोकगीत्मकता का आशय उस काव्यात्मक गुण से है, जिसमें लोकगीतों के तत्त्व 'भाषा, भाव, लय, विषय और सामाजिक चेतना' स्वाभाविक रूप से विद्यमान हों। लोकगीत किसी एक व्यक्ति की रचना न होकर समाज की सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति होते हैं।

हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में, "जो चीजें लोकहित में सीधे उत्पन्न होकर सर्वसाधारण को आंदोलित चलित और प्रभावित करे वह लोकसाहित्य है"। इस दृष्टि से लोकगीत्मकता केवल शिल्पगत विशेषता नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक दृष्टिकोण है।

लोकगीत्मकता के प्रमुख तत्त्व इस प्रकार हैं –

1. सरल एवं बोलचाल की भाषा।
2. लय, ताल और गेयता की प्रधानता।
3. लोकजीवन से जुड़े विषय।
4. भावों की स्वाभाविक और आत्मीय अभिव्यक्ति।
5. सामूहिक सामाजिक चेतना।

ब्रजभाषा काव्य इन सभी तत्त्वों को आत्मसात करता है, जिससे वह लोकगीतों के अत्यंत समीप दिखाई देता है।

3. ब्रजभाषा : लोकभाषा से साहित्यिक भाषा तक की यात्रा :

ब्रजभाषा मूलतः ब्रज अंचल की लोकभाषा थी। यह भाषा कृषक, ग्वाले, स्त्रियाँ और सामान्य जन अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करते थे। लोकगीतों की रचना और परंपरा इसी भाषा में विकसित हुई।

भक्तिकालीन कवियों ने संस्कृत या फारसी जैसी अभिजात भाषाओं के स्थान पर ब्रजभाषा को अपनाया। यह चयन केवल भाषिक नहीं, बल्कि वैचारिक था। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "भक्तिकाल में ब्रजभाषा न केवल काव्य का माध्यम बनी, बल्कि वह आत्मा की वाणी बनकर जन जन तक पहुँची।"[1]

ब्रजभाषा की मधुरता, कोमलता और भाव प्रवणता ने लोकगीतों की गेयता को काव्य में सहज स्थान दिया। इस भाषा में रचित पद और भजन लोकगीतों की भाँति गाए जाने लगे, जिससे काव्य, संगीत और लोकजीवन का त्रिवेणी–संगम हुआ।

4. ब्रजभाषा काव्य में लोकगीतात्मक तत्वों का विस्तृत विश्लेषण

4.1 भाषा की सहजता और आत्मीयता :

ब्रजभाषा काव्य की भाषा संस्कृतनिष्ठ जटिलता से मुक्त है। सूरदास के पदों में प्रयुक्त शब्दावली लोकगीतों की भाषा से अत्यंत निकट है। यह भाषा श्रोता या पाठक को किसी बौद्धिक प्रयास के बिना ही भावलोक में प्रवेश करा देती है।

4.2 गेयता, लय और संगीतात्मक संरचना :

लोकगीत गाने के लिए होते हैं और ब्रजभाषा काव्य की रचना भी मूलतः गेय है। पद, सवैया और कवित्त की छंदात्मक संरचना संगीत के अनुकूल है। कीर्तन, भजन और संकीर्तन परंपरा ने इस गेयता को सामाजिक जीवन का अंग बना दिया।

4.3 लोकजीवन और प्रकृति का चित्रण :

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय के अनुसार, "भारतीय संस्कृति का सच्चा तथा स्वाभाविक चित्रण लोक साहित्य में उपलब्ध होता है।"[2] ब्रजभाषा काव्य में गोचारण, यमुना तट, वन, ऋतुएँ, पर्व–त्योहार और पारिवारिक संबंधों का सजीव चित्रण मिलता है। यह चित्रण लोकगीतों की भाँति जीवन के सामान्य अनुभवों को काव्यात्मक गरिमा प्रदान करता है।

4.4 भावात्मक सरलता और रसानुभूति :

लोकगीतों की सबसे बड़ी विशेषता भावों की सहजता है। ब्रजभाषा काव्य में वात्सल्य, श्रृंगार और भक्ति रस की प्रस्तुति इसी सरलता के साथ हुई है। यहाँ कोई दार्शनिक जटिलता नहीं, बल्कि हृदय की सीधी अनुभूति है।

5. भक्तिकालीन ब्रजभाषा कवियों में लोकगीत्मकता :

5.1 सूरदास : लोकगीत्मकता का सर्वोच्च उदाहरण :

सूरदास के काव्य में लोकगीत्मकता अपने पूर्ण उत्कर्ष पर दिखाई देती है। कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन मातृ–वात्सल्य से ओत–प्रोत है। यशोदा का वात्सल्य लोकगीतों की भावभूमि पर ही आधारित है। आचार्य रामचंद्र के अनुसार, "सूरदास ने बालकृष्ण के माध्यम से वात्सल्य रस को चरम तक पहुँचाया।"[3]

5.2 नंददास : श्रृंगार और लोकभाव का समन्वय :

नंददास के काव्य में श्रृंगार और भक्ति का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। उनकी भाषा, लय और भाव–प्रस्तुति लोकगीतों की आत्मीयता से जुड़ी हुई है।

5.3 रसखान : लोकसंवेदना और भक्ति का संगम :

रसखान की ब्रजभाषा में रचित कविताओं में लोकसंवेदना और भक्ति का अद्भुत मेल है। उनकी रचनाएँ भावात्मक सरलता और गेयता के कारण लोकगीतों के अत्यंत समीप प्रतीत होती हैं।

6. ब्रजभाषा काव्य, लोकगीत और सामूहिक चेतना :

लोकगीत व्यक्तिगत अनुभूति की अपेक्षा सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति होते हैं। ब्रजभाषा काव्य में भी यही प्रवृत्ति दिखाई देती है। कवि स्वयं को समाज से पृथक नहीं करता, बल्कि समाज की अनुभूति का प्रतिनिधि बन जाता है।

7. लोकगीत्मकता और ब्रजभाषा काव्य की कालजयीता :

ब्रजभाषा काव्य की लोकगीत्मकता ने उसे कालजयी बना दिया। यह काव्य समय, समाज और वर्ग की सीमाओं को पार कर सैकड़ों वर्षों तक जीवित रहा। इसका मूल कारण उसकी लोकधर्मी प्रकृति है। आचार्य विश्वनाथ त्रिपाठी के अनुसार, "इस जगत को महत्व देने में ही भक्ति और लोकोन्मुखता का बीज है। जो है, दिखलाई पड़ रहा है – वह मिथ्या नहीं सच है। यह लोक और लौकिक यथार्थ की विश्वबोधात्मक या विचारधारात्मक स्वीकृति है।"[4]

8. निष्कर्ष :

ब्रजभाषा काव्य की लोकगीत्मकता उसकी आत्मा है। यही तत्व उसे जनसामान्य से जोड़ता है और उसे स्थायित्व प्रदान करता है। लोकगीतों की सहजता, गेयता और सामूहिक संवेदना ब्रजभाषा काव्य में समाहित

होकर हिंदी साहित्य को एक सुदृढ़ लोकधर्मी परंपरा प्रदान करती है। अतः ब्रजभाषा काव्य को केवल भक्तिकालीन साहित्य न मानकर भारतीय लोक संस्कृति का साहित्यिक रूपांतरण माना जाना चाहिए।

संदर्भ सूची (References) :

1. शुक्ल, रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, संस्करण दस, लोकभारती प्रकाशन वाराणसी, 1971, पृष्ठ 157।
2. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, हिंदी साहित्य की भूमिका–संस्करण चतुर्थ, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1976, पृष्ठ 93।
3. त्रिपाठी, विश्वनाथ, हिंदी आलोचना प्रथम संस्करण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1970।
4. उपाध्याय, कृष्णदेव, लोकसाहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद, 1957, पृष्ठ 141।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 80-84
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

Climate Change Litigation in India : Role of Judiciary and Green Tribunals

Dr. Sanjay Kulshrestha
Prof. & Head, Institute of Law, Jiwaji University, Gwalior.

Abstract :

Climate change has emerged as one of the most significant global challenges of the twenty-first century, affecting environmental sustainability, human rights, economic development, and governance. India, being a developing nation with high vulnerability to climate impacts, faces severe risks such as rising temperatures, erratic monsoons, floods, droughts, biodiversity loss, and sea-level rise. In the absence of a comprehensive climate change law, the judiciary and the National Green Tribunal (NGT) have played a crucial role in addressing climate-related disputes through constitutional interpretation and environmental jurisprudence. This paper examines the concept of climate change litigation in India, constitutional and legal frameworks, judicial and NGT interventions, challenges, and future prospects for climate justice.

Keywords : Climate Change Litigation, Judiciary, National Green Tribunal, Environmental Law, Constitutional Law, Climate Justice.

Introduction :

Climate change is no longer a purely scientific issue but a legal and policy challenge with profound implications for human rights and sustainable development. The increasing concentration of greenhouse gases has resulted in global warming, melting glaciers, rising sea levels, and extreme weather events, threatening ecosystems and human survival.

India's vulnerability arises from its geographical diversity, agrarian economy, large population, and socio-economic inequalities. Climate change threatens food security, water resources, public health, and livelihoods. Although India is a signatory to international climate agreements such as the UNFCCC and the Paris Agreement, domestic climate legislation remains fragmented. Consequently, courts and tribunals have become important forums for climate governance and accountability.

Concept and Evolution of Climate Change Litigation :

Climate change litigation refers to legal actions initiated to address climate impacts, enforce environmental obligations, challenge inadequate policies, or seek compensation for climate-related damages. Globally, climate litigation has evolved as a mechanism to hold governments and corporations accountable for climate inaction.

In India, climate litigation is largely indirect and is pursued through environmental and public interest litigation. Courts have addressed issues such as industrial pollution, deforestation, and environmental degradation, which are closely linked to climate change. Public Interest Litigation (PIL) has significantly expanded access to environmental justice.

Constitutional and Legal Framework

- **Fundamental Rights :**

The Indian Constitution provides a strong foundation for climate litigation. Article 21 guarantees the right to life, which has been interpreted to include the right to a clean and healthy environment. Climate change directly threatens life, health, and livelihood, thereby falling within Article 21.

Article 14 ensures equality before the law. Climate change disproportionately affects vulnerable groups such as the poor, women, children, indigenous communities, and coastal populations, raising issues of climate justice and equality.

Article 19(1)(g) guarantees freedom of trade and occupation but allows reasonable restrictions for environmental protection. Courts have balanced economic development with environmental sustainability.

- **Directive Principles of State Policy :**

Article 48A directs the State to protect and improve the environment and safeguard forests and wildlife. Article 47 mandates the State to improve public health, which is directly affected by climate-induced diseases and environmental degradation. These provisions guide judicial interpretation of fundamental rights.

- **Fundamental Duties :**

Article 51A(g) imposes a duty on citizens to protect and improve the natural environment. Courts have used this provision to promote environmental awareness and sustainable practices.

Judicial Doctrines and International Principles :

Indian courts have incorporated international environmental principles such as :

- Sustainable Development
- Precautionary Principle
- Polluter Pays Principle

- Intergenerational Equity

These principles form the backbone of climate litigation and environmental jurisprudence in India.

- **Role of the Indian Judiciary :**

The Indian judiciary has played a pioneering role in environmental governance through judicial activism and PIL jurisprudence. Courts have expanded locus standi and treated environmental protection as a constitutional obligation.

Landmark Judicial Decisions :

- Rural Litigation and Entitlement Kendra v. State of Uttar Pradesh: Closure of limestone quarries to protect ecological balance.
- M.C. Mehta v. Union of India: Introduction of absolute liability for hazardous industries.
- Subhash Kumar v. State of Bihar: Recognition of pollution-free environment as part of Article 21.
- T.N. Godavarman Thirumulpad v. Union of India: Strengthening forest conservation.
- Vellore Citizens' Welfare Forum v. Union of India: Recognition of sustainable development and polluter pays principle.
- M.K. Ranjitsinh v. Union of India (2024): Recognition of the right to be free from adverse effects of climate change under Articles 14 and 21.

These judgments demonstrate the judiciary's proactive role in shaping climate jurisprudence.

Role of the National Green Tribunal (NGT) :

The National Green Tribunal was established under the NGT Act, 2010 as a specialized environmental court. It has jurisdiction over substantial environmental disputes and plays a significant role in climate governance.

The NGT integrates judicial and technical expertise and applies principles such as sustainable development, precautionary principle, and polluter pays principle. It has issued directions on industrial emissions, waste management, deforestation, and water pollution.

In Mahendra Pandey v. Union of India, the NGT directed States to prepare climate action plans in line with national and international commitments. The tribunal has enhanced access to environmental justice by allowing individuals and NGOs to approach it directly. However, it faces challenges such as limited enforcement powers and administrative constraints.

Challenges in Climate Change Litigation

Climate litigation in India faces several challenges :

1. Lack of a comprehensive climate change law.

2. Scientific complexity in proving causation and liability.
3. Weak enforcement of judicial and tribunal orders.
4. Limited legal awareness and resources among marginalized communities.
5. Institutional conflicts between judiciary, NGT, and executive agencies.

These challenges hinder effective climate governance and justice.

Comparative and International Perspective :

Globally, climate litigation has emerged as a powerful tool for accountability. Courts in the Netherlands, Germany, Pakistan, and Colombia have issued landmark judgments mandating climate action and recognizing climate rights.

Indian courts have relied on international instruments such as the Stockholm Declaration, Rio Declaration, and Paris Agreement to interpret domestic environmental laws, reflecting the influence of global climate jurisprudence.

Future Prospects and Recommendations :

To strengthen climate litigation in India, the following measures are recommended :

- Enactment of a comprehensive Climate Change Act.
- Strengthening the institutional capacity of the NGT.
- Integration of scientific expertise in judicial processes.
- Mandatory climate impact assessments for development projects.
- Judicial training in climate science and environmental law.
- Public participation and climate legal aid mechanisms.

These reforms can enhance climate governance and environmental justice.

Conclusion :

Climate change litigation in India highlights the judiciary's transformative role in bridging legislative gaps and advancing environmental and climate justice. Courts have expanded constitutional rights to include environmental and climate protection, while the NGT has provided a specialized forum for environmental adjudication. However, judicial intervention alone is insufficient. Comprehensive legislation, administrative accountability, scientific integration, and public participation are essential for effective climate governance. The evolving climate jurisprudence in India demonstrates the potential of legal institutions to act as catalysts for sustainable development and intergenerational justice.

References :

1. Constitution of India, Articles 14, 19, 21, 48A, 51A(g).

2. National Green Tribunal Act, 2010.
3. M.C. Mehta v. Union of India, AIR 1987 SC 1086.
4. Subhash Kumar v. State of Bihar, (1991) 1 SCC 598.
5. Vellore Citizens' Welfare Forum v. Union of India, (1996) 5 SCC 647.
6. T.N. Godavarman Thirumulpad v. Union of India.
7. Mahendra Pandey v. Union of India, NGT Application No. 470/2016.
8. M.K. Ranjitsinh v. Union of India (2024).

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 85-88
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

Judicial Interpretation of Pension Laws in India : An Analytical Study of Supreme Court and Madhya Pradesh High Court Decisions

Bhartendu Chaudhary
Research Scholar, Jiwaji University, Gwalior (M.P)

Abstract :

Pension is a vital component of social security and a crucial welfare measure for government employees. Over the years, the judiciary in India has played a significant role in interpreting pension laws and ensuring that pensioners receive fair treatment. The Supreme Court and various High Courts, including the Madhya Pradesh High Court, have developed rich jurisprudence on pension as a constitutional and statutory right. This research paper analyzes judicial interpretations of pension laws in India, focusing on landmark Supreme Court judgments and significant decisions of the Madhya Pradesh High Court. It critically examines the evolving judicial approach towards pension rights, equality, welfare obligations of the State, and procedural fairness.

Keywords - Pension, Social Security, Judicial Interpretation, Supreme Court, Madhya Pradesh High Court, Constitutional Law, Welfare State

Introduction :

Pension is a post-retirement financial benefit provided to government employees as recognition of their past service. It is a cornerstone of social security and welfare legislation. In India, pension laws are governed by statutory rules such as the Central Civil Services (Pension) Rules, State Pension Rules, and specific service regulations. However, judicial interpretation has played a decisive role in shaping pension jurisprudence. Courts have consistently expanded the scope of pension rights, transforming it from a discretionary benefit into a legally enforceable right.

Pension as a Legal and Constitutional Right :

The judiciary has recognised pension as a constitutional right linked to the right to livelihood and dignity. In the landmark case D.S. Nakara v. Union of India (1983), the Supreme Court held that

pension is not a bounty or gratuitous payment but a right earned for past service. The Court further observed that pensioners constitute a homogeneous class and arbitrary classification based on retirement date violates Article 14 of the Constitution.

Subsequent judgments reaffirmed that pension is governed by statutory rules and not by the discretion of the employer. The right to pension flows directly from service rules and forms part of the employee's legal entitlements.

Supreme Court's Judicial Approach to Pension Laws

- **Pension as a Recurring and Enforceable Right :**

The Supreme Court has emphasised that pension is a recurring cause of action. In Starpayal Natarajan Iyer v. State of Gujarat, the Court reiterated that pension is a recurring entitlement and claims should not be rejected merely on grounds of delay and laches.

- **Equality and Non-Discrimination :**

Judicial interpretation has ensured equality among pensioners. The Supreme Court has consistently struck down discriminatory classifications in pension schemes, reinforcing the constitutional mandate of equality under Article 14.

- **Pension as Social Welfare Measure :**

The Supreme Court has recognised pension as a social welfare measure ensuring socio-economic justice and security in old age. It has linked pension with the Directive Principles of State Policy, particularly Articles 38 and 41, which mandate social security and welfare for citizens.

- **Pension Rights of Absorbed and Regularised Employees :**

In Vijay Kumar Joshi v. Akash Tripathi, the Supreme Court held that employees absorbed into government service are entitled to pension benefits from the date of absorption, emphasising non-discrimination and fairness.

Judicial Interpretation by the Madhya Pradesh High Court :

The Madhya Pradesh High Court has significantly contributed to pension jurisprudence through progressive interpretations.

- **Additional Pension for Senior Pensioners :**

The High Court ruled that additional pension should be granted as soon as a pensioner enters the 80th year of age, rather than after completing 80 years. This interpretation ensured timely benefits and protected the rights of elderly pensioners.

- **Protection Against Arbitrary Recovery :**

The Court has repeatedly held that excess payments due to administrative errors cannot be recovered from retired employees' pensions, as such recovery would be unjust and violate principles of equity and fairness.

- **Pension for Ad Hoc and Temporary Service :**

In a landmark ruling, the High Court held that ad hoc service must be counted for pension purposes when it leads to regularisation, thereby protecting the rights of temporary employees and preventing exploitation.

- **Pension Rules for Constitutional Functionaries :**

The High Court clarified that family pension for Lokayukta and Up-Lokayukta appointed after statutory amendments is governed by judges' service conditions rather than state pension rules, highlighting the supremacy of statutory provisions.

- **Role of Judiciary in Pension Reforms :**

The judiciary has acted as a guardian of pensioners' rights by :

- Expanding the concept of pension as a fundamental right.
- Ensuring equality and non-discrimination.
- Protecting pensioners from arbitrary administrative actions.
- Encouraging the State to adopt welfare-oriented policies.

Courts have also balanced fiscal concerns with constitutional obligations, emphasising that financial constraints cannot justify denial of legitimate pension rights.

Challenges and Criticisms :

Despite progressive judicial interpretations, several challenges persist :

- Delay in implementation of court orders by government authorities.
- Increasing litigation due to ambiguous pension rules.
- Fiscal burden on State governments due to expanding pension liabilities.
- Lack of uniformity in pension policies across states.

Conclusion :

Judicial interpretation has played a transformative role in shaping pension laws in India. The Supreme Court and the Madhya Pradesh High Court have consistently upheld pension as a legal right and a crucial component of social security. Through landmark judgments, courts have ensured equality, fairness, and protection of pensioners from arbitrary state actions. However, there is a need for

comprehensive pension reforms and uniform legal frameworks to reduce litigation and ensure efficient implementation. The judiciary must continue to balance welfare obligations with fiscal sustainability while safeguarding the dignity and livelihood of retired government employees.

Refrences :

1. D.S. Nakara v. Union of India, (1983) 1 SCC 305.
2. Starpayal Natarajan Iyer v. State of Gujarat, Supreme Court of India.
3. Vijay Kumar Joshi v. Akash Tripathi, Supreme Court of India.
4. Madhya Pradesh Civil Services (Pension) Rules.
5. Relevant judgments of Madhya Pradesh High Court.
6. Constitution of India.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 89-92

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

कवि निराला का निरालापन

प्रियंका सिंह, शोधार्थी
डॉ. विष्णु प्रसाद शुक्ल, शोध निर्देशक
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज, यू.पी.।

सन् 1923 ई० में कलकत्ता की भूमि पर हिन्दी भाषा में एक स्तरीय पत्रिका–प्रकाशन की योजना बनती है और उस पत्रिका का नामकरण 'मतवाला' होता है। 23 अगस्त, 1923 को इस मतवाला पत्रिका का पहला अंक निकला है जिसके मुख पृष्ठ पर लिखा होता है :

"अमिय–गरल, शशि–शीकर, रवि–कर, राग–विराग भरा प्याला,
पीते हैं जो साधक उनका प्यारा है यह मतवाला।"

यह कौन जानता था कि 'मतवाला' पत्रिका के संपादक मंडल में शामिल कवि– 'सूर्यकांत त्रिपाठी' भगवान शिव की भाँति विष और अमृत, प्रेम और वैराग्य आदि सभी विरोधात्मक, जटिल अथवा घृणास्पद रसों का पान करने वाले साधक बनकर निकलेंगे और आने वाले समय में 'मतवाला' के तुकबन्दी के आधार पर 'निराला' उपनाम से सम्पूर्ण साहित्य जगत में जाने जाएंगे। कालांतर में निराला जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सर्वश्रेष्ट साधक रामविलास शर्मा जी इनके सम्पूर्ण काव्य साहित्य से कुछ चुनिंदा कविताएँ चुनते हैं, उसका संकलन करते हैं और उसका नाम देते हैं– 'राग–विराग'। इस नामकरण के पीछे उनका क्या मंशा थी इसको स्पष्ट करते हुए शर्मा जी लिखते हैं कि– "इस कविता–संग्रह का नाम हैरू राग–विराग। यह उन कविताओं का संग्रह है जिनमें जितना आनन्द का अमृत है, उतना ही वेदना का विष। कवि चाहे अमृत दे, चाहे विष, इनके श्रोत इसी धरती में हों तो उसकी कविता अमर है। कहते हैं कि छायावादी कवि यथार्थ की धरती छोड़कर कल्पना के आकाश में विचरण करते थे। बात सच ही होगी क्योंकि इसमें एकाध को जब पता लगा कि उनके पैर धरती पर नहीं, आकाश में हैं तब उन्होंने औपचारिक रूप से घोषणा की कि वह आकाश से धरती पर उतर रहे हैं। ०१

विपत्तियाँ मनुष्य को तोड़ती हैं, बिखेरती हैं और कहीं–कहीं संघर्ष से घबराकर मनुष्य सुखद व्यवस्था का चयन कर लेता है, सांठ–गांठ कर लेता है राजनीती से, और व्यतीत करके लगता हैं सुखद भौतिक जीवन। पुष्प की सुगंध उसे मोहित करती है कलियों की कोमलता का वह प्रतिमान गढ़ने लगता है किन्तु यह कवि का निराला व्यक्तित्व ही था कि वे कभी झुके नहीं और झुकना तो छोड़ो उन्होंने कबीरदास की भाँति फटकार लगाई –

"अबे, सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पाई खुशबू, रंगोंआब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ठ,

डाल पर इतराता है केपीटलिस्ट।" ०२

प्रकृति के मनोहर दृश्यों को निहारने वाला यह कवि भयंकर निर्जन एवं भयानक सन्नाटे से भरे हुए श्मशान भूमि पर उतने ही शान्त मन विचरण किया करते थे। दूसरे की दृष्टि में स्वयं दया का पात्र थे किन्तु किसी अन्य की पीड़ा देखकर इतना द्रवित हो उठते थे कि अपना वह वस्त्र तक उतार कर उसे पहना आते थे और आश्चर्य तो यह था कि जिस वस्त्र को ये दान में दे रहे होते है वह किसी अन्य के द्वारा स्वयं कवि को भेंट की गई होती है।

यही तो है कवि का निरालापन, जिसको उद्देश्य करके रामविलास शर्मा जी लिखते हैं कि– "निराला का स्वर एक संघर्षरत योद्धा का स्वर है, जिसके हृदय में लांछना की आग धधक रही है, किन्तु जिसे अपनी शक्ति पर भरोसा है, अपने विजयी होने का विश्वास है :

'प्रात तव द्वार पर,
आया, जननि, नैश अंध पथ पार कर।'

इस जननि से वह दुःख दूर करने वाले पद–राग–रंजित मरण की याचना करते हैं। यह दुःख से त्रस्त होकर मृत्यु की शरण जाने की आकांक्षा नहीं है, मृत्यु पर विजय पाने, शक्ति के सागर को पार कर जाने की आकांक्षा है–

प्राण संघात के सिंधु के तीर में,
धीर मैं ज्यों समीरण करूँगा तरण।
दे मैं करूँ वरण।
जननि, दुखहरण पद-राग-रंजितमरण।....३

पद–राग–रंजितमरण की याचना की परिणति प्राण–संघात के सिंधु को पार कर जाने में होती है।

निराला, जीवन और मृत्यु के कवि थे, हर्ष और विषाद के कवि थे। वाणी इस प्रकार थी कि अपने को सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी समझने वाला साहित्यकार भी उनके समक्ष बौना लगे और सरलता, सहजता अथवा संवेदना के स्तर पर इतने सरल थे कि एक अतिनिम्न श्रेणी का व्यक्ति, मजदूर, कुली, कहारिन, भिखारी आदि भी उनके हृदय में अपना उच्च स्थान देख सकता है। कवि का कोमल ह्रदय विरोधाभासी व्यवस्था एवं व्यक्ति को देखकर खिन्न हो उठता है और वे यह सोचते भी हैं कि :–

"मै भी होता यदि राजपुत्र-
मैं क्यों ना सदा कलंक ढोता,
ये होते- जितने विद्याधर- मेरे अनुचर,
मेरे प्रसाद के लिए विनत- सिर उद्‌त-कररू
मैं देता कुछ, रख अधिक, किन्तु जितने पेपर,
सम्मिलित कंठ से गाते मेरी कीर्ति अमर,
जीवन चरित्र।"...४

प्रत्येक साधारण मनुष्य की भाँति कवि की भी इच्छा होती है कि वह जिस योग्य है उसे उसके अनुसार फल मिलना ही चाहिए किन्तु कवि को प्राप्त क्या होता है? उपेक्षा। जिससे कवि आहत है और इतना ही नहीं

वह यह भी देख रहा कि जिनका गुणगान को रहा है वे इस गुणगान के योग्य कदापि नहीं है। किन्तु इससे कवि हटकर बिखर नहीं रहा है वरन दो गुने उत्साह से सामने आकर कहता है –

"अभी–न होगा मेरा अन्त।
अभी–अभी ही तो आया है,
मेरे वन में मृदुल वसन्त–
अभी न होगा मेरा अन्त।" ५

भाषा, भाव, छंद एवं बिम्ब सभी रूपों में कवि 'निराला' था। यद्दपि काव्य के क्षेत्र में में खड़ी बोली का प्रयोग आदिकाल में खुसरों द्वारा कर दिया गया था किन्तु वह महज एक झलक थी जिसे द्विवेदी युगीन कवि अयोध्या प्रसाद 'हरिऔध' जी ने 'प्रियप्रवास' में पूर्णता की ओर अग्रसारित किया काव्य के क्षेत्र में खड़ी बोली को दरेरकर यदि किसी ने दौड़ाया तो निःसंदेह वह कवि निराला थे। कुकुरमुत्ता, गर्म पकौड़ी, राजे ने रखवाली की, वह तोड़ती पत्थर आदि तमाम कविताएँ इसका प्रमाण हैं, 'परिमल' की भूमिका में कवि ने मुक्त छंद को लेकर बहुत ही साहसिक, प्रगतिशील और सैधांतिक विचार प्रस्तुत किया है। 'निराला' लिखते हैं कि–

"मनुष्यों की मुक्ति कर्मों के बंधन से छुटकारा पाना और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना...

मुक्त काव्य कभी साहित्य के लिए अनर्थकारी नहीं होता किन्तु उससे साहित्य में एक प्रकार की स्वाधीन चेतना फैलती है जो साहित्य–कल्याण का मूल होती है।" ...६

यदि कवि को आधुनिक छंद का शिल्पी कहा जाये तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। छंद, भाव, भाषा अथवा प्रतीक, उपनाम आदि को लेकर कवि के विचारों को पढ़ने अथवा सुनने के बाद यह विश्वास हो जाता है कि– माँ सरस्वती का यह पुत्र संवेदना के उस उच्च सोपान पर आसीन था जहाँ से सम्पूर्ण जगत ही ईश्वर की चेतना से भाषित होने लगता है और जड़ अथवा चेतन का भाव समाप्त हो जाता है, तदाकारता का भाव इतना प्रबल हो उठता है कि ह्रदय घाव मेरे, पीर रघुबीरे, वाली तुलसीदास की पंक्ति सहज ही स्मरण हो उठती है। और यही पर पहुँचकर कवि का वेदांतवादी स्वरूप मुखर हो उठता है मैं पुनः इंगित करना चाहूँगी कि कवि का वेदांतवाद, अद्वेतवाद का पक्षधर है विशिष्टा द्वैतवाद का नहीं। यहाँ पर भी कवि का निराला व्यक्तित्व देखिये कवि के प्रिय एवं चहेते कवि तुलसीदास जी है और तुलसीदास जी विशिष्टाद्वैतवादी है किन्तु निराला जी तुलसीदास जी को तो मानते है किन्तु उनके विशिष्टावाद को ना मानकर अद्वैतवाद को स्वीकार करते है।

किसी भी कवि, लेखक अथवा साहित्यकार का जीवन साहित्य के क्षेत्र में कितना और कब तक जीवंत रहेगा? आने वाली पीढ़ी उसका कितना अनुसरण करेगी एवं भावी युग में वह कितना प्रासंगिक एवं उपयोगी होगा? यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि उस साहित्यकार ने अपने समय में स्थापित दमनकारी एवं शोषण प्रधान परम्पराओं को कितने प्रबल तरीके से चुनौती दी है या फिर कड़ी जमीन को तोड़ी है? कोरा सिधांत ही लिखता रहा है या फिर उसे व्यवहार में उतारा भी है? संघर्ष क्षेत्र रूपी मंथन उत्पन्न होने वाले अमृत का ही आकांक्षी रह गया या फिर उतने ही उत्साह के साथ विष का भी पान किया है? और इसमें कोई संदेह नहीं कि इन सभी पैमानों पर निराला जी खरे उतरे है। और यही कारण है कि वह तत्कालीन समय में जितने विवादित और उपेक्षित रहते है बाद में उतने ही स्वीकार्य हो उठते है, भावी पीढ़ी कवि से अपना नाम जोड़ने में गौरव का

अनुभव करती हैं।

और यह कवि का निरालापन ही है कि स्वयं विवादित और उपेक्षित रहते हुए भी भाव, भाषा, प्रतीक और छंद आदि सभी क्षेत्रों में नवीन मार्ग प्रशस्त कर गये हैं। जो आज तक साहित्यकारों के लिए 'मील का पत्थर' बना हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. पु०– राग–विराग (पृष्ठ–17)
   सं०– रामविलास शर्मा (लोकभारती प्रकाशन)
2. कुकुरमुत्ता नामक लम्बी कविता
   रचनाकार – 'निराला'
3. पु०– राग–विराग (पृष्ठ–24)
   सं०– रामविलास शर्मा (लोकभारती प्रकाशन)
4. अनामिका (पृष्ठ–68)
   रचनाकार – 'निराला' (राजकमल प्रकाशन)
5. पु०–राग–विराग (पृष्ठ–63)
6. पु०– निराला का काव्यजगत
   लेखक– रामचन्द्र रजक (राका प्रकाशन)
7. पु०– निराला आत्महन्ता आस्था
   लेखक– दूधनाथ सिंह (लोकभारती प्रकाशन)

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642
Bohal Shodh Manjusha
March 2026
ISSN : 2395-7115
Page No. : 93-101
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

कबीरधाम जिले के स्थानीय निकायों में अनुसूचित वर्ग की महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अध्ययन

ओमप्रकाश, शोधार्थी (राजनीति विज्ञान)
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यायल, दुर्ग (छ.ग.)
डॉ. नागरत्ना गनवीर, शोध निर्देशक (प्राध्यापक–राजनीति विज्ञान)
शासकीय नवीन महाविद्यालय, रिसाली, जिला–दुर्ग (छ.ग.)
डॉ. शकील हुसैन, शोध सह–निर्देशक (प्राध्यापक–राजनीति विज्ञान)
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यायल, दुर्ग (छ.ग.)

सारांश :–

प्रस्तुत शोध पत्र में कबीरधाम जिले के स्थानीय निकायों में अनुसूचित वर्ग के महिलाओं की राजनीतिक अभिरूचि व प्रतिनिधित्व की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। यह शोध वर्णनात्मक शोध प्ररचना के अंतर्गत शामिल है। प्राथमिक आंकड़ों के संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची व अवलोकन तथा द्वितीयक आंकड़ों के संकलन हेतु विषय से संबंधित विभिन्न प्रतिवेदनों, मासिक पत्रिकाओं, समचार पत्रों, शोध प्रबंध एवं शोध पत्रों का प्रयोग किया गया है। उत्तरदाताओं के चयन हेतु कुल अनुसूचित जाति वर्ग के महिला जनप्रतिनिधियों का चयन गैर–आनुपातिक आधार सोद्देश्यपूर्ण विधि से 300 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। प्राप्त तथ्यों व विश्लेषण से यह तथ्य सामने आया कि पूर्व की अपेक्षा अनुसूचित वर्ग की महिलाओं में राजनैतिक चेतना व सहभागिता में वृद्धि हुई है। वहीं अब इस वर्ग की महिलाएँ घरेलू एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ–साथ स्थानीय स्तर पर राजनीतिक नेतृत्व कर रही हैं तथा समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास कर रहे हैं। इससे महिला सशक्तिकरण को बल मिला है, हालांकि स्थानीय निकायों में स्थानीय निकायों में अनुसूचित वर्ग के महिलाओं को अनेक राजनीतिक व सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसके लिए संवैधानिक प्रावधानों को जमीनी स्तर पर क्रियांवयन करने की आवश्यकता है।

अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग की महिलाओं को नेतृत्व समस्या में कई तरह से सामाजिक, राजनैतिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसमें प्रमुख इस वर्ग की महिलाओं में सर्वाधिक समस्या स्वयं के अधिकारों के प्रति सजग नहीं होना तथा राजनैतिक समझ में अत्यंत कमी पाया गया है। अध्ययन क्षेत्र के महिला जनप्रतिनिधियों का मानना है कि विभिन्न प्रकार के समस्याओं के अतिरिक्त समाज में जातिगत निशाना साधकर ग्राम विकास के विभिन्न प्रकार के निर्णयों में प्रत्यक्ष समर्थन प्राप्त नहीं हो पाता है। कहीं–कहीं तो पारिवारिक

समर्थन एवं प्रोत्साहन प्राप्त नहीं होने से खण्ड अथवा जिला स्तर पर आयोजित होने वाले विभिन्न प्रकार के शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रमों व बैठकों में भाग नहीं ले पाते हैं जिससे उन्हें अपने जिम्मेदारियों को पूर्ण करने में कठिनाइयों का समाना करना पड़ता है।

शब्द कुंजी – स्थानीय निकाय, महिला एवं राजनीतिक प्रतिनिधित्व, महिला नेतृत्व, राजनैतिक चुनौतियाँ।

प्रस्तावना –

भारत देश को स्वतंत्र हुए 75 वर्ष बीत गया है, इस दौरान देश कई मामलों में तरक्की किया है और आत्मनिर्भर बना है। कई कानूनी नियमों से अधिकार मिला है व महिलाएँ सामाजिक–आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्र के साथ ही साथ विभिन्न दिशाओं में सशक्त हुए हैं। अनुसूचित वर्ग की ग्रामीण महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता एवं नेतृत्व क्षमता में दो–तीन दशकों में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। छत्तीसगढ़ में अनुसूचित वर्ग के ग्रामीण महिलाओं में स्थानीय राजनीति में 50 प्रतिशत आरक्षण होने से इनकी सामाजिक–राजनैतिक सुधार हुआ है, जिसमें सभी वर्ग की महिलाएँ सम्मिलित है। इस वर्ग अनुसूचित जनजाति व अनुसूचित जाति के सभी समुदायों में राजनीतिक जागरूकता व सहभागिता एक समान नहीं है। अध्ययन क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति के गोंड़, हल्बा, कंवर इत्यादि उपजातियों में राजनैतिक प्रभाव सर्वाधिक है, जबकि बैगाओं में राजनीतिक जागरूकता व सहभागिता अपेक्षाकृत कम है। ठीक इसी प्रकार अनुसूचित जाति के कुछ उपजातियों में राजनैतिक प्रभाव अधिक दिखाई पड़ता है। ''सहभागिता का इस प्रकार का विस्तार आंशिक रूप में सहमति, उत्तरदायित्व और राजनीतिक विरोध के सिद्धान्त की सार्थकता प्रदान करने की इच्छा से उत्पन्न किया गया है।

सहभागिता वह प्रमुख माध्यम है जिसके द्वारा प्रजातंत्र में सहमति को स्वीकार/अस्वीकार किया जाता है तथा शासकों को प्रजा के प्रति उत्तरदायी बनाया जाता है।'' **(हर्बट, एवं डेविड, 1984)** ''पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन'' में लिखा है कि इनका उद्देश्य राजनीतिक पदाधिकारियों के चयन और उनके द्वारा लिये जाने वाले निर्णयों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करना होता है। **(वर्बा, 1972)** राजनीतिक सहभागिता ऐसी गतिविधि है जिसके कारण कोई व्यक्ति सार्वजनिक नीतियों और निर्णयों के निर्माण, और क्रियान्वयन की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से हिस्सा लेते है। ''शासन तंत्र में लोगों की सहभागिता या उनकी असहभागिता का तथ्य ही उनके स्वरूप का स्पष्टीकरण कर देता है। राजव्यवस्थाओं की प्रकृति उनकी कार्यप्रणाली, कार्य क्षमता और प्रभावकारिता को समझने में सहभागिता का निर्णायक महत्व होता है।'' **(राठौड़, 2003)**

शोध साहित्य का पुनरावलोकन :

तरूणेश (2019) ने ''पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की राजनीति के प्रति जागरूकता'' अपने अध्ययन में पाया 18–30 वर्ष के आयु की महिलाएँ अधिक राजनीति के प्रति जागरूक हैं। महिलाओं के लिए आरक्षण बढ़ने से नेतृत्व क्षमता में वृद्धि हुई है। पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की राजनीति के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है।

सिंह, अनामिका एवं आशीष लाल (2019) ''अनुसूचित जाति की महिलाओं में राजनीतिक सहभागिता एवं मावनाधिकार का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' में राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता में रूकावटें होने के पश्चात् भी महिलाओं की नेतृत्व क्षमता में वृद्धि हुई है। राष्ट्रीय स्तर पर लोकसभा (आम चुनाव, विधानसभा चुनाव में) तथा सर्वाधिक वृद्धि दर स्थानीय निकायों में सरपंच, जनपद पंचायत सदस्य, जिला पंचायत

सदस्यों, महापौर, पार्षद के रूप में हुई है। इस प्रकार अनुसूचित जाति की महिलाएँ राजनीतिक सहभागिता को सकारात्मक कदम बताया गया है।

सिंह, भरत (2018) ने ''उत्तर प्रदेश पंचायती राज व्यवस्था में पिछड़े वर्ग की महिला प्रतिनिधियों की भूमिका'' अपने अध्ययन में पाया कि महिला प्रतिनिधियों को त्रिस्तरीय पंचायत राज व्यवस्था में व्यापक वित्तीय व प्रशासनिक अधिकार सौंपे गए हैं, जिससे गांव की समस्याएं गांव में ही सुलह कर लिए जाते हैं। महिलाएँ लोकतंत्र में भागीदारी करके ग्राम स्वराज को साकार करने हेतु बढ़–चढ़कर हिस्सेदारी ले रही है। स्थानीय निकायों में महिला आरक्षण का सकारात्मक परिणाम दृष्टिगोचर हो रही है।

अग्रवाल, सुनीता (2017) ''ग्रामीण अनुसूचित जातियों की महिलाओं में राजनैतिक जागरूकता'' अपने अध्ययन में पाया कि राजनीति में महिलाओं के प्रति भागीदारी में नकारात्मक रवैया रखती है। ग्रामीण महिलाएँ यह समझती है कि राजनीति में उनकी भागीदारी से समूह व समाज में उनकी स्थिति मजबूत होगी, लेकिन जो राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को पसंद नहीं करती हैं उनका मानना है कि राजनैतिक माहौल अच्छा नहीं होता है। यही कारण है कि महिलाएँ केवल मतदान देने/चुनाव के समय ही थोड़ी सक्रिय रहती हैं लेकिन नेतृत्व को उचित नहीं मानती हैं। हालांकि पिछले दो स्थानीय चुनावों में महिलाओं उम्मीदवारों की राजनीतिक सक्रियता में वृद्धि अवश्य हुई है।

मांझी, तृप्ति (2017) ने ''जनजातीय महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक भूमिकाओं में परिवर्तन की स्थिति : एक विवेचन'' में अनुसूचित जनजाति की महिलाओं में श्रमबल अधिक है एवं ये पुरुषों की अपेक्षा अधिक कार्य करते हैं। यहाँ ग्रामीण/जनजातीय महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति कुछ अच्छी नहीं है, वहीं इनके प्रमुख कार्य गृहिणी, खेती–मजदूरी है, वहीं इनकी स्वास्थ्य की स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती है, यद्यपि जनजातीय क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति एवं आर्थिक सहभागिता पुरुषों के समान है और अन्य समाज के अपेक्षाकृत रूप से सुदृढ़ है, साथ ही पंचायती स्तर पर महिला आरक्षण के कारण इनकी भागीदारी प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर हो रही है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य :

1. अनुसूचित वर्ग की महिला जनप्रतिनिधियों में राजनैतिक प्रतिनिधित्व को ज्ञात करना।
2. अनुसूचित वर्ग की महिलाओं में स्थानीय चुनावों के प्रति अभिरूचि का अध्ययन करना।
3. अनुसूचित वर्ग की महिल जनप्रतिनिधियों द्वारा ग्रामीण विकास की पृष्ठभूमि के प्रति उनके कार्यशैली को ज्ञात करना।

शोध कार्य का राजनैतिक महत्व :

भारत एक लोकतांत्रिक देश है, यहाँ प्रत्येक नागरिक को अपना विचार अभिव्यक्त करने का अधिकार प्राप्त है और वह अपनी क्षमता व योग्यता के आधार पर अपने परिवार, समाज व जनसमुदाय का प्रतिनिधित्व करता है। किसी भी व्यक्ति के सकारात्मक नेतृत्व से न केवल समाज व राष्ट्र विकास करता है, अपितु सर्वप्रथम उसका स्वयं का विकास होता है और वह निरंतर प्रगति करता है। अनुसूचित वर्ग के महिला जनप्रतिनिधियों का नेतृत्व करने से अनुसूचित वर्ग के साथ–साथ क्षेत्र व राष्ट्र का विकास तो हुआ है, साथ ही इस समुदाय को सबसे पहले लाभ हुआ है।

राजनीतिक सहभागिता व जागरूकता से वे क्षेत्र के विकास के साथ–साथ समाज, परिवार व स्वयं के स्तर में सुधार कर रहे हैं। पूर्व में केवल कुछ जाति या वर्ग द्वारा राजनीतिक प्रतिनिधित्व पर वर्चस्व था, जिससे अनुसूचित वर्ग वंचित रहता था, इनके अधिकार व सम्मान की ओर ध्यान नहीं दिया जाता था, लेकिन स्वतंत्रता के बाद समानता के अधिकार व अनेक संघर्षों के बाद दलित व जनजाति वर्ग को अब राजनैतिक नेतृत्व का अवसर प्राप्त हुआ है।

शासन द्वारा अनेक प्रकार से इन्हें ऊपर उठाकर समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है, जिसमें अनुसूचित जाति व जनजाति वर्ग के लिए आरक्षण के साथ ही साथ महिलाओं के लिए विशेष आरक्षण का प्रावधान किया। महिलाओं के लिए स्थानीय निकायों में आरक्षण होने से देश के अनेक राज्यों में 50 प्रतिशत महिला आरक्षण से इनके राजनीतिक प्रतिनिधित्व में वृद्धि दर्ज हुई है। अनुसूचित वर्ग के महिलाओं में राजनैतिक नेतृत्व से समाज को एक नई ऊँचाईयों तक पहुंचाने में सहायक होगी।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध पत्र वर्णनात्मक एवं अनुभवात्मक शोध प्ररचना के अंतर्गत है। प्राथमिक आंकड़ों के संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची व अवलोकन तथा द्वितीयक आंकड़ों के संकलन हेतु विषय से संबंधित विभिन्न प्रतिवेदनों, मासिक पत्रिकाओं, समचार पत्रों, शोध प्रबंध, शोध पत्रों एवं इंटरनेट पर उपलब्ध पाठ्य सामग्रियों का प्रयोग किया गया है।

निदर्शन :

उत्तरदाताओं के चयन हेतु अनुसूचित जाति वर्ग के महिला जनप्रतिनिधियों का गैर–आनुपातिक आधार सोद्देश्यपूर्ण विधि से कुल 300 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तुत शोध छत्तीसगढ़ राज्य के कबीरधाम जिले के पंचायती निकायों में नव–निर्वाचित महिला जनप्रनिधियों को ध्यान में रखते हुए बोड़ला, पण्डरिया, सहसपुर–लोहारा तथा कवर्धा विकास खण्ड का अध्ययन किया गया है। राष्ट्रीय राजमार्ग–130 जिला मुख्यालय से होकर गुजरता है, जो यहाँ के परिवहन एवं आवागमन को सुगम बनाता है। जिले में अनुसूचित जाति व जनजाति की जनसंख्या उल्लेखनीय है। यहाँ राष्ट्रपति के दत्तक पुत्र कहे जाने वाले बैगाओं का संकेन्द्रण है। भौगोलिक दृष्टि से जिला मैकल पर्वत श्रृंखला के अंतर्गत सम्मिलित है, जिसके कारण यहाँ वन सम्पदा का भण्डार है। चिल्फी घाटी, भोरमदेव मंदिर, सरोदा जलाशय सहित जिले में अनेक पर्यटन स्थल यहाँ प्राकृतिक सौन्दर्य एवं ऐतिहासिक विरासत का प्रतीक है। यह क्षेत्र राजनांदगाँव लोकसभा के अंतर्गत सम्मिलित है, दो विधानसभा सीट कवर्धा व पण्डरिया सामान्य सीट है। जिले में त्रि–स्तरीय पंचायत के अंतर्गत 14 जिला पंचायत सदस्य, 100 जनपद पंचायत सदस्य, 460 ग्राम पंचायत व 6417 वार्ड पंचों की संख्या है। वर्ष 2019–20 के आम निर्वाचन के अनुसार 56 प्रतिशत पंचायत सीटों पर महिला जनप्रतिनिधि निर्वाचित हुए हैं, जो स्थानीय निकायों में 50 प्रतिशत की तुलना में अधिक है।

अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण :

तालिका क्रमाँक–01

अन्य वर्ग की महिला जनप्रतिनिधियों द्वारा आरक्षित वर्ग की महिलाओं के साथ जातिगत भेदभाव

क्र.	अभिमत	संख्या	प्रतिषत
1.	पूर्ण सहमत	38	12.7
2.	सहमत	87	29.0
3.	तटस्थ	21	07.0
4	असहमत	97	32.3
5.	पूर्ण असहमत	57	19.0
योग		30	10

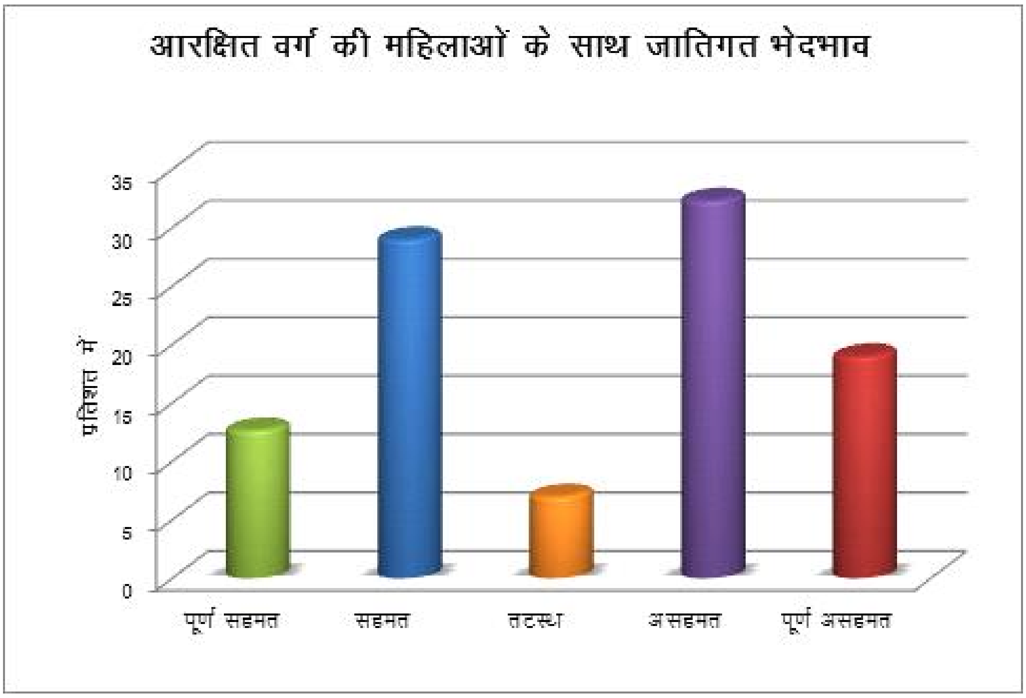

तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के चयनित उत्तरदाता अन्य अनारक्षित वर्ग की महिला जनप्रतिनिधियों द्वारा आरक्षित वर्ग की महिलाओं के साथ जातिगत भेदभाव होने के संदर्भ में सर्वाधिक 32.3 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत एवं 19.0 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्णतः असहमत है, वहीं 12.7 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्ण सहमत एवं 29.0 प्रतिशत उत्तरदाता उक्त विचार से सहमत है कि अन्य अनाराक्षित वर्ग के महिला जनप्रतिनिधियों द्वारा आरक्षित वर्ग के महिला जनप्रतिनिधियों के साथ जातिगत भेदभाव करते है। 7.0 प्रतिशत उत्तरदाता उक्त विचार से तटस्थ है। उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात है कि आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में सवर्ण वर्ग की महिलाओं द्वारा अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग की महिलाओ के साथ कहीं कहीं जातिगत भेदभाव पाया जाता है। हालांकि पूर्व की अपेक्षा जातिगत भेदभाव या अस्पृश्यता में बहुत कमी आ गई है। इसमें अनुसूचित जाति/जनजाति जनप्रतिनिधि महिलाओं के पीठ–पीछे अपशब्द कहना या निचा दिखाने की कोशिश किया जाता हैं।

तालिका क्रमाँक–02

अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग की महिलाओं का नेतृत्व समस्या

क्र.	समस्याएँ	संख्या	प्रतिषत
1.	सामाजिक स्तर पर	29	09.7
2.	राजनैतिक समझ न होना	93	31.0
3.	बैठकों में भाग लेने संबंधी	51	17.0
4.	अधिकारों के प्रति जागरूकता में कमी	127	42.3
योग		30	10

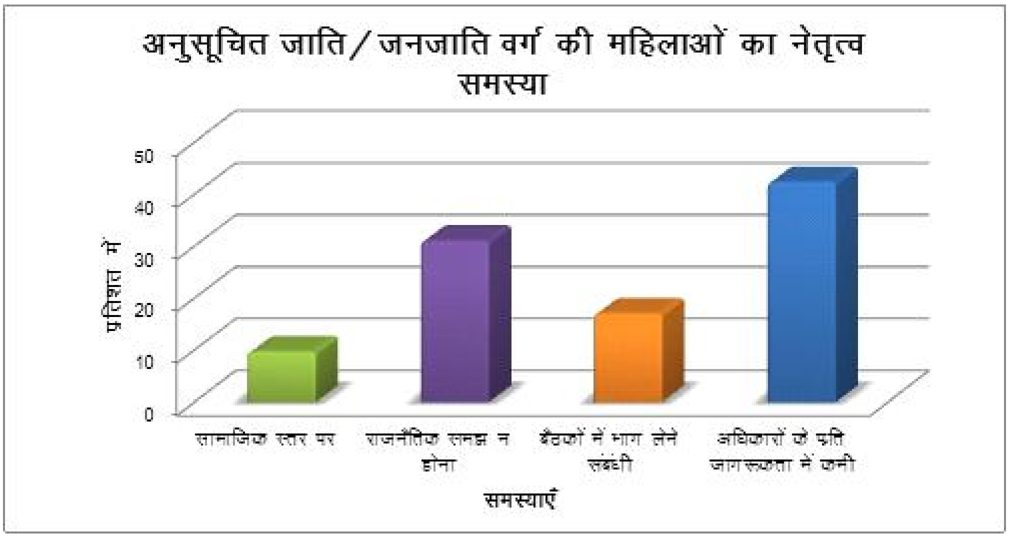

तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के चयनित उत्तरदाता ग्रामीण स्तर पर अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग की महिलाओं का नेतृत्व करने में समस्याओं के संदर्भ में प्राप्त तथ्यों के आधार पर सर्वाधिक 42.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता का अभाव है। 31.0 प्रतिशत उत्तरदाता कम शिक्षित होने के कारण राजनैतिक समझ नहीं होना स्वीकार किये हैं। 17.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि पंचायत स्तर व अन्य सभी प्रकार के बैठकों में भाग नहीं ले पाना एक समस्या बताए हैं। 9.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं को सामाजिक स्तर पर विभिन्न प्रकार की समस्याएँ होती है जिसमें जाति, लिंग व आय स्तर इत्यादि भेदभाव मुख्य है।

तालिका क्रमाँक–03

ग्रामीण स्तर पर अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग की महिलाओं को नेतृत्व करने में समस्या

क्र.	अभिमत	संख्या	प्रतिषत
1.	पूर्ण सहमत	41	13.7
2.	सहमत	91	30.3
3.	तटस्थ	27	09.0
4.	असहमत	82	27.3
5.	पूर्ण असहमत	59	19.7
योग		30	10

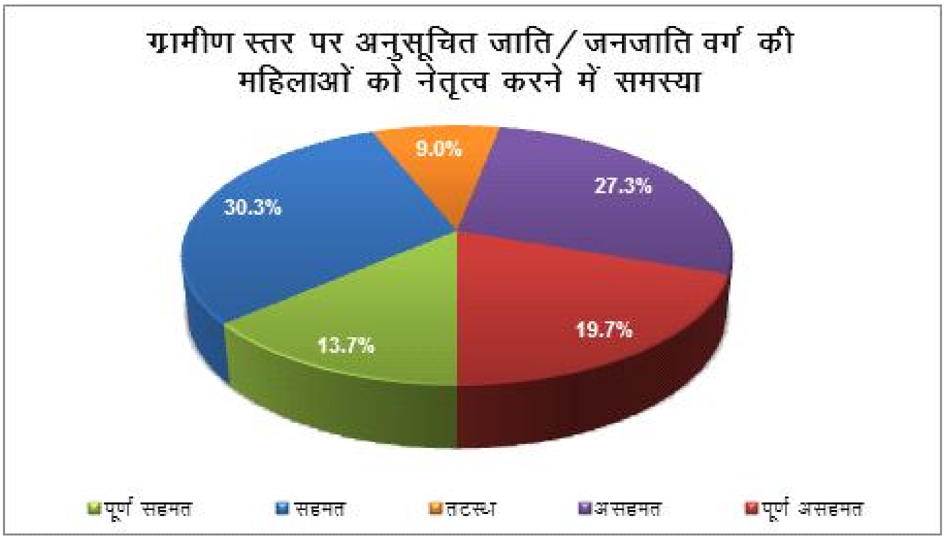

तालिका क्रमाँक–3.24 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के चयनित उत्तरदाता ग्रामीण स्तर पर अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग की महिलाओं का नेतृत्व करने में होने वाले समस्याओं के सन्दर्भ में सर्वाधिक 30.3 प्रतिशत उत्तरदाता इस विचार से सहमत एवं 13.7 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्ण सहमत है। वहीं उक्त विचार से 27.3 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत एवं 19.7 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्ण असहमत है, जबकि 9.0 प्रतिशत उत्तरदाता उक्त विचार से तटस्थ है।

तालिका क्रमाँक–04

अनुसूचित जाति/जनजाति की महिलाओं में सामाजिक-राजनैतिक जागरूकता

क्र.	अभिमत	संख्या	प्रतिषत
1.	पूर्ण सहमत	38	12.7
2.	सहमत	57	19.0
3.	तटस्थ	29	09.7
4.	असहमत	131	43.7
5.	पूर्ण असहमत	45	15.0
योग		30	10

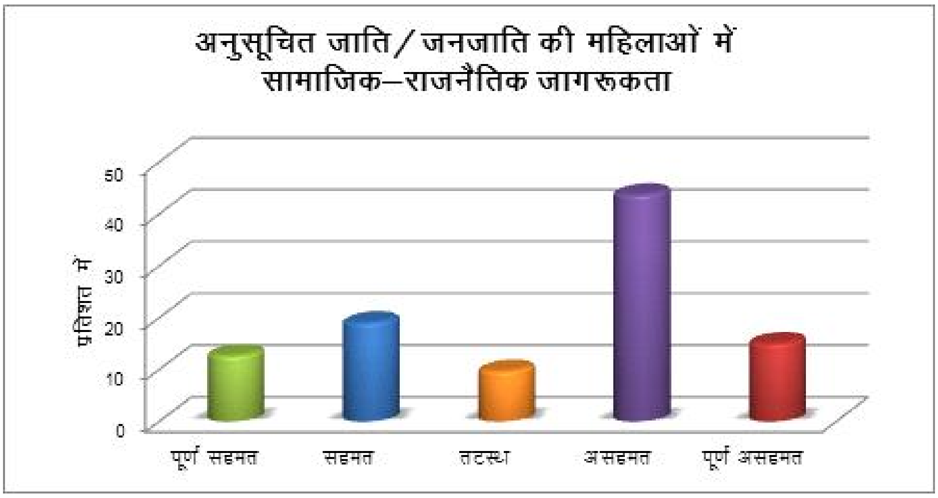

तालिका क्रमाँक–3.28 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के चयनित उत्तरदाता में 'अनुसूचित जाति/जनजाति की शिक्षित महिलाओं में सामाजिक राजनैतिक जागरूकता होने' के सन्दर्भ में सर्वाधिक 43.7 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत एवं 15.0 प्रतिशत पूर्ण असहमत है। वहीं 19.0 प्रतिशत उत्तरदाता उक्त विचार से सहमत एवं 12.7 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्ण सहमत है। 9.7 प्रतिशत उत्तरदाता उक्त विचार से तटस्थ है।

समस्या :

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी पुरूष प्रधान समाज द्वारा महिलाओं के प्रति राजनीतिक नेतृत्व को सहजता से स्वीकार न कर पाना, अनुसूचित वर्ग की महिलाओं के साथ जातिगत भेदभाव होना, परिवार के पुरूष वर्ग के साथ–साथ राजनैतिक हस्तक्षेप होना, महिला शिक्षा व साक्षरता की सुविधाओं का अभाव, राजनीति को दल–दल समझना, राजनीतिक नेतृत्व के प्रति समाज में व्याप्त नकरात्मक दृष्टिकोण, अनुसूचित वर्ग के महिलाओं की निम्न आर्थिक स्थिति या गरीबी, इत्यादि अनेक प्रकार की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ है, जो अनुसूचित वर्ग के सफल राजनैतिक नेतृत्व के मार्ग में सबसे बड़ी बाधक है, जिसके कारण अनुसूचित महिलाएँ राजनीतिक नेतृत्व करने में स्वयं को असमर्थ अनुभव करती हैं।

सुझाव :

1. अनुसूचित वर्ग की महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता को बढ़ाने के लिए पंचायतीय स्तर पर महिलाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
2. महिलाओं की राजनीतिक–सामाजिक समझ को प्राथमिकता देकर उन्हें नेतृत्व के लिए अवसर प्रदान करना चाहिए।
3. महिलाओं में आत्म–विश्वास देकर इनकी योग्यता के आधार पर सामाजिक–राजनैतिक जिम्मेदारियों के निर्वहन हेतु अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है।
4. अनुसूचित वर्ग की महिलाएँ आत्मनिर्भर होंगी तभी उन्हें परिवार व समाज के नेतृत्व के लिए अवसर दिया सकेगा, अतः महिलाओं के स्वयं आगे आने की आवश्यकता है।
5. अनुसूचित वर्ग के महिलाओं के पंचायती कार्यों में पुरूष वर्ग व राजनैतिक हस्तक्षेपों को रोकना चाहिए, ताकि उन्हें अपने क्षमताओं को पहचानने का मौका मिले।
6. अन्य वर्ग के महिलाओं व पुरूष वर्ग के जनप्रतिनिधियों द्वारा पंचायतीय कार्यों सहित आवश्यक कार्यक्रमों हेतु मार्गदर्शन व सहयोग किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय निकायों में अनुसूचित वर्ग की महिलाओं को पुरूष प्रधान समाज सहजता से स्वीकार नहीं कर रहा है तथा इनके कार्यों, निर्णयों एवं उद्देश्यों की आलोचना या हस्तक्षेप करता है। 21वीं सदी के तीसरे दशक में पंचायतीय निर्वाचन में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता एवं नेतृत्व बेहतर होते दिख रही है। इसके पीछे मुख्य कारण शिक्षा दर में वृद्धि होना, राजनीतिक नेतृत्व करने का अवसर मिलना, सामाजिक–आर्थिक स्तर में सुधार होना तथा सरकार का प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष सहयोग व प्रयास है। इसके अतिरिक्त सबसे अधिक प्रभावशाली महिलाओं की राजनीतिक समझ व जागरूकता, सोशल मीडिया रहा है। वर्तमान में राजनीतिक जीवन में संचार साधनों व मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण एवं प्रभावी होती जा रही है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. अग्रवाल, एस. (2017). ग्रामीण अनुसूचित जातियों की महिलाओं में राजनैतिक जागरूकता. शोध मंथन, 4, 18—25.
2. अवस्थी, ए. (2000). भारतीय प्रशासन. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, पृ. 496.
3. हर्बट, एम. एवं डेविड एम. (1984). पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन, ब्रिल एकेडमिक पब्लिशर्स, नीदरलैण्ड, 254.
4. कुमार, ए. (2016). जनजातीय विकास एवं पंचायती राज. रावत पब्लिकेशन, जयपुर, राजस्थान, 55.
5. मांझी, टी. (2017). जनजातीय महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक भूमिकाओं में परिवर्तन की स्थिति : एक विवेचन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्प्लीनरी रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट, 4(4) 295—297.
6. सिंह, ए. एवं लाल, ए. (2019). अनुसूचित जाति की महिलाओं में राजनीतिक सहभागिता एवं मावनाधिकार का समाजशास्त्रीय अध्ययन. इंटरनेशलन ऑर्गेनाईजेशन ऑफ साइंटिफिक रिसर्च जर्नल ऑफ ह्युमेनिटिज़ एण्ड सोशल साइंस (IOSR-JHSS), 24(1) 92—97.
7. सिंह, बी. (2018). उत्तरप्रदेश पंचायती राज व्यवस्था में पिछड़े वर्ग की महिला प्रतिनिधियों की भूमिका. अप्रकाशित शोध प्रबंध, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्याल, बरेली, उत्तरप्रदेश.
8. सिंह, टी. पी. एवं सिंह, एन. (2023). पंचायती राज में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका. इंटरनेशलन जर्नल ऑफ रिव्यूक्स एण्ड रिसर्च इन सोशल साइंस, 11(2), 89—95.
9. तरुणेश, (2019). पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की राजनीति के प्रति जागरूकता. अप्रकाशित शोध प्रबंध, ओम डिग्री कॉलेज शिकोलबाद, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश.
10. राठौड़, मीना. (2003). भारत में राजनीतिक दल, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर, राजस्थान, 229.
11. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, जिला—कबीरधाम, 2022—23.
12. छत्तीसगढ़ राज्य पंचायती राज अधिनियम, छत्तीसगढ़ शासन, 1993, 2014.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 102-112

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

बिहान योजना से संबद्ध महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन

धन्नू कुमार साहू, सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र),
सुश्री रेणुका कुंजाम, सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)
संत गुरूघासी दास बाबा शासकीय नवीन महाविद्यालय, ठेलकाडीह, जिला– खैरागढ़–छुईखदान–गंडई (छ.ग)

सारांश :-

भारतीय समाज प्रारंभ से ही पुरुष प्रधान रहा है लेकिन यह बात सत्य है कि स्त्री और पुरुष परिवार रूपी गाड़ी के दो पहिये है अत: सामाजिक उत्थान तभी हो सकता है जब समाज मे दोनों की स्थिति समान हो। इसी उद्देश्य को ध्यान मे रख कर राज्य एवं केंद्र सरकार द्वारा महिलाओ के उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए गए, लेकिन प्रत्याशित सफलता प्राप्त न हो सकी। उक्त शोध से प्राप्त निष्कर्ष से स्पष्ट है कि राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा संचालित बिहान योजना के माध्यम से स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओ को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा मे महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं। ग्रामीण महिलाये स्वरोजगार से जुड़ रही हैं एवं आमदनी प्राप्त कर रही हैं। छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले की एक साधारण महिला 73 वर्षीय निरंजना चंद्राकार जो 'जागृति महिला स्व सहायता समूह' की अध्यक्ष हैं ,राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने मे कामयाब हुई है। इन समूहों के बनने से ग्रामीण परिवारों को परंपरागत साहूकारों के चंगुल से छुटकारा मिल गया है। इन समूहों को और अधिक प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है ताकि अधिक से अधिक महिलाये समूह से जुड़ सके और आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर आगे बढ़ सके ।

मुख्य शब्द : बिहान, ग्रामीण आजीविका, स्वयं सहायता समूह, आर्थिक आत्मनिर्भरता।

2. प्रस्तावना

सन 1947 मे भारत देश को आजादी मिली तब हमारे पास बहुत सारी समस्याए थी । उनमे से ही एक समस्या थी ग्रामीण विकास। चूंकि उस समय भारत की 88% जनसंख्या गाँव मे निवास कर रही थी, इसीलिए शासन की सभी योजनाओ के केंद्र मे ग्रामीण भारत ही थी। गाँव के विकास के लिए शासन द्वारा समय समय पर अनेक योजनाए एवं कार्यक्रम बनाए गए। जैसे सामुदायिक विकास कार्यक्रम

(1952), समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम (1978), प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (2000), महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना (2005), राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (2011), प्रधानमंत्री आवास योजना (2015) आदि।

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत छत्तीसगढ़ राज्य मे एक महत्वपूर्ण योजना संचालित की जा रही है, जिसका नाम है "बिहान योजना"। यह योजना ग्रामीण गरीब महिलाओ को सशक्त बनाने और उनकी आजीविका मे सुधार लाने के लिए है । यह योजना स्वयं समूहों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओ को संगठित करती है ,उन्हे प्रशिक्षण और ऋण प्रदान करती है और उन्हे बाजार से जोड़ने मे मदद करती है। इस शोध के माध्यम से छत्तीसगढ़ राज्य के नवगठित जिला खैरागढ़-छुईखदान-गंडई मे ठेलकाडीह क्षेत्र के आठ गावों मे महिला स्व-सहायता समूह से जुड़े 40 महिलाओ का साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया एवं उनके सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है ।

स्वयं सहायता समूह क्या है ?

स्वयं सहायता समूह एक अनौपचारिक संगठन है जिसमे लगभग समान आर्थिक और सामाजिक पृष्ठभूमि के लोग एकत्रित होते है ताकि आपसी सहयोग के माध्यम से अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए मिलकर काम कर सके ।

इस शोध के संदर्भ मे स्वयं सहायता समूह का तात्पर्य छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्र मे महिलाओं द्वारा गठित समूह से है जिसमे 10 से 15 सदस्य हो सकते है । इस समूह के माध्यम से महिलायें छोटी छोटी बचत करके फंड तैयार करती है । इस फंड के माध्यम से समूह जरूरतमंदों को निम्न ब्याज दरों पर वित्तीय सहायता उपलब्ध कराती है। कुछ महिला समूहों द्वारा अपने फंडिंग के सहायता से स्वरोजगार भी प्रारंभ किया गया है। साबुन,वाशिंग पावडर, फिनायल, मसाला पैकेजिंग, अगरबत्ती, पापड़, बड़ी आदि सामग्रियों का निर्माण कर स्वयं सहायता समूह की महिलाये आत्मनिर्भर हो रही है। समूह के सदस्य अपने बीच से ही किसी महिला को अध्यक्ष एवं किसी को सचिव के रूप मे चुनती है। सामान्यत: समूह के बैंक खाते से लेन-देन इन्हीं दोनों के हस्ताक्षर से होते है।

बिहान योजना की भूमिका

ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा ग्रामीण गरीबी उन्मूलन हेतु राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन जून 2011 से प्रारंभ किया गया । इसी मिशन के तहत 01 जून 2011 को छत्तीसगढ़ राज्य के पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के अंतर्गत मुख्यमंत्री की अध्यक्षता मे "छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका संवर्धन समिति" का गठन किया गया है, जिसे बिहान नाम दिया गया जिसका अर्थ है 'सबेरा'।

'बिहान' राज्य की गरीब एवं पिछड़े हुए परिवारों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति मे सुधार लाने एवं जीवन स्तर ऊँचा उठाने के लिए कार्यरत है। 'बिहान' के तहत जनगणना 2011 की सूची मे शामिल गरीब एवं वंचित परिवार की महिलाओं को स्व-सहायता समूह के रूप मे संगठित किया जाता है। एक समूह मे 10 से 15 महिलायें हो सकती है। स्वयं सहायता समूहों की क्रियाशीलता हेतु पंचसूत्र का पालन अनिवार्य है :-

1. नियमित बैठक
2. नियमित बचत
3. नियमित आंतरिक लेन देन
4. नियमित ऋण वापसी
5. नियमित दस्तावेज संधारण

स्व सहायता समूहों का गठन विभिन्न स्तरों पर किया जाता है, यथा-ग्राम संगठन, संकुल स्तरीय संगठन, विकासखंड स्तरीय संगठन व जिला स्तरीय संगठन। इन संगठनों के सशक्तिकरण हेतु स्टार्ट अप राशि के रूप मे प्रत्येक ग्राम संगठन को रु. 35000 तथा प्रत्येक संकुल स्तरीय संगठन को रु. 2 लाख दिया जाता है। स्व-सहायता समूहों को बैंकिंग सुविधाओ तक पहुच बनाने के लिए वित्तीय समावेशन के तहत सहायता उपलब्ध कराई जाती है। ऐसे समूह जो तीन माह पुराने हो एवं पंचसूत्र का पालन करते हो उनको 15000 रु. चक्रीय निधि के रूप मे प्रदान किया जाता है। पाँच माह पुराने स्व सहायता समूहों को 50 हजार से 60 हजार तक सामुदायिक निवेश निधि प्रदाय की जाती है। छः माह पुराने एवं पंचसूत्र का पालन कर रहे स्व सहायता समूहों को स्वरोजगार हेतु बैंक के माध्यम से 50 हजार से 3 लाख तक ऋण प्रदाय किया जाता है । गाँव के अति गरीब, पिछड़े व कमजोर वर्ग के परिवारों की सहायता हेतु ग्राम संगठनों को 1.50 लाख तक का आपदा-कोष प्रदाय किया जाता है। स्व सहायता समूहों को वित्तीय रूप से साक्षर बनाने हेतु समूह की सक्रिय महिलाओ मे से बैंक मित्र, वित्तीय साक्षरता -सी.आर.पी., बैंक सखी आदि सामुदायिक संवर्ग तैयार कर इनकी सेवाए ली जाती है ।

इस प्रकार बिहान के अंतर्गत स्व सहायता समूहों के माध्यम से गाँव के गरीब एवं वंचित परिवार की महिलाओ को स्वरोजगार से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाने का कार्य किया जा रहा है ताकि ग्रामीण गरीब परिवारों की आर्थिक स्थिति मे सुधार हो सके तथा उनका जीवन स्तर ऊंचा उठ सके ।

साहित्य समीक्षा

भवेल, सुनीता (2020) ने ''राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के माध्यम से जनजातीय महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के विशेष संदर्भ में'' अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि ग्रामीण आजीविका मिशन के माध्यम से गरीब ग्रामीण को सक्षम और प्रभावशाली संस्थागत मंच प्रदान कर उनकी आजीविका में निरंतर वृद्धि करना वित्तीय सेवाओं तक उनकी बेहतर और सरल तरिके से पहुँच बनाना और उनकी पारिवारिक आय को बढ़ाना है।

तोमर, सविता (2023) ने ''भारत में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की प्रगति का विश्लषेणात्मक अध्ययन'' अपने शोध अध्यय में लिखते हैं की वर्ष 2018-22 में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अन्तर्गत स्वयं सहायता समूहों, ग्राम संगठनों तथा स्वयं सहायता समूहों में जुड़ने वाले परिवारों की संख्या में वृद्धि दर्ज की गई है जिससे स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की वास्तविक (भौतिक) प्रगति सुनिश्चित हुई है। अध्ययन की अवधि (वर्ष 2018-22) में स्वयं सहायता समूहों को वितरित की गई निधि में भी वृद्धि दृष्टिगत है जिससे स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की वित्तीय प्रगति भी हुई है। अतः राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत ग्रामीण परिवारों की भागीदारी सुनिश्चित हुई है, तथा स्वयं सहायता समूहों को प्रोत्साहन मिला है, जिसके माध्यम से अनेक परिवारों की महिलाओं को रोजगार प्राप्त हुआ है।

निर्मलकर, कामिन एवं एन. कुजूर (2019) ने ''ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक विकास में बिहान योजना की भूमिका (धमतरी विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में)'' अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन या बिहान योजना के प्रति ग्रामीण महिलाओं में अन्य योजनाओं के प्रति जागरूकता का अधिक देखने को मिलता है बिहान योजना अन्य स्वरोजगार योजनओं की तुलना में आर्थिक रूप से अधिक प्रभावी दिखायी पड़ता है। योजना में शहरी महिलाए जो ई-रिक्शा एवं कैन्टील एवं स्टेशनरी जैसे व्यवसाय का चुनाव किया है इनकी आय दूसरे व्यवसाय की अपेक्षा अधिक सफन दिखायी पड़ता है। अधिकांश उत्तरदाता ऐसे है जो प्रतिमाह पांच हजार रूपये से अधिक आय अर्जित कर रहे है।

आंकड़ों का विश्लेषण

शोधार्थी द्वारा प्रश्नावली प्रविधि के माध्यम से उत्तरदाताओं से आँकड़े एकत्रित किए गए है जिसे विभिन्न तलिकाओ के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है ।

आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण

तालिका-1 : शैक्षणिक योग्यता

क्र.	शिक्षा का स्तर	संख्या	प्रतिशत
1	प्राथमिक	8	20.0
2	माध्यमिक	12	30.0
3	हाई स्कूल	6	15.0
4	हायर सेकेण्डरी	10	25.0
5	स्नातक	4	10.0
योग		40	100

तालिका-1 में स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं की शैक्षणिक स्तर को दर्शाया गया हैओ तालिका से स्पष्ट होता है कि चयनित उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 30.0 प्रतिशत उत्तरदाता माध्यमिक

स्तर तक शिक्षित हैं, वहीं हाई स्कूल व हायर सेकेण्डरी स्तर तक शिक्षित उत्तरदाताओं का प्रतिशत क्रमशः 15.0 एवं 25.0 है। स्नातक स्तर तक शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं का प्रतिशत 10.0 है जबकि प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं का प्रतिशत 20.0 प्रतिशत है। उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि समूह से जुड़ी महिलाओं की शैक्षणिक स्तर स्कूली शिक्षा तक सीमित है, परंतु बिहान योजना से जुड़ने से महिलाओं की जागरूकता बढ़ी है।

तालिका-2 : स्वयं सहायता से जुडने की अवधि

क्र.	अवधि (वर्षों मे)	संख्या	प्रतिशत
1	1 से 3 वर्ष	2	5.0
2	3 से 5 वर्ष	8	20.0
3	5 से अधिक	30	75.0
योग		40	100

तालिका-2 में महिलाओ की स्वयं सहायता समूह से जुडने की अवधि को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि चयनित उत्तरदाताओं में 75.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जानकारी दिए कि उन्हें स्व-सहायता समूहों में जुड़े हुए 5 वर्ष से भी अधिक समय से जुड़े हुए हैं। 20.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जानकारी दिए हैं कि स्व-सहायता समूह में जुड़कर में कार्य करते हुए 3 से 5 वर्ष हो गये हैं। 5.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं को स्व-सहायता समूहों में नये जुड़े है जिन्हें समूह में जुड़े 1 से 3 वर्ष हुए है। उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि बिहान योजना के माध्यम से स्व-सहायता समूहों में अनुभवी महिला सदस्यों के साथ-साथ नये सदस्य जुड़ रहे हैं जो बिहान योजना के सकारात्मक एवं रोजगोन्नमुख प्रभावों को प्रकट करता है।

तालिका-3 : वैवाहिक स्थिति

क्र.	वैवाहिक स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	विवाहित	40	100.0
2	अविवाहित	0	0
योग		40	100

तालिका-3 मे समूह से जुड़ी महिलाओं की वैवाहिक स्थिति को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र की चयनित शत-प्रतिशत महिलाएं विवाहित है। उपरोक्त विश्लेषण एवं उत्तरदाताओं से विचार-विमर्श से ज्ञात हुआ कि महिलायें बचत एवं जिम्मेदारी की भावना विवाह के उपरांत अनुभव करती है। साथ ही, एक प्रमुख कारण यह भी है कि ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा में वृद्धि हुई है, 20-22 वर्ष की आयु तक अधिकांश लड़कियाँ अध्ययनरत होते हैं जिस कारण वे स्व-सहायता समूहों से नहीं जुड़ पाती है और जो लड़कियाँ कम शिक्षित होती हैं उनका विवाह अपेक्षाकृत जल्दी हो जाता है और इन लड़कियों में समूहों में जुड़कर कार्य करने के संबंध में जागरूकता की कमी देखी गई है।

तालिका-4 : कृषि भूमि की स्थिति

क्र.	कृषि भूमि	संख्या	प्रतिशत
1	1 से 3 एकड़	24	60.0
2	3 से 6 एकड़	10	25.0
3	6 से 9 एकड़	4	10.0
4	9 से एकड़	2	5.0
योग		40	100

तालिका-4 में समूह से जुड़ी महिलाओं के परिवार में कृषि योग्य भूमि की उपलब्धता को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के बिहान योजना से जुड़ी महिलाओं में सर्वाधिक 60.0 उत्तरदाताओं के परिवार में कृषि भूमि उपलब्धता 1 से 3 एकड़ है। 25.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 3 से 5 एकड़ कृषि भूमि उपलब्ध होने की जानकारी दिए हैं। 10.0 उत्तरदाताओं ने 6 से 9 एकड़ कृषि भूमि उपलब्ध होने की जानकारी दिए हैं। जबकि 9 एकड़ से अधिक कृषि भूमि उपलब्धता की जानकारी देने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 5.0 प्रतिशत है। उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि समूह की ज्यादातर महिलायें सीमांत कृषक परिवार से हैं। चूंकि कृषि से प्राप्त आय से इन परिवारों की जरूरतें पूरी नहीं हो सकती, ऐसी स्थिति मे स्वयं सहायता समूह उनके लिए बेहतर विकल्प प्रस्तुत करती है ।

तालिका-5 : समूह की उत्पादकता

क्र.	उत्पादन का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1	सेवा	28	70.0
2	वस्तु	12	30.0
योग		40	100

तालिका-5 में बिहान योजना से जुड़ी महिलाओं के समूहों की उत्पादकता की स्थिति को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के बिहान योजना से जुड़ी महिलाओं में सर्वाधिक 70.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि समूह की सहायता से सेवाओं का उत्पादन करते हैं, जबकि 30.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने समूह के माध्यम से वस्तुओं उत्पादन की जानकारी दिए हैं। उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि ज्यादतर समूह सेवा क्षेत्र से जुड़े हुए हैं जिसमे प्रमुख है न्यूनतम ब्याज दरों पर समूह के सदस्यों एवं अन्य व्यक्तियों को ऋण उपलब्ध कराना । परंतु कई समूह विभिन्न प्रकार के वस्तुओं का उत्पादन भी करती हैं ,जैसे :अगरबत्ती, पापड़, साबुन, फिनायल, बड़ी, लड्डू आदि ।

तालिका-6 : सदस्यों का आयु वर्ग

क्र.	आयु	संख्या	प्रतिशत
1	20 से 30	6	15.0
2	30 से 40	18	45.0
3	40 से अधिक	6	40.0
योग		40	100

तालिका-6 मे स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हुई महिलाओं के आयु वर्ग को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट होता है कि बिहान योजना में संबंद्ध सर्वाधिक 45.0 प्रतिशत महिलाएँ 30 से 40 आयु वर्ग के हैं। जबकि 20 से 30 आयु वर्ग के महिला सदस्य 15.0 प्रतिशत है। वहीं 40 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओं का प्रतिशत 40.0 प्रतिशत है। उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि विवाह के 8-10 साल बीत जाने के पश्चात महिलायें समूह की ओर आकर्षित होती हैं क्योंकि प्रारम्भिक स्थिति मे परिवार मे बहुत सारी अनिश्चितताएं होती है जिनसे महिला सामंजस्य बिठाती है और इसी बीच परिवर भी बढ़ जाता है जिसके साथ ही खर्चों मे भी वृद्धि हो जाती है तब अतिरिक्त आय के रूप मे स्वयं सहायता समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है ।

तालिका-7 : व्यवसाय की प्रकृति

क्र.	व्यवसाय की प्रकृति	संख्या	प्रतिशत
1	मौसमी	28	70.0
2	पूरे वर्ष	12	30.0
योग		40	100

तालिका-7 में बिहान योजना अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों में महिलाओं के कार्य की प्रकृति को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 70.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जानकारी दिए हैं उनके समूह की कार्य की प्रकृति मौसमी प्रकार की हैं, जबकि 30.0 प्रतिशत उत्तरदाता समूह के माध्यम से पूरे वर्ष भर समूह के कार्यों में संलग्न होते हैं। उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में बिहान योजना के अंतर्गत महिलाओं के कार्यों की प्रकृति अस्थायी एवं मौसमी प्रकृति की है अर्थात् त्यौहारों एवं उत्सवों पर आधारित कार्यों में संलग्न है जिसके कारण उनके आय की प्रकृति भी अस्थायी और अनियमित है। अतः इन्हें वर्ष भर चलने वाले कार्यों की प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

तालिका-8 : चक्रीय निधि की स्थिति

क्र.	चक्रीय निधि की स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	प्राप्त	24	60.0
2	अप्राप्त	16	40.0
योग		40	100

तालिका-8 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के चयनित उत्तरदाताओं में सर्वाधिक 60.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं को शासन द्वारा दी जाने वाली चक्रीय निधि का लाभ प्राप्त होता है जबकि 40.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं को इस चक्रीय निधि का लाभ नहीं मिल पाता है। साक्षात्कार के दौरान उत्तरदाताओं से विचार-विमर्श से ज्ञात हुआ कि ज्यादतर समूह ऐसे हैं जो सतत रूप से पंच सूत्र का पालन कर रहे हैं और शासन द्वारा दी जाने वाली चक्रीय निधि का लाभ ले चुके हैं। इससे समूह की निधि मे वृद्धि होती है जिससे समूह के सदस्यों को प्रोत्साहन मिलता है और उत्पादकता मे वृद्धि होती है।

तालिका-9 : आर्थिक सक्षमता की स्थिति

क्र.	आर्थिक सक्षमता	संख्या	प्रतिशत
1	पूर्णतः	38	95.0
2	आंशिक	2	5.0
योग		40	100

तालिका-9 से स्पष्ट है बिहान योजना से संबद्ध चयनित महिला उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 95.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं स्वीकार किया है कि उनके आर्थिक सक्षमता में पूर्णतः एवं सकारात्मक परिवर्तन आया है, वे पूर्णरूप से सक्षम हुई है, जबकि 5.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने आर्थिक सक्षमता की स्थिति में आंशिक परिवर्तन की बात स्वीकार किए हैं। उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि स्वयं सहायता समूह से जुड़कर महिलायें आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर बहुत तेजी से बढ़ रही हैं। बिहान योजना द्वारा महिलाओं को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्रदान किए जाते हैं जिससे महिलाओं मे कौशल विकास हुआ है और उनकी कार्यकुशलता मे वृद्धि हुई है। योजना के तहत स्वरोजगार हेतु ऋण भी उपलब्ध कराया जाता है जिनका लाभ लेकर महिलायें आर्थिक आत्मनिर्भर बन रहीं हैं।

तालिका-10 : मनरेगा से लाभान्वित

क्र.	मनरेगा से लाभान्वित	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	36	90.0
2	नहीं	4	10.0
योग		40	100

तालिका-10 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में बिहान योजना से संबंद्ध चयनित महिलाओं में से सर्वाधिक 90.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं जानकारी दिए हैं कि वे समूह के कार्यों के अतिरिक्त मनरेगा योजना के तहत् कार्य करते अतिरिक्त आर्थिक लाभ अर्जित करते हैं जबकि 10.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने मनरेगा से लाभांवित नहीं होने की जानकारी दिए हैं। उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि बिहान योजनांतर्गत संबद्ध अधिकांश महिलाएँ मनरेगा के तहत् कार्य कर अतिरिक्त कार्य एवं आर्थिक लाभ प्राप्त कर रहें हैं। उत्तरदाताओं से विचार-विमर्श से ज्ञात हुआ कि जिन महिलाओं को मनरेगा योजना का लाभ नहीं मिल रहा है वे शारीरिक रूप से मनरेगा कार्यों को करने में सक्षम नहीं है, इस कारण वे मनरेगा योजना का लाभ नहीं ले पाती हैं।

तालिका-11 : प्रधानमंत्री आवास योजना से लाभान्वित

क्र.	लाभान्वित	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	20	50.0
2	नहीं	20	50.0
योग		40	100

तालिका-11 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में बिहान योजना से संबंद्ध चयनित महिला उत्तरदाताओं में प्रधानमंत्री आवास योजना से 50 प्रतिशत उत्तरदाता लाभांवित हुए हैं, जबकि 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं को प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ नहीं मिला है। उपरोक्त विश्लेशण से ज्ञात होता है कि चयनित उत्तरदाताओं में योजना से लाभांवित एवं गैर-लाभांवित सदस्यों की स्थिति समान है। उत्तरदाताओं से विचार-विमर्श से ज्ञात हुआ कि जिन उत्तरदाताओं को लाभ नहीं मिला है उन महिलाओं ने जानकारी दिए हैं कि ग्राम में योजनाओं के पात्रता की निर्धारण ग्राम पंचायत द्वारा किया जाता है और जिन परिवारों के पास अपेक्षाकृत कम कृषि भूमि एवं निम्न आर्थिक परिवारों को पहले प्राथमिकता दी जा रही है, जिसके कारण उन महिलाओं को या उनके परिवारों में प्रधानमंत्री आवास योजना से लाभ नहीं मिला है। वहीं दूसरी ओर बिहान योजना से जुड़ी महिलाओं में जागरूकता में वृद्धि होने से समूह के महिलाओं को इस योजना से लाभ मिला है।

तालिका-12 : बिहान योजना से ग्रामीण महिलाओं का विकास

क्र.	लाभान्वित	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	38	95.0
2	नहीं	2	5.0
योग		40	100

तालिका-12 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में बिहान योजना से संबद्ध चयनित महिला उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 95.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि बिहान योजना से ग्रामीण महिलाओं का विकास में वृद्धि हुई है जबकि 5.0 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि महिलाओं के ग्रामीण महिलाओं की स्थिति परिवर्तन नहीं हुआ है। कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के उपरांत महिलाओं मे शासकीय योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ी है। मनरेगा, प्रधानमंत्री आवास योजना, बिहान आदि शासकीय योजनाओं का लाभ ग्रामीण महिलाओं को आसानी मिल रहा है। अब महिलाओं की गतिशीलता मे वृद्धि हुई है। बैठक, प्रशिक्षण, बैंकिंग कार्य आदि के लिए महिलाओं को घर के चार

दीवारी से बाहर आने का अवसर प्राप्त हो रहा है। साथ ही स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के लिए शासन द्वारा चलाए जाने वाले अभियान से भी महिलायें परिचित हो रही हैं ।

बिहान योजना का प्रभाव

स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर सभी महिलाओं की आर्थिक स्थिति ,दाम्पत्य जीवन एवं सामाजिक स्थिति मे सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। अब परिवार के कई निर्णयों मे महिलाओं की सहभागिता मे वृद्धि हुई है। महिलाओं मे आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ने से पति से सम्मान पा रही रही हैं और उनकी सामाजिक स्थिति मे बहुत अधिक सुधार हुआ है। साथ ही वित्तीय साक्षरता में भी वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष :-

उपरोक्त शोध से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से हम इस निष्कर्ष पर पहुचे है कि ग्रामीण क्षेत्र मे महिलाओ की दशा मे सुधार, उन्हे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने, सामाजिक सम्मान दिलाने, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक करने, अपने अधिकार एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक करने मे स्वयं सहायता समूह एवं बिहान योजना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। ग्रामीण क्षेत्र के अधिक से अधिक महिलाओं तक इसकी पहुँच को बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। अधिक से अधिक महिलाओं को प्रशिक्षण का लाभ मिले। साथ ही महिला समूह द्वारा उत्पादित सामग्री के लिए सहजता से बाजार उपलब्ध कराने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Innovation The research concept ISSN:2456-5474,Vol-2 Issue-9 october-2017
2. छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन 'बिहान' की आधिकारिक वेबसाईट
3. https://bihan.gov.in/pdf/SMIB/CLF_Training_Module.pdf
4. समाजशास्त्र : अवधारणायें एवं सिद्धांत,जे.पी. सिंह,ISBN-978-81-203-4860-8
5. भवेल, सुनीता ''राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के माध्यम से जनजातीय महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के विशेष संदंर्भ में'' जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजी एण्ड इन्नोवेटिव रिसर्च, अंक-7, भाग-2, 2020, पृ. 825-833..
6. गुप्ता कमला, ''ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण का माध्यम स्वशक्ति परियोजना'', डॉ. अम्बेडकर सामाजिक शोध पत्रिका, महू, 2001.
7. निर्मलकर, कामिन एवं एन. कुजूर ''ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक विकास में बिहान योजना की भूमिका (धमतरी विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में)'' माइंड एण्ड सोसायटी, अंक-8, भाग-1-2, 2019, पृ. 72-78.

8. सिंह, नीतु, सिंह अमरपाल एवं सिंह विनोद "राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशनः समाजशास्त्रीय अध्ययन (जनपद प्रतापगढ़ के सदर तहसील के विशेष संदर्भ में" शब्दकोशः जर्नल ऑफ विजुअल एण्ड परफॉर्मिंग आर्ट्स, अंक-5, भाग-5, 2024, पृ. 1650-1656.
9. सिंह सुधांशु, जीविकोपार्जन के मिशन पर जुटी सरकार, कुरूक्षेत्र, वर्ष-61, अंक12, अक्टूबर 2015, पृ. 13-17.
10. तोमर, सविता, ''भारत में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की प्रगति का विश्लषेणात्मक अध्ययन'' शोध मंथन, अंक-14, भाग-4, 2023, पृ. 543-547.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 113-117

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

डिजिटल युग में साइबर युद्ध की चुनौतियाँ और भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा

डॉ. रामप्रसाद यादव
सहायक आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग,
दिग्विजयनाथ पी. जी. कॉलेज गोरखपुर।
(संबद्ध : दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)

शोध सारांश :

डिजिटल प्रौद्योगिकी के तीव्र विस्तार ने साइबर स्पेस को समकालीन राष्ट्रीय सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण आयाम बना दिया है। वर्तमान समय में साइबर युद्ध पारंपरिक सैन्य संघर्ष की सीमाओं से परे उभरती हुई ऐसी चुनौती है, जो राज्य की महत्वपूर्ण सूचना अवसंरचना, वित्तीय प्रणालियों, ऊर्जा नेटवर्क तथा संचार व्यवस्थाओं को प्रभावित करने की क्षमता रखती है। भारत के संदर्भ में शासन, अर्थव्यवस्था तथा सामरिक तंत्र का बढ़ता डिजिटलीकरण राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष नए प्रकार के असममित और अदृश्य खतरों को जन्म दे रहा है। उपलब्ध नीति दस्तावेजों, आधिकारिक प्रतिवेदनों तथा समकालीन अध्ययनों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि साइबर हमले, डेटा उल्लंघन तथा नेटवर्क व्यवधान जैसी घटनाएँ राज्य की रणनीतिक परिसंपत्तियों और प्रशासनिक संरचना के लिए गंभीर जोखिम उत्पन्न कर रही हैं। महत्वपूर्ण सूचना अवसंरचना की सुरक्षा के लिए संस्थागत तंत्र की उपस्थिति के बावजूद साइबर खतरों की बदलती प्रकृति के अनुरूप तकनीकी क्षमता, समन्वित प्रतिक्रिया तंत्र तथा जोखिम प्रबंधन ढाँचे में अभी भी कई चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय सुरक्षा की पारंपरिक अवधारणाएँ पुनर्परिभाषित हो रही हैं तथा डिजिटल क्षेत्र में सुरक्षा दृष्टिकोण के सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। ऐसी स्थिति में एकीकृत साइबर सुरक्षा व्यवस्था, स्वदेशी तकनीकी क्षमता का विकास, प्रभावी नीतिगत समन्वय तथा बहुस्तरीय संस्थागत सहयोग भारत की दीर्घकालिक सुरक्षा और रणनीतिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत आवश्यक प्रतीत होते हैं।

मुख्य शब्द : साइबर युद्ध, राष्ट्रीय सुरक्षा, डिजिटल सुरक्षा, साइबर कूटनीति, सूचना युद्ध, साइबर आतंकवाद, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल संप्रभुता, साइबर अपराध, क्लाउड सुरक्षा, राष्ट्रीय साइबर नीति।

प्रस्तावना :

21वीं सदी में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने वैश्विक शक्ति–संतुलन और सुरक्षा अवधारणाओं को मौलिक रूप से परिवर्तित कर दिया है। डिजिटल युग में युद्ध का स्वरूप पारंपरिक सीमाओं से

परे जाकर आभासी क्षेत्र तक विस्तृत हो गया है, जिसे सामान्यतः 'साइबर युद्ध' कहा जाता है। साइबर हमले किसी राष्ट्र की सैन्य प्रणाली, ऊर्जा अवसंरचना, बैंकिंग नेटवर्क, संचार तंत्र तथा सरकारी डाटाबेस को निशाना बनाकर उसकी आंतरिक स्थिरता और संप्रभुता को प्रभावित कर सकते हैं। भारत जैसे उभरते वैश्विक शक्ति–केन्द्र के लिए, जो तीव्र गति से डिजिटल परिवर्तन की दिशा में अग्रसर है, उसके लिए साइबर सुरक्षा राष्ट्रीय सुरक्षा का अभिन्न अंग बन चुकी है। डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटी, आधार, ऑनलाइन बैंकिंग और ई–गवर्नेंस जैसी पहलों ने जहां विकास को गति दी है, वहीं साइबर खतरों की संभावनाएं भी बढ़ाई हैं। राज्य–प्रायोजित हैकिंग, साइबर आतंकवाद, दुष्प्रचार अभियान और डेटा चोरी जैसी चुनौतियाँ भारत की रक्षा नीति के समक्ष गंभीर प्रश्न प्रस्तुत करती हैं। इस संदर्भ में भारत की रक्षा रणनीति को केवल भौतिक सीमाओं की सुरक्षा तक सीमित न रखकर साइबर स्पेस में भी सशक्त, लचीली और सक्रिय नीति विकसित करना आवश्यक हो गया है।

1. साइबर युद्ध की अवधारणा और स्वरूप :

साइबर युद्ध (Cyber Warfare) आधुनिक युग में युद्ध का एक उभरता हुआ आयाम है, जिसमें किसी राष्ट्र, संगठन या शत्रु समूह द्वारा डिजिटल माध्यमों के जरिए दूसरे देश की सूचना प्रणाली, संचार नेटवर्क, वित्तीय तंत्र, विद्युत ग्रिड, सैन्य कमांड एवं नियंत्रण प्रणाली तथा अन्य महत्वपूर्ण अवसंरचनाओं पर आक्रमण किया जाता है। पारंपरिक युद्ध की तुलना में साइबर युद्ध अदृश्य, सीमाहीन और अत्यंत तीव्र गति से संचालित होता है। इसमें भौतिक हथियारों के स्थान पर मैलवेयर, रैनसमवेयर, वायरस, फ़िशिंग, डाटा चोरी, हैकिंग तथा सूचना–भ्रम (Disinformation) जैसे उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। साइबर युद्ध का स्वरूप बहुआयामी है। यह केवल सरकारी संस्थानों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि निजी क्षेत्र, बैंकिंग प्रणाली, स्वास्थ्य सेवाओं और आम नागरिकों को भी प्रभावित करता है। राज्य–प्रायोजित हमले, साइबर जासूसी, महत्वपूर्ण सूचनाओं की चोरी तथा सोशल मीडिया के माध्यम से मनोवैज्ञानिक युद्ध इसके प्रमुख रूप हैं। डिजिटल निर्भरता बढ़ने के साथ साइबर युद्ध राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती बन चुका है। अतः इसकी अवधारणा केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामरिक, राजनीतिक और आर्थिक आयामों से भी जुड़ी हुई है।

2. भारत के समक्ष साइबर सुरक्षा चुनौतियाँ :

डिजिटल युग में भारत की तीव्र प्रौद्योगिकीय प्रगति ने जहाँ विकास को गति दी है, वहीं साइबर सुरक्षा की चुनौतियों को भी जटिल बना दिया है। भारत विश्व की सबसे बड़ी डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं में उभर रहा है, जहाँ ई–गवर्नेंस, डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन सेवाओं का व्यापक विस्तार हुआ है। विशेषकर राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र (National Informatics Centre) तथा भारतीय कम्प्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम (CERT-in) जैसी संस्थाएँ साइबर अवसंरचना की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, फिर भी चुनौतियाँ निरंतर बढ़ रही हैं।

प्रथम चुनौती महत्वपूर्ण अवसंरचनाओं (Critical Infrastructure) की सुरक्षा है। ऊर्जा, बैंकिंग, परिवहन, रक्षा और दूरसंचार क्षेत्र साइबर हमलों के प्रमुख लक्ष्य बनते जा रहे हैं। यदि इन क्षेत्रों पर साइबर आक्रमण होता है, तो इसका सीधा प्रभाव राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता पर पड़ सकता है। शत्रु राष्ट्र और गैर–राज्य तत्व साइबर जासूसी, डेटा चोरी और रैनसमवेयर हमलों के माध्यम से संवेदनशील सूचनाएँ प्राप्त करने का प्रयास

करते हैं।

द्वितीय, सीमा–पार साइबर आतंकवाद और दुष्प्रचार (Disinformation) अभियान एक गंभीर चुनौती है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से फेक न्यूज़, सांप्रदायिक तनाव और राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न करने के प्रयास किए जाते हैं, जिससे आंतरिक सुरक्षा प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त, चुनावी प्रक्रियाओं और सरकारी तंत्र को लक्षित साइबर हमले लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए खतरा बन सकते हैं। साइबर कौशल और विशेषज्ञों की कमी भी एक बड़ी समस्या है। उन्नत साइबर हमलों से निपटने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ब्लॉकचेन और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसी तकनीकों में दक्ष मानव संसाधन की आवश्यकता है। भारत में साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षित पेशेवरों की संख्या अपेक्षाकृत कम है, जिससे रक्षा तैयारियों में अंतराल उत्पन्न होता है। इसलिए कानूनी एवं नीतिगत ढाँचे को लगातार अद्यतन करने की आवश्यकता है। साइबर अपराधों की प्रकृति तेजी से बदल रही है, जबकि कानूनों और अंतरराष्ट्रीय सहयोग तंत्र को उसी गति से सुदृढ़ करना चुनौतीपूर्ण है। इस प्रकार, भारत के समक्ष साइबर सुरक्षा चुनौतियाँ बहुआयामी हैं, जिनसे निपटने के लिए समन्वित, तकनीकी और रणनीतिक दृष्टिकोण आवश्यक है।

3. साइबर युद्ध और सैन्य रणनीति :

साइबर युद्ध (Cyber Warfare) आधुनिक युग में युद्ध का एक उभरता हुआ आयाम है, जिसमें किसी राष्ट्र, संगठन या शत्रु समूह द्वारा डिजिटल माध्यमों के जरिए दूसरे देश की सूचना प्रणाली, संचार नेटवर्क, वित्तीय तंत्र, विद्युत ग्रिड, सैन्य कमांड एवं नियंत्रण प्रणाली तथा अन्य महत्वपूर्ण अवसंरचनाओं पर आक्रमण किया जाता है। पारंपरिक युद्ध की तुलना में साइबर युद्ध अदृश्य, सीमाहीन और अत्यंत तीव्र गति से संचालित होता है। इसमें भौतिक हथियारों के स्थान पर मैलवेयर, रैनसमवेयर, वायरस, फ़िशिंग, डाटा चोरी, हैकिंग तथा सूचना–भ्रम (Disinformation) जैसे उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। साइबर युद्ध का स्वरूप बहुआयामी है। यह केवल सरकारी संस्थानों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि निजी क्षेत्र, बैंकिंग प्रणाली, स्वास्थ्य सेवाओं और आम नागरिकों को भी प्रभावित करता है। राज्य–प्रायोजित हमले, साइबर जासूसी, महत्वपूर्ण सूचनाओं की चोरी तथा सोशल मीडिया के माध्यम से मनोवैज्ञानिक युद्ध इसके प्रमुख रूप हैं। डिजिटल निर्भरता बढ़ने के साथ साइबर युद्ध राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती बन चुका है। अतः इसकी अवधारणा केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामरिक, राजनीतिक और आर्थिक आयामों से भी जुड़ी हुई है।

4. साइबर कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग :

डिजिटल युग में साइबर कूटनीति भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन चुकी है। साइबर खतरों की वैश्विक प्रकृति के कारण कोई भी राष्ट्र अकेले इन चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना नहीं कर सकता। इसलिए भारत बहुपक्षीय एवं द्विपक्षीय सहयोग को प्राथमिकता करते हुए है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र के मंच पर जिम्मेदार साइबर व्यवहार के मानकों का समर्थन वैश्विक साइबर सुरक्षा ढांचे को मजबूत करने की वकालत की है। इसी प्रकार शंघाई सहयोग संगठन, ब्रिक्स और क्वाड जैसे मंचों के माध्यम से भारत साइबर आतंकवाद, डेटा सुरक्षा और महत्वपूर्ण अवसंरचना की रक्षा पर सहयोग बढ़ा रहा है। सूचना साझाकरण, संयुक्त अभ्यास और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के माध्यम से भारत अंतर्राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ बनाने का प्रयास कर रहा है।

5. भविष्य की रणनीति और सुझाव :

डिजिटल युग में साइबर युद्ध की बढ़ती चुनौतियों को देखते हुए भारत को बहुस्तरीय और समन्वित साइबर सुरक्षा रणनीति अपनानी होगी। सर्वप्रथम, राष्ट्रीय स्तर पर एक सशक्त और समेकित साइबर कमान को और अधिक सुदृढ़ किया जाना चाहिए, जैसे कि रक्षा साइबर एजेन्सी (Defence Cyber Agency) ताकि थल, जल और वायु सेनाओं के बीच साइबर समन्वय प्रभावी हो सके। दूसरे, महत्वपूर्ण अवसंरचनाओं बैंकिंग, ऊर्जा, संचार और परिवहन की सुरक्षा के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग आधारित निगरानी प्रणाली विकसित की जानी चाहिए। इस दिशा में भारतीय कम्प्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम (CERT-In) की भूमिका को और अधिक संसाधन एवं तकनीकी समर्थन देकर मजबूत करना आवश्यक है। साइबर सुरक्षा में आत्मनिर्भरता के लिए स्वदेशी सॉफ्टवेयर, एन्क्रिप्शन तकनीक और क्लाउड अवसंरचना को बढ़ावा देना चाहिए, जो डिजिटल इण्डिया जैसे कार्यक्रमों के अंतर्गत संभव है।

इसके अतिरिक्त, साइबर जागरूकता, विशेषज्ञ मानव संसाधन का प्रशिक्षण, और सार्वजनिक भागीदारी को प्रोत्साहन देना समय की आवश्यकता है। अंतरराष्ट्रीय सहयोग, सूचना साझाकरण और साइबर कूटनीति को भी सुदृढ़ करना चाहिए, जिससे भारत भविष्य के साइबर खतरों का प्रभावी ढंग से सामना कर सके।

निष्कर्ष :

डिजिटल युग में साइबर युद्ध राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा को नई दिशा प्रदान कर रहा है। आज युद्ध केवल सीमाओं पर हथियारों से नहीं, बल्कि कंप्यूटर नेटवर्क, डेटा सेंटर और संचार प्रणालियों के माध्यम से भी लड़ा जा रहा है। भारत जैसे उभरते हुए वैश्विक शक्ति के लिए साइबर सुरक्षा केवल तकनीकी विषय नहीं, बल्कि रणनीतिक आवश्यकता बन चुकी है। ऊर्जा, बैंकिंग, परिवहन, रक्षा संचार और परमाणु प्रतिष्ठानों जैसी महत्वपूर्ण अवसंरचनाएँ साइबर हमलों के संभावित लक्ष्य हैं। ऐसे में एक सुदृढ़, समन्वित और बहु–स्तरीय रक्षा नीति अत्यंत आवश्यक है। भारत ने भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया दल (CERT-In), राष्ट्रीय महत्वपूर्ण सूचना अवसंरचना संरक्षण केंद्र (NCIIPC) तथा रक्षा साइबर एजेंसी जैसी संस्थाओं के माध्यम से साइबर सुरक्षा ढांचे को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। साथ ही, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सहयोग, सूचना साझाकरण और संयुक्त अभ्यास भी भारत की रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं। फिर भी चुनौतियाँ निरंतर बदलती प्रकृति की हैं कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित हमले, रैनसमवेयर, डेटा चोरी और दुष्प्रचार अभियान राष्ट्रीय स्थिरता को प्रभावित कर सकते हैं। अतः भविष्य में भारत को स्वदेशी तकनीक के विकास, साइबर विशेषज्ञों के प्रशिक्षण, निजी क्षेत्र के साथ समन्वय और जन–जागरूकता पर विशेष बल देना होगा। इस प्रकार साइबर युद्ध के इस नए युग में भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा तभी सुदृढ़ रह सकती है जब तकनीकी नवाचार, नीतिगत स्पष्टता और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के बीच संतुलित एवं दूरदर्शी रणनीति अपनाई जाए।

सन्दर्भ सूची :

1. सिंह, विनोद. (2023). साइबर और सूचना युद्ध. नई दिल्लीः आत्माराम एंड संस।
2. मिश्रा, जे. पी. (2022). साइबर विधिः एक परिचय. इलाहाबादः सेंट्रल लॉ पब्लिकेशन्स।
3. मनोचा, ओ. पी., एवं कुमार, अजय. (2023). साइबर एनकाउंटर्स (हिंदी संस्करण). देहरादूनः प्रभात प्रकाशन।

4. दुबे, अमित. (2024). साइबर अपराध की सच्ची कहानियाँ. नई दिल्लीः युवान बुक्स।
5. कुमार, प्रमोद. (2023). साइबर सुरक्षा की आवश्यकताएँ. नई दिल्लीः स्वयं प्रकाशित।
6. शिंदे, आनंद. (2025). साइबर सुरक्षाः शुरुआत से सफलता तक. मुंबईः देवओएम प्रकाशन।
7. सिंह, तरुण, एवं दुबे, अमित. (2019). साइबर अपराध की रोमांचकारी कहानियाँ. नई दिल्लीः ओम पब्लिकेशंस।
8. धोबल, देवाशीष. (2022). युवा भारतीय साइबर सेना (भाग 2). नई दिल्लीः लेखक प्रकाशन।
9. दुबे, अमित, एवं सिंह, पंकज. (2021). अदृश्य जालः साइबर अपराध की सच्ची कहानियाँ. नई दिल्ली : अनबाउंड स्क्रिप्ट।
10. द्रोणवाल, लक्ष्मी कुमार. (2024). भारत में साइबर अपराध. मेरठः तनीषा पब्लिशर्स।
11. चौधरी, राकेश. (2022). भारत की साइबर सुरक्षा नीति और चुनौतियाँ. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
12. शर्मा, संजय. (2021). डिजिटल युग में राष्ट्रीय सुरक्षा. नई दिल्लीः अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
13. त्रिपाठी, मनोज कुमार. (2023). साइबर युद्ध और वैश्विक राजनीति. नई दिल्लीः ज्ञान पब्लिशिंग हाउस।
14. गुप्ता, अजय. (2020). सूचना प्रौद्योगिकी और आंतरिक सुरक्षा. जयपुरः पोइंटर पब्लिशर्स।
15. वर्मा, नीरज. (2024). भारत की रक्षा रणनीति और साइबर आयाम. नई दिल्लीः सेज पब्लिकेशन्स इंडिया।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 118-124

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

तुलसीदास के काव्य में निहित समन्वय के विभिन्न आयाम

कपिल कुमार, शोधार्थी,
डॉ. नीलम राणा, शोध निर्देशिका,
जनता वैदिक कॉलेज बड़ौत, बागपत।

शोध सारांश :

प्रस्तुत शोध–सारांश का उद्देश्य तुलसीदास के काव्य में निहित समन्वय के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करना है। भक्तिकाल के महत्त्वपूर्ण कवि तुलसीदास ने अपने काव्य में विविध वैचारिक, धार्मिक, दार्शनिक एवं सामाजिक तत्वों का अद्‌भुत समन्वय प्रस्तुत किया है। उनका साहित्य न तो किसी एक संप्रदाय, दर्शन या वर्ग तक सीमित है और न ही संकीर्ण धार्मिक आग्रहों से बंधा हुआ है, बल्कि वह लोकमंगल की भावना से अनुप्राणित है। तुलसीदास के काव्य में सगुण और निर्गुण भक्ति, भक्ति, ज्ञान और कर्म, लोक और शास्त्र, संस्कृत और लोकभाषा, आदर्श और व्यवहार, तथा वर्णाश्रम और मानवतावाद का संतुलित समन्वय दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने राम को निर्गुण ब्रह्म का सगुण साकार रूप मानते हुए भक्ति को सहज और सर्वसुलभ बनाया। रामचरितमानस में दार्शनिक गूढ़ता के साथ–साथ लोकजीवन की सरल अनुभूतियाँ समान रूप से अभिव्यक्त हुई हैं। सामाजिक स्तर पर तुलसीदास का काव्य जाति, वर्ग और लिंग के भेदभाव से ऊपर उठकर करुणा, नैतिकता और मानवीय मूल्यों की स्थापना करता है। उनके पात्र आदर्श के प्रतीक होते हुए भी जीवन की यथार्थ भूमि पर खड़े दिखाई देते हैं। इस प्रकार तुलसीदास का समन्वयात्मक दृष्टिकोण भारतीय सांस्कृतिक एकता, धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक संतुलन को सुदृढ़ करता है।

मुख्य शब्द : समन्वय, वैचारिक, संप्रदाय, संकीर्ण, लोकभाषा, मानवतावाद, यथार्थ।

प्रस्तावना –

'समन्वय' शब्द के कई अर्थ है। मोटे तौर पर इसका उपयोग पारस्परिक संबंधों को बनाए रखने के लिए किया जाता है, लेकिन इसका उपयोग एक विशिष्ट अर्थ में भी किया जाता है और यह है विपक्ष को हटाकर विरोधी चीजों, चीजों या विचारों को समेटना। जिसे तुलसी ने लिखा है। समय साहित्य में प्रवेश किया। समाज, धर्म, राजनीति, भक्ति. साहित्य और उस समय के लोगों के जीवन में कई परिस्थितियाँ एक–दूसरे के विरोध में खड़े होकर लोगों के जीवन को कठिन बना रही थीं। धर्म के क्षेत्र में शैव, वैष्णव और शाक्तों के रूप में विभिन्न संप्रदाय दिन–ब–दिन कट्टरता की ओर बढ़ रहे थे। सगुणोपसाक्ष जहां निर्गुण पथ को नीरस बताकर उसकी आलोचना कर रहे थे, वहीं निर्गुणपंथी भी सगुण भक्ति का विरोध कर रहे थे। ज्ञान, कर्म और भक्ति के बीच चुनाव को लेकर जनता भ्रमित थी। सभी वैष्णव आचार्य शंकर के निर्गुण ब्रह्मवाद और माया के विरोधी थे, जबकि सभी

अद्वैतवादी माधवाचार्य के द्वैतवाद के विरोधी थे। राजा और प्रजा के बीच, वेदों और अभ्यास के बीच की खाई लगातार बढ़ती जा रही थी। पारिवारिक संबंधों और वर्णाश्रमधर्म में असमानता थी। ऐसे समय में सभी साहित्यकार अपने–अपने स्तर पर इन परिस्थितियों से निपटने का प्रयास कर रहे थे। जायसी ने जहां भारतीय प्रेम और लोक कथाओं को फारसी मसनबी शैली में पिरोकर प्रेम का संदेश दिया, वहीं कबीर ने भी हिंदू–मुस्लिम, ऊंच–नीच, अमीर–गरीब आदि के भेदों का विरोध कर समाज को समेटने का प्रयास किया। इस क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण और सराहनीय कार्य है गोस्वामी तुलसीदास ने किया। उन्होंने इन सभी अंतर्विरोधें को कई भायों में दूर कर अपनी समकालिक दृष्टि का परिचय दिया और अपना निश्चित दार्शनिक दृष्टिकोण स्थापित किया जो मुख्य रूप से रामचरितमानस और विनय पत्रिका में देखा जाता है, इसीलिए आचार्य द्विवेदी ने उन्हें महात्मा बुद्ध के बाद सबसे महाम लोकनायक साबित किया है। श्लोक नायक ही समन्वय कर सकता है।

तुलसीदास के काव्य में समन्वय के विभिन्न स्वरूप –

समन्वय शब्द सामान्यतः दो अर्थों में मैं लिया जाता है। अपने विस्तृत और व्यापक अर्थ ने वह संयोग अथवा पारस्परिक संबंध के निर्वाह का द्योतक है। जब हम सांख्य और वैदांत अथवा निर्गुण और सगुण के समन्यय की बात करते हैं। तब हमारा अभिप्राय होता है. इन दोनों विचार धाराओं में सामंजस्य को स्थापना। इन दोनों ही दृष्टियों में तुलसीदास समन्वयवादी है। समन्वय भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। समय–समय पर इस देश में कितनी ही संस्कृतियों का आगमन हुआ और आगे बढ़ा। परंतु वह घुल मिलकर एक हो गई। क्रितनी ही दार्शनिक धार्मिक। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक साहित्यिक व सौंदर्य मूलक विचारधारा का विश्वास हुआ। किंतु उनकी परिणति संगम के रूप में हुई। यह समन्वय भावना का ही परिणाम है कि नास्तिक बुद्ध ने राम को बोधिसत्व मान लिया। और आस्तिक विष्णयों ने बुद्ध के अवतार रूप में प्रतिष्ठा की।

काम और धर्म :

मोक्ष में प्रवृत्ति और निवृत्ति में साहित्य और जीवन में समन्वय स्थापित करने के विराट प्रयत्न किए गए। अनेकता में एकता की स्थापना की गई। धर्म दर्शन और समाज सुधार के क्षेत्र में गौतम बुद्ध लोकनायक थे। उनके द्वारा प्रतिष्ठित माध्यम प्रतिपदा त्याग और भोग के समन्वय का ही मार्ग है। लोकदर्शी तुलसी ने जनता के हृदय में घड़कून को पहचाना और रामचरितमानस के रूप में वह आदर्श प्रस्तुत किया है। जिसमें कवित्व और भक्ति दर्शन का अद्भुत समन्यय है। समन्वय सिद्धांत का व्यवस्थित निरूपण और कार्यान्वयन मदारी का वृक्ष नहीं है। यह प्रत्यक्ष अनुभव सूक्ष्म शिक्षण अन्वेषण और गहन अनुशीलन का सम्मिलित परिणाम है। जीवन स्वयं समझौता है। वे यौवन की कामाशक्ति के शिकार भी हुए थे। और वैराग्य की पराकाष्ठा पर पहुंचकर आत्माराम भी हो गए थे। उनकी समन्वय साधना बहुमुखी है।

द्वैत–अद्वैत :

तुलसी का दार्शनिक समन्वयवाद अत्यंत विवाद का विषय रहा है। तुलसी के युग में वेदांत का प्रभुत्व था। उसके भीतर भी दो प्रकार के संघर्ष थे। पहला सभी वैष्णय आचार्य शंकर के निर्गुण ब्रह्माबाद और माया के विरोधी थे। दूसरा सभी अदैतवाद मध्य के द्वैतवाद के विरोधी थे। जहां अद्वैतवादियों और वैष्णव वेदान्तियों में मतभेद है वहां उन्होंने समन्वयवादी दृष्टि से काम लिया है। माया अविद्या है उसके अस्तित्व के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता। सगुण ब्रह्मा ही अवतार लेता है। एकमात्र निर्गुण ब्रह्मा ही सत्य है। जीव जगत और ईश्वर

सब मिथ्या है केवल ज्ञान ही मुक्ति का साधन है।

निर्गुण और सगुण –

निर्गुण और सगुण का विवाद दो क्षेत्रों में था। दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में और भक्ति के क्षेत्र में। शंकराचार्य निर्गुण ब्रह्मवाद को मानते थे। रामानुज और वल्लभ सगुण ब्रहम्मा को। तुलसी ने दोनों का समन्वय करते हुए राम को निर्गुण सगुण कहा है। वस्तुतः राम एक है। यह निर्गुण और सगुण निराकार और साकार व्यक्त और आयक्त है। निर्गुण राम ही मक्तों के प्रेम वश सगुण रूप में प्रकट होते हैं।

विद्या और अविद्या –

अद्वैतवाद में माया और अविद्या पर्यायवाची है। वैष्णय आचार्य ऐसा नहीं मानले वे माया को स्वभावत सगुण ब्रह्मा की शक्ति मानते हैं। तुलसी की विद्या माया शंकराचार्य की माया से मिन्न है। क्योंकि वह जगत की रचना करती है और भक्तों का कल्याण भी करती है। उसके अनुसार माया की माव रूपा अभिन्न शक्ति है।

माया और प्रकृति –

साख्य योग के अनुसार स्वतंत्र प्रकृति सृष्टि का कारण है। यह स्थूल जगत उसी का विकार है। अद्वैतवाद में माया को विच्छेप–शक्ति का कार्य माना गया। वैष्णयों ने पर ब्रह्मा और उसकी शक्ति माया द्वारा विश्व का निर्माण माना। सृष्टि प्रक्रिया में तुलसी ने वैष्णव–वेदांत की माया और साथियों की प्रकृति का समन्वय किया। उन्होंने प्रकृति को राम के अधीन और माया के अभिन्न मानकर दोनों में एक सूत्रता स्थापित की।

जगत की सत्यता और असत्यता –

साख्य योग वैष्णय वेदांत आदि ने जगत की सत्यता स्वीकार की गई है। विद विरोधी आतमनादि और अनीश्वरवादी बौद्ध तुलसी की दृष्टि में सर्वथा तिरस्कृत है। जिसके विरुद्ध राम को विश्वरूप तथा जगत को हराम का अंश बताकर उन्होंने जगत की सत्यता प्रतिपादित की है। क्योंकि राम से अभिन्न जगत मिथ्या नहीं हो सकता। दूसरे शब्दों में तुलसी ने द्वैतवाद और अद्वैतवादी मतों का समनाय किया है। राम और जगत में तत्वत असेद है।

जीव का भेद-अभेद –

तुलसी का जीय विषयक सिद्धांत वैष्णव वेदान्तियों के मतों का संमन्यत्र है। तुलसी ने भेदवाद और अभेद दोनों का समन्वय किया है। जीव ईश्वर का अंश मात्र है यह माया का हामी नहीं है। मुक्त होने पर ईश्वर का रूप प्राप्त कर लेता है. किंतु ऐश्वर्य को नहीं।

ज्ञान और भक्ति –

जीव की पूर्णता इन तीनों में समन्वय में है। यही साधना सिद्धियापिनी होती है जो साधक की पूरी सत्ता के साथ की जाए। सत्कर्म के बिना चित निर्मल नहीं हो सकता। और मूल से युक्त चित्त ज्ञान भक्ति का उदय असंभर है। ने तीनों के समन्वय पर बल दिया है। तुलसीजीवनमुक्ति और विदेहमुक्ति–अद्वैतयादियों के अनुसार आत्म साक्षात्कार या ब्राह्म साक्षात्कार होने पर देहावसान के पूर्व ही आत्मा जीवउन्मुक्त हो जाती है। अधिकतर वैष्णय आचार्य जीष मुक्ति नहीं मानते। समन्वयवादी तुलसी को जीवनमुक्ति तथा विदेह मुक्ति और विदेह मुक्ति के उक्त चारों प्रकार माननीय है। इसमें कोई विरोध नहीं है। ज्ञान और भक्ति का उदय ही मनोमुक्ति है।

तुलसीदास के दोहो में समन्वय का विभिन्न स्वरूप –

1. तुलसी मीठे बचन ते सुख उपजत चहुँ ओर बत्तीकरन इक मंत्र है, परिहरू बचन कठोर।
2. सचिव बैद गुरु तीनि जी, प्रिय बोलहि भय आस राज धर्म तन तीनि, कर होइ बेगिहीं नास।
3. दया धर्म का मूल है. पाप मूल अभिगान तुलसी दगा न छोडिये, जब तक घट में प्राण।
4. मुखिया मुख्खु सो चाहिऐ खान पान कहुँ एक पालइ पोषइ सकल अंग तुलसी सहित विवेक।
5. नामु राम को कलपतरु, कलि कल्यान निवासु जो सिमरत भयो भाँग, ते तुलसी तुलसीदास।

इस प्रकार तुलसी अपनी समन्वय साधना के कारण उस युग के लोकनायक थे। तुलसीदास में यह प्रगतिशीलता विद्यमान थी, जिससे ये परिस्थितियों के अनुकूल नवीन दृष्टिकोण अपना कह प्राचीनता का संस्कार कर सकें। इतनी विषमताओं में साम्य स्थापित करने वाला पुरुष यदि लोकनायक नहीं होगा तो और कौन होगा। भक्ति शील और सौन्दर्य के अवतार तुलसी के राम सर्वशक्तिमान, सौन्दर्य की मूर्ति एवं शरीर के अवतार हैं। वे मर्यादा पुरुषोत्तम है।

'जब–जब होहि धरम के हानि। बाढ़हिं असुर महा अभिमानी।
तब–तब धरि प्रभु मनुज सरीरा। हरहिं सकल सज्जन भय पौरा'।

यानि जब भी समाज में कोई विघ्न पड़ता है और उसकी गति रुक जाती है तो एक महापुरुष का उदय होता है और गति का ठहराव समाप्त हो जाता है और आपसी सहयोग और समानता का वातावरण बन जाता है। राम राज्य भी इसी दिशा में एक कदम है। महाभारत के कृष्ण ने महाभारत का संचालन कर प्रतिकूल शक्तियों का नाम किया और ज्ञान, धर्म और शक्ति की एकता की स्थापना की। कालांतर में कर्मकांडों में हिंसा की प्रधानता और ज्ञान और मक्ति के द्वास, के कारण बुद्ध ने अवतार लिया। राम का लोकसंग्रही रूप और धार्मिक समन्वय ने तत्कालीन बौद्ध सिद्धी और नाथ योगियों की चमत्कारी प्रथा का खंडन करके राम के लोक रूप की स्थापना की। राम के इस रूप ने समन्वय स्थापित करने का भरपूर प्रयास किया है। तत्कालीन समाज में तीन शैयों, वैष्णयों और पुष्टिमार्गियों में परस्पर विरोध था। इस कठिन समय में तुलसीदास ने वैष्णवों के धर्म को इतने व्यापक रूप में प्रस्तुत किया कि तीनों संप्रदायों को उसमें समानता का अनुभव हुआ। तुलसी के इस प्रयास की एक झलक मानस में देखी जा सकती है। राम कहते है –

'शिव द्रोही मम दास कहावा। सो नर मोहि सपनेहु नहिं भावा।
संकर विमुख भगति चह मोरि। सो नारकीय मूढ़ मति थोरी।'

इसी प्रकार उन्होंने वैष्णवों और शाक्त के सामंजस्य को भी दर्शाया है।

'नहि तब आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाव बेद नहिं जाना।
भव–भव विभव पराभव कारिनि। विश्व विमोहनि स्दबस बिहारिनि।'

यह तो हो गई तुलसीदास की तत्कालीन धार्मिक वातावरण एवं उसमें समन्वय स्थापित करने की बात। इसका दूसरा पक्ष भी था उस युग में सगुण और निर्गुण उपासना का विरोध। जहाँ सगुण धर्म में आचार–विचारों का महत्व तथा भक्ति पर बल दिया जाता था वहीं दूसरी ओर निर्गुण संत साधकों ने धर्म को अत्यंत सस्ता बना दिया था। गाँव के कुँओं पर भी अद्वैतवाद की चर्चा होती थी, किंतु उनके ज्ञान की कोरी कथनी में भावगुढ़ता एवं चिंतन का अभाव था। तुलसीदास ने ज्ञान और भक्ति के विरोध को मिटाकर वस्तुस्थिति स्पष्ट कर दी। यह

उस समय की धार्मिक स्थिति की मांग थी। तुलसीदास एक धार्मिक नेता ही नहीं थे बल्कि एक महान समाज सुधारक भी थे। उन्होंने राम राज्य की कल्पना करके उस समय में राजनीतिक समस्या को दूर करने का यथासंभव प्रयास किया। मुसलमानों की राजनीति से हिंदू जाति पर हो रहे थे। रामराज्य के आदर्श की कल्पना कर तुलसी दास ने समाङ्ग के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया कि राजा का आदर्श प्रजा का भरण–पोषण और दुष्टों का विनाश है। समाज की गरिमा का प्रतिनिमित्य तुलसीदास ने सार्वजनिक जीवन के विभिन्न संबंधों के माध्यम से समाज की गरिमा का प्रतिनिधित्य किया है पिता–पुत्र, 'मौ–पुत्र, 'भाई–भाई राजा–प्रजा, सास–बहू, पति–पत्नी आदि ने राम के महाव्य विस्तृत जीवन के कई प्रसंगों के माध्यम से उन सभी की गरिमा का वर्णन किया है। परिवर्तन युग की आवश्यकता थी और समय की आवश्यकता, पुराने रीति–रिवाजों और सामाजिक मानदंडों के खिलाफ विद्रोह की आवाजें सुनाई दे रही थी। तुलसीदास ने इस विद्रोह को भली–भांति सुना, देखा और समझा। मानस में भी तुलसी ने कहा है :–

बरन धरम नहि आश्रम चारी। श्रुति विरोध रत सव नरनारी।।
द्विज श्रुति बंचक भूप प्रजासम। कोउ नाहिं मान निगम अनुसाराम।।

तुलसी का मानस स्याना सुखाय होते हुए भी परजन हिताय का संयोजक था। इसकी परिणति हमें संत के जीवन में देखने को मिलता है।

'मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू।।'

तुलसीदास ने मानस में लोक और वेद, व्यवहार एवं शास्त्र का समन्वय प्रस्तुत किया है।

'चली सुगम कविता सरिता सो। राम विगल जस भरिता सो।।
सरजू नाम सूमंगल मूला। जाकि वेद मत मंजुस कूला।।'

चित्रकूट में भरत–राम मिलन के अवसर पर होने वाली सभा में तुलसी ने भरत के वचनों के राजनीति एवं वेदमत के मध्य सुंदर समन्वय प्रस्तुत किया है। पं. रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार व्यक्तिगत साधन है. लोकमत लोकशासन के लिए है। इन दोनों का सामंजस्य तुलसी की धर्म आध्यात्मिक क्षेत्र में समन्वय उस युग में ईश्वर प्राप्ति के साधनों की बहुलता थी। विभिन्न दर्शनों के मकडजाल में जनता उलझी हुई थी। तुलसीदास ने द्वैत–अद्वैत, द्वैताद्वैत तीनों सिद्वान्तों को भ्रम मानते हुए कहा –

'तुलसी दास परिहरै तीन भ्रम सो आपन पहिचान।'
उनके ब्रह्म की मर्यादा विशिष्टाद्वैत से ही निर्मित है
'सीया-राममय सब जग जानी। करहूँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।'

काव्य शैली में समन्वय तुलसी पूर्णतया समन्यवादी थे। उन्होंने काव्य की माषा–शैली पर भीं समन्वय की मोहर लगा दी। उन्होंने तत्कालीन कृष्ण–काव्य की ब्रज–भाषा और प्रेम–काव्यों की अवधी भाषा दोनों का प्रयोग कर अपने समन्वयकारी दृष्टिकोण का परिचय दिया। तुलसी की रचना में उनके हृदय में सीधे निकले हुए भाव है. इसी कारण तुलसी का काव्य सर्वश्रेष्ठ है। तुलसी ने रामकाव्य की रचना का उद्देश्य ही लोककल्याण बताया है, यथा–

'कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहें हित होई।।'

भक्तिकाल में ब्राह्म के सगुण व निर्गुण स्वरूप को लेकर जो विवाद चला उस पर भारतीय दर्शन में बहुत गम्भीर चिन्तन–मनन हुआ है। शंकराचार्य के अनुसार तत्य केवल एक है ब्रह्म में अहं को स्वरूपत निर्गुण व निराकार मानते है जबकि वल्लभाचार्य ने सगुण ब्रह्म को पारमार्थिक सत्य माना है लेकिन तुलसीदास के अनुसार राम के दोनों रूप निर्गुण और सगुण परमार्थतः सत्य है।

'अगुन त्तगुन दुई ब्रहा सरूपा।
अकथ अगाध अनादि अनूपा।।'

तुलसीदास के अनुसार निर्गुण और सगुण में कोई तात्विक भेद नहीं है। दोनों स्वरूपों की अभेदता को स्पष्ट रूप करने के लिए उन्होंने दृष्टान्त भी दिया है–

'एक दारूगत देखिए एकू। पावक जुग सम ब्रह्म विवेकू।।'

अर्थात् अग्नि के दो रूप हैं, एक अव्यक्त और एक व्यक्त। इसका दारूगत अव्यक्त रूप ही व्यक्त होने पर दृश्यमान हो जाता है। उसी प्रकार ईश्वर का भी जो निर्गुण व निराकार रूप है. जो दृष्टव्य नहीं है. वही प्रकट होने पर सगुण व निराकार रूप में दिखाई देने लगता है–

'अगुन अरूप अलख अज जोई।
भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।'

और तुलसी के राम उसी निर्गुण भगवान के सगुण, साकार और अवतार है। हालांकि, तुलसीदास के संबंध में यह कहना गलत नहीं होगा कि उन्होंने सगुण की पूजा को निर्गुण से अधिक श्रेष्ठ माना है क्योंकि उनकी राय के अनुसार निर्गुणोपासना की पूजा केवल योगियों और ज्ञानियों तक ही सीमित है, जबकि सभी मनुष्य इसके हकदार है। सगुणोपासना की पूजा करने के लिए। यह एक सुरसारी की तरह है, जो सभी के लिए फायदेमंद है। लेकिन साथ ही उन्होंने जिस तरह से निर्गुण और सगुण, निराकार और साकार, अव्यक्त और व्ययत, अंत्यमी और बाहरी, गुणतीत और गुणश्रय को एक साथ दिखाकर भक्ति के क्षेत्र में अपने राम को दिखाया है, यह अद्भुत है। इसी के चलते तुलसी ने राम की कथा शिव–मुख से कहलवाई। यही नहीं उन्होंने शिव के मुख से राम की प्रशंसा भी करवाई है वही दूसरी और शिव के ही अंश रूप हनुमान के द्वारा राम की भक्ति तुलसी ने करवाई है तो राम के द्वारा भी जगह–जगह शिव की भक्ति पर आराधना करवाई है और राम के मुख से भी कहलवाया है–

'सिय द्रोही मम दास कहावा।
सो नर सपनेतुं मोहि नहिं पाया।।'

इस प्रकार तुलसी ने राम और शिवं का परस्पर आत्मीय संबंध अपने साहित्य में निरूपित किया है। यद्यपि तुलसी मूलत राम भक्त हैं किन्तु उन्होंने कही भी राम को शिव से श्रेष्ठ सिद्ध करने की चेष्टा नहीं की है। दोनों को समान महत्त्व दिया है। लंका प्रयाण के समय सागर पर सेतु–बंधन के पश्चात् शिव की आराधना व शिवलिंग की स्थापना, 'रामचरितमानस' में राम कथा से पूर्व शिव कथा, पार्वती–मंगल की स्वतंत्र रखना और विनयपत्रिका में 12 पदों में शिव की वंदना आदि इनके इसी प्रयास का हिस्सा है।

निष्कर्ष –

तुलसीदास मूलतः समन्वयवादी थे। उन्होंने उपर्युक्त क्षेत्रों के अलावा अन्य बहुत से क्षेत्र में समन्वय स्थापित किया। इस प्रकार अपने युग, परिस्थितियों की मांगों और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन्होंने

अपने साहित्य में भक्ति, धर्म, भाषा, साहित्य, पारिवारिक जीवन, समाज आदि सभी क्षेत्रों में व्याप्त संघर्ष और वैमनस्य को दूर करने के लिए जो प्रयास किए है। यह अतुलनीय है। और इस प्रयास से उन्होंने भारतीय जनता के दिल में साहित्य में जो मुकाम हासिल किया है. यह कोई और लेखक आज तक नहीं कर पाया। इन सबके अलावा जहां–जहां तुलसी को सांस्कृतिक क्षेत्र में विरोध की झलक मिली है। उन्होंने उसे दबाने की कोशिश की है। यद्यपि भारतीय संस्कृति अपने आप में समन्वयवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है। समय–समय पर इस देश में अनेक संस्कृतियां आई और उभरी, लेकिन वे आपस में मिल कर एक हो गई। कितनी दार्शनिक, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक और सौदर्यवादी विचारधाराओं का विकास हुआ, लेकिन वे एक संगम के रूप में परिणत हुई। लेकिन फिर भी तुलसी ने उसमें मौजूद कुछ विरोधी तत्वों को समेटने की कोशिश की है। जैसे कि जीवन, राज्य वर्ग की संस्कृति, आम लोगों और कोल किराती को तुलसी ने उसी तरह चित्रित किया है और सबसे महत्वपूर्ण बात हिंदू संस्कृति के साथ मुस्लिम संस्कृति का एकीकरण। ओर इसके साथ ही अरबी–फारसी की शब्दावली का भी भरपूर उपयोग किया गया है।

संदर्भ सूची –

1. हिन्दी साहित्य की भूमिका आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, संस्करण–2010, पृष्ठ सं– 98
2. रामचरितमानस, बालकाण्ड, 23 / 1
3. वही, 23 / 2
4. वही, उत्तरकाण्ड, 117 / 2
5. हिन्दी साहित्य का विकास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, मलिक एण्ड कम्पनी प्रकाशन, संस्करण–2009. पृष्ठ 115
6. रामचरितमानस, लंकाकाण्ड, 2 / 8
7. वही, उत्तरकाड, दोहा सं–100
8. वही उत्तरकाड, 115 / 13
9. दोहावली, 522
10. वहीं, पृष्ठ संख्या 523

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 125-128

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

पंचायती राज के सशक्तिकरण में एकात्म मानव दर्शन की भूमिका (भिण्ड जिले के विशेष संदर्भ में)

अजय कुमार उदय

UGC-NET, एम.ए. (राजनीति विज्ञान)

सारांश :

यह शोध पत्र पंचायतीराज संस्थाओं के सशक्तिकरण में पं. दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन की भूमिका का विश्लेषण करता है। एकात्म मानव दर्शन विकेन्द्रीकरण, अंत्योदय, सामाजिक समरसता एवं स्वावलंबन के चार स्तंभों पर आधारित है। जो अंत्योदय (अंतिम व्यक्ति का उत्थान) एवं जनकल्याण को बढ़ावा देता है। इसके आधार पर भारत की पंचायती राज (भिण्ड जिले के विशेष संदर्भ में) का विश्लेषण किया गया है कि क्या पंचायती राज अंतिम व्यक्ति का उत्थान, सामाजिक समरसता, स्वावलंबन एवं मानव कल्याण को बढ़ाने में सफल हुई है या केवल सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन, बजटीय आवंटन एवं भ्रष्टाचार तक सीमित है। इस शोध पत्र में मध्यप्रदेश के भिण्ड जिले को केंद्र में रखकर एक केस स्टडी प्रस्तुत किया गया है। भिण्ड जिला अपनी सुदृढ़ सामाजिक संरचना, कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था एवं पलायन के लिए जाना जाता है। इस शोध पत्र में विश्लेषण किया गया है कि कैसे एकात्म मानव दर्शन पंचायती राज के सशक्तिकरण में भूमिका अदा कर सकता है।

शब्द कुंजी : एकात्म मानव दर्शन, पंचायती राज, अंत्योदय, विकेन्द्रीकरण, सामाजिक न्याय, स्वावलंबन, मानव कल्याण, सशक्तिकरण, पलायन।

प्रस्तावना :

एकात्म मानव दर्शन अंत्योदय, विकेन्द्रीकरण, स्वावलंबन एवं मानव कल्याण पर आधारित दर्शन है। जिसका मुख्य ध्यान व्यक्ति, परिवार, समाज, राज्य विश्व एवं ब्रह्माण्ड के बीच कड़ी स्थापित करना है। पंचायती राज व्यवस्था लोकतंत्र की वह आधारशिला है, जो विकेन्द्रीकरण पर जोर देती है। इसमें एकात्म मानव दर्शन की अवधारणा को लागू करके अंत्योदय एवं मानव कल्याण को बढ़ावा दिया जा सकता है।

भिण्ड की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना काफी जटिल है। यहाँ कृषि एवं पशुपालन पर आधारित अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक असमानता विद्यमान है। एकात्म मानव दर्शन का इसमें उपयोग करके अंत्योदय, आत्मनिर्भरता, मानव कल्याण एवं ग्रामीण सशक्तिकरण किया जा सकता है।

शोध की आवश्यकता :

भिण्ड जिला अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति के लिए विख्यात है। यहाँ सामाजिक असमानता, आर्थिक संसाधनों का असमान वितरण एवं साहसी संस्कृति विद्यमान है। इन समस्याओं के समाधान में पंचायती राज द्वारा किये जाने वाले केवल प्रशासनिक सुधार कारगर नहीं हो सकते। इसके साथ नैतिक एवं मानवीय पहलुओं को भी शामिल किया जाना चाहिए। यह शोध यह जानने के लिए है कि कैसे एकात्म मानव दर्शन भिण्ड जिले के कायाकल्प में सहायक सिद्ध हो सकता है।

शोध के उद्देश्य :

- ☐ भिण्ड जिले की पंचायती राज व्यवस्था मे 'एकात्म मानववाद' दर्शन का समन्वय करना ताकि ग्रामीण विकास का सशक्तिकरण किया जा सके।
- ☐ ग्राम सभाओं की मीटिंग में अंत्योदय की भूमिका बढ़ाना एवं निर्णय प्रक्रिया में उनकी भागीदारी बढ़ाना।
- ☐ स्थानीय समस्याओं के समाधान में पंचायती राज के साथ आम जनता का सहयोग लेना अर्थात् पंचायत व आम जनता के समन्वय से स्थानीय सशक्तिकरण को बढ़ावा देना।

अनुसंधान पद्धति :

- ☐ इस शोध में मिश्रित शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। जिसमें वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति दोनों का समन्वय प्रस्तुत किया गया है।
- ☐ इस शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के डाटा का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक डाटा के अंतर्गत चुनिंदा ग्राम पंचायतों के सरपंचों एवं ग्रामीणों के साक्षात्कार तथा द्वितीयक डाटा के अंतर्गत सरकारी रिपोर्ट, जिला सांख्यिकी रिपोर्ट एवं कुछ पुस्तकों का संदर्भ लिया गया है।
- ☐ इस शोध में भिण्ड जिले के विभिन्न विकास खण्डों (जैसे– मेहगाँव, अटेर, गोहद आदि) को शामिल किया गया है।

डेटा विश्लेषण और मुख्य बिन्दु :

इस शोध में भिण्ड जिले के संदर्भ में एकात्म मानववाद के निम्नलिखित स्तंभों का विश्लेषण किया गया है :

क. अंत्योदय और लाभार्थी चयन :

आंकड़ों के अनुसार भिण्ड की ग्राम पंचायतों में आवास योजना, मनरेगा (VB-G RAM G) योजना, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना, अन्नपूर्णा योजना, दीनदयाल अंत्योदय योजना आदि के लाभार्थी चयन में अंत्योदय के सिद्धांतों का पालन किया जाये तो भ्रष्टाचार में लगभग 20 प्रतिशत की कमी एवं ग्रामीण विकास में योगदान दिया जा सकता है।

श्रेणी	**पारंपरिक दृष्टिकोण**	**एकात्म मानववादी दृष्टिकोण**
विकास का पैमाना	कुल खर्च	अंतिम व्यक्ति की संतुष्टि
निर्णय प्रक्रिया	ऊपर से नीचे	ग्राम सभा की सामूहिक सहमति

अंत्योदय से भारत विकास :

ख. आर्थिक स्वावलंबन और ग्रामीण उद्योगों का विकास :

आधुनिक युग में मशीनीकरण पर जोर दिया जाता है जबकि एकात्म मानव दर्शन में व्यक्ति को केन्द्र में रखा जाता है। भिण्ड जिले में सरसों एवं दुग्ध उत्पादन की प्रचुरता है। अतः सहकारी समितियों के माध्यम से लघु एवं कुटीर उद्योग एवं खाद्य प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं। ये जनपुंज आधारित उद्योग होते हैं। जिससे आत्मनिर्भरता, ग्रामीण विकास एवं आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जा सकता है। साथ ही जिले से होने वाले पलायन में 30 प्रतिशत कमी लाई जा सकती है।

ग. सामाजिक समरसता में 'चिति' सिद्धांत की भूमिका :

भिण्ड जिले में सामाजिक असमानता एवं सामाजिक संघर्ष विद्यमान है। एकात्म मानववाद संघर्ष के स्थान पर समन्वय पर जोर देता है। इसलिए पंचायतों में चिति की भावना जागृत करके सामुदायिक समस्याओं का समाधान आपसी समन्वय से सुलझाया जा सकता है ताकि सामाजिक समरसता में वृद्धि हो। ग्राम न्यायालय की अवधारणा इसी सिद्धांत पर आधारित है।

घ. विकेन्द्रीकरण एवं एकात्म मानववाद :

एकात्म मानव दर्शन विकेन्द्रीकरण एवं समन्वय पर आधारित दर्शन है। पंचायतीराज भी विकेन्द्रीकरण पर आधारित व्यवस्था है। परन्तु वास्तविक धरातल पर पंचायतों के निर्णयों व कार्यों में ग्रामीणों की भूमिका को नजरअंदाज किया जाता है एवं जरूरतमंद व्यक्तियों तक योजनाओं का लाभ नहीं पहुँच पाता। अतः इसको वास्तविक धरातल पर उतारने के लिए एकात्म मानव दर्शन को इसमें जोड़ना पड़ेगा।

चुनौतियाँ :

- एकात्म मानव दर्शन सत्ता के विकेन्द्रीकरण की बात करता है परन्तु भिण्ड जिले में पुरुष प्रधान संस्कृति हावी है। जिससे सरपंच–पति की संस्कृति एवं उच्च वर्गों का सत्ता पर केन्द्रीकरण हावी है।
- भिण्ड जिले में जागरूकता का अभाव है। लगभग 60 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण मतदाता अपने अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति जागरूक नहीं हैं।
- एकात्म मानव दर्शन सामाजिक समरसता की बात करता है जबकि भिण्ड जिले में जातिवाद, अस्पृश्यता एवं सामाजिक असमानता की जड़ें काफी गहरी हैं। जो सामाजिक समरसता के मार्ग में बाधक हैं।
- एकात्म मानववाद में आर्थिक स्वावलंबन पर जोर दिया जाता है। लेकिन भिण्ड जिले में लघु व कुटीर

उद्योगों की कमी, श्रमिकों के कौशल विकास में कमी एवं उद्यमिता की भावना की कमी भिण्ड के आर्थिक सशक्तिकरण के मार्ग में बाधक है।

सुझाव :

- नवनिर्वाचित पंचायत प्रतिनिधियों को नैतिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे अंत्योदय, स्वावलंबन, सामाजिक समरसता एवं मानव कल्याण को केन्द्र में रखकर ग्रामीण विकास को बढ़ावा दे सकें।
- ग्राम सभा की मतदाता सूची में शामिल सभी मतदाताओं में मतदान जागरूकता को बढ़ावा देना चाहिए ताकि वे अपने संवैधानिक अधिकारों को समझकर अपना सर्वांगीण विकास कर सकें।
- ग्राम पंचायत के क्षेत्र में आने वाले समस्त उच्च शिक्षण संस्थानों को छात्रों के माध्यम से नुक्कड़ नाटक जैसे जागरूकता कार्यक्रम एवं मतदान व्यवहार पर शोध करके मतदाता जागरूकता बढ़ाने एवं अंत्योदय के उत्थान हेतु चल रही योजनाओं के क्रियान्वयन पर वास्तविक शोध करके पंचायतों को आइना दिखाना चाहिए ताकि वे अंत्योदय उत्थान के प्रति सजग हो सकें।
- पारदर्शिता एवं जवाबदेही तथा भ्रष्टाचार एवं लालफीताशाही जैसी समस्याओं के समाधान हेतु पंचायतों को ई–पंचायत मॉडल को भिण्ड जिले के सुदूर गाँवों तक अनिवार्य रूप से लागू कर देना चाहिए।

निष्कर्ष :

शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि एकात्म मानव दर्शन भिण्ड जिले के पंचायतों को जनोन्मुखी बनाने एवं व्यक्तियों के कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। इसके लिए पंचायतों को केवल प्रशासनिक कार्यों, बजट बढ़ाने आदि के बजाय पंचायतों की चिति को जागृत करना होगा ताकि वे मानव कल्याण, नैतिकता एवं सामाजिक समरसता बढ़ाने में अपनी महती भूमिका अदा कर पायें।

जब व्यक्ति सशक्त होगा तो पंचायत सशक्त होगी और पंचायत सशक्त होगी तो राज्य व राष्ट्र सशक्त होगा। इसलिए हमें अभ्युदय व 'सबका साथ सबका विकास– की भावना के साथ बढ़ना होगा। जिसका दर्शन हमें एकात्म मानववाद में दिखाई देता है।

संदर्भ सूची :

1. उपाध्याय, पंडित दीनदयाल (1965) : एकात्म मानववाद, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. मध्य प्रदेश पंचायत राज एवं ग्राम स्वराज अधिनियम, 1993.
3. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, भिण्ड (2024–25).
4. विभिन्न शोध पत्रिकाएं एवं स्थानीय समाचार पत्रों के लेख। ("Journal of Rural Development and Panchayati Raj" (2023), 'ग्रामीण सशक्तिकरण में दार्शनिक मूल्य')।
5. उपाध्याय, पंडित दीनदयाल (2016) : संपूर्ण वाङ्मय, प्रभात प्रकाशन (विशेषकर पंचायतीराज और विकेन्द्रीकरण पर विचार)।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 129-134

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

मानवता, सदाचार और जीवन–दर्शन : रज्जब अली के काव्य का पुनर्मूल्यांकन

डॉ. चारु आर्या
सहायक आचार्य, माता सुंदरी कॉलेज फॉर वुमेन, दिल्ली विश्वविद्यालय।

सार :

रीतिकालीन हिन्दी कविता को प्रायः केवल श्रृंगार प्रधान साहित्य के रूप में देखा गया है, जबकि वस्तुतः इस काव्य परंपरा में जीवन के नैतिक, मानवीय और दार्शनिक पक्ष भी गहराई से निहित हैं। रज्जब अली ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से मानव जीवन के मूलभूत मूल्यों को अभिव्यक्त किया है। मानवता, सदाचार और जीवन–दर्शन के दृष्टिकोण से संपन्न रज्जब अली का काव्य यह स्पष्ट करता है कि रीतिकालीन कविता केवल भोगवादी प्रवृत्तियों तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसमें समाज और जीवन के प्रति गहरी नैतिक चेतना भी विद्यमान थी।

भूमिका :

हिन्दी साहित्य का मध्यकाल मूलतः एक ऐसी सांस्कृतिक संश्लिष्टता को लिए हुए है, जिसमें तत्कालीन कवियों के जीवन–दर्शन तथा मूल्यों को समझकर विश्लेषित करना आज भी हिन्दी आलोचना तथा शोध के लिए चुनौती है। हिन्दी साहित्य के मध्यकाल में कुछ कवि नैतिकता के पुराने मानदंडों पर सवाल उठा रहे थे तो दूसरी ओर कुछ कवि उन मानदंडों की पुर्नस्थापना की कोशिश में लगे हुए थे। राजनैतिक उथल–पुथल, आर्थिक वैषम्य, सामाजिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों ने ऐसे संतों को जन्म दिया जो क्रांतिकारी, समाज–सुधारक, रूढ़ियों के विध्वंसक और तत्ववेत्ता थे। तत्कालीन समाज की दीन–हीन दशा के प्रति कबीर, दादू, रज्जब आदि संत कवियों में गहरी संवेदना के दर्शन होते हैं। उनमें शोषण करने वाले उच्च वर्ग के प्रति गहरा आक्रोश है और साथ ही रूढ़िग्रस्त व्यवस्था के कारण हीनता के शिकार हुए निर्धन और निस्सहाय कहे जाने वाले लोगों में आत्मविश्वास एवं आत्मगौरव के संचार का संकल्प दिखाई देता है। उन्होंने अपनी जनहितकारी वाणी से नैतिकता के नए आदर्शों की स्थापना करने का प्रयास किया।

रीतिकाल हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण कालखंड है,जो मुख्यतः अलंकारिक शैली, रस सिद्धांत और श्रृंगार भावना के लिए जाना जाता है। लंबे समय तक यह मान्यता बनी रही कि इस युग का साहित्य केवल सौंदर्य–चित्रण और प्रेम–विलास तक सीमित था, परंतु रज्जब अली जैसे रीतिकालीन कवियों ने जीवन के गहरे प्रश्नों को भी अपनी कविताओं में स्थान दिया। उन्होंने अपने साहित्य में मानव जीवन की क्षणभंगुरता, नैतिक

आचरण की आवश्यकता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे विषयों को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया। उनका काव्य सदाचार, आत्मचिंतन और चरित्र निर्माण की प्रेरणा देता है।

रीतिकालीन परिवेश का सामाजिक विश्लेषण :

रज्जब अली जिस कालखंड में सक्रिय थे,वह समय राजनीतिक अस्थिरता और सामाजिक परिवर्तन से भरा हुआ था। मुगल साम्राज्य के कमजोर होने के साथ–साथ क्षेत्रीय शक्तियाँ उभर रही थीं। समाज में असुरक्षा की भावना बढ़ रही थी, जबकि राजदरबारों में भोग–विलास की प्रवृत्ति तीव्र होती जा रही थी। ऐसे समय में साहित्य नैतिक चेतना का माध्यम न बनकर केवल मनोरंजन का साधन बन कर रह गया। रज्जब अली ने इस विरोधाभास को महसूस किया और मनुष्य को संयम, संतुलन, संतोष और धैर्य जैसे मानवीय मूल्यों की ओर लौटने का संदेश दिया।

रज्जब अली के काव्य में मानवता की चेतना :

रज्जब अली की रचनाओं में मानवता का स्वर अत्यंत गंभीर और प्रभावशाली है। उन्होंने मनुष्य को करुणा, सहानुभूति और संवेदनशीलता से युक्त प्राणी के रूप में प्रस्तुत किया। उनका मानना है कि तृष्णा के साथ पूरा संसार बहता चला जा रहा है। संतोष रूपी सुमेरु पर्वत पर चढ़कर ही इससे मुक्त हुआ जा सकता है–

''तृष्ना तरल तरंगनी, जहाँ बहै जग जेर।
जन रज्जब निरभै भये, चढ़ि संतोष सुमेर।।''[1]

संतोष का अर्थ अकर्मण्य और आलसी होना नहीं अपितु कर्मशील होते हुए विषयों से कल्पित सुख की आशा का सर्वथा त्याग करके अपने आप में तृप्त हो जाना है। मनुष्य को धैर्य का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि धर्म और ज्ञान धैर्य धारण करने से ही प्राप्त होते हैं। धैर्य से ही मन के सब द्वार खुल जाते हैं और ईश्वर का साक्षात्कार होता है–

''धीरै धरम सु ऊपजै, धीरै ज्ञान बिचार।
धीरै बंदन सब खुलै, धीरै हरि दीदार।।''[2]

उनके अनुसार मानव जीवन की सार्थकता दूसरों के प्रति दया और सहयोग की भावना में निहित है। उनका अभिमत है कि जहाँ दया होती है, वहीं धर्म की प्रतिष्ठा होती है– 'जत्र दया, तत्र धर्म।' उन्होंने अपनी बानी में दया के कई प्रकारों की चर्चा की है और 'निर्वैर दया' को श्रेष्ठ बताया है। यदि मनुष्य सबके प्रति दया की भावना रखे और किसी प्राणी को चोट न पहुँचाए तो कोई भी उसका वैरी नहीं बनता–

''चोट न काहू कौ करै, तौ चोट न इसकौ होइ।
जन रज्जब निरबैर सौं, बैर करै नहिं कोइ।।"[3]

लोभ, अहंकार और क्रोध मानव जीवन की संतुलन व्यवस्था को बिगाड़ देते हैं। उनका काव्य पाठक को आत्मनियंत्रण और आत्मविश्लेषण की ओर प्रेरित करता है। वे लोभ, मोह, क्रोध और काम को त्यागकर ईश्वर का ध्यान करने का संदेश देते हैं–

''लोभ मोह लागै नहीं, क्रोध न जागै काम।
रज्जब नहीं सु जीव गति, प्राणी परतषि राम।।"[4]

वे स्वार्थ, हिंसा और घृणा जैसी प्रवृत्तियों का विरोध करते हैं। उन्होंने हिंसा को बुराई के रूप में मानते

हुए अहिंसा के मार्ग पर चलने की बात कही है। वे कहते हैं कि जो मुर्गा नमाज के लिए पाँचों वक्त बांग देता है,उसे मारना अनुचित है –

"पंच बखत जो बांग दे, वह तो दीनी यार।
सो मुरगा क्यूं मारिये, काजी करौ बिचार।।"[5]

जब व्यक्ति मन, वचन और कर्म से किसी दूसरे का अमंगल नहीं करता, तब सबके अंतस् में निर्भीकता का जन्म होता है और सब शांति से जीवन व्यतीत करते हैं। शांति ही समाज के कल्याण का द्वार उन्मुक्त करती है।

सदाचार और नैतिक अनुशासन :

रज्जब अली के काव्य में सदाचार एक केंद्रीय तत्व के रूप में उपस्थित है। वे आचरण की शुद्धता को मानव जीवन का सबसे बड़ा अलंकार मानते हैं। उनके अनुसार संयम, विनम्रता और सत्यता ऐसे गुण हैं, जो व्यक्ति को एक आदर्श मानव बनाते हैं। वे कहते हैं कि सत्य के पथ पर चलने वाले व्यक्ति को किसी संकट का सामना नहीं करना पड़ता, उसके सब दुख दूर हो जाते हैं और उसे आनंद की प्राप्ति होती है –

''सांचौ कौ संकट नहीं, सब भागे दुख दंद।
रज्जब जग जगदीस मैं, जहाँ तहाँ आनंद।।"[6]

'सत्य' व्यक्ति के जीवन को दूसरों के लिए अनुकरणीय एवं आदर्श बना देता है जिससे समाज में शांति बनी रहती है। उन्होंने अपने जीवन में सत्य को धारण किया और जनसामान्य को भी सत्य के पथ पर चलने का उपदेश दिया।

जीवन–दर्शन और दार्शनिक चेतना :

रज्जब अली के साहित्य में जीवन–दर्शन एक सूक्ष्म किंतु सशक्त रूप में विद्यमान है। वे जीवन को क्षणिक और परिवर्तनशील मानते हैं और नैतिक जीवन को स्थायी शांति का आधार बताते हैं। उनके अनुसार भौतिक सुख क्षणभंगुर हैं, जबकि अच्छे कर्म और सद्गुण ही वास्तविक संपत्ति हैं। उनकी रचनाओं में कर्म, भाग्य, समय और मृत्यु जैसे विषयों पर गहन चिंतन दिखाई देता है। वे मनुष्य को यह समझाने का प्रयास करते हैं कि जीवन का उद्देश्य केवल भोग नहीं, बल्कि आत्मिक विकास है। कर्म के संबंध में उनका विचार है यदि प्राणी अपना कल्याण ही नहीं करना चाहता तो उसे दूसरों को दोष नहीं देना चाहिए क्योंकि उसने स्वयं ही वह मार्ग चुना है –

''अपना आप बुरा करै, ता ऊपर क्या रोस।
घर के दीवै घर जल्या, देहि कौन का दोस।।''[7]

प्राणी को दूसरों के सुख को देखकर दुखी नहीं होना चाहिए क्योंकि सुख–दुख ईश्वर का ही दिया है। इसलिए मनुष्य को सुख और दुख दोनों ही स्थितियों में समभाव धारण करना चाहिए। जब तक जीव भ्रम के कारण कर्म–बंधन में पड़ा रहेगा तब तक उसके जीवन में सुख–दुख का आना–जाना लगा रहेगा। मनुष्य को सदैव ऐसा लगता है कि सुख का समय बहुत शीघ्रता से चला जाता है और दुख लंबे समय तक रहता है। वे मनुष्य को सुख–दुख की चिंता त्यागकर ईश्वर–भक्ति करने का संदेश देते हैं –

''रज्जब सुख दुख देखि करि, कीजै नहीं उचाट।
एकहु कै पाइन पदम, एकहु नहीं लिलाट।।''[8]

रज्जब कहते हैं कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, उसी ने सृष्टि की रचना की है, उसी की कृपा से जीवों का अस्तित्व है। जीव अपने अज्ञानवश यह समझने लगता है कि वही 'कर्ता' है जबकि वास्तविकता तो यह है कि वह तो ईश्वर के हाथों की एक कठपुतली मात्र है। उसी परमशक्ति की आज्ञा से ही सब कुछ होता है–

''आज्ञा थी तो ही हुआ, आज्ञा होता जाइ।
ज्यू आज्ञा त्यू होइगा, जे कछु खुसी खुदाइ।।"[9]

वे सुख–दुख को माया मानते हैं। सुख की इच्छा से ही दुख का जन्म होता है। प्राणी क्षणिक सुख को ही सच्चा सुख मानने की भूल कर देता है। वास्तविकता तो यह है कि वह 'सच्चे सुख' से नितांत अपरिचित है और इस परिचय के अभाव में दुख बना ही रहता हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह से जकड़ा हुआ मनुष्य कभी सुखी नहीं हो सकता। इन्हें त्यागकर ही मनुष्य ईश्वर रूपी सच्चे सुख का साक्षात्कार कर सकता है–

''लोभ मोह लागै नहीं, क्रोध न जागै काम।
रज्जब नहीं सु जीव गति, प्राणी परतषि राम।।"[10]

कबीर की कर्म संबंधी नैतिक मान्यता रज्जब के काव्य में भी दिखाई देती हैं। उनका विचार है कि निष्काम कर्म ही श्रेष्ठ है, पाप–पुण्य, जीव को सांसारिक बंधनों में डाल देते हैं। वे सुख–दुख को भ्रम मानकर, ईश्वर–भक्ति के द्वारा इनसे मुक्त होने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। वे उन सभी कर्मों को अकरणीय कहते हैं जो क्रोध, मद और लोभ से संचालित होते हैं और उन कर्मों को करने का संदेश देते हैं जो परमतत्व की उपलब्धि करा सकें।

प्रेम और भक्ति का संतुलित दृष्टिकोण :

संतों ने प्रेम की बड़ी व्यापक अभ्यर्थना की है। उनका प्रेम ईश्वरोन्मुख है। उन्होंने विविध प्रकार से ईश्वर के प्रति प्रेम और विश्वास बनाए रखने की प्रेरणा दी है। अधैर्य और असंतोष के कारण मनुष्य ईश्वर के प्रति अपने विश्वास को खो देता है। संतों का कहना है कि कैसी भी विषम परिस्थिति क्यों न आ जाए, धैर्य और संतोष के साथ ईश्वर के प्रति विश्वास और प्रेम रखना चाहिए। रज्जब भी भगवदुपासना में प्रेम–तत्व को ही प्रमुख मानते हैं। प्रेम के द्वारा ही संसार में समत्व एवं विश्व बंधुत्व जैसे उच्च मूल्यों की प्रतिष्ठा की जा सकती है। प्रेम के सदन में सेवक और स्वामी के मध्य भेद समाप्त हो जाता है, वे दोनों एक ही हो जाते हैं। इस प्रकार ध्याता–ध्येय और ज्ञाता–ज्ञेय का पार्थक्य मिट जाता है–

''प्रेम प्रीति हित नीति कूं, रज्जब दुविधा नाहिं।
सेवक स्वामी एक है, आये इस घर माहिं।।"[11]

भगवत् प्रेम को जागृत और सजीव बनाने के लिए विराहानुभूति का होना भी आवश्यक है क्योंकि विरह ही प्रेमानुभूति को अधिक तीव्र बनाता है। रज्जब ने 'विरह का अंग' के अंतर्गत अनेक रूपकों की सहायता से विरह की अनुभूति की सुंदर व्याख्या की है–

''रज्जब कहिये कौन सौं, इस बिरहे की बात।
मानहु रावन की चिता, अह निस नहीं बुझात।।"[12]

रज्जब का 'प्रेम' ईश्वर का पर्याय है। प्रेम–रहित संसार उन्हें मिथ्या, निस्सार और निरर्थक प्रतीत होता है। उनके काव्य में प्रेम का उत्कृष्ट चित्रण मिलता है। उनके मत में प्रेम ही ऐसा तत्व है जिससे मानव–हृदय करुणा की भावना से पूर्ण होकर विश्व–प्रेम एवं परपीड़ानुभूति के परम भाव को आत्मसात कर सर्वव्यापी हो जाता

है। प्रेम की अनुभूति के कारण ही आत्मिक विकास संभव है। वे प्राणी मात्र के प्रति प्रेम–भाव रखने का नैतिक आदर्श प्रस्तुत करते हैं। जहाँ अधिकांश रीतिकालीन कवियों ने श्रृंगार को प्रमुख विषय बनाया, वहीं रज्जब ने उसे मर्यादा और संतुलन के भीतर बनाए रखा। उनके यहाँ प्रेम वासना नहीं, बल्कि विश्वास, सम्मान और समर्पण का भाव है।

सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय दृष्टि :

रज्जब अली का काव्य केवल व्यक्तिगत भावनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें सामाजिक चेतना भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने अपने समय की सामाजिक स्थिति को समझते हुए मानवता का संदेश दिया। वे कहते हैं कि सांसारिक लोग जातिगत भेद में विश्वास करते हैं किंतु ईश्वर भक्त की जाति नहीं देखते। वे प्राणपति प्रभु उनकी प्रीति में स्थित को ही प्राप्त होते हैं। नामदेव, कबीर, दादू ये प्रभु के नाम से प्रेम करने के कारण ही पृथ्वी के नौओं खण्डों में चमक रहे हैं–

''जाति जुगति गुर देखै नाहीं, मिलहिं प्रानपति प्रीति ही माहीं।
नाम कबीर दादू जन तारे, नाव नेह नौखंड उजियारे।"[13]

सभी जाति के लोग एक ही सरोवर से अपने–अपने पात्रों में जल भरते हैं, बाद में वे भिन्न–भिन्न जाति के होने के कारण अलग–अलग भावों को लेकर घर जाते हैं। यदि उन पात्रों का जल एक सरोवर में डाल दें तो सब मिलकर एक ही हो जाते हैं, वैसे ही आत्मा भिन्न शरीरों में आकर भिन्न जाति की हो जाती है, जो पुनः ब्रह्म में मिलकर एक हो जाती है। इस प्रकार विवेक द्वारा जाति–भेद दूर हो सकता है–

''एक सरोवर सब भरें, भाव भिन्न घरि जाहिं।
रज्जब सब मिलि एक है, उलटे सरवर माहिं।।''[14]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संत रज्जब अली का काव्य कबीर की परंपरा का काव्य है। 'सच तो यह है कि संतों की विचार–चेतना जातिगत, धर्मगत, भाषागत सीमाओं अथवा देश–प्रदेश की हदबंदियों का सर्वत्र व्यतिक्रम करती रही है।"[15] उनका साहित्य व्यक्ति को यह बोध कराता है कि प्रत्येक मनुष्य का समाज के प्रति दायित्व है। दूसरों के दुख में सहभागी होना और समाज की भलाई के लिए प्रयास करना ही सच्चा मानव धर्म है। यह दृष्टिकोण उनके काव्य को मानवीय मूल्यबोध से सम्पन्न बनाता है।

समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता :

आधुनिक युग तकनीकी प्रगति का युग है, परंतु इसके साथ–साथ मानवीय संबंधों में दूरी और संवेदनहीनता भी बढ़ती जा रही है। ऐसे समय में रज्जब अली का काव्य हमें मानवीय मूल्यों की ओर लौटने का मार्ग दिखाता है। उनके द्वारा प्रतिपादित मूल्य आज भी उतने ही उपयोगी हैं, जितने उनके समय में थे। मानवता, सदाचार और नैतिकता का उनका संदेश आधुनिक समाज के लिए भी एक नैतिक मार्गदर्शन है। उनका काव्य मानवता, सदाचार और जीवन–दर्शन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। उन्होंने रीतिकालीन साहित्य को केवल सौंदर्य के स्तर तक सीमित न रखकर उसमें नैतिक और दार्शनिक गहराई प्रदान की। उनका साहित्य आज भी मानव जीवन के लिए प्रेरणास्रोत है और यह सिद्ध करता है कि साहित्य का वास्तविक उद्देश्य केवल मनोरंजन ही नहीं, अपितु मनुष्य का नैतिक उत्थान भी है।

संदर्भ सूची :

1. रज्जब बानी, डॉ. ब्रजलाल वर्मा (संपा.), तृष्णा बेसास का अंग, साखी–1, पृ. 236
2. वही, धीरज सहज स्वाति का अंग, साखी–8, पृ. 370.
3. वही, दया निरबैरता का अंग, साखी–3, पृ. 198
4. वही, ग्यान परचौ का अंग, साखी–12, पृ. 132
5. वही, दया निरबैरता का अंग, साखी–16, पृ. 199
6. वही, सांच निरभै का अंग, साखी–1, पृ. 250
7. वही, अपलच्छिन अपराध का अंग, साखी–22, पृ. 283
8. वही, बखत व्योरे का अंग, साखी–13, पृ. 271
9. वही, आज्ञा साहिबी का अंग, साखी–29, पृ. 127
10. वही, ग्यान परचौ का अंग, साखी–12, पृ. 132
11. वही, प्रेम का अंग, साखी–5, पृ. 152
12. वही, बिरह का अंग, साखी–6, पृ. 29
13. रज्जब बानी, डॉ. ब्रजलाल वर्मा (संपा.), पद–22, पृ. 392
14. वही, बमेक समिता का अंग, साखी–2, पृ. 195
15. रमेशचंद्र मिश्र, रज्जब अली–वाणी और विचार, पृ. 53

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 135-138

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

चंबल के बीहड़ों के कायाकल्प में अटल प्रगति पथ की भूमिका (भिण्ड जिले के विशेष संदर्भ में)

छाया बरसेना

UGC-NET, एम.ए. (भूगोल)

सारांश :

यह शोध पत्र चंबल के बीहड़ क्षेत्र के भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक विकास में 'अटल प्रगति पथ' की भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

चंबल के बीहड़ प्रभावित क्षेत्रों में भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक आदि समस्याएँ विद्यमान हैं। जैसे– मृदा अपरदन, औद्योगिक पिछड़ापन, सामाजिक असुरक्षा, परिवहन के विस्तार में कमी, जल संकट की समस्या, रोजगार हेतु पलायन, विद्युत आपूर्ति व शिक्षा तक पहुँच में बाधा आदि।

अटल प्रगति पथ चंबल के बीहड़ों के कायाकल्प में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। जिससे भिण्ड के विकास हेतु नई राह खुलेगी। जैसे– अटल प्रगति के आस–पास की भूमि की कीमत बढ़ेगी, स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, सड़क परिवहन के विकास से ग्रामीणों का जुड़ाव बाजारों से बढ़ेगा जिससे उनका आर्थिक सशक्तिकरण बढ़ेगा, अटल प्रगति पथ के आस–पास उद्योग एवं सेवा क्षेत्र का विस्तार बढ़ेगा तथा औद्योगिक संकेंद्रण बढ़ेगा जिससे रोजगार व स्वरोजगार के अवसर बढ़ेंगे। इसके अलावा भूमि के समतलीकरण से कृषि भूमि में विस्तार होगा एवं बीहड़ों में इको–टूरिज्म, जंगल सफारी, रोप–वे भ्रमण आदि को बढ़ावा मिल सकता है।

शब्द कुंजी : चंबल के बीहड़, अटल प्रगति पथ, मृदा अपरदन, औद्योगिक पिछड़ापन, भूमि का समतलीकरण, स्थानीय पर्यटन, इको–टूरिज्म, स्वरोजगार, सामाजिक असुरक्षा आदि।

प्रस्तावना :

भिण्ड जिला अपनी विशिष्ट भौगोलिक संरचना के लिए जाना जाता है। यह चंबल के बीहड़ एवं 'बैडलैंड' स्थलाकृति के लिए जाना जाता है। इस कारण भिण्ड वर्षों तक कनेक्टिविटी एवं रोजगार के अभाव से जूझ रहा है। अटल प्रगति पथ भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है। यह 408 km लम्बा राष्ट्रीय राजमार्ग है जो भारत के तीन राज्य उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश व राजस्थान को जोड़ता है। यह म.प्र. के तीन जिलों भिण्ड, मुरैना व श्योपुर से गुजरता है। इसलिए अटल प्रगति पथ भिण्ड जिले के भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

शोध की आवश्यकता :

भिण्ड जिले में चंबल के बीहड़ों के लगातार विस्तार के कारण कृषि भूमि में कमी एवं औद्योगिक विकास में कमी देखने को मिलती है। जो कि भिण्ड के आर्थिक विकास में बाधक है। अतएव भिण्ड के आर्थिक विकास में प्रगति देने हेतु लंबे समय से किसी ऐसे कारक की आवश्यकता महसूस हो रही थी।

अतः अटल प्रगति पथ इस कमी को पूरा करेगा तथा भिण्ड जिले के तीव्र आर्थिक विकास में मील का पत्थर साबित होगा।

शोध का उद्देश्य :

- भिण्ड जिले के आर्थिक विकास एवं रोजगार वृद्धि में अटल प्रगति पथ की भूमिका का विश्लेषण करना।
- अटल प्रगति पथ के माध्यम से औद्योगिक विकास, ग्रामीण उत्पादों की बाजार तक पहुँच, आदि की संभावनाओं का पता लगाना।
- भिण्ड जिले से रोजगार हेतु होने वाले पलायन की समस्या पर इस परियोजना के पश्चात् पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
- इस परियोजना के पश्चात् बीहड़ क्षेत्र विकास, स्थानीय पर्यटन, कृषि विस्तार आदि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध पद्धति :

इस शोध में मिश्रित विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक विधि का समन्वय प्रस्तुत किया गया है।

इसमें प्राथमिक डाटा व द्वितीयक डाटा दोनों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक डाटा के अंतर्गत भिण्ड के स्थानीय व्यापारिक समुदायों के वार्तालाप के अंश, प्रत्यक्ष अवलोकन आदि शामिल हैं। द्वितीयक डाटा के अंतर्गत राष्ट्रीय सड़क विकास प्राधिकरण (NHAI) व मध्यप्रदेश विकास निगम जैसी सरकारी रिपोर्ट के आँकड़े तथा भिण्ड जिले की जिला सांख्यिकी पुस्तिका के अंश शामिल किये गए हैं।

डेटा विश्लेषण व मुख्य बिन्दु :

☐ भिण्ड जिले में भूमि की स्थिति और परियोजना का प्रभाव नीचे दी गई तालिका से समझा जा सकता है –

	विवरण	**सांख्यिकी अनुमान (भिण्ड जिला)**
क.	प्रगति पथ की लंबाई (भिण्ड में)	लगभग 90–100 km
ख.	बीहड़ प्रभावित क्षेत्र	लगभग 1.20 लाख हेक्टेयर
ग.	प्रस्तावित लॉजिस्टिक हब	02 (फूप व गोहद क्षेत्र के पास)
घ.	अनुमानित रोजगार सृजन	25000 + (प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष) लगभग

- भिण्ड क्षेत्र में खाद्य प्रसंस्करण इकाइयाँ, लॉजिस्टिक पार्क आदि की स्थापना करके औद्योगिक गलियारे का निर्माण करना।
- ☐ एक्सप्रेस–वे के किनारे की भूमि की कीमत में लगभग 300 प्रतिशत वृद्धि की संभावना।
- ☐ बीहड़ सुधार के पश्चात् सरसों एवं बाजरा के उत्पादन हेतु कृषि भूमि उपलब्ध होना।

- इस परियोजना से भिण्ड जिले के 26 गाँव लाभार्थी होंगे। जिनमें कनेक्टिविटी एवं रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

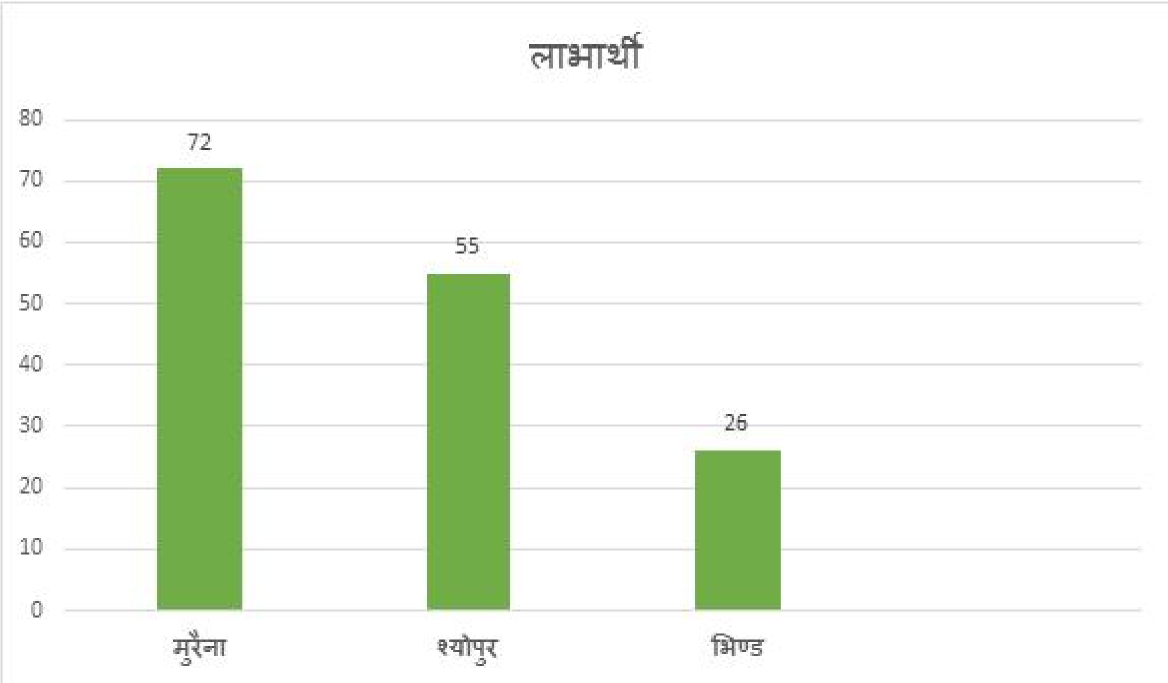

(चित्र में दर्शाया गया ग्राफ मुरैना (72 गाँव), श्योपुर (55 गाँव) और भिण्ड (26 गाँव) के लाभार्थी गाँवों की संख्या प्रदर्शित करता है)

चुनौतियाँ :

- चंबल अभयारण्य एवं घड़ियाल संरक्षण में पर्यावरणीय संकट का खतरा उत्पन्न हो सकता है।
- बीहड़ की विवादित भूमि एवं निजी भूमि के अधिग्रहण में कानूनी बाधा उत्पन्न हो सकती है।
- अटल प्रगति पथ के निर्माण के दौरान मृदा अपरदन को रोकना एक बड़ी चुनौती हो सकती है।
- प्रगति पथ से प्रभावित भिण्ड के 26 गाँवों में भूमि मुआवजे और पुनर्वास की समस्या उत्पन्न होगी।

सुझाव :

- भिण्ड में सरसों के तेल एवं बाजरा के लिए विशेष मेगा फूड पार्क बनाये जाने चाहिए।
- भिण्ड जिले के स्थानीय युवाओं को रोजगार दिलाने हेतु उनके कौशल विकास के लिए ITI व कौशल प्रशिक्षण केन्द्र खोले जाने चाहिए।
- जिले के स्थानीय पर्यटनों जैसे– अटेर का किला, गौरी सरोवर, मिहोना का बालाजी सूर्य मंदिर आदि को इस एक्सप्रेस–वे से जोड़ना चाहिए ताकि स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा मिले।
- बीहड़ क्षेत्र में मृदा अपरदन रोकने हेतु अटल प्रगति पथ के सहारे चेक डैम बनाए जाने चाहिए।
- बीहड़ क्षेत्र में जंगल सफारी का विकास कर इसे एक्सप्रेस–वे से जोड़ना चाहिए ताकि नये पर्यटन अवसरों का विकास हो।

निष्कर्ष :

अटल प्रगति पथ केवल सड़क ही नहीं बल्कि भिण्ड जिले की अर्थव्यवस्था में रीढ़ की हड्डी साबित होगा। यह भिण्ड जिले की बीहड़ की छवि मिटाकर आर्थिक गलियारे के रूप में स्थापित करेगा। जिससे भिण्ड में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे एवं पलायन रुकेगा। साथ ही कृषि भूमि के विस्तार के द्वारा किसानों की आय बढ़ेगी एवं उनके उत्पाद बाजारों तक सुगमता से पहुँचेंगे।

अतः भिण्ड ही नहीं बल्कि चंबल क्षेत्र को अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने में इस परियोजना का महत्वपूर्ण योगदान होगा।

संदर्भ सूची :

1. भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI), परियोजना रिपोर्ट 2023।
2. एम.पी. रोड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (MPRDC), वार्षिक रिपोर्ट 2024।
3. 'चंबल के बीहड़ : समस्याएँ और रणनीतियाँ', सॉइल एंड वाटर कंजर्वेशन जर्नल।
4. जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, भिंड (2022–23)।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 139-144

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

हो लोक कथाओं में हो जनजाति के जीवन दर्शन

पाण्डु राम हाईबुरू
शोधार्थी, जनजातीय एवं क्षेत्रीय (हो) भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।

आदिवासी जीवन संस्कृति में हो लोक कथा का महत्वपूर्ण योगदान है। जिसमें आदिवासी समाज के लोक जीवन नैतिक, संस्कृतिक, परंपराओं और उनके संघर्षों का जीवंत चित्रण है। यह साहित्य न सिर्फ हो सामुदाय की मौखिक परंपराओं और लोक कथाओं का संवाहक है बल्कि उनके सामाजिक जीवन नैतिक शिक्षा इतिहास और समुदायिक मूल्यों का जीवंत दास्तावेज होती है जो पूर्वजों के संघर्ष और सामाजिक सद्भाव को दर्शाती है। वैसे तो आदिवासी जीवन संस्कृति प्रकृति के साथ अतल आत्मीयता, सामाजिक सिद्धांत सादगीपूर्ण जीवन एवं लोक ज्ञान पर आधारित है। जहाँ प्रकृति सिर्फ संसाधन ही नहीं बल्कि प्राकृतिक आध्यात्मिकता हैं। वर्तमान प्रवृति जो विकासोन्मुख तथा लाभोन्मुख है और जो अंधाधुँध प्रकृति का दोहन का आय के सृजन को प्रगति का पर्याय समझता है। प्रकृति द्वारा निर्धारित मानदण्डों के अनुसार किन्हीं व्यक्तियों की जीवनशैली को क्षति पहूँचाती हैं।

प्रकृतिक प्रदत सारी चीजें अपने तरीके से व्यवस्थित है चाहे वो आपका शरीर हो या पर्यावरण सब तालमेल से ही चलता है। इसमें किसी भी तरह की छेड़छाड़ प्रकृति को मंजूर नहीं और असाध्य बीमारी या आपदा के रूप में ये अपना आक्रोश दिखा ही देती है।

''ग्रामीण और वन क्षेत्रों में आदिवासीयों की जीवनशैली काफी हद तक प्रकृति के अनुसार और उसके साथ तालमेल बनाते हुए चलती है।''[1] चाहे इनकी खेती, रीति रिवाज, खान पान या संस्कृति हो, सब में प्रकृति का समावेश है। वस्तुतः वे किसी भी उद्देश्य के लिए प्रकृति का दोहन नही करते है। जलावन के लिए लकड़ी, खाने के लिए फल–फूल और कंद–मूल और मांस, पर्व–त्योहरों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए पत्तों तथा फलों का उपयोग, औषधि के लिए जंगल से जड़ी आदि शामिल का संतुलित तरीके से इस्तेमाल किया जाता है।

हो लोक जीवन परंपरा में हो लोक कथाओं का बहुआयामी योगदान हैं। ये लोक कथाऐं समाज को शिक्षा देती हैं। जीवन के मूल्यों को आसानी से अगली पीढ़ी तक पहूँचाती हैं। जिसके कारण आदिवासी इतिहास और पहचान को रक्षा करती हैं। प्रकृति के साथ आत्मीय संबंध को सिखाती हैं। संग्राम, भक्ति एवं उत्पति व स्वमित्व के लिए प्रेरणा का स्रोत बचाती हैं। जो हो आदिवासी जीवन संस्कृति और समाज की जड़ों को मजबूत करती हैं।

हो लोक कथाऐं हो जनजाति की जीवन–संस्कृति की जड़ों को कई महत्वपूर्ण तरीकों से मतबूत

करती है –

1. **परंपराओं और इतिहास का सरंक्षण :**

परंपराओं और इतिहास का सरंक्षण हो लोक जीवन में हो लोक कथाओं का महत्वपूर्ण भूमिका है। लोक कथा के माध्यम से समाज के इतिहास की मौखिक दस्तावेज होती हैं। समाज में जब लिखित इतिहास उपलब्ध नहीं होता तब ये कथाऐं इतिहास उपलब्ध नहीं होता तब ये कथाऐं पूर्वजों के अनुभव, संघर्ष, विजय और जीवन पद्धति को सुरक्षित रखती है। इन कथाओं के माध्यम से रिवाज, रीति–नीति, विवाह परंपराऐं, पर्व–त्योहर, धार्मिक विश्वास और सामाजिक नियम पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे बढ़ते है। बच्चे इन्हें सुनकर अपने समाज की परम्पराओं को सहज रूप से सीखते है। यह आज भी समाज में देखने को मिलता है।

सामाजिक रिवाज के कई तत्व होते है जो व्यक्तियों के व्यावहार को निर्देशित करते है, सामाजिक एकता बढ़ाते है और चीजों को अंतर पीढ़ी तक हस्तांत्रित होते हैं। जैसे जन्म, विवाह, और अंतिम संस्कार की रश्मों के नियम। जैसा कि :–

क. जन्म संस्कार

हो आदिवासी समाज में जन्म संस्कार को सबसे बड़ा अछूत माना जाता है। जन्म संस्कार को बारिकी से किया जाता है जो प्रचीन समय से चलता आया है।

किसी स्त्री को प्रसव के समय आने पर उसे अलग कमरा अवंटित किया जाता है। उसे मुख्य कमरा (अदिङ) छोड़कर किसी दूसरे कमरा में प्रसव के लिए कमरा को दिया जाता है। ''प्रसव पीड़ा आरंभ होते ही खाली पड़ी कमरा में ले जाया जाता हैं। यदि किसी कारणवश घर के मुख्य कमरा में ही बच्चे को जन्म देते है तो उस कमरा में रसोई को काम जैसे– खाना–सब्जी पकाना वर्जित रहेगा।''[2]

मान्यता ऐसे है कि हमारे घर के कूल देवता छूत हो आऐंगे तो हमें उल्टी, पेट दर्द जैसे बुखार जैसे बीमउरियों से परेशान करेंगे, क्योंकि यह छूत उन्हें स्वीकार नहीं हैं।

''नवजात शीशु के जन्म होने के बाद प्रसव कमरा में घुसा कोई भी व्यक्ति घर के छावनी, कपरा या टीना होने से भी पीटा जाता है। पूरखों का कहना है कि ऐसा पीटने से शीशु को जीवन काल में उसे कोई नहीं डरा सकता।[3] ''वह चमकेगा नही, इसी के साथ शीशु रोने लगता है तो लोगों का मानना है कि यह शीशु गुंगा होने से बचेगा।

''शीशु के जन्म होने के बाद घर के पीछे में अच्छे से पत्ता के दोना में फूल (जिसमें बच्चा बड़ा हुआ था) को दपना दिया जाता है। ताकि बिल्ली और कुत्ता का मुँह न जाए। यदि किसी कारणवश बिलली या कुत्ता उसे खा जाता है तो समाज में यह धारणा है कि इस बच्चा को अपने जीवन काल में शेर के मूँह में ही जाएगा।[4] इसीलिए इस प्रक्रिया को बारिकी से सम्पन्न किया जाता है। साथ ही साथ ज्यादा अंदर गड्डा करके दपना देने से बच्चा का दाँत जल्दी नही निकलेगा।

ख. विवाह संस्कार :

प्रत्येक समाज में विवाह करना जरूरी हैं। जरूरी इसलिए ही नहीं हैं कि वंश को बचाना है परंतु पुरखों के द्वारा प्रचीन समय से चली आ रही परम्परा को अगली पीढ़ी तक हस्तांत्रित करने के लिए किया जाता हैं।

हो समाज के जीवन शैली में प्रचीन परम्परा को अविवाहित व्यक्ति हस्तांत्रित नहीं कर सकता। वैसे तो हो आदिवासी में विवाद कई प्रकार से करते हैं। जैसे– प्रेमविवाह, हल्दी लेपन विवाह, हरण विवाह एवं राजी–खुशी विवाद आदि शामिल हैं। शुभ विवाह की सर्वश्रेष्ट माना गया हैं। जिसमें एक मध्यस्ता करने वाले होते हैं। जो पूरा विवाह कार्यक्रम को शुरू से अंत तक नेतृत्व करता हैं। ''हो समाज में दुल्हा (बोहोर) के तरफ से दुल्हा वाले लोग (ओर एरा को) दुल्हन के घर (कुनिया ओवः) जाने का प्रचलन है। इन्हीं लोग (दुल्हा वाले लोग) दुल्हन को लाते हैं। नई नवेली दुल्हन के स्वगत मांदर के थाप से किया जाता है।

जो पस प्रकार से है –पा'सु बुटा जू'र –जू'र, किता बुटा तपिरसः!

बलेः किमिन मेन्ते गेदा –2

सिम चाको गोजम! चं चं – 2

उसके बाद दुल्हन को घर लाया जाता है। बेदी के बाहर लाल मुर्गा को बलि दिया जाता है। उसके बाद सात फेरे लगाते समय लाल मुर्गा के खून को कुँदना होता है।''[5] तत्पश्चात् ही आगे की रयम को पूरा किया जाता हैं।

इसी क्रम में विवाह सम्पन्न होने के बाद चिण्डी सिम का कार्यक्रम होता हैं। यह कार्य लड़की के दीदी के द्वारा सम्पन्न किया जाता हैं। ''नया–नवेला दामाद के द्वारा दीदी सास को मुर्गा दिया जाता है जिसको सुपिड् या चिण्डी सिम कहा जाता हैं। मान्यता हैं कि दामाद जी ने गलती किया हैं, जिसका दण्ड स्वरूप उसे देना पड़ता हैं।''[6]

ये परम्परा आज का नहीं प्राचीन समय से चली आ रही हैं।

ग. मृत्यु संस्कार :

जीवन में किसी चीज की प्रत्याभूति हैं या नहीं किसी को मालुम नहीं लेकिन जीवन में एक दिन मृत्यु होने की प्रत्याभूति हैं, ये सबको मालुम हैं। हो आदिवासी के जीवन दर्शन में मृत्यु संस्कार का अलग मान्यता हैं। माना जाता हैं कि ''मृत्यु संस्कार को कितना अच्छा से सम्पन्न होगा उतना ही अच्छा और जल्दी ही हमारे घर में पूनर्जन्म मिलेगा। किसी की मृत्यु हो जाने पर हो आदिवासी के लोग उसे दफना देते है।''[7] दफनाने की प्रक्रिया उस दिन ही हो ये कोई निश्चित नहीं होता हैं। समय नहीं रहा तो दूसरा दिन भी अंतिम संस्कार किया जाता हैं। लोग कहते है कि दफनाने की गड्डा को उत्तर–दक्षिण की दिशा में खोदा जाता हैं। दक्षिण दिशा की ओर मुंडी करके दफनाने से उसका दायाँ हाथ पूर्व यानि सूर्य की दिशा में यानि लड़का का प्रतीक होता हैं और पश्चिम की ओर बाँया हाथ चाँद की दिशा यानि स्त्री का प्रतीक होता है। इसलिए ये परम्परा आज भी जिंदा है।

घ. पर्व–त्योहार :

लोग कथाओं में हो जनजाति की उत्पति, पूर्वजों के संघर्ष, वीरता, विस्थापन और प्रकृति से संबंध कथाएं सुरक्षित रहती है। ये इतिहास को जीवंत के रूप में प्रस्तुत करती है। यह संस्कृति मूल्यों का संरक्षण में सत्य। साहस, सामुहिकता, समानता और प्रकृति पूजा के मूल्यों को बच्चों और युवाओं तक पहुँचाते है।

हो आदिवासी पर्व–त्योहार प्रकृति, कृषि और सामुदायिक जीवन दर्शन से जुड़े है जिनमें Cg (सरहुल वृक्ष पूजा), मागे (पौधा एवं गुंगु फल पूजा), हेरो : (कृषि कार्य के उपयोग में लाए गए उपकरण–हल, कुदाल आदि

की पूजा), जोमनामा (नया फसल की पूजा) एवं सोहरय (पशू पूजा) प्रमुख हैं। जो झारखण्ड, उड़िसा, पश्चिम बंगाल, असम के हो आदिवासी सामुदायों द्वारा उत्पाद से मनाया जाता हैं जो उनकी समृद्ध संस्कृति और परम्पराओं को दर्शाता हैं। पर्व–त्योहर में कथात्मक रूप, हो आदिवासी का सबसे बड़ा पर्व, मागे पर्व होता हैं।

''आरंम्भिक काल में जब आदि मानव (लुकु–लुकुमि दोनों) जीना सिख रहा था, जीने के लिए संघर्ष कर रहा था, ठीक उसी समय उनके जीवन में एक घटना घटी जो उनके जीवन में एक नया मोड़ लाया। अचानक से लुकुमि (नारी) को ऋतुस्राव होने लगा।

जो उनके लिए बिल्कुल नयी थी। इसे देख लुकुमि घबरा गयी। तत्पश्चात उनकी घबराहट को देखते हुए अठवीं दिन तक अलग–अलग देवी–देवतोओं अलग–अलग रूप धारण कर आते है और उन्हें न घबराने के साथ उपाय और चीजों की रक्षा करने की भी ज्ञान देते है।''[9] तब से लेकर यह लोक परंपरा आज भी हो आदिवासी समाज मे एक समृद्ध संस्कृति के रूप में जीवित है।

हो लोक जीवन परंपरा के बीजरूप :–

1. नैतिक एवं सामाजिक शिक्षा

हो लोक जीवन परंपरा में नैतिक एवं सामाजिक शिक्षा पर हो लोक कथा का महत्वूपर्ण योगदान है।

लोक कथाऐं न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि समाज को नैतिक और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा देने का सशक्त माध्यम हैं। विशेषकर हो लोकजीवन दर्शन में देखा जाता है कि लोक कथाऐं जीवन को सरल, सामूहिक और प्रकृति–सम्मत दृष्टि से देखने की सीख देते हैं। लोक कथा के माध्यम से सत्य और ईमानदारी न्याय और कर्मफल, साहस और धैर्य, करूणा और दया एवं लोभ और अहंकार से बचाव से संबंधित नैतिक मूल्यों को सिखाया जाता हैं साथ ही साथ हो जनजाति के समृद्ध जीवन दर्शन में सामुहिकता और सहयोग बड़ों का सम्मान और अनुशासन, स्त्री–पुरूष में समानता, परंपराओं का सम्मान एवं सामाजिक बुराइयों का विरोध करने जैसे चीजों का बोल कथा के माध्यम से ही मिलती हैं।

2. संस्कृति एवं ऐतिहासिक संरक्षण :

हो लोक कथाओं के माध्यम से हो आदिवासी का जीवन दर्शन, प्रकृति समुदाय और नैतिक मूल्यों पर आधारित हैं। हो लोक कथाऐं इस जीवन दर्शन की जीवंत अभिव्यक्ति है, जिनके माध्यम से हो आदिवासी संस्कृति एवं ऐतिहासिक चीजों का सरंक्षण कर पीढ़ी–दर–पीढ़ी होता रहा हैं। हो आदिवासी जीवन दर्शन में सामुदिकता समानता, प्रकृति पूजा और कर्म प्रधान जीवन की प्रमुख भूमिका है। लोक कथाओं में जंगल नदी पर्वत, पशु–पक्षी पात्र बनकर आते हैं, जो यह देते हैं कि मनुष्य प्रकृति का स्वामी नहीं बल्कि उसका सहचर हैं।

संस्कृति का सरंक्षण–पर्व–त्योहर, नृत्य, गीत और अनुष्ठानों की जानकरी मिलती हैं। विवाह, जन्म, मृत्यु से जूड़े संस्कार सुरक्षित रहते हैं। भाषा, बोली और लोक अभिव्यक्ति जीवित रहती हैं। पूर्वजों के संघर्ष, विस्थापन की पीड़ा आदि को लोक कथाओं के माध्यम से ही अदिवासी संस्कृति की सांस्कृतिक धरोहर बन जाती हैं। इतिहास को भावनात्मक और जीवंत रूप में प्रस्तुत करती हैं, जो लिखित इतिहास का विकल्प बनती हैं।

3. प्रकृति और पर्यावरण से जुड़ाव :

प्रकृति और पर्यावरण से जुड़ाव आदिवासी जीवन दर्शन का मूल आधार प्रकृति के साथ सदास्तित्व हैं।

लोक कथाओं में इस दर्शन को सहज, भावनात्मक और स्थायी रूप में व्यक्त करती है, जहाँ पर जंगल, नदी, पर्वत और पशु–पक्षी केवल संसाधन ही नहीं बल्कि जीवन साथी और संरक्षक माने जाते हैं। प्रकृति को सजीव मानने की भावना हो लोक कथाओं में पेड़, नदी, पर्वत और जानवर बोलते–चलते पात्र होते हैं। इससे समाज में यह संदेश मिलता हैं कि प्रकृति निर्जीव नहीं, बल्कि संवेदनशील और पूज्य होते हैं। इसे संतुलन बनाए रखने के लिए लोक कथाऐं संदेश बताती है कि प्रकृति को अंधाधूँध श्सोषण विनाश न लाना, प्रकृति के नियमों का उलंघन करना दण्डनीय हैं। संतुलित उपयोग ही सुखद जीवन का मार्ग हैं। यही पर्यावरणीय नैतिक आदिवासी जीवन दर्शन का मूल तत्व हैं।

जल, जंगल और जमीन का सांस्कृतिक महत्व लोक कथाऐं हमें बताती हैं कि जंगल की माता, जल को जीवनदायिनी और जमीन को पूर्वजों का धरोहर के रूप में देखा जाता हैं जिससे सरंक्षण की भावना स्वाभाविक रूप से विकसित होती है कई लोक कथाओं में पशु मित्र, मार्गदर्शक या रक्षक होते हैं। आज भी हो लोक जीवन, में पशु–पक्षियों एवं जीव जंतुओ को मार्गदर्शक के रूप में चलती राहों का संकेतक माना जाता हैं। इसे अंहिंसा और सहानुभूमि और जैव–विविधता के सरंक्षण का संदेश मिलता हैं।

हो लोक कथाऐं वनों की अकारण कटाई का विरोध जल स्रोतों की परित्रता, मौसम और कृषि के प्राकृतिक चक्र जैसी व्यावहारिक पर्यवरणीय शिक्षाऐं देती हैं। इसे बच्चों में बचपन से ही प्रकृति प्रेम और जिम्मेदारी की भावना पैदा करती हैं, जिससे पर्यवरण संरक्षण जीवन शैली बन जाती हैं।

4. सामुदायिक बंधन और भवनाऐं :

व्यक्ति से पहले समाज और समाज से पहले सामूहिक कल्याण का विचार के दर्शन को लोक कथाओं में स्वाभाविक रूप से अभव्यक्त होता हैं। हो जनजाति लोक कथाऐं सामुदायिक बंधन को मजबूत करती हैं और मानवीय भावनाओं को संवेदनशील रूप देती हैं।

हो लोक कथाओं में नायक अकेला नहीं होता है, बल्कि पूरा समुदाय उसके साथ खड़ा रहता हैं। इससे यह संदेश मिलता हैं कि एकता मे ही शक्ति हैं और जीवन की कठिनाइयों मिलकर ही सुलझायी जा सकती हैं। श्रम विभाजन सामुहिक खेती, शिकार का पर्व–त्योहरों में सहयोग को महत्व देती है। यह हो आदिवासी समाज की सहभागी संस्कृति को दर्शाता हैं।

माता–पिता बुजूर्ग, भाई–बहन और समुदाय के प्रति प्रेम, सम्मान और जिम्मेदारी लोक कथाओं का प्रमुख भाव हैं। बुजूर्ग कथावाचक ज्ञान और अनुभव के संरक्षक होते हैं। हो समाज में दुःख व्यक्तिगत नहीं, सामुहिक होता हैं। खूशी भी पूरे समुदाय की ही होती हैं। हो लोक कथाऐं हमें बताती हैं कि आदिवासी समाज में साझा भावना सामुदायिक बंधन को कैसे मजबूत बनाते हैं?

निष्कर्ष :

हो लोक कथाऐं हो लोक जीवन का पाठशाला है। इनके माध्यम से समाज में नैतिक आचरण सामाजिक समरसता और प्रकृति संतुलन की शिक्षा देती हैं। चूँकि यह हो लोक समाज के जीवन दर्शन की आत्मा हैं। इसके माध्मय से संस्कृति और इतिहासिक चीजों का सरंक्षण, समाज की पहचान, अत्मासम्मान और अस्तित्व की सुरक्षा, प्रकृति और पर्यवरण के साथ गहरा जुड़ाव की स्थापित करता हैं। यह दर्शन आधुनिक पर्यावरण संकट के समय

में संतुलित, संवेदनशील जीवन की दिशा दिखाती हैं। यह आदिवासी जीवन दर्शन सामुदायिक बंधन और मानवीय भावनाओं को सशक्त करता हैं। हो लोक कथाऐं हो लोक समाज को जोड़ने वाली भावनात्मक डोरी हैं, जो आदि संस्कृति की आत्मा को जीवित रखती हैं।

संदर्भ सूची :

1. सिंहभूम आदिवासी समाज – तुम्बल सगोम, पृष्ठ – 21
2. घनुर सिंह पुरती – हो दिशुभ हो होनको भाग – 1, पृष्ठ – 1
3. घनुर सिंह पुरती – हो दिशुभ हो होनको भाग – 1, पृष्ठ – 8
4. घनुर सिंह पुरती – हो दिशुभ हो होनको भाग – 1, पृष्ठ – 10
5. दासराम बारदा – विवाह गीत, टाटा स्टील, पृष्ठ – 5
6. BIRSA – ओतोरोङ, पृष्ठ – 37
7. लाको बोदरा – शार होरा भाग–2, पृष्ठ – 22

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 145-149
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

मीरा का काव्य : भक्ति और विद्रोह का प्रतीक

डॉ. रीता
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
माता सुंदरी कॉलेज फॉर वीमेन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

हिंदी साहित्य के इतिहास में साहित्य और इतिहास दोनों दृष्टियों से भक्तिकाल का बहुत महत्व है। भक्तिकाल का नाम सुनते ही कबीर, सूर, तुलसी, रैदास, मीरा ये नाम याद आते हैं। पुरुष भक्त कवियों के साथ भक्ति के क्षेत्र में जिस भक्त कवयित्री का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है, वो मीरा हैं। मीरा मध्यकालीन भक्त कवियों में अपना उल्लेखनीय स्थान रखती हैं। ऐसा नहीं है कि मीरा के अतिरिक्त मध्यकाल में अन्य भक्त कवयित्री नहीं थी। दक्षिण में अंडाल, अक्क महादेवी, कश्मीर में ललद्यद, महाराष्ट्र में मुक्ताबाई आदि हुईं। परन्तु मीरा कई मायनों में इन सबसे अलग विशिष्ट थी। मीरा साधारण स्त्री नहीं थी, वे राजघराने से सम्बद्ध थी। जब हम मीरा का नाम सुनते है तो स्वतः जो छवि हमारे मन–मस्तिष्क में उभरती है, वो कृष्ण प्रेम में निमग्न, मध्यकाल की सामंतवादी, पितृसत्तात्मक समाज को चुनौती देती हुई एक राजकन्या जिसने अपने जीवन की राह खुद चुनी और कृष्ण प्रेम में साध्वी बनी, संतो के मध्य सारे संसार के समक्ष बेबाकी से, निडरता से अपने प्रेम की स्वीकारोक्ति करती आत्मविश्वास से लबरेज एक आधुनिक स्त्री नजर आती है।

भक्तिकाल की प्रमुख कवयित्री मीराबाई की भक्ति केवल आध्यात्मिक साधना नहीं है, बल्कि सामाजिक मर्यादाओं, पितृसत्ता, धर्मसत्ता और जातिवादी संरचनाओं के विरुद्ध विद्रोह का स्वर भी है। उनके काव्य में प्रेम, समर्पण के साथ लोकचेतना और स्त्री–अस्मिता का समन्वय दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध–पत्र में मीरा की भक्ति की तथा उसकी पृष्ठभूमि में निहित विद्रोही चेतना का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है।

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में तुलसी, कबीर, सूर, रैदास आदि संतों ने ईश्वर–भक्ति को लोक तक पहुँचाया, किन्तु मीराबाई ने भक्ति को स्त्री–चेतना और व्यक्तित्व स्वतंत्रता का माध्यम बनाया। राजपूती कुल–मर्यादा और सामाजिक रूढ़ियों के बीच मीरा ने कृष्ण को जीवनाधार माना और ईश्वर–भक्ति के माध्यम से स्वयं को सामाजिक बंधनों से मुक्त किया। भक्ति और विद्रोह का यह संगम मीराबाई को अन्य भक्त कवियों से विशिष्ट बनाता है।

मीरा की भक्ति माधुर्य भाव की है। मीरा के पदों में तन्मयता, हृदय की संवेदना और निजी विरह–पीड़ा की अनुभूति सजीव है। तन्मयता के कारण ही मीरा के पद आज भी जनता के कण्ठहार बने हुए हैं। अतः कृष्णभक्त कवियों में मीरा का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। मीरा द्वारा रचित निम्न ग्रन्थ बताए जाते हैं–
(१) नरसी जी को मायरो इसमें नरसी मेहता को एक प्रचलित जनकथा को काव्य का रूप दिया गया है। यह

प्रश्नोत्तर रूप में है। (२) गीतगोविन्द की टीका, (३) राग गोविन्द (४) सोरठ के पद और (५) पदावली।

मीरा की लोकप्रियता का मूल आधार उनकी पदावली है, जिसकी रचना स्फुट पदों के रूप में हुई है। इन पदों की संख्या ४६६ है, जो कुछ राजस्थानी में हैं और कुछ शुद्ध ब्रजभाषा में हैं। भक्ति के अनेक प्रकार हैं– दास्य, वात्सल्य, सख्य, माधुर्य आदि। सूरदास आदि कृष्णभक्त कवियों ने सख्यभाव की भक्ति को अपनाया है, किन्तु मीरा की भक्ति–भावना माधुर्य भाव की है। लौकिक प्रेम के माध्यम से प्रभु के प्रति आत्म–समर्पण की भावना माधुर्य भक्ति में होती है। मीरा ने कृष्ण को पति के रूप में स्वीकार किया है। इसी कारण मीरा की भक्ति माधुर्य–भाव की भक्ति कहलाती है।

मीरा ने दृढ़तापूर्वक श्रीकृष्ण को अपना वर चुना है। उसकी धारणा है कि–

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई। जाके सिर मोर मुकट मेरो पति सोई।।

कृष्ण के साथ मीरा का यह सम्बन्ध इसी जन्म का नहीं, बल्कि जन्म–जन्मान्तर का है। वह अपने प्रियतम को कालातीत, अजर–अमर समझती है तथा अपने को उसकी 'जनम–मरण की दासी' एवं 'अचल सुहागिनी' कहती है। मीरा के प्रेम में पत्नी के शुद्ध प्रेम का रूप दिखाई देता है। प्रेम की तीव्र भावना के साथ मीरा के पदों में पत्नी की समर्पण–भावना, विनय एवं संकोच भी प्रकट किया गया है।

मीरा की प्रेम–भावना मुख्य रूप से विरह की अनुभूति में ही प्रकट हुई है। मिलन के चित्र भी मीरा ने अंकित किए हैं, किन्तु बहुत कम। विरह–वेदना की प्रधानता के कारण ही मीरा 'दरद दीवानी' के नाम से प्रसिद्ध है। विरह–वेदना में तड़पती हुई मीरा का एकमात्र सहारा प्रियतम की प्रतीक्षा है। मीरा का परमात्मा को ही अपने पति के रूप में स्वीकारना समाजिक बंधनों से मुक्ति का पहला चरण है।

मीरा का पहले–पहल उल्लेख नाभादास के साहित्य में मिलता है। मीरा की महत्ता को पहचानते हुए नाभादास ने अपने भक्तमाल में लिखा है –

'भक्ति निसान बजाय के काहूते नाहिन लजी।
लोक लाज कुलश्रृंखला, तजि मीरा गिरधर भजी।।'

इसके बाद "अठारहवीं सदी में कृष्ण भक्त नागरीदास ने अपनी पुस्तक 'पद प्रसंग माला' में मीरा की प्रशंसा की। इसके बाद रवीन्द्रनाथ टैगोर की 1914 में लिखी कहानी 'स्त्रेर पत्र' में मीरा का उल्लेख परम्पराओं के विरुद्ध विद्रोह करने वाली स्त्री के रूप में आता है। गांधी जी 1915 के बाद अपने पत्रों. भाषणों और लेखों में मीरा का उल्लेख सामंती समाज के विरुद्ध विद्रोह करने वाली स्त्री के रूप में करते हैं और उन्हें पहली सत्याग्रही बताते हैं। मीरा जनजातियों और अश्पृश्य समझी जाने वाली जातियों में भी खूब गायी जाती हैं। इस सच्चाई के सामाजिक, आर्थिक गणित को समझना कठिन नहीं है।"[1]

मीरा के काव्य में भक्ति और विद्रोह का परस्पर मेल उनके काव्य को एक अलग ही स्तर पर ले जाता है।

"मीराँ यदि कृष्ण से मिलने की इच्छा रखती है तो यह उस अभीष्ट से मिलने की इच्छा है जिसका रास्ता रोके हुए उसका परिवेश खड़ा है और इस परिवेश को रचता है उसका कुल, विशेषकर राणाशाही। तो मीराँ का विरोध सामंतवाद द्वारा रचे गए उस पितृसत्तात्मक परिवारवाद से है जो स्त्री पर अपना नियन्त्रण रखना चाहता है। जाहिर है कि इस नियन्त्रण का आर्थिक आधार उच्चवर्गीय अभिजात्य है इसलिए मीराँ की कविता स्त्री और

उसके परिवेश के संघर्ष की कविता के साथ उच्च–वर्गीय नैतिकता की घोषित और स्वीकृत छवि के विरोध की भी है। इसलिए भक्ति साहित्य में मीराँबाई स्त्री–आकांश और स्त्री–चुनौती का सबसे सशक्त स्वर हैं। मीराँ की भक्ति में ही चुनौती के स्वर दिखाई पड़ते हैं।"[2]

मीरा की भक्ति में यदि प्रेम और समर्पण है तो स्त्री का संघर्ष और साहस भी परिलक्षित होता है।

''म्हाराँ री गिरधर गोपाल दूसराँ णाँ कूयाँ।
दूसरों णाँ कूयाँ साधाँ सकल लोक जूयाँ।।
भाया छाँड्याँ, बन्धा छाँड्याँ छाँड्याँ सगाँ सूयाँ।
साधाँ ढिंग बैठ बैठ, लोक लाज खूयाँ।
भगत देख्याँ राजी ह्याँ, जगत देख्याँ रूयाँ।
अँसुवाँ जल सींच सींच प्रेन बेल बूयाँ।
दध मथ घृत काढ लयाँ डार दया छूयाँ।''[3]

मीरा यह कह रही है कि 'मेरो तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोय' तो यह सिर्फ प्रेम और भक्ति के कारण ही नहीं वरन एक चुनौती के रूप में भी है कि सिवाय गोपाल के किसी और में ये सामर्थ्य ही नहीं कि मीरा उसे चुने। मीरा ने कृष्ण का वरण कर लिया है, अपनी इच्छा से। इस प्रेमभक्ति के कारण भाई, बंधु, सगे–सम्बंधी सब छूट गए। मीरा केवल भक्ति ही करना चाहती तो घर में ही कर सकती थी परन्तु उसने घर से बाहर मंदिरों में साधु संगति करना चुना, जो उनकी अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने की क्षमता और उस आजादी की कीमत के रूप में परिवार, पितृसत्ता, राजसत्ता की नाराजगी और बहिष्कार के रूप में चुकाती हैं। पर कृष्ण भक्ति की दीवानी मीरा को इसकी परवाह कहाँ है। भक्तों को देखकर मीरा को और उनको प्रसन्नता होती है पर जगत नाराज होता है। मीरा का यह कहना कि आंसुओं से उसने प्रेम की बेल को सींचा है। ये उनकी पीड़ा, दुख–संघर्ष और विरह को तो बताता ही है। अपनी शर्तों पर जीने वाली स्त्री के जीवन की सच्चाई भी दर्शाता है। आसान नही है, अपने समय और सत्ता को चुनौती देना।

मीरा का काव्य सामाजिक रूढ़ियों का प्रतिरोध करता है। राजपूतानी संस्कृति के अनुसार पति की मृत्यु के पश्चात सती होने से दृढता से मना कर देती है।' भजन करसयाँ, सती न होस्याँ' वो कहती हैं कि सती नहीं होऊंगी, भजन करूंगी। भक्ति, कीर्तन, साधु संगति, नर्तन और लेखन– ये सब उसके प्रतिरोध को दिखाते हैं। एक तरफ यथार्थ संसार था तो दूसरी ओर मीरा का प्रेम और उस प्रेम को पाने का संघर्ष मीरा की भक्ति थी। राज महल में रहने वाली स्त्री महल से बाहर आकर स्त्री मन, उसकी पीड़ा–संघर्ष को वाणी देती है। जोकि मध्यकाल के सामंती समाज के लिए सहज बात नहीं थी। मीरा पितृसत्ता, धर्मसत्ता और राजसत्ता तीनों को चुनौती देती है। "मीरा के विरोधी दो तरह के लोग रहे हैं। उनके समय में एक राणा था, जो सामन्तशाही थी, सामन्ती सत्ता थी और दूसरी तरफ मीराँ कृष्ण–भक्त थी और कम से कम तीन सन्तों ने मीराँ को नाम लेकर गालियाँ दी हैं–विधवा, रांड, इस भाषा में गालियाँ दी हैं और वो अष्टछाप के लोग थे। कृष्णदास् और रामदास उसमें थे। इन लोगों ने मीराँ का नाम लेकर गालियाँ दी हैं। ये जो भक्ति में भी पन्थ निर्मित कर रहे थे वे उनके विरोधी थे। तो धर्म–सत्ता और राज्य–सत्ता दोनों तरह की सत्ता मीराँ का विरोध कर रही थी।"[4]

कहा जाता है कि मीरा ने न किसी को गुरु बनाया न ही किसी पंथ या सम्प्रदाय की अनुगामिनी बनी।

अपने प्रेम और भक्ति के मार्ग में उसने किसी परिपाटी या रूढ़ि को स्वीकार नहीं किया।

मीरा की भक्ति स्वायत्तता के उद्बोधन की थी, जहाँ भक्त और भगवान के बीच समाज, सत्ता, रीति–नीति और रूढ़ परम्पराओं के बंधन के लिए कोई स्थान न था। भक्ति के माध्यम से मीरा अपने समय, समाज और राजसत्ता की रीति–नीति और परम्पराओं के विरुद्ध उठ खड़ी होती हैं और कभी अप्रत्यक्ष, तो कभी सीधे–सीधे बगावती अंदाज में उन्हें चुनौती दे डालती हैं। चुनौती देने का यह साहस और यह शैली अपूर्व है, जो मीरा को अन्य भक्त कवियों में विशिष्ट बनाता है।"[5]

मीरा स्पष्ट रूप से कहती है –

"चाहे रूस ज्यावौ जग सारो रै मत रूसो किरतारो रै
बिरमा रूसो, इन्द्र रूसौ, रूसौ कैलास वाळो रै
तैंतीस किरोड़ देवी–देवता रूसो, रूस ज्यावौ जग सारो रै
मीरां मिंदर आवे जावे ना कोई रोकण वाळो रै।"

यह निर्भयता, यह दीवानगी एक तरह से नारी–स्वातंत्र्य का ही नहीं, मनुष्य की स्वाधीनता का शंखनाद है। भले ही इसका केन्द्र भक्ति हो, लेकिन उसमें सारे लक्षण आजादी के हैं।"[6]

मीरा आर्थिक रूप से सदृढ़ थीं। उनके पास बीस गांव की जागीर थी। इसलिए वह चितौड़ में रहते हुए राणा से प्रतिरोध कर सकती थीं। यह सच है कि आर्थिक स्वतंत्रता स्त्री को एक सशक्त आधार तो देता ही है। अपने पदों के माध्यम से वह बताती हैं कि राणा उसके साथ कैसा व्यवहार कर रहे हैं। कभी जहर का प्याला तो कभी साँपों की पिटारी भेजना या सूलो की शय्या बनवाना। अपनी पीड़ा को वाणी देती है –

''हेरी म्हां तो दरद दीवाणाँ म्हाराँ दरद न जाण्याँ कोय।
घायल री गत घायल जाण्याँ, हिबडों अगण सँजोय।''[7]

इन पंक्तियों में मीरा के मन की पीड़ा व्यक्त होती है। घायल की गति घायल ही जानता है। पर मीरा तो मीरा है वो तो दर्द की भी दीवानी है। उनके मर्म को जानने में कोई सामान्य व्यक्ति की गति नही है।

मैनेजर पांडेय सही कहते हैं– "हमारे मधुरतम गीत वे होते हैं जो परम् दुःख की अभिव्यक्ति करते हैं, इस कसौटी पर मीरा का काव्य सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है।"[8]

मीरा ने अपने समय की सभी प्रकार की रूढ़ियों का भंजन किया।

''सास लड़े मेरी नन्द खिजावै, राणा रह्या रिसाय।
पहरो भी राख्यो चौकी बिठारयो, ताला दियो जड़ाय।''[9]

वो कहती हैं कि मेरी सास, ननद यानी परिवार और राणा यानी उनके देवर सभी उनपर गुस्सा होते हैं। उनपर पहरे लगाए जाते है और ताला लगाया जाता है मतलब उनकी स्वतंत्रता और आत्माभिव्यक्ति पर पाबंदी लगाई जाती हैं। पर मीरा कहाँ सुनती हैं, वो तो कृष्ण के प्रेम और भक्ति में डूबी हुई है कि संसार की कोई भी बाधा उनका मार्ग अवरुद्ध नहीं कर सकती।

''साँवरा णन्द गँदन, दीठ पड्याँ माई।
डारयाँ सब लोकलाज सुध बुध बिसराई।''[10]

वो उदघोषणा करती है कि चाहे कितने भी पारिवारिक, धार्मिक, राजनीतिक पाबंदियां उन पर लगाई जाए,

वो कृष्ण का प्रेम है जो उनको शक्ति देता है कि वो लोकलाज, कुल मर्यादा का त्याग कर अपने सांवरे से प्रेमाभक्ति में आसक्त हैं। स्पष्ट है कि मीरा की भक्ति मात्र भक्ति नहीं है मीरा की वो ताकत या शस्त्र है जिसके माध्यम से वो अपना प्रतिरोध दर्ज करती हैं।

मीरा अपने समय के बंद समाज मे अपनी आत्माभिव्यक्ति के लिए विद्रोह करती है। वह बराबरी की मांग करती है। प्रेम के समान सम्मान की मांग करती हैं।

''मीरा की कविता में सामंती समाज और संस्कृति की जकड़न से बेचैन स्त्री स्वर की मुखर अभिव्यक्ति है। उनकी स्वतंत्रता की आकांक्षा जितनी आध्यत्मिक है उतनी सामाजिक भी।''[11]

मीरा की भक्ति में यदि अनन्य प्रेम और समर्पण के स्वर मिलते हैं तो मध्यकालीन स्त्री के संघर्ष, दबाबों, पीड़ा और उससे उपजी स्त्री चेतना और प्रतिकार की ध्वनि भी व्यंजित होती है। मीरा वह स्त्री है जो निर्द्वन्द भाव से प्रेम करती है और बदले में बराबरी और सम्मान की दरकार भी करती है। निडरता से अपनी बात रखने की स्वतंत्रता लेती है तो उसके खतरे भी समझती है। भक्ति के ही माध्यम से मीरा स्त्री मन, उसकी चेतना, उसकी अभिव्यक्ति, रचनात्मक ऊर्जा के अक्षय भंडार और स्वतंत्रता की चाह को बेबाकी से व्यक्त करती हैं। मीरा की भक्ति वस्तुतः उनकी स्वतंत्र अस्तित्व की शर्त है। उनकी भक्ति उन्हें पूर्णता देती है।

संदर्भ ग्रँथ सूची –

1. नामवर सिंह– संस्कृति का ताना–बाना, अनुवाद आभा गुप्ता ठाकुर, पृ. 74
2. संपादक : बसंत त्रिपाठी– मीराबाई, पृष्ठ 10, प्रथम संस्करण 2018, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली।
3. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी– मीरा की पदावली, छंद 18, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1983, पृ. 104
4. संपादक : बसंत त्रिपाठी– मीराबाई, पृष्ठ 108, प्रथम संस्करण 2018, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली।
5. संपादक धनन्जय कुमार दुबे– मध्यकाल : एक पुनर्मूल्यांकन, पृष्ठ 145, श्री नटराज प्रकाशन दिल्ली।
6. प्रभाकर श्रोत्रिय– कवि परम्परा : तुलसी से त्रिलोचन, मीरा, पृष्ठ 48, चौथा संस्करण, 2013, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
7. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी– मीरा की पदावली, पृष्ठ 120, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1983
8. मैनेजर पांडेय–कथा विशेषांक, अंक 16, पृष्ठ 51, मई 2012
9. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी– मीरा की पदावली, छंद 42 पृष्ठ 113, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1983
10. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी– मीरा की पदावली, छंद 12 पृष्ठ 102, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1983
11. मैनेजर पांडेय – भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य, पृष्ठ 43, संस्करण 2003, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 150-155

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

1857 के राष्ट्रीय विद्रोह में नारी पराक्रम

डॉ. अशोक कुमार
सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग
जीडीसी मेमोरियल महाविद्यालय, बहल (भिवानी)

सारांश :

1857 का राष्ट्रीय विद्रोह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम संगठित प्रयास माना जाता है। इस विद्रोह में जहाँ पुरुष सेनानियों ने अग्रणी भूमिका निभाई, वहीं भारतीय नारियों का योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण, साहसपूर्ण एवं प्रेरणादायी रहा। रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हज़रत महल, झलकारी बाई, अवंतीबाई लोधी, अजीजनबाई, मैनावती, महावीरी देवी तथा अनेक अज्ञात नारियों ने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजी सत्ता को चुनौती दी। यह शोध पत्र 1857 के विद्रोह में नारी शक्ति की भूमिका, संघर्ष, बलिदान और ऐतिहासिक महत्व का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द : 1857 का राष्ट्रीय विद्रोह, नारी पराक्रम, वीरांगनाएँ, महिला सैनिक दल, दुर्गा दल, जनजागरण, सशस्त्र प्रतिरोध, नारी बलिदान।

भूमिका :

1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध पहला व्यापक जनआंदोलन था। इसे केवल सैनिक विद्रोह कहना इसके व्यापक सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्वरूप को सीमित करना होगा। इस आंदोलन में भारतीय नारी ने परंपरागत सीमाओं को तोड़ते हुए रणभूमि, संगठन, गुप्तचर व्यवस्था तथा जनजागरण में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। यह शोध नारी शक्ति के उसी योगदान को ऐतिहासिक संदर्भों के साथ उजागर करने का प्रयास है। देश की उन वीर महिलाओं के बारे में जिन्होंने आजादी की जंग में रणभूमि पर जमकर अंग्रेजों से लोहा लिया। आजादी की लड़ाई में महिलाओं ने न सिर्फ अंग्रेजों से जमकर लोहा लिया बल्कि क्रांति की जो अलख जगाई उसी से घबड़ाकर अंग्रेजों ने अपने कदम पीछे हटाए।

इतिहास के पन्नों को पलटते हुए जो–जो हम पीछे जाएंगे महिलाओं के अद्मय साहस से भरी कई कहानियां हमारे देश के गौरव को बढ़ाती दिखाई दे जाएंगी। भारतीय वीरांगनाओं का जिक्र किए बिना 1857 से 1947 तक की स्वाधीनता की दास्तान शायद अधूरी ही रह जाएगी। यह भारत की नारी ही थी जिसने अंग्रेजों को लोहे के चने चबवा दिए। इन वीरांगनाओं में से अधिकतर की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे किसी रजवाड़े में पैदा नहीं हुईं बल्कि आम आदमी के घर जन्म लेकर, अपनी योग्यता की बदौलत उच्चतर मुकाम तक पहुंची।

1857 की गदर में दो नाम बड़ी शान से लिए जाते हैं। पहला नाम बेगम हजरत महल जिन्होंने लखनऊ में क्रांति का झंडा बुलंद किया और दूसरी झांसी की रानी लक्ष्मी बाई का। इतिहास में और पीछे चलें तो एक और नाम सुनने को मिलेगा। वह नाम है वर्ष 1824 में फिरंगियों भारत छोड़ो का बिगुल बजाने वाली कित्तूर (कर्नाटक) की रानी चेनम्मा का। जिन्होंने रणचंडी का रूप धरकर अपने अदम्य साहस व फौलादी संकल्प की बदौलत अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए। कहते हैं कि मृत्यु से पूर्व रानी चेनम्मा काशीवास करना चाहती थीं पर उनकी यह चाह पूरी न हो सकी। क्या संयोग था कि रानी चेनम्मा की मौत के 6 साल बाद काशी में ही लक्ष्मीबाई का जन्म हुआ। यकीनन रानी चेनम्मा को अंग्रेजों से लोहा लेने वाली प्रथम वीरांगना माना जाता है।

यह भी कम ही लोगों को पता होगा कि बैरकपुर में मंगल पांडेय को चर्बी वाले कारतूसों के बारे में सर्वप्रथम मातादीन ने बताया और मातादीन को इसकी जानकारी उसकी पत्नी लज्जो ने दी। लज्जो अंग्रेज अफसरों के यहां काम करती थी, जहां उसे यह सुराग मिला कि अंग्रेज गाय की चर्बी वाले कारतूस इस्तेमाल करने जा रहे हैं। इतना ही अगर यह कहा जाए कि 1857 की कदर की चिंगारी भडक़ाने और उसे हवा देने का काम नारी शक्ति ने किया तो यह भी अतिश्योक्ति नहीं होगी। 9 मई 1857 की घटना को ही ले लीजिए जब मेरठ में विद्रोह करने पर 85 भारतीय सिपाहियों को हथकड़ी–बेडियां पहनाकर जेल भेज दिया गया। दूसरी ओर अन्य सिपाही उस शाम को घूमने निकले तब मेरठ शहर की महिलाओं ने उन सिपाहियों को धिक्कारते हुए अपने साथियों का साथ देने का कहा। मुरादाबाद के तत्कालीन जिला जज जेसी विल्सन ने इस घटना का वर्णन करते हुए लिखा है 'महिलाओं ने कहा कि–छिरू! तुम्हारे भाई जेल खाने में और तुम यहां बाजार में मक्खियां मार रहे हो? तुम्हारे ऐसे जीने पर धिक्कार है।' इतना सुनते ही सिपाही जोश में आ गए और अगले ही दिन 10 मई को जेलखाना तोडक़र उन्होंने सभी कैदी सिपाहियों को छुड़ा लिया और उसी रात्रि क्रांति का बिगुल बजाते हुए दिल्ली की ओर प्रस्थान कर गए, जहां से 1857 की क्रांति की ज्वाला चारों दिशाओं में फैल गई।

लखनऊ में 1857 की क्रांति का नेतृत्व बेगम हजरत महल ने किया। अपने नाबालिग पुत्र बिरजिस कादर को गद्दी पर बिठाकर उन्होंने अंग्रेजी सेना का स्वयं मुकाबला किया। उनमें संगठन की अभूतपूर्व क्षमता थी और इसी कारण अवध के जमींदार, किसान और सैनिक उनके नेतृत्व में आगे बढ़ते रहे। आलमबाग की लड़ाई के दौरान अपने जांबाज सिपाहियों की उन्होंने भरपूर हौसला आफजाई की और हाथी पर सवार होकर अपने सैनिकों के साथ दिन–रात युद्ध करती रहीं। लखनऊ में पराजय के बाद वह अवध के देहातों मे चली गईं और वहां भी क्रांति की चिंगारी सुलगाई। घुड़सवारी और तलवार चलाने में माहिर झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता और शौर्य के किस्से तो जन–जन में सुने ही होंगे। नवम्बर 1835 को बनारस में मोरोपंत तांबे के घर जन्मी लक्ष्मीबाई का बचपन नाना साहब के साथ कानपुर के बिठूर में बीता। सन् 1855 में पति राजा गंगाधर राव की मौत के पश्चात् उन्होंने झांसी का शासन सम्भाला पर अंग्रेजों ने उन्हें और उनके दत्तक पुत्र को शासक मानने से इंकार कर दिया। लक्ष्मीबाई ने झांसी में ब्रिटिश सेना को कड़ी टक्कर दी और बाद में तात्या टोपे की मदद से ग्वालियर पर भी कब्जा किया। उनकी मौत पर जनरल ह्यूगरोज ने कहा था ''यहां वह औरत सोयी हुई है, जो विद्रोहियों में एकमात्र मर्द थी।''

वीरांगनाओं की सूची को आगे बढ़ाए तो मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर की बेगम जीनत महल का नाम भी सामने आएगा जिन्होंने दिल्ली और आस–पास के क्षेत्रों में स्वातंत्र्य योद्धाओं को संगठित किया और देश प्रेम

का परिचय दिया। सन् 1857 की क्रांति में बहादुरशाह जफर को प्रोत्साहित करने वाली बेगम जीनत महल ने ललकारते हुए कहा था 'यह समय गजलें कह कर दिल बहलाने का नहीं है, बिठूर से नाना साहब का पैगाम लेकर देशभक्त सैनिक आए हैं, आज सारे हिन्दुस्तान की आंखें दिल्ली की ओर व आप पर लगी हैं, खानदान–ए–मुगलिया का खून हिन्द को गुलाम होने देगा तो इतिहास उसे कभी क्षमा नहीं करेगा।' बाद में बेगम जीनत महल भी बहादुरशाह जफर के साथ ही बर्मा चली गईं। इसी प्रकार दिल्ली के शहजादे फिरोजशाह की बेगम तुकलाई सुलतान जमानी बेगम को जब दिल्ली में क्रांति की सूचना मिली तो उन्होंने ऐशोआराम का जीवन जीने की बजाय युद्ध शिविरों में रहना पसंद किया और वहीं से सैनिकों को रसद पहुंचाने और घायल सैनिकों की सेवा का प्रबंध अपने हाथो में ले लिया। अंग्रेजी हुकूमत इनसे इतनी भयभीत हो गई थी कि कालांतर में उन्हें घर में नजरबंद कर उन पर बम्बई न छोडने़ और दिल्ली प्रवेश करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

बेगम हजरत महल और रानी लक्ष्मीबाई के सैनिक दल में तमाम महिलाएं शामिल थीं। लखनऊ में बेगम हजरत महल की महिला सैनिक दल का नेतृत्व रहीमी के हाथों में था, जिसने फौजी भेष अपनाकर तमाम महिलाओं को तोप और बंदूक चलाना सिखाया। रहीमी की अगुवाई में इन महिलाओं ने अंग्रेजों से जमकर लोहा लिया। लखनऊ की तवायफ हैदरीबाई के यहां तमाम अंग्रेज अफसर आते थे और कई बार क्रांतिकारियों के खिलाफ योजनाओं पर बात किया करते थे। हैदरीबाई ने पेशे से परे अपनी देशभक्ति का परिचय देते हुए इन महत्वपूर्ण सूचनाओं को क्रांतिकारियों तक पहुंचाया और बाद में वह भी रहीमी के सैनिक दल में शामिल हो गई। ऐसी ही एक वीरांगना ऊदा देवी थीं, जिनके पति चिनहट की लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हुए। ऐसा माना जाता है कि डब्ल्यू गार्डन अलक्जेंडर एवं तत्पश्चात क्रिस्टोफर हिबर्ट ने अपनी पुस्तक 'द ग्रेट म्यूटिनी' में लखनऊ में सिकन्दरबाग किले पर हमले के दौरान जिस वीरांगना के अदम्य साहस का वर्णन किया है, वह ऊदा देवी ही थीं। ऊदा देवी ने पीपल के घने पेड़ पर छिपकर लगभग 32 अंग्रेज सैनिकों को मार गिराया। अंग्रेज असमंजस में पड़ गये और जब हलचल होने पर कैप्टन वेल्स ने पेड़ पर गोली चलाई तो ऊपर से एक मानवाकृति गिरी। नीचे गिरने से उसकी लाल जैकेट का ऊपरी हिस्सा खुल गया, जिससे पता चला कि वह महिला है। उस महिला का साहस देख कैप्टन वेल्स की आंखें नम हो गईं, तब उसने कहा कि यदि मुझे पता होता कि यह महिला है तो मैं कभी गोली नहीं चलाता। ऊदा देवी का जिक्र अमृतलाल नागर ने अपनी कृति 'गदर के फूल' में बकायदा किया है। इसी तरह की एक वीरांगना आशा देवी थीं, जिन्होंने 8 मई 1857 को अंग्रेजी सेना का सामना करते हुए शहादत पाई। आशा देवी का साथ देने वाली वीरांगनाओं में रनवीरी वाल्मीकि, शोभा देवी, वाल्मीकि महावीरी देवी, सहेजा वाल्मीकि, नामकौर, राजकौर, हबीबा गुर्जरी देवी, भगवानी देवी, भगवती देवी, इंदर कौर, कुशल देवी और रहीमी गुर्जरी इत्यादि शामिल थीं। ये वीरांगनाएं अंग्रेजी सेना के साथ लड़ते हुए शहीद हो गईं।

बेगम हजरत महल के बाद अवध के मुक्ति संग्राम में जिस दूसरी वीरांगना ने प्रमुखता से भाग लिया, वे थीं गोंडा से 40 किलोमीटर दूर तुलसीपुर रियासत की रानी राजेष्वरी देवी। राजेष्वरी देवी ने होपग्रांट के सैनिक दस्तों से जमकर मुकाबला लिया। अवध की बेगम आलिया ने भी अपने अद्भुत कारनामों से अंग्रेजी हुकूमत को चुनौती दी। बेगम आलिया 1857 के एक वर्ष पूर्व से ही अपनी सेना में शामिल महिलाओं को शस्त्रकला में प्रशिक्षण देकर सम्भावित क्रांति की योजनाओं को मूर्त रूप देने में संलग्न हो गई थीं। अपने महिला गुप्तचर के गुप्त भेदों के माध्यम से बेगम आलिया ने समय–समय पर ब्रिटिश सैनिकों से युद्ध किया और कई बार अवध से उन्हें

भगाया। इसी प्रकार अवध के सलोन जिले में सिमरपहा के तालुकदार वसंत सिंह बैस की पत्नी और बाराबंकी के मिर्जापुर रियासत की रानी तलमुंद कोइर भी इस संग्राम में सक्रिय रहीं। अवध के सलोन जिले में भदरी की तालुकदार ठकुराइन सन्नाथ कोइर ने विद्रोही नाजिम फजल अजीम को अपने कुछ सैनिक और तोपें, तो मनियारपुर की सोगरा बीबी ने अपने 400 सैनिक और दो तोपें सुल्तानपुर के नाजिम और प्रमुख विद्रोही नेता मेंहदी हसन को दी। इन सभी ने बिना इस बात की परवाह किए हुए कि उनके इस सहयोग का अंजाम क्या होगा, क्रांतिकारियों को पूरी सहायता दी।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने महिलाओं की एक अलग टुकड़ी 'दुर्गा दल' बनायी हुई थी। इसका नेतृत्व कुश्ती, घुड़सवारी और धनुर्विद्या में माहिर झलकारी बाई के हाथों में था। झलकारी बाई ने कसम उठायी थी कि जब तक झांसी स्वतंत्र नहीं होगी, न ही मैं श्रृंगार करूंगी और न ही सिन्दूर लगाऊंगी। अंग्रेजों ने जब झांसी का किला घेरा तो झलकारीबाई जोशो–खरोश के साथ लड़ी। चूंकि उसका चेहरा और कद–काठी रानी लक्ष्मीबाई से काफी मिलता–जुलता था, सो जब उसने रानी लक्ष्मीबाई को घिरते देखा तो उन्हें महल से बाहर निकल जाने को कहा और स्वयं घायल सिहंनी की तरह अंग्रेजों पर टूट पड़ी और शहीद हो गयीं। झलकारीबाई का जिक्र मराठी पुरोहित विष्णुराव गोडसे की कृति 'माझा प्रवास' में भी मिलता है। रानी लक्ष्मीबाई की सेना में जनाना फौजी इंचार्ज मोतीबाई और रानी के साथ चौबीस घंटे छाया की तरह रहने वाली सुन्दर–मुन्दर और काशीबाई सहित जूही और दुर्गाबाई भी दुर्गा दल की ही सैनिक थीं। इन सभी ने अपने जान की बाजी लगाकर रानी लक्ष्मीबाई पर आंच नहीं आने दी और अन्तोगत्वा वीरगति को प्राप्त हुईं।

कानपुर 1857 की क्रांति का प्रमुख गवाह रहा है। पेशे से तवायफ अजीजनबाई ने यहां क्रांतिकारियों की संगत में 1857 की क्रांति में लौ जलायी। एक जून 1857 को जब कानपुर में नाना साहब के नेतृत्व में तात्याटोपे, अजीमुल्ला खान, बालासाहब, सूबेदार टीका सिंह और शमसुद्दीन खान क्रांति की योजना बना रहे थे तो उनके साथ उस बैठक में अजीजनबाई भी थीं। इन क्रांतिकारियों की प्रेरणा से अजीजन ने मस्तानी टोली के नाम से 400 महिलाओं की एक टोली बनायी जो मर्दाना भेष में रहती थीं। एक तरफ ये अंग्रेजों से अपने हुस्न के दम पर राज उगलवातीं, वहीं नौजवानों को क्रांति में भाग लेने के लिये प्रेरित करतीं। सतीचौरा घाट से बचकर बीबीघर में रखी गईं 125 अंग्रेज महिलाओं और बच्चों की रखवाली का कार्य अजीजनबाई की टोली के ही जिम्मे था। बिठूर के युद्ध में पराजित होने पर नाना साहब और तात्याटोपे तो पलायन कर गये लेकिन अजीजन पकड़ी गयी। युद्धबंदी के रूप में उसे जनरल हैवलॉक के समक्ष पेश किया गया। जनरल हैवलॉक उसके सौन्दर्य पर रीझे हुए बिना न रह सका और प्रस्ताव रखा कि यदि वह अपनी गलतियों को स्वीकार कर क्षमा मांग ले तो उसे माफ कर दिया जायेगा। किंतु अजीजन ने एक वीरांगना की भांति उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया और पलट कर कहा कि माफी तो अंग्रेजों को मांगनी चाहिए, जिन्होंने इतने जुल्म ढाये। इतने पर आग बबूला हो हैवलॉक ने अजीजन को गोली मारने के आदेश दे दिये। क्षण भर में ही अजीजन का अंग–प्रत्यंग धरती मां की गोद में सो गया। इतिहास में दर्ज है कि 'बगावत की सजा हंस कर सह ली अजीजन ने, लहू देकर वतन को'

कानपुर के स्वाधीनता संग्राम में मस्तानीबाई की भूमिका भी कम नहीं है। बाजीराव पेशवा के लश्कर के साथ ही मस्तानीबाई बिठूर आई थी। अप्रतिम सौन्दर्य की मलिका मस्तानीबाई अंग्रेजों का मनोरंजन करने के बहाने उनसे खुफिया जानकारी हासिल कर पेशवा को देती थी। नाना साहब की मुंहबोली बेटी मैनावती भी

देशभक्ति से भरपूर थी। नाना साहब बिठूर से पलायन कर गये तो मैनावती यहीं रह गयी। जब अंग्रेज नाना साहब का पता पूछने पहुंचे तो मौके पर 17 वर्षीया मैनावती ही मिली। नाना साहब का पता न बताने पर अंग्रेजों ने मैनावती को जिन्दा ही आग में झोंक दिया।

इतिहास के पन्नों में न जाने ऐसी कितनी दास्तान हैं, जहां वीरांगनाओं ने अपने साहस और जीवटता के दम पर अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए। मध्यप्रदेश में रामगढ़ की रानी अवन्तीबाई ने 1857 के संग्राम के दौरान अंग्रेजों का प्रतिकार किया और घिर जाने पर आत्म समर्पण करने की बजाय स्वयं को खत्म कर लिया। मध्य प्रदेश में ही जैतपुर की रानी ने अपनी रियासत की स्वतंत्रता की घोषणा कर दतिया के क्रांतिकारियों को लेकर अंग्रेजी सेना से मोर्चा लिया। तेजपुर की रानी भी इस संग्राम में जैतपुर की रानी की सहयोगी बनकर लड़ीं। मुजफ्फरनगर के मुंडभर की महावीरी देवी ने 1857 के संग्राम में 22 महिलाओं के साथ मिलकर अंग्रेजों पर हमला किया। अनूप शहर की चौहान रानी ने घोड़े पर सवार होकर हाथों में तलवार लिए अंग्रेजों से युद्ध किया और अनूप शहर के थाने पर लगे यूनियन जैक को उतार कर हरा राष्ट्रीय झंडा फहरा दिया। इतिहास गवाह है कि 1857 की क्रांति के दौरान दिल्ली के आस–पास के गावों की लगभग 255 महिलाओं को मुजफ्फरनगर में गोली से उड़ा दिया गया था। 1857 की गदर में भारतीय महिलाओं में गजब की देश की भक्ति देखने को मिली। कई मौकों पर आजादी की लड़ाई में पुरुषों से आगे निकल गई महिलाएं।

निष्कर्ष :

1857 के राष्ट्रीय विद्रोह में नारी पराक्रम भारतीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। इन वीरांगनाओं ने न केवल अंग्रेजी सत्ता को चुनौती दी, बल्कि भारतीय समाज में नारी शक्ति की नई परिभाषा गढ़ी। उनका योगदान यह सिद्ध करता है कि स्वतंत्रता संग्राम में नारी की भूमिका पुरुषों के समान ही महत्वपूर्ण और निर्णायक थी। आज भी उनका बलिदान भारतीय राष्ट्रवाद, नारी स्वाभिमान और स्वतंत्रता चेतना की अमर प्रेरणा है।

संदर्भ सूची :

1. Christopher Hibbert, The Great Mutiny: India 1857, Penguin Books, London.
2. W. Garden Alexander, History of the Indian Mutiny, London.
3. R. C. Majumdar, The Sepoy Mutiny and the Revolt of 1857, Orient Longman, New Delhi.
4. S. N. Sen, Eighteen Fifty&Seven, Publications Division, Government of India, New Delhi.
5. K. K. Datta, Women in India’s Freedom Struggle, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India, New Delhi.
6. Sumit Sarkar, Modern India 1885–1947, relevant reference to women’s resistance traditions, Macmillan India.
7. Rudrangshu Mukherjee. Awadh in Revolt, 1857–1858, Oxford University Press, New Delhi.
8. Tapti Roy, The Politics of a Popular Uprising: Bundelkhand in 1857, Oxford University Press.
9. National Archives of India, Records of the Indian Mutiny :1857, Government of India, New Delhi.

10. District Gazetteers of Uttar Pradesh, (Lucknow, Kanpur, Jhansi, Barabanki, Gonda, Muzaffarnagar) Government Publications.
11. अमृतलाल नागर, गदर के फूल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. विष्णुराव गोडसे, माझा प्रवास, महाराष्ट्र राज्य साहित्य एवं संस्कृति मंडल।
13. सुभद्रा कुमारी चौहान, झांसी की रानी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
14. बी. एल. ग्रोवर एवं अलका मेहता, आधुनिक भारत का इतिहास, एस. चंद एंड कंपनी, नई दिल्ली।
15. भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (ICHR), 1857 : Documents and Essays, नई दिल्ली।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 156-159

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

शिशुपालवध महाकाव्य में भाव एवं रसाभिव्यक्ति

डॉ. महेन्द्र कुमार
पूर्व शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
नव नालंदा महाविहार, नालंदा।

सर्गबन्धो भवेत् काव्यम् लक्षण के अनुसार महाकाव्य सर्गो में बंधा होता है। जिसमें न्यूनतम आठ सर्ग होने चाहिए तथा वीर, श्रृड्गार एवं शान्त इनमें से कोई एक रस प्रधान होना चाहिए। इस तरह सर्गबद्ध एवं बीररस प्रधान शिशुपालवध महाकाव्य है। श्रृड्गार एवं रोद्रादि रस उसी के अड्.गभूत होकर काव्य में प्रयुक्त हैं। महाकवि माघ के शिशुपालवध के इस वीररस से ओत–प्रोत इतिवृत्त में श्रृड्.गार लीलाओं के पूरे छः सर्गो के विस्तृत वर्णन से यह सिद्ध होता है कि महाकवि माघ वीररस की तरह श्रृड्.गार रस के भी सिद्धहस्त कवि थे।

महाकवि माघ का मन वीररस की तरह श्रृड्.गार में भी अत्यधिक रमा हुआ सा है तथापि उन्होंने रीत श्रृड्.गार का ही अधिक वर्णन किया है। उनके षड्ऋतु वर्णन, आरामविहार, मदिरापान, जलक्रीडा, रात्रिवर्णन आदि के लिए श्रृड्.गार के उद्दीपन की दृष्टि से ही लिखे गये प्रतीत होते हैं। यत्र–तत्र विप्रलम्भ श्रृड्.गार का भी प्रयोग किया है। महाकवि माघ के श्रृड्.गारिक पदों की स्निग्धता अत्यनत मनोहारिणी है। यथा–

यां यां प्रियः प्रैक्षत कातराक्षी, सा सा ह्रिया नम्रमुखी ब्रभूव।
निःशड्.कमन्या सममाहितेर्ष्या, स्तत्रान्तरे जघ्नुरमुं कटाक्षैः।।[1]

जिस जिस प्रेयसी को भगवान् श्रीकृष्ण ने देखा उसने लज्जा से सिर नीचे कर लिया। इस पर अन्य युवतियाँ उन प्रियतम श्रीकृष्ण पर ईर्ष्यावश निर्भय होकर एक साथ अपने कटाक्षों से प्रहार करने लगीं। और–

चिररतिपरिखेदप्राप्तनिद्रासुखानां, चरममपि शयित्वा पूर्वमेव प्रबुद्धाः।
अपरिचलितगात्राः कुर्वते न प्रियाणामशिथिलभुजचक्राश्लेषभेदं तरुण्यः।।[2]

अर्थात् सुबह हो जाने पर रात्रिकालीन केलिक्रीडा से थककर सोये हुये दम्पत्तियों में से नायिकाएं सर्वप्रथम जागने के बार भी अपने शरीर को एतदर्थ नहीं हिलाती–डुलाती है कि कहीं उनके हाथ के हट जाने के कारण उनके पतिदेव की निद्रा भड्.ग न हो जाये।

महाकवि माघ के प्रकृति–निरीक्षण में भी उनकी विशिष्टता देखने को मिलती है। यद्यपि श्रीमाघ ने बव, उपवन, पर्वत, नदी, तालाब वृक्ष, लता, संध्या, प्रातः, रात्रि अन्धकार आदि प्रकृति के विभिन्न रूपों का चित्रण उद्दीपन के रूप में किया है, फिर भी वह इतना सजीव एवं हृदयस्पर्शी है कि कोई भी पाठक उसमें डूब जाता है। शिशुपालवध महाकाव्य का नवां और ग्यारहवां सर्ग इस मायने में द्रष्टव्य है। नवम् सर्ग में संध्याकाल का वर्णन करते हुए महाकवि ने लिखा है कि संध्याकाल में पश्चिम दिशा नये कुंकुम के समान लाल बादलों से व्याप्त हो

गयी है। समस्त दिड़्.मण्डल भी सूर्यरश्मियों से परिव्याप्त हो गया है। यथा–

नवकुंड़्.कुमारूणपयोधरया, स्वकरावसक्तरूचिराम्बरया।

अतिसक्तिमेत्यवरूणस्य दिशा भृशमन्वरज्यदतुषारकरः।।[3]

इसी तरह एकादश सर्ग में कहाकवि माघ प्रातः काल की विदाई उषा पर उसका अनुगमन करती हुई ऐसी शोभायमान हो रही है, जैसे वह रात्रि की सद्योजाता पुत्री हो। लाल कमलों की पड़्.कतयाँ तथा पंखुड़ियाँ मानों उस सुन्दरी की सुन्दर हथेली तथा उंगलियाँ हों, घूमती हुई भ्रमर पंक्ति उसके सुन्दर नेत्रों के काजल हों, पुष्पित कमल मानों उसके विशाल नेत्र हों औार पक्षियों का कलरव मानों उसका सुन्दर गीत हों तद्यथा–

अरूणजलजराजीमुग्धहस्ताग्रपादा बहुलमधुपमालाकज्जलेन्दीवराक्षी।

अनुपततिविरावैः पत्रिणां व्याहरन्ती, रजनिमचिरजाता पूर्वसंध्यासुतेन।।[4]

ऐसे ही ग्यारहवें सर्ग में ही उषाकाल का वर्णन करते हुए लिखा है कि पूर्वी क्षितिज पर सूर्य की विशाल गोलाकृति दिखायी दे रही है और उसकी किरणें सभी दिशाओं में व्याप्त हो रही है। यथा–

विवतपृथुवरत्रातुल्यरूपैमयूखैः, कलश इव गरीमान् दिग्भिराकृष्यमाणः।[5]

माघ की अलड़्.कार योजना बड़ी भावगर्भित और प्रीाावोत्पादक है। उन्होंने महाकाव्य की शास्त्रीय परम्परा के निर्वाह के लिए ही नहीं, अपितु आत्माभिरुचि से अपने महाकाव्य में प्रसंगानुसार नये–नये अलंकारों की सुन्दर योजना की है। उनकी कविता में स्वभाविक रूप से समाविष्ट ये अलड़्.कार काव्यरसिकों के आकर्षण के मुख्य केन्द्र रहते आये हैं। उन्होंने मुख्य रूप से उपमा, उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, समासोक्ति, स्वभावोक्ति, रूपक, श्लेष और अर्थान्तरन्यास आदि विभिन्न अलड़्.कारों का अत्यन्त गहरायी से निरुपण किया है। चित्रकाव्य के सन्दर्भ में निहित शब्दालड़्.कारों की शोभा भी अपने ढंग की अनुपम है। उदाहरणार्थ अनुप्रास अलड़्.कार का कितना सुन्दर निरूपण इ सपद्य में दिखलाया गया है–

मधुरया मधुलोधितमाधवी, मधुसमृद्धिसमेधितमेधया।

मधुकराड़्.गनया मुहुरून्मदध्वनिभृता निभृताक्षरमुज्जगे।।[6]

अर्थात् वसन्तागमन के कारण समृद्ध माधवी लता के पराग से मस्त भ्रमरी उन्मत्त ध्वनि को धारण करती हुई स्थिर और मधुर अक्षरों में गा रही है।

इस तरह माघ के महाकाव्य में महाकवियों की पूर्व परम्परा का सुनिर्वाह होता हुआ भी भावी परम्परा के लिए नये भाव और नयी शैली का उत्तम समावेश हुआ मिलता है। उनके उत्तरवर्ती सभी कवियों, महाकवियों यहाँ तक कि काव्य की अन्य विधाओं के रचनाकारों की कृतियों पर भी माघ के असाधारण काव्य कर्म का प्रभाव परिलक्षित होता है। वीररस प्रधान माघ काव्य के वीर रस सम्बन्धी कुछ उदाहरण–

आयन्तीनामविरतरयं राजकानीकिनीनां, मित्थं सैन्यैः सममलघुभिः श्रीपतेरूर्मिमभ्दिः।

आसीदोघैर्मुहुरिव महद्वारिधेरापगानां दोलायुद्धंकृतगुरूतरध्वानमौद्धत्यभाजाम्।[7]

निरन्तर वेगपूर्वक दौड़ती हुई एवं उद्धत राजाओं की सेनाओं का बड़े–बड़े तरड़्.गों वाली भगवान् श्रीकृष्ण की सेनाओं के सभी अत्यन्त कोलाहल के साथ इस प्रकार युद्ध होने लगा, जिस प्रकार निरन्तर वेगपूर्वक आगे बढ़जी हुई नदियों का समुद्र के बड़े–बड़े तरड़्.गों वाले प्रवाहों से गम्भीर ध्वनि के साथ संघात (टक्कर) होता है। महाकवि माघ का अट्ठारहवां सर्ग युद्ध वर्णनों के पूर्वरड़्.ग की साज–सज्जा, सेनाओं के चलने तलवारों के चमकने,

हाथियों के चिंघाड़ने तथा योद्धाओं के द्वंद्व युद्ध में पिल पड़ने के चित्रवत् वर्णनों के लिए प्रशंसनीय है। इसी तरह उन्नीसवें एवं बीसवें सर्ग में वीररस से ओत–प्रोत पद्यों का उल्लेख किया गया है। उन्नीसवें सर्ग मं एकाक्षर, द्वयक्षर आदि श्लोकों का अत्यन्त ही सूक्ष्म विवेचन दिखलाई पड़ता है। यथा–

राजराजी रूरोजाजेरजिरेऽजोऽजरोऽरजाः।

रेजारिजूरजोर्जार्जी रराजर्जुरजर्जरः।।[8]

अर्थात् आज, वृद्धावस्था से रहित, रजोगुणहीन, जेजस्वी शत्रुओं की हिंसा से उत्पन्न बल को प्राप्त करने वाले, सरल और दृढ़ श्रीकृष्ण भगवान् ने युद्ध के प्राड्.गण में राजश्रेणियों को भग्न कर दिया और शोभने लगे। इसी तरह महाकवि माघकृत शिशुपाल वध महाकाव्य में वीररस के उदाहरण भरे पड़े हैं। कवि के पद–विन्यास की धीर और गम्भीर गति उनके चित्र में एक अपूर्व शोभा को जन्म देती है। प्रथम सर्ग में रावण के साथ युद्ध में भगवान् विष्णु एवं वरुण के युद्ध को कुछ इस तरह बड़े सूक्ष्म ढंग से चित्रित किया है–

बृहच्छिलानिष्ठुरकण्ठघट्टनाद् विकीर्णलोलाग्निकणं सुरद्विषः।

जगत्प्रभोरप्रसहिष्णु वैष्णवं, न चक्रमस्याक्रमताधिकन्धरम्।।[9]

अर्थात् विशाल पाषाणखण्ड के समान कठोर कण्ठ में टकराने से निकली हुई चञ्चल चिनगारियों वाला असहनशील भगवान् विष्णु का सुदर्शन चक्र संसार के अधिपति इस देवशत्रु दशानन की गर्दन में नहीं घुस सका (काट नहीं सका) और–

रणेषु तस्य प्रहिताः प्रचेतसा, प्रहर्तुरिवोरगराजरज्जवो, जवेन कण्ठं सभया प्रदेदिरे।।[10]

अर्थात् युद्ध के समय वरुण रावण पर नागपाश फेंकता है, आते हुए उस नागपाश को देखकर रावण क्रोध से हुड्.कार करता हे तो नागपाश डरकर लौट पड़ता है और वह नागपाश भयभीत होकर वेगपूर्वक प्रहार करने वाले वरुण के गले में जाकर लिपट जाता है।

इस प्रकार महाकवि माघ ने रसाभिव्यक्ति के अनुकूल भावाभिव्यड्.जना भी की है। वीर रस के स्थायीभाव उत्साह का बीज प्रथम सर्ग में दिखलाया गया है। प्रथम सर्ग में शिशुपाल वध काव्य में युधिष्ठिर, भीष्म तथा कृष्ण के प्रति कठोर वचन उद्दीपन विभाग हैं और सप्तदश सर्ग में अनुभवों का वर्णन किया गया है। श्रृड्.गार के आलम्बन विभाग तथा अनुभावों का भी कवि ने सफल चित्रण किया है।

सारांश में हम कह सकते हैं कि माघ वीररस तथा श्रृड्.गार रस दोनों के ही सफल चित्रकार हैं। वे प्रत्येक पक्ष का सूक्ष्म वर्णन करते हैं। वह चाहे काव्य की भूमिका हो अथवा प्रकृति वर्णन, श्रृड्.गार वर्णन, गज–अश्व शास्त्र आदि का वर्णन आदि। अतः ये सर्वमान्य है कि महाकवि माघ भाव एवं रसाभिव्यक्ति के एक सिद्धहस्त कवि है।

सन्दर्भ :

1. शिशुपालवध महाकाव्य – 3/16
2. शिशुपालवध महाकाव्य – 1/13
3. शिशुपालवध महाकाव्य – 9/7
4. शिशुपालवध महाकाव्य – 11/40

5. शिशुपालवध महाकाव्य – 11/44
6. शिशुपालवध महाकाव्य – 6/20
7. शिशुपालवध महाकाव्य – 18/80
8. शिशुपालवध महाकाव्य – 19/102
9. शिशुपालवध महाकाव्य – 1/54
10. शिशुपालवध महाकाव्य – 1/56

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 160-166

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

सालवती और पुरूष चरित्रम

डॉ. नीतू गुप्ता
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
दौलत राम कॉलेज।

वेश्यावृत्ति समाज में प्रचलित ऐसा पेशा है जिसने स्त्रियों के जीवन को अंधकारमय बनाने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ी। प्राचीनकाल की गणिकाओं से लेकर वर्तमान समय की सेक्स वर्कर तक सभी स्त्रियाँ समाज में इस पेशे में जबरन धकेल दी जाती रही हैं। समाज इन स्त्रियॉ के चरित्र को दिन के समय कितनी भी हीन दृष्टि से देखे लेकिन रात्रि के गहराते अंधकार के बीच इनका वजूद प्रकाशमान होने लगता है, यही कारण है कि यह सभ्य समाज ऐसी स्त्रियॉ के अस्तित्व को पूरी तरह न तो समाप्त करता है और न ही इन्हें कोई सम्मानजनक स्थान ही प्रदान कर पाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि इन स्त्रियॉ को बचाए रखने में पुरुषों ने बड़ी साधना की है। पुरुष इनमें अपने लिए कुछ अतिरिक्त अवसरों की तलाश में लीन रहते हैं, उन्हें एक स्थान से यदि कुछ नहीं मिलता तो वे उसे दूसरे स्थान पर खोज निकालने में माहिर हैं, परिवार में यदि सम्मान नहीं मिला तो इनके यहाँ मिलेगा, पत्नी से यदि मनचाहा प्रेम नहीं मिला तो यहाँ भरपूर अवसर है उसे प्राप्त करने का। दूसरे शब्दों में पुरुषों ने केवल अपने मनोरंजन के साधन के रूप में इन वेश्याओं का चलन आरम्भ किया तथा समाज में ऐसे वर्ग की आवश्यकता निरंतर बनी रहने दी। इतिहास में राजनर्तकी, गणिका एवं नगरवधू आदि अनेक नामों से इन्हें विभूषित किया गया। जिस पुरुष के पास जैसा वैभव था उसी के अनुसार इन वेश्याओं के पद और नाम निर्धारित होते रहे।

इस संदर्भ में वैशाली की नगरवधू के रूप में विख्यात आम्रपाली एक ऐसा नाम है जो इतिहास के पन्नों पर दर्ज होकर पुरुषों की रूप लोलुपता को उजागर करता है। आम्रपाली अकेली ऐसी स्त्री नहीं थी जो पुरुषों के निहित स्वार्थ के चलते वेश्या बना दी गयी वरन इतिहास अनेक ऐसी मजबूर स्त्रियॉ से भरा पड़ा है जहाँ कुलवधू घोषित होते–होते वे कोठे पर बैठा दी गईं।

स्त्रियॉ की विवशता एवं पुरुषों के धृष्ट स्वभाव को आधार बनाकर लिखी गयी जयशंकर प्रसाद की कहानी 'सालवती' इस विषय को पूरे यथार्थ के साथ प्रस्तुत करती है। प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन का आरम्भ आदर्श एवं उच्च विचार के साथ करना चाहता है किन्तु, लाचारी और भूख उसे सदैव आसान रास्ता (जिसे समाज गलत भी कह सकता है) चुनने पर विवश करते हैं। सालवती भी घर में खाने को कुछ भी बाकि न रहने पर भी उसके पिता उसे मजदूरी का रास्ता चुनने से रोकते हैं। यहाँ जीवन के उस आदर्शात्मक शिखर पर साहित्यकार पाठक को लेकर चलता है जहाँ भूख के नाम पर हर गलत कार्य को मंजूरी नहीं दी जा सकती। यही बात सालवती

के पिता धवलयश उसे समझाते हुए कहते हैं – ''फिर यह कृतज्ञता और दया का भार तू उठावेगी! वही हम लोगों की सन्तान जिन्होंने देवता और स्वर्ग का भी तिरस्कार किया था, मनुष्य की पूर्णता और समता का मंगलघोष किया था, उसी की सन्तान अनुग्रह का आश्रय ले?''[1] घोर दरिद्रता में भी किस तरह मनुष्य अपने स्वाभिमान को बचाकर जीवन व्यतीत कर सकता है, प्रस्तुत कहानी इसका जीता जागता उदाहरण है। जीवन में समृद्धि ही सब कुछ नहीं होती वरन जीने के लिए कोई सुन्दर कारण होना चाहिए जिससे मनुष्य का मस्तक सदैव ऊँचा उठा रहे। उसे अपने आप पर कभी शर्मिंदगी महसूस न हो। हर परिवार की एक परंपरा होती है, कुछ मर्यादाएं होती हैं जिनका निर्वहन करने की उम्मीद आने वाली संतति से की जाती है। सालवती की यह विशेषता है कि वह अपने पिता के दिखाए प्रत्येक मार्ग का अनुसरण करती है और अपने जीवन को उच्च आदर्शों की कसौटी पर चलाने का प्रयास करती है।

लेखक का जीवन के प्रति दृष्टिकोण बिलकुल स्पष्ट है। वह यह भली–भांति जानते हैं कि सुखी जीवन का मूल आधार धन सम्पदा है। उसी अनुपात में यदि यह सम्पदा न हो तो मनुष्य का जीवन नर्क के समान है। अतः इस नर्क से मुक्ति पाने के लिए मनुष्य को निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए। इस सन्दर्भ में प्रसाद जी लिखते हैं – ''आर्थिक पराधीनता ही संसार में दुःख का कारण है। मनुष्य को उससे मुक्ति पानी चाहिए''।[2] जीवन का यह मूलमंत्र इससे पूर्व भक्तिकाल में तुलसीदास जी ने दे दिया था। उनका स्पष्ट मानना था कि ''नहिं दरिद्र सम दुःख जग माहीं।''[3] अर्थात् जगत में दरिद्रता के समान कोई दुःख नहीं है। महादेवी वर्मा का भी यही मानना है कि स्त्री के अनेक दुःखों का कारण यह आर्थिक परतंत्रता ही है। पितृसत्ता ने सभी अधिकार सहज रूप से पुरुष को दे दिये और नारी को उसके अधीन बनाकर रख दिया। इस सम्बन्ध में पुरुष का भरतार नाम स्वतः सिद्ध होता गया। वास्तव में यह ''विवश आर्थिक पराधीनता अज्ञात रूप में व्यक्ति के मानसिक तथा अन्य विकास पर ऐसा प्रभाव डालती रहती है, जो सूक्ष्म होने पर भी व्यापक तथा परिणामतः आत्मविश्वास के लिए विष के समान है।''[4] प्रेमचंद का इस सम्बन्ध में स्पष्ट मत है ''जब दूसरे के पाँवों–तले अपनी गर्दन दबी हुई है, तो उन पाँवों को सहलाने में ही कुशल है।''[5]

प्रसाद और प्रेमचंद की लेखन शैली में भाषाई स्तर पर तो अंतर मिलता ही है किन्तु भावनात्मक स्तर पर भी ये दोनों साहित्यकार एक–दूसरे से पूर्णतया भिन्न हैं। प्रेमचंद के पात्र पाठक को अपने आसपास के माहौल में कहीं भी घूमते दिखाई दे सकते हैं। कहानियों को पढ़कर ऐसा लगता है जैसे किसी एक मेले में कहीं कोई लाचार और स्वाभिमानी हामिद अपनी बूढ़ी दादी के लिए चिमटा खरीद रहा है। इसी तरह व्यवस्था के हाथों घिसे हुए घीसू और माधव भूख से बेहाल जल्दी–जल्दी उबले हुए आलू सटक रहे हैं। ये सभी पात्र अपनी स्वाभाविकता के साथ समाज में मौजूद हैं। लेकिन प्रसाद की कहानियों के पात्र अतीत की घटनाओं को साकार करते प्रतीत होते हैं। ये पात्र किसी भी रूप में साधारण नहीं है। यहाँ राजा और जनता, समाज के बनाये नियमों के अनुरूप बंधे हुए आचरण करते हैं। कही कोई राजा किसी मधुलिका का खेत जोतता है तो कहीं काशी का गुंडा रानी पन्ना के प्राणो की रक्षा करता है। वास्तव में प्रेमचंद का उद्देश्य समाज के कटु यथार्थ के सामने पाठक को लाकर खड़ा करना था, जिससे पाठक प्रत्येक पात्र के साथ अपनी संवेदना को सीधे रूप में जोड़ सके, जबकि प्रसाद की दृष्टि पात्रों के मनोभावों को पाठकों के सम्मुख रखती है। वह पाठक को एक ऐसे कल्पना लोक में ले जाकर खड़ा कर देती है जहाँ वह मानव मन की सूक्ष्म से सूक्ष्म भावना का अध्ययन कर सके। हालाँकि यथार्थ की

कड़वाहट प्रसाद जी के यहाँ कम नहीं है फिर भी उनमें नारी मन की भावनाओं को गहराई से पकड़ने में लेखक काफी हद तक सफल हुए हैं।

प्रसाद जी के साहित्य की यह विशेषता है कि वे तर्क और विचार की कसौटी पर खरे उतरते हैं। स्वयं प्रसाद जी के भीतर मानव स्वभाव को परखने की जो समझ थी वह समझ अक्सर उनके साहित्य के माध्यम से पाठकों के भीतर भी विकसित होती प्रतीत होती है। लेखक अक्सर एक ऐसी सभा रचते हैं जिसमे अलग–अलग विधाओं के पारंगत अपनी तर्कशीलता के आधार पर अपनी विद्वत्ता का परिचय देते हैं। कोई विद्वान् पूर्ण कश्यप के सिद्धांत अक्रियवाद को मानता है तो कोई तीर्थंकर प्रबुद्ध कात्यायन का अनुगत है। किसी का पूर्ण विश्वास नियतिवाद में है तो कोई मैत्रायण विदेहों के सुनिश्चित आत्मवाद को मानने वाला है। भले ही ये सभी अलग–अलग मतवाद के अनुयायी है किन्तु जब राष्ट्रवाद की बात आती है तो इनके मतभेद कोई महत्व नहीं रखते। यही कारण है कि न चाहते हुए भी सालवती के सम्बन्ध में ये कुलपुत्र विद्वान् सारे समाज के विरुद्ध जाकर कोई निर्णय नहीं ले पाते।

लेखक ने वैशाली गणतंत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को कहानी का आधार बनाया है जिसमें आम्रपाली की कथा के कुछ बिन्दुओं को साकार करने का प्रयास किया गया है। आम्रपाली जिस प्रकार अपने अपरिमित सौंदर्य के अभिशाप के कारण किसी एक पुरुष के घर की कुलवधू न बनकर समस्त वैशाली की नगर वधू घोषित करके अपमानजनक जीवन जीने पर विवश कर दी गयी थी उसी प्रकार कुछ सौंदर्यलोलुप पुरुषों के धूर्तता भरे स्वभाव के कारण फिर एक बार एक सुन्दर युवती सालवती सौंदर्य प्रतियोगिता के नाम पर वेश्या बनने पर मजबूर कर दी जाती है। ये सौंदर्य प्रतियोगिताएं समाज के सामने एक प्रश्न चिन्ह खड़ा करती हैं कि क्या ये वास्तव में नारी स्वातंर्त्य की पक्षधर हैं? अथवा केवल पुरुष के मनोरंजन का साधन? इन प्रतियोगिताओं से वास्तव में लाभ किसे मिल रहा है? क्या इनके माध्यम से नारी अपनी देह पर अपना अधिकार सिद्ध कर पा रही है? कहीं ऐसा तो नहीं ये केवल नारी के अंगप्रदर्शन का एक माध्यम भर हो जिससे पुरुष निर्द्वन्द्व भाव से सबके समक्ष उसके रूप का रसपान कर सके? एक स्त्री के लिए सौंदर्य प्रतियोगिता में जीतने के मायने क्या होने चाहिए? क्या उसे अपने सम्बन्ध में निर्णय लेने का अधिकार मिलना चाहिए? या सर्वसम्मति से उसकी कीमत लगाकर उसे अनेक पुरुषों के भोग–विलास का साधन बना देना चाहिए? जो उस कीमत को चुका दे वही उसका एक रात्रि का ग्राहक बन जाता है। यह जो सारा निर्णय वैधानिक स्तर पर लिया जाता है इसमें केवल इस बात का निर्धारण नहीं होता कि उस स्त्री से जो संतान उत्पन्न होगी, वह किसकी मानी जाएगी? क्या वह बड़ी होकर समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त कर पायेगी? क्या उस संतान का दायित्व राज्य का नहीं होना चाहिए?

ये कहानी समाज के सामने अनेक प्रश्न खड़े करती है कि स्त्री जो समाज का महत्वपूर्ण अंग है, जिसके अभाव में समाज का गठन असंभव है, उसकी समाज में क्या भूमिका है? आखिर समाज उसके किस अपराध का दंड उसे देता है? समाज में जो नियम बनाये जाते हैं वो किसकी सुविधा को ध्यान में रखकर बनाये जाते हैं? इस सम्बन्ध में महादेवी वर्मा की यह टिप्पणी सार्थक प्रतीत होती है कि ''एक ओर सामाजिक व्यवस्थाओं ने स्त्री को अधिकार देने में पुरुष की सुविधा का विशेष ध्यान रखा है, दूसरी ओर उसकी आर्थिक स्थिति भी परावलम्बन से रहित नहींरही।''[6]

समाज का यह नियम है कि इसमें कोई स्त्री अकेले जीवन का निर्वहन नहीं कर सकती। उसके ऊपर

किसी न किसी पुरुष का साया होना अत्यंत आवश्यक है। यदि पिता, भाई, पति या पुत्र में से कोई भी संरक्षक न हो तो समाज उसके सम्बन्ध में स्वेच्छा से कोई भी निर्णय लेने का अधिकार रखता है। भले ही वह निर्णय स्त्री को मान्य हो चाहे न हो अथवा वह स्त्री के पक्ष में हो या न हो। सालवती की स्थिति भी इसके विपरीत नहीं है। जब भरी सभा में उसके निष्पक्ष रूप से सौंदर्य प्रतियोगिता जीतते ही अभयकुमार उसका पाणिग्रहण करने को तत्पर हो जाता है बिना उससे पूछे एवं बिना इस बात की परवाह किये कि सालवती उसे पसंद भी करती है या नहीं। सालवती का दोष केवल इतना है कि वह अपरिमित सुंदरी है, अकेली है, किसी से कोई अनुग्रह लेना उसके संस्कारों में नहीं है, इन सबसे ऊपर स्वतंत्र विचारों की स्वामिनी है। वह सौंदर्य और बुद्धि का संगम है तथा अपने वज्जि संघ के प्रति समर्पित है। वह अपने पिता के दिए संस्कारों के प्रति इतनी संवेदनशील है कि अभय कुमार द्वारा दी जाने वाली मोतियों की माला को भी लेने से इंकार कर देती है। क्योंकि किसी का अनुग्रह लेना उसे स्वीकार नहीं जबकि इससे अभय कुमार के पुरुषोचित अहं को गहरी चोट लगती है और वह सालवती से इस अपमान का बदला अपने ढंग से लेने का निर्णय लेता है। पुरुष का यह स्वभाव है कि वह न नहीं सुन पाता, उसे प्रत्येक स्थिति में हाँ सुनना ही पसंद है। जैसे ही स्त्री के मुख से न निकली पुरुष का पौरुषत्व जाग उठता है। जिसके लिए वह सौंदर्य प्रतियोगिता के नाम पर अनेक छलावे रचता है। स्त्री अपने सहज स्वभाव के कारण उस छलावे को पहचान नहीं पाती और उसे अपनी योग्यता प्रदर्शित करने का माध्यम समझ लेती है और प्रत्येक निर्णय को सिर झुकाकर स्वीकार कर लेती है।

कहानी में लेखक ने सालवती के ममत्व का बड़ी निर्दयता से गला घोंट दिया। जिस दिन सालवती को यह ज्ञात होता है कि वह गर्भवती है, उसी दिन से वह स्वयं को बंदी की भांति अपने महल में कैद कर लेती है। इतना ही नहीं पुत्र के जन्म लेते ही ''उसने कोमल फूलों की टोकरी में अच्छे वस्त्रों में लपेटकर उस सुकुमार शिशु को एक ओर गोधूलि की शीतल छाया में रखवा दिया। वैद्य का मुँह सोने से बन्द कर दिया गया।''[7] यहाँ सालवती की अवस्था महाभारत की पात्र कुंती के समान दिखाई देती है। राजकुमारी कुंती विवाह से पूर्व उत्पन्न हुई संतान को लोक लाज के भय से नदी में बहा देती है। लेकिन सालवती तो घोषित रूप से वेश्या है, वह चाहती तो अपने पुत्र को अपने साथ रख सकती थी, परन्तु वह ऐसा नहीं करती। कदाचित इसका एक कारण यह हो सकता है कि सालवती स्वयं नहीं जानती थी कि उस बालक का पिता कौन है? अथवा उस बालक के वेश्या का पुत्र कहलाने की शर्मिंदगी के चलते वह उसे अपने से दूर करना ही उचित समझती है। क्योंकि माँ बनना प्रत्येक नारी के लिए प्रसन्नता एवं आत्मगौरव का विषय है ऐसे में यदि किसी माँ को अपनी नवजात संतान मृत्यु की गोद में छोड़नी पड़े तो उसके लिए बड़ा ही हृदयविदारक दृश्य होगा, जिसे कोई भी माता स्वप्न में भी देखना पसंद नहीं करेगी। ऐसे में यह अंदाज लगाना सरल होगा कि वह समाज कितना हृदयहीन होगा जो स्त्री को ऐसी दशा तक लाकर छोड़ दे। यह प्राकृतिक रूप से सर्वविदित है कि कोई स्त्री अकेले संतानोत्पत्ति नहीं कर सकती उसके लिए पुरुष की आवश्यकता होती है। ऐसे में दंड का विधान भी दोनों का बराबर होना चाहिए, जबकि सामाजिक वास्तविकता से सभी परिचित है। नारी मन की भावनाओं का बारीकी से विश्लेषण करने वाले प्रसाद जी कहीं भी सालवती की ममता को व्यक्त नहीं करते। शायद लेखक की दृष्टि उसके वेश्यापन की ग्लानि को उभारने की तरफ ज्यादा रही। हालाँकि कहानी के अंत में लेखक बड़े नाटकीय ढंग से बालक विजय और उसकी माता सालवती का मिलन करवा देते हैं।

प्रसाद जी नारी मन के साथ–साथ पुरुष–चरित्र को गढ़ने में भी सिद्धहस्त हैं। उनके पुरुष पात्र जब भी पाठकों के सम्मुख आते हैं, अपने पूरेपन के साथ मौजूद रहते हैं। यदि कहीं भी उनका चरित्र हल्का पड़ता है तो तुरंत उनके मन का पश्चाताप लेखक व्यक्त करवा देते हैं और वे पुनः अपने स्वामित्व को सिद्ध कर देते हैं। ऐसा चरित्र अभय कुमार का भी गढ़ा गया है। वह वैशाली का उपराजा है। इस पद को पाने के लिए वैशाली में सेनापति मणिधर समेत अनेक गणनायक लालायित हैं। किन्तु अभय कुमार किसी और को पाने के लिए इच्छुक है। वह प्रथम दर्शन में ही सालवती के सौंदर्य और वाक्पटुता का प्रशंसक बन जाता है तथा उसे पाने के लिए अनेक मार्ग खोजने लगता है। वह भली प्रकार जानता था कि ''नगर के उत्सव का प्रबन्ध उसी के हाथ में था। दूसरा प्रभात अपनी तृष्णा में लाल हो रहा था। अभय के हृदय में निदारुण अपमान भी चुभ रहा था, और चुभ रहा था उन दार्शनिक कुलपुत्रों का सव्यंग्य परिहास, जो सालवती के अनुग्रह न लेने पर उसकी स्वतन्त्रता की विजय समझकर और भी तीव्र हो उठा था।''[8] अभय कुमार का प्रेम व्यक्त करने का जो ढंग था वह अधिकारपूर्ण था। इसलिए उसके द्वारा सोच–समझकर चली गयी चाल भी उलटी पड़ जाती है। परिणामस्वरूप वज्जी संघ के अनोखे नियम ''समानता और प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों की लगन''[9] की आड़ में सभी कुलपुत्रों की रूपलोलुपता का भुगतान सालवती को करना पड़ता है। इस प्रकार अनजाने ही सही अभय कुमार सालवती के वेश्या बनने का कारण सिद्ध होता है जिससे सालवती उससे प्रेम करने के स्थान पर घृणा करने लगती है। इतना ही नहीं जब अभय कुमार युद्ध करने के लिए तत्पर होता है तो सालवती उसका सामना भी नहीं करती केवल मजबूरी में उसकी और माला फेंकती है।

कहानी में एक तरफ अभय कुमार है तो दूसरी तरफ मणिधर जैसा चरित्र भी लेखक ने गढ़ा है। जो स्त्री को केवल किसी एक पुरुष की पत्नी बनते हुए देख नहीं पाता। उसकी वासनापूर्ति का यह चरम ही कहा जायेगा कि कुलीन स्त्री को वेश्या बनाकर सारे समाज के मनोरंजन का साधन बना देता है। मणिधर वैशाली के सेनापति के पद पर सुशोभित है अर्थात राष्ट्र की सुरक्षा की जिम्मेदारी उसके कन्धों पर है। जबकि वास्तविकता यह है कि वह इतने गरिमामयी एवं महत्वपूर्ण पद के योग्य नहीं है। क्योंकि युद्ध क्षेत्र में भी उसके मन–मस्तिष्क में सालवती ही बसी हुई है। इतना ही नहीं वह युद्ध क्षेत्र से सालवती को पत्र भी लिखता है, जिसमे उसके प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करता है। यह प्रेम निवेदन सालवती के मन में एक अजीब सी घृणा और मणिधर के प्रति वितृष्णा का भाव भर देता है। वह उसे अनेक प्रकार से कोसती है ''रूप–ज्वाला के शलभ! तुझे तो जल–मरना था। तो उसे अपराध का दण्ड मिला।''[10] जिस देश का सेनापति युद्ध के आह्वान पर स्त्री के रूप और सौंदर्य के पाश में बंधा रहेगा वह देश की सुरक्षा किस प्रकार कर पायेगा? बल्कि ऐसे देश को बंदी बनने में देर नहीं लगेगी। परिणामस्वरूप मणिधर युद्ध में मारा जाता है।

ऐसी परिस्थिति में देश की बागडोर अभय कुमार के मजबूत हाथों में आ जाती है। प्रसाद जी यहाँ स्पष्ट लिखते हैं कि ''जिस देश के दार्शनिक भी अस्त्र ग्रहण कर सकते हैं वह पराजित नहीं होगा।''[11] अभय कुमार का साथ देने के लिए वही आठों दार्शनिक कुलपुत्र हथियार संभालकर युद्ध के लिए तत्पर होते हैं। लेखक ने आठों कुलपुत्रों की योजना अभय कुमार के चरित्र को विस्तार देने के लिए की है। अभय कुमार जब सौंदर्य प्रतियोगिता का स्वांग रचता है तब यही आठों सालवती को प्रतियोगिता में लेकर जाते हैं। कहानी के अंत में वैशाली की आठ वेश्याओं का वरण करने के लिए यही कुलपुत्र प्रस्तुत दिखाई देते हैं। अभय कुमार जो अभी

तक पश्चाताप की अग्नि में जल रहा था अपने पालक पुत्र विजय के लिए किसी स्त्री का हाथ माँगता है तो सालवती से उसका परिणय करवाकर प्रसाद जी कहानी को एक सुखद अंत की तरफ मोड़ देते हैं।

कहानी का सुखद अंत लेखक के आदर्शात्मक दृष्टिकोण को अपनाता है जो सहजता से पाठक के गले के नीचे नहीं उतरता। क्या ये संभव है कि आठ दार्शनिक कुलपुत्र जो युद्ध में विजयी होकर आये है तथा जिनकी समाज में मान–प्रतिष्ठा है वे अचानक प्रत्यक्ष रूप से सारे समाज के सामने किसी वेश्या का हाथ थाम लें? इस आश्चर्य का कारण है कि पितृसत्ता ने पुरुष का स्वाभाव इतना सहूलियत भरा बनाया है कि वह किसी वेश्या को अपने निजी मनोरंजन के लिए किसी अन्य स्थान पर तो रख सकता है किन्तु गृहस्वामिनी का दर्जा देकर उसे पत्नी का सम्मान देना थोड़ा असामान्य प्रतीत होता है। हालाँकि अभय कुमार मन के भीतर ही भीतर सालवती से प्रेम तो करता है किन्तु प्रत्यक्ष रूप से उसके समक्ष स्वीकार नहीं कर पाता। यह भी संभव है कि सालवती की वर्तमान स्थिति के लिए वह स्वयं को दोषी मानता है। अभय कुमार का यही पश्चाताप उसे एक अनजान शिशु के पालन के लिए प्रेरित भी करता है। इसी कारण सालवती का वरण करना उसके लिए किसी वरदान–प्राप्ति से कम नहीं है।

यह समाज की विडम्बना ही कही जाएगी जहाँ एक स्त्री के दर्द को समझने में अन्य स्त्रियां नाकाम हो जाएँ। पता नहीं स्त्री समाज को इतनी मामूली सी बात कब समझ आएगी कि कोई भी स्त्री अपनी स्वेच्छा से वेश्या नहीं बनती। इसके पीछे कोई न कोई मजबूरी होगी जो वह ऐसा काम करती है। सालवती के वेश्या बनने में उसकी मर्जी नहीं थी किन्तु उसके पश्चात् यह सौंदर्य प्रतियोगिताएं स्त्रियों में लोकप्रिय होने लगी। अन्य स्त्रियों ने इसे धन और ऐश्वर्य प्राप्ति का सरल मार्ग बना लिया। इसमें हास्यास्पद बात यह है कि अन्य स्त्रियों द्वारा अपनाये गए सरल मार्ग का हेतु भी सालवती को घोषित किया जाता है। उसके महल से बाहर निकलते ही स्त्रियां अपने पतियों को समझाने तथा रोकने के स्थान पर उसे कोसते हुए कहने लगीं– ''तूने वेश्यावृति के पाप का आविष्कार किया है। तू कुलपुत्रों के वन की दावाग्नि की प्रथम चिनगारी है। तेरा मुँह देखने से भी पाप है! राष्ट्र के इन अनाथ पुत्रों की ओर देख! पिशाचिनी!''[12]

लेखक का स्त्री समाज के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण तब स्पष्ट होता है जब आठ वर्ष की ग्लानि के पश्चात् सालवती कैद से स्वयं को मुक्त करके दोबारा सौंदर्य प्रतियोगिता में भाग लेने जाती है। यहाँ स्त्री किस प्रकार अन्य स्त्री के दर्द और लाचारगी को न समझते हुए सारी सामाजिक विसंगतियों के लिए उसे दोषी मानकर दंड का विधान अपने हाथ में ले लेती है। किन्तु सालवती की यह विशेषता है कि वह उनका प्रतिकार न करके अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु आगे बढ़ती जाती है। यह संभव है कि किसी भी स्त्री को जीवन में छल मिले, किन्तु क्या यह आवश्यक है कि वह बाकि जीवन उस छल के कारण विक्षिप्त जीवन जीये? क्या वह स्थिति आदर्शात्मक नहीं होगी जब वह छल से प्राप्त अनुभव से अन्य स्त्रियों का जीवन सुखमय बनाये? वास्तव में वही जीवन परोपकारी माना जा सकता है जो दूसरों को अंधकार से निकालकर उनके जीवन में उम्मीद का प्रकाश फैलाये। सालवती इसी आदर्श को अपनाकर भरी राजसभा में सौंदर्य प्रतियोगिता जीतकर अन्य स्त्रियों को वेश्यावृत्ति के नर्क से बाहर निकाल लेती है। इतना ही नहीं उन्हें समाज में सम्मानित जीवन भी प्रदान करती है। प्रसाद जी कहानी के माध्यम से एक ऐसे समाज की संकल्पना करते हैं जहाँ देश को केवल बाहरी आक्रमणों से ही सुरक्षा की आवश्यकता नहीं है बल्कि देश के भीतर भी एक स्वस्थ समाज का निर्माण करना अत्यंत आवश्यक है। समाज

को सही मार्ग दिखाने के लिए ऐसे पुरुषों को आगे आना चाहिए जो नारी का सम्मान करना जानते हों। इसी से समाज उन्नति की ओर अग्रसर हो सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. प्रसाद ग्रंथावली – जयशंकर प्रसाद, सालवती पृ० 370
2. प्रसाद ग्रंथावली – जयशंकर प्रसाद, सालवती पृ० 370
3. श्रीरामचरित मानस – गोस्वामी तुलसीदास, उत्तरकाण्ड, गीताप्रेस, गोरखपुर, छंद सं० 7
4. श्रृंखला की कड़ियाँ – महादेवी वर्मा, स्त्री के अर्थ स्वातंत्र्य का प्रश्न, पृ० 110
5. गोदान – प्रेमचंद, पृ० 13
6. श्रृंखला की कड़ियाँ – महादेवी वर्मा, स्त्री के अर्थ स्वातंत्र्य का प्रश्न, पृ० 108
7. प्रसाद ग्रंथावली – जयशंकर प्रसाद, सालवती, पृ० 382
8. प्रसाद ग्रंथावली – जयशंकर प्रसाद, सालवती, पृ० 375
9. प्रसाद ग्रंथावली – जयशंकर प्रसाद, सालवती, पृ० 378
10. प्रसाद ग्रंथावली – जयशंकर प्रसाद, सालवती, पृ० 381
11. प्रसाद ग्रंथावली – जयशंकर प्रसाद, सालवती, पृ० 380
12. प्रसाद ग्रंथावली – जयशंकर प्रसाद, सालवती, पृ० 383

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 167-170

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

हरियाणा में छठा पंचायती राज चुनाव : लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के परिप्रेक्ष्य में एक समालोचनात्मक अध्ययन

सरिता
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग,
चौधरी बंसी लाल विश्वविद्यालय (भिवानी)

भारत में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की अवधारणा को संस्थागत स्वरूप 73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 के माध्यम से प्राप्त हुआ और पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया। हरियाणा में पंचायती राज संस्थाएं हरियाणा पंचायती राज अधिनियम, 1994 के अंतर्गत संचालित की गई। हरियाणा में छठा पंचायती राज चुनाव विशेष रूप से महिला राजनीतिक सहभागिता के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण रहा, क्योंकि इसमें 50 प्रतिशत आरक्षण नीति का प्रभाव व्यापक रूप से परिलक्षित हुआ। यह शोध–पत्र हरियाणा के छठे पंचायती राज चुनाव में महिलाओं की भागीदारी, प्रतिनिधित्व, सामाजिक–राजनीतिक प्रभाव, संरचनात्मक चुनौतियों तथा सशक्तिकरण की संभावनाओं का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन द्वितीयक स्रोतों, सरकारी आँकड़ों, निर्वाचन प्रतिवेदनों तथा पूर्ववर्ती शोध पर आधारित है। इस शोध में पाया गया कि आरक्षण नीति ने महिलाओं की मात्रात्मक भागीदारी को सुदृढ़ किया है, किंतु गुणात्मक सशक्तिकरण अभी भी सामाजिक–सांस्कृतिक अवरोधों से प्रभावित है।

मुख्य शब्द : पंचायती राज, महिला सशक्तिकरण, लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण, राजनीतिक भागीदारी।

लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति स्थानीय स्वशासन में निहित होती है। जब शासन व्यवस्था का विकेन्द्रीकरण होता है, तब निर्णय–निर्माण प्रक्रिया में जनता की प्रत्यक्ष भागीदारी सुनिश्चित होती है। भारत में पंचायती राज व्यवस्था ग्रामीण लोकतंत्र की आधारशिला है। 73वें संविधान संशोधन (1992) ने पंचायतों को संवैधानिक मान्यता प्रदान कर उन्हें त्रिस्तरीय संरचना–ग्राम पंचायत, पंचायत समिति एवं जिला परिषद के रूप में संगठित किया गया। हरियाणा राज्य में पंचायती राज संस्थाएँ 1994 के अधिनियम के अंतर्गत संचालित होती हैं। राज्य सरकार द्वारा महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण लागू किया जाना राजनीतिक समावेशन की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। छठा पंचायती राज चुनाव इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका महिला प्रतिनिधित्व पर सकारात्मक प्रभाव हुआ है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :

- हरियाणा के छठे पंचायती राज चुनाव की संरचना और विशेषताओं का विश्लेषण करना।
- महिला भागीदारी के मात्रात्मक और गुणात्मक आयामों का अध्ययन करना।

•□ महिला सशक्तिकरण की चुनौतियों और सुधारात्मक सुझाव प्रस्तुत करना।

हरियाणा में पंचायती राज व्यवस्था का ऐतिहासिक विकास :

आधुनिक युग में स्थानीय स्वशासन के जनक लार्ड रिपन द्वारा पारित श्नार्थ वेस्ट एक्ट' के अंतर्गत ग्राम पंचायत एक्ट, 1912 के माध्यम से हरियाणा को पंजाब ग्राम पंचायत में शामिल कर दिया गया। परंतु यह अधिनियम अपने निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रहा। 'ग्राम पंचायत अधिनियम, 1921' के माध्यम से ग्राम पंचायतों को मजबूती प्रदान करने का प्रयास किया गया।

हरियाणा में स्थानीय शासन प्रणाली 'भाईचारा पंचायत' पर आधारित है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात्, भारतीय संविधान के अनुच्छेद–40 में राज्यों द्वारा ग्राम पंचायतों के गठन को आवश्यक बताया और स्वायत्त इकाइयों के रूप में कार्य करने के लिए शक्तियां एवं अधिकार प्रदान करने की बात कही गई। जिससे अनेक राज्य सरकारों द्वारा पंचायती राज्य अधिनियम पारित किए गए। लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को व्यावहारिक रूप से लागू करने के लिए पंजाब सरकार द्वारा पंजाब ग्राम पंचायत अधिनियम (1952) बनाया गया।

लेकिन यह अधिनियम केवल ग्राम पंचायत तक सीमित था, इसमें पंचायत समिति और जिला परिषद का वर्णन नहीं मिलता है। यह प्रावधान उद्देश्यों को प्राप्त करने में भी असफल रहा। बलवंत राय मेहता समिति की सिफारिश पर वर्ष 1961 में पंजाब पंचायत समिति और जिला परिषद अधिनियम पारित करके पंचायतों के त्रिस्तरीय ढाँचे का निर्माण किया गया। ये संस्थाएं हरियाणा के पृथक राज्य बनने तक ज्यों–कि–त्यों चलती रही।

हरियाणा के गठन के बाद भी पूर्व पंचायती राज संस्थाएँ निरंतर कार्य करती रही है, पूर्व अधिनियमों में कोई बदलाव नहीं किया गया। लेकिन राज्य द्वारा गठित मूल्यांकन समिति द्वारा बताया गया कि पंचायती राज संस्थाओं में राजनीतिज्ञों एवं नौकरशाही का प्रभुत्त्व बहुत बढ़ चुका था। पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव भी समय पर नहीं हो रहे थे। वर्ष 1973 में मांडू सिंह तदर्थ समिति की सिफारिश पर पंचायती राज की सर्वोच्च संस्था जिला परिषद को समाप्त कर दिया गया। लेकिन अनियमित चुनाव, धन की कमी, नौकरशाही के प्रभुत्त्व और राजनीतिक इच्छा की कमी के कारण पंचायती राज प्रणाली अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रही। अर्थात् हरियाणा पंचायती राज अधिनियम बनने से पहले पंचायती राज व्यवस्था में अनेक खामियां थीं।

भारत में पंचायती राज व्यवस्था के ढाँचे को एकरूपता प्रदान करने के लिए 73वां संविधान संशोधन आधिनियम, 1992 पारित किया गया तथा तत्कालीन राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद 24 अप्रैल, 1993 को लागू कर दिया गया। यह प्रावधान किया गया कि इस अधिनियम के पारित होने के एक वर्ष के अंत तक यानी 24 अप्रैल, 1994 तक सभी राज्य पंचायती राज अधिनियम को लागू करना सुनिश्चित किया जाए। हरियाणा में पंचायती राज संस्थाओं को संगठनात्मक रूप देने के लिए हरियाणा पंचायती राज अधिनियम, 1994 बनाया गया, जो 22 अप्रैल, 1994 को लागू किया गया।

इस अधिनियम के लागू करने से पहले पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की सहभागिता नाममात्र की रही। इस अधिनियम के तहत महिलाओं को त्रि–स्तरीय पंचायतों में एक–तिहाई आरक्षण की व्यवस्था की गई। अतः औपचारिक रूप से आरक्षण के माध्यम से महिलाओं की सहभागिता बढ़ाने का प्रयास किया गया। पाँचवें सामान्य पंचायती राज संस्थाओं के चुनावों के विश्लेषण से पता चलता है कि पंचायत के सभी स्तरों पर महिलाएं अनारक्षित पदों पर भी निर्वाचित हुई।

हरियाणा पंचायती राज (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 :

पंचायती राज संस्थाओं को समावेशी को बनाने के लिए हरियाणा पंचायती राज अधिनियम, 1994 में संशोधन किया गया। हरियाणा पंचायती राज (द्वितीय संशोधन) अधिनियम (2020) के अंतर्गत, पिछड़ा वर्ग के लिए 8 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान, निर्वाचित प्रतिनिधियों को 'वापस बुलाने का अधिकार', महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था आदि प्रावधान किए गए।

हरियाणा में छठे सामान्य पंचायती राज चुनावों में हरियाणा पंचायती राज (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 के तहत चुनाव करवाए गए। अतः पंचायती राज संस्थाओं को अधिक सशक्त एवं पारदर्शी बनाने और महिलाओं की सहभागिता बढ़ाने का सकारात्मक प्रयास किया गया। यह संशोधन महिलाओं की पंचायती राज संस्थाओं में वास्तविक भागीदारी बढ़ाने की दिशा में सकारात्मक कदम साबित होगा, पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण का स्वप्न वास्तविक रूप में साकार होगा।

अतः 73वें संविधान संशोधन के तहत महिलाओं के लिए पंचायती राज संस्थाओं में एक–तिहाई प्रतिनिधित्व दिया गया। वहीं अब हरियाणा सहित 21 राज्यों में 50 प्रतिशत की व्यवस्था की जा चुकी है। पंचायती राज महिला नेतृत्व के अध्ययन दर्शाते हैं कि महिला सदस्य पुरुष सदस्यों की तुलना में अधिक जिम्मेदारी से, सहानुभूतिपूर्ण ढंग से और उत्साह से कार्य करती हैं। वे पीने के पानी की आपूर्ति, स्वास्थ्य सेवाओं की देखभाल और बच्चों को शिक्षा पर अधिक ध्यान देती हैं।

पंचायती राज संस्थाओं में महिला प्रतिनिधियों के सामने आने वाली चुनौतियाँ :

महिलाओं के उच्च प्रतिनिधित्व के बावजूद, पंचायती राज संस्थाओं में कार्य करने का माहौल उनके लिए अनुकूल नहीं है। भ्रष्टाचार और हिंसा जैसी प्रवृत्तियों का महिला प्रतिनिधियों की कार्यक्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। पंचायत चुनावों में सहभागिता के लिए आर्थिक संसाधन जुटाने में भी महिलाओं को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

- ☐ प्रॉक्सी प्रतिनिधित्व।
- ☐ राजनीतिक अनुभव की कमी।
- ☐ सामाजिक दबाव एवं रूढ़िवादिता।
- ☐ शिक्षा एवं प्रशासनिक ज्ञान का अभाव।
- ☐ सांस्कृतिक और पारिवारिक बाधाएँ।
- ☐ राजनीतिक जागरूकता का अभाव।

इस वस्तुस्थिति के लिए भारत के विभिन्न राज्यों के पुरुष प्रधान सामाजिक संरचनाओं और पुरुष प्रधान संस्कृति को ही मुख्य रूप से दोषी माना जा सकता है। भारत सरकार के द्वारा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे कार्यक्रम का भी इस प्रसंग में केवल मात्रात्मक प्रभाव ही पड़ा है, गुणात्मक प्रभाव नहीं। विभिन्न राज्यों की लाड़ली जैसी योजनाएं भी इस प्रसंग में कोई उल्लेखनीय सफलता प्राप्त नहीं कर पायी हैं।

महिला प्रतिनिधियों को सशक्त बनाने के लिए सुझाव :

- ☐ महिला प्रतिनिधियों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- ☐ पंचायत प्रशासन में डिजिटल साक्षरता का विकास।

- प्रॉक्सी प्रथा पर कानूनी निगरानी।
- महिला नेतृत्व नेटवर्क का गठन।
- सामाजिक जागरूकता अभियान।
- राजनीतिक प्रशिक्षण और कार्यशालाएँ।

हरियाणा में छठे पंचायती राज चुनावों ने ग्रामीण लोकतंत्र को अधिक सशक्त किया है। महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व क्षमता ने ग्रामीण राजनीतिक ढांचें को बदल दिया है। 50 प्रतिशत आरक्षण और प्रभावशाली भागीदारी ने महिलाओं को ग्राम स्तर पर निर्णय–प्रक्रिया में सहभागिता ने लोकतंत्र को अधिक समावेशी बनाया है। यद्यपि चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, लेकिन यह स्पष्ट है कि हरियाणा में पंचायती राज चुनावों में महिलाओं की भागीदारी ने लोकतंत्र को अधिक समावेशी एवं प्रभावशाली बनाया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. कुंडू, रा. (फरवरी, 2016). प्रजातांत्रिक परिपक्वता का द्योतक है हरियाणा पंचायती राज चुनाव 2016, पंचायती राज अपडेट, 9(2), 4–5 ।
2. हरियाणा पंचायती राज अधिनियम (1994), पंचायती राज मंत्रालय।
3. हरियाणा पंचायती राज नियम. (1995). गजट ऑफ हरियाणा।
4. https://www.latestlaws.com/bare-acts/state-acts-rules/haryana-state-laws/haryana-panchayati-raj-act-1994/haryana-panchayati-raj-rules-1995/
5. हरियाणा पंचायती राज (संशोधन) अधिनियम (2015). (7 सितंबर, 2015). गजट ऑफ हरियाणा।
6. कुंडू, रा. (अगस्त, 2017). हरियाणा पंचायत चुनाव 2016 में महिला प्रतिनिधित्व : एक विश्लेषण, पंचायती राज अपडेट, 10(8), 5–6।
7. अबरोल. (सितंबर, 2015). पंचायत चुनावों में उम्मीदवारी पर शर्त एक लोकतंत्र विरोधी कदम है, पंचायती राज अपडेट, 8(9), 1–2 ।
8. रिपोर्ट ऑन जनरल इलेक्शन टू द पंचायती राज इंस्टिट्यूटशन इन हरियाणा (2016), स्टेट इलेक्शन कमीशन।
9. https://hindi.mapsofindia.com/haryana/bhiwani/bhiwani-district-map.html
10. http://bhiwani.gov.in
11. सेन्सस ऑफ इंडिया. (2011). हरियाणा, डिस्ट्रिक्ट सेन्सस हैंडबुक भिवानी।
12. http://www.censusindia.gov.in
13. हरियाणा पंचायती राज (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020. (2 फरवरी, 2021)।

ईमेल : mannubarala97@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 171-176
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

उपन्यास "ट्रैन टू पाकिस्तान" और "तमस" में अभिव्यक्त विभाजन की त्रासदी – तुलना

बिजी जे. वी.
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवंतपुरम।

भारत का विभाजन उपमहाद्वीप को सांप्रदायिक आधार पर विभाजित करने की प्रक्रिया थी जो 1947 में तब हुई जब भारत को ब्रिटिश शासकों से आजादी मिली। भारत के मुख्य रूप से मुस्लिम राज्य पाकिस्तान राष्ट्र बन गए, जबकि बाकी गणतंत्र के साथ बने रहे। भारत। 15 अगस्त, 1947 की आधी रात को दो स्वशासित देश कानूनी रूप से अस्तित्व में आए। सत्ता हस्तांतरण का समारोह एक दिन पहले कराची में आयोजित किया गया था, जो उस समय नए राज्य की राजधानी थी। पाकिस्तान ने अंतिम ब्रिटिश वायसराय लुईस माउंटबेटन को कराची के साथ–साथ दिल्ली में दोनों समारोहों में भाग लेने की अनुमति दी।

भारत के विभाजन और उससे जुड़े खूनी दंगों ने भारत और पाकिस्तान में कई रचनात्मक दिमागों को इस घटना के आधार पर साहित्यिक चित्रण करने के लिए प्रेरित किया। जबकि कुछ कार्यों में प्रवास के दौरान नरसंहार को दर्शाया गया, अन्य ने विभाजन के बाद आने वाली कठिनाइयों के संदर्भ में ध्यान केंद्रित किया।

ट्रैन टू पाकिस्तान :–

ट्रेन टू पाकिस्तान, एक विभाजन आधारित उपन्यास है जो भारत और पाकिस्तान के विभाजन के बाद के महत्वपूर्ण दिनों की राजनीतिक हिंसा और सामूहिक जुनून का यथार्थवादी चित्रण है। यह विभाजन के चक्रव्यूह में फंसे लोगों की दयनीय कहानी को दर्शाता है। यह विभाजन उपन्यासों का सर्वोत्तम उदाहरण है। जब भारत का विभाजन हुआ तो बहुत से लोग अपनी जान बचाने के लिए सीमा के दोनों ओर से भाग निकले। निवासियों को विस्थापित कर दिया गया और उन्होंने बहुत ही भयानक क्षणों का अनुभव किया जैसे कि उन्होंने अपना सामान छोड़ दिया और ऐसे देश में चले गए जो उनके लिए अज्ञात था। भारत और पाकिस्तान के विभाजन वहां रहने वाले सभी लोगों को प्रभावित किया, लेकिन लेखक मानो माजरा नामक एक छोटे से गांव की घटनाओं से काफी चिंतित हैं, जो भारत और पाकिस्तान की सीमा पर स्थित है और एक रेलवे पुल दोनों के बीच संपर्क लिंक के रूप में कार्य करता है। सीमा के किनारे मनो माजरा को शांति के कुछ शेष मामलों में से एक दिखाया गया है। कथा साहित्य का मुख्य पात्र गाँव ही है। पूरी कहानी सतलज नदी के तट पर भारत और पाकिस्तान की सीमा पर मानो माजरा नामक एक छोटे से गाँव में चलती है। जो पाकिस्तान के लिए ट्रेन की एक काल्पनिक

पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करता है। खुशवंत सिंह ने गाँव के जीवन के इर्द–गिर्द कहानी बुनते हुए गाँव को एक बड़े ग्रह का प्रतिनिधित्व करने वाला एक स्वर्गीय पिंड बना दिया। सिख परिवार हिंदू और मुस्लिम परिवारों से अधिक हैं। उपन्यासकार ने गाँव पर विभाजन के प्रभाव का पता लगाया है जो प्रतीकात्मक रूप से भारत का प्रतीक है। वह लोगों, उनके दृष्टिकोण और उनकी उपलब्धियों के बीच तुलना करके सच्ची भारतीय प्रतिक्रिया की खोज करने की कोशिश करते हैं। मनो माजरा हमेशा से अपने रेलवे स्टेशन के लिए प्रसिद्ध रहा है। मनो माजरा में सभी क्रियाएं सीधे तौर पर ट्रेनों के आने और जाने से संबंधित हैं। सुबह की ट्रेन विनती करती है। जैसे ही दिन का मध्य बीतता है, मनो माजरा बंद हो जाता है और आराम करना शुरू कर देता है। जब शाम को लाहौर से पैसेंजर ट्रेन आती है। सभी फिर से अपना काम करने के लिए तैयार हैं। जब ट्रेन आगे बढ़ती है, तो यह उन सभी के लिए सोने का संकेत होता है और मुल्ला और पुजारी के लिए, शाम की प्रार्थना का आह्वान होता है। इस प्रकार, गाँव में जीवन एक तरह से ट्रेनों द्वारा नियंत्रित होता है। मनो माजरा गांव में सत्तर परिवारों में से केवल लाला राम लाल का परिवार ही हिंदू है। अन्य सिख और मुस्लिम हैं, संख्या में लगभग बराबर। वे एक–दूसरे को बहुत अच्छी तरह से जानते हैं और एक घनिष्ठ परिवार की तरह शांति और एकता के साथ रहते हैं। गाँव का शांत जीवन देश की राजनीतिक कार्रवाइयों से अतिरंजित नहीं है। इस छोटे से गाँव में मौजूद किसान परिवेश और कुशल आत्मसात को उपन्यास में जीवंत रूप से चित्रित किया गया है।

"………there is one object that all mano majrans even lala ram lal adore. This is a three foot slab of sandstone that stands upright under a keeker tree besides the pond. It is the local deity, the deo to which all the villagers Hindu,Sikh, muslims or pseudo Christian repair secretly whenever they are in special need of blessing". [(1)]

इस प्रकार, ग्रामीण, अपनी धार्मिक संबद्धताओं के बावजूद, कठिन समय के दौरान पत्थर की पूजा करके एकजुटता दिखाते हैं। इस प्रकार सिख और मुसलमान गाँव की आम समस्याओं पर चर्चा करने के लिए गुरुद्वारे में मिलते हैं। यहां तक कि सिख मंदिर और मस्जिद के सामने त्रिकोणीय आम जमीन में पीपल का पेड़ भी सारी सृष्टि की एकता का प्रतीक है क्योंकि यह बिना किसी भेदभाव के सभी को आश्रय देता है। यह एकता गाँव के सिखों द्वारा एक अंधे मुस्लिम बुनकर और उसकी बेटी के साथ किये जाने वाले व्यवहार में भी दिखाई देती है। नूरन. वे उसका सम्मान करते हैं, प्यार करते हैं और उसकी परवाह करते हैं। खुशवंत सिंह उस भयानक त्रासदी की जिम्मेदारी दोनों समुदायों पर डालते हुए समय की वास्तविकता का वर्णन करते हैं। मुसलमानों को पता चला कि हिंदुओं ने उन्हें मारने की योजना बनाई है। लेकिन मुसलमानों ने हर चीज के लिए पूरी तरह से हिंदुओं को दोषी ठहराया। इसके बदले में दोनों समुदायों को मार डाला गया, प्रताड़ित किया गया, बलात्कार किया गया, छुरा घोंप दिया गया, गोली मार दी गई, छेद दिया गया और क्लब में डाल दिया गया।

सीमा क्षेत्र में नरसंहार और अशांति की कामना करें। मनो माजरा में जीवन शांति से रहता है। सभी समुदायों के साथ सब कुछ काफी और सामान्य है, जो अभी भी शांति से एक साथ रह रहे हैं जैसे कि वे लंबे समय से एक साथ रहते आए हैं। विभाजन ने मनो माजरा को नहीं छुआ है स भारत का उत्तरी भाग हथियारों में था, भय में था, या पिटाई में था। सीमा के सुदूर इलाकों में खोए हुए एकमात्र बचे हुए पीछे हटने वाले गाँव।

ऐसा ही एक गांव है मानो माजरा। राजनीतिक दलों के इरादों से अनजान, बहुत से लोगों को इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि अंग्रेज भारत छोड़कर चले गए और भारत विभाजित हो गया है और उस पर कांग्रेस का शासन है। मनो माजरा के संबंध में जांच करने वाले पुलिस उप निरीक्षक की रिपोर्ट, मनो माजरा की अनभिज्ञता की स्पष्ट तस्वीर पेश करती है। "मुझे यकीन है कि मनो माजरा में किसी को भी नहीं पता होगा कि अंग्रेज चले गए हैं और देश पाकिस्तान और हिंदुस्तान में विभाजित हो गया है। उनमें से कुछ लोग गांधी के बारे में जानते हैं लेकिन मुझे संदेह है कि क्या किसी ने कभी जिन्ना के बारे में सुना है।

मानो माजरा के लोग इकबाल से पाकिस्तान और भारत के बारे में सब कुछ जानना चाहते थे। मुसलमानों में से एक ने इकबाल से पूछा। "हमें कुछ बताओ कि दुनिया में क्या हो रहा है? पाकिस्तान और हिंदुस्तान के बारे में यह सब क्या है? हम इस छोटे से गाँव में रहते हैं और कुछ नहीं जानते।" उनके लिए स्वतंत्रता राजनीतिक से अधिक आर्थिक है। साहित्य का उनके लिए बहुत कम या कोई मतलब नहीं था और वे सोचते हैं कि अंग्रेजों के अधीन उनमें सुधार हुआ है क्योंकि उन्हें कुछ सुरक्षा मिली हुई थी। गाँव का लम्बरदार इकबाल से यह कहते हुए इस सनकी रवैये को व्यक्त करता है। "आजादी अच्छी चीज होनी चाहिए। लेकिन इससे हमें क्या मिलेगा? आप जैसे पढ़े–लिखे लोगों को, बाबू साहब, वही नौकरियाँ मिलेंगी जो अंग्रेजों को मिलती थीं। क्या हमें मिलेंगी?" अधिक हाथ या अधिक भैंसें"?

साम्यवादी विचारधारा में दृढ़ विश्वास रखने वाले इकबाल ने तुरंत जोर देकर कहा, "नैतिकता समृद्धि का विषय है। गरीब व्यक्ति नैतिक मानकों को वहन नहीं कर सकते, इसलिए धर्म का सहारा लेते हैं।" वह नैतिकता और धर्म के बीच अंतर करते हुए कहते हैं कि नैतिकता आचार संहिता है जो जलवायु और आर्थिक बदलावों के अधीन है, जबकि धर्म परिस्थितियों और सामाजिक स्तरों में अपरिवर्तनीय रहता है। नतीजतन, उनका तर्क है कि धर्म अप्रचलन और नुकसान के लिए प्रवण है, आस्था हिंदू, मुस्लिम और सिखों द्वारा साझा किए गए धार्मिक नामकरण से परहेज करते हुए, "इकबाल" जानबूझकर अपनी धार्मिक संकीर्णताओं को अस्पष्ट करता है।

हालांकि, वे तुरंत ही व्यापक गरीबी के व्यापक मुद्दे पर आते हैं और सिंह से कहते हैं, "हमारी प्राथमिक चिंता यह है कि लोगों की स्थिति में सुधार लाया जाए, उनके लिए भोजन, कपड़े आदि की बुनियादी जरूरतें पूरी की जाएं। इस सुधार के लिए जरूरी है कि धनी वर्ग द्वारा शोषण बंद किया जाए और जमींदारी प्रथा का उन्मूलन किया जाए।" अपेक्षित परिवर्तन केवल सरकारी पुनर्गठन के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। "यह स्पष्ट है कि गरीबी उन्मूलन पर 19 बाल के दृष्टिकोण को व्यापक स्वीकृति मिलती है, क्योंकि सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ बढ़ती जा रही हैं, तथा अमीर लोग अधिक धन अर्जित कर रहे हैं, जिससे निर्धन लोगों की दुर्दशा और भी बढ़ रही है। 19 बाल, जो साम्यवाद के एक समर्पित समर्थक हैं, अपनी समाजवादी विचारधाराओं को जोरदार ढंग से व्यक्त करते हैं। इसके बाद, 196अल पुलिस विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहते हैं, "पुलिस प्रणाली नागरिकों की सुरक्षा करने के बजाय, भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी को बढ़ावा देते हुए दुर्व्यवहार में लिप्त है! इकबाल भाई मीट सिंह के साथ अपनी मुठभेड़ के तुरंत बाद इन भावनाओं को व्यक्त करते हैं, तथा प्रचलित सामाजिक ढांचे के साथ अपनी गहरी असहमति को रेखांकित करते हैंस राम लाल के घर में डकैती और हत्या की साजिश रचने के संबंध में जानकारी

मिलने पर, जिसका कथित तौर पर जग्गा बदोनाश ने षडयंत्र रचा था, 19 बाल ने स्पष्ट किया, किसी व्यक्ति के वंश में कोई अंतर्निहित अपराध नहीं होता।

संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि खुशवंत सिंह अपने पात्रों के माध्यम से हमें विभाजन के दुखद इतिहास को समझने में मदद करते हैं, जो भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। विभाजन एक अंधकार युग था, और उन दिनों भारत या पाकिस्तान, हर जगह अंधकार था। लाखों शरणार्थियों को अपने घरों से जबरन निकाल दिया गया। यह विभाजन वास्तव में इतिहास का एक दर्दनाक अनुभव था। इसने अचानक एक लंबे और आम विभाजन को जन्म दिया। खुशवंत सिंह के उपन्यास द ट्रेन टू पाकिस्तान में विभाजन के पहलसइतिहास और सांस्कृतिक सिद्धांत। ट्रेन ने विभाजन की खबर को तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जब आखिरकार ट्रेन के माध्यम से दोनों तरफ से लाशें सीमा पार करती देखी जा सकतीहैं। पाकिस्तान जाने वाली ट्रेन ने भूतिया डरावनी पेंटिंग बनाईं, जिन्हें विभाजन के भयानक दिनों में पूरे सीमा क्षेत्र में लाइसेंस दिया गया था।

तमस :–

भारत का विभाजन इस देश के सबसे दर्दनाक अनुभवों में से एक है। मन अशांत था, भारतीयों को मनोवैज्ञानिक और सामाजिक परिवर्तनों से गुजरना पड़ा, वे अपने मूल से उखड़ गए। समुदायों के बीच संबंध बदल गए और उनमें से प्रत्येक को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। समुदाय बदल गए और उनमें से प्रत्येक को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। भाई–बहन की तरह रहने वाले समुदाय अचानक रातोंरात एक–दूसरे के दुश्मन बन गए और एक–दूसरे को मारने और यहां तक कि उनकी महिलाओं के साथ बलात्कार करने के लिए तैयार हो गए। वे डाइटिंग करने से नहीं डरते थे, वे एक–दूसरे पर इतने क्रोधित थे कि उन्होंने बिना सोचे–समझे एक–दूसरे को मार डाला।

विभाजन से जुड़ी हिंसा के बारे में शरद राजीवाले के अनुसार :–

"हत्याओं, बलात्कारों, अपहरणों, तलाशी और डकैती से, दक्षिण एशियाई आबादी विभाजन से उत्पन्न मनोवैज्ञानिक घावों से पीड़ित है। भारतीय विभाजन से पहले, 20 वीं शताब्दी में लोगों के बड़े पैमाने पर और कष्टदायी प्रवासन का अनुभव नहीं हुआ था।"[(2)]

रिचर्ड अपने व्यवहार में सख्त था और लिजा यह जानकर हैरान रह गई। शिविरों में इन लापता लोगों के नाम, जन–संपत्ति, सामान के नुकसान के आंकड़े दर्ज किये गये। सभी लोग अपने प्रियजनों के पास या तो मृत या जीवित लोगों के पास पहुंच रहे थे। उनके घर जला दिए गए, दुकानें लूट ली गईं और सब कुछ बदल दिया गया। हर कोई जानकारी देने या जानकारी एकत्र करने के लिए पंजीकरण टेबल पर आया और सरकार से कुछ मदद की उम्मीद भी की। पंडित की बेटी प्रकाशो का अल्लाह रक्खा एक मुस्लिम युवक द्वारा अपहरण कर लिया गया था। इसकी सूचना दी गई थी, लेकिन उसके परिवार को इस बात की जानकारी नहीं थी कि वह निकाह के कपड़ों के माध्यम से अल्लाह रक्खा में थी और निकाह की रस्में निभाईं और उससे शादी की। दो दिनों तक उसने ऐसा नहीं किया या किसी से बात नहीं की, लेकिन तीसरे दिन वह और अल्लाह रक्खा करीब आ गए, उनके बीच की जाति व्यवस्था मिट गई। प्रकाशो को एहसास हुआ कि वह वास्तव में उससे प्यार करता

है और उसने स्वीकार कर लिया कि दंगों के समय भी उसका प्यार सुरक्षित रहा। वे दोनों खुश थे क्योंकि उन्हें एक दूसरे के प्रति अपने प्यार का एहसास हुआ।

शांति समिति की बैठक करने का निर्णय लिया गया। बैठक के लिए चुनी गई जगह कॉलेज की इमारत थी जो न तो हिंदू थी, न मुस्लिम और न ही सिख। प्रधान भी भारत ही था। वह ईसाई मिशनरी से थे। बैठक के लिए तमाम नेता, प्रमुख लोग पहुंचे थे। जो लोग वहां मौजूद थे, वे प्रॉपर्टी की कीमतों, ऊंचे–नीचे के बारे में बात कर रहे थे। मुसलमानों ने हिंदू इलाके को छोड़ दिया और बुद्धिमान हिंदू और सिखों ने मुसलमानों के इलाके को छोड़ दिया। अब मीटिंग हॉल में सभी बहुत सामान्य थे, चाहे उनकी जाति कुछ भी हो। सरदार मोहन आह जो यह सब देख रहा था, अपने बगल में एक व्यक्ति से बात कर रहा था।

"चाहे कुछ भी हो, अंततः हम सभी को यहीं रहना है। यहां उतार–चढ़ाव और उन्माद के दौरे पड़ सकते हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि हम सभी यहां जीवित हैं, छोटे–छोटे तनावों का कोई महत्व नहीं है। यहां तक कि रसोई में बर्तन भी रखे रहते हैं एक–दूसरे के विरुद्ध प्रहार करते हैं। पड़ोसियों में भी झगड़े होते हैं, लेकिन तथ्य यह है कि हम सभी को एक–दूसरे का दाहिना हाथ जीना पड़ता है।"[3]

बड़ी मानवीय क्षति और ऐतिहासिक त्रासदी के बाद ज्ञान की बातें थीं। जो लोग वहां बैठक के लिए एकत्र हुए थे वे सभी विभिन्न मुद्दों पर चर्चा कर रहे थे और वे सभी जानबूझकर दंगों, हत्या और बलात्कार के मुद्दे से बच रहे थे।

भीष्म साहिनी ने तमस में विभाजन के बाद के परिणामों का विस्तार से वर्णन किया। हम शरणार्थियों को सबसे खराब स्थिति में पाते हैं। 'तमस' लेखक द्वारा स्वयं देखी गई वास्तविक घटनाओं पर आधारित है। लेखक ने विभाजन के दौरान भी पीड़ा झेली है। उपन्यास एपिसोडिक तरीके से लिखा गया है। उपन्यास में बिना किसी भेदभाव के हिंदुओं और मुसलमानों द्वारा किए गए अत्याचारों का उल्लेख किया गया है। हम तमस में पाते हैं कि इसका फोकस में कोई विशेष प्रमुख चरित्र नहीं है। उपन्यास दंगों, हत्या, बलात्कार, लूटपाट, स्थिरता, मौत और विनाश से भरा है। तमस भारत के राजनीतिक इतिहास में अंधकार को उजागर करता है। विभाजन ने मनोवैज्ञानिक स्थान की समस्या पैदा कीय दूसरी ओर, इसने हजारों लोगों को विस्थापित किया, जिससे भौतिक स्थान की कठिनाई पैदा हुई। उपन्यास उन लोगों के मनोविज्ञान को दर्शाता है जो अपने–अपने क्षेत्रों की रक्षा के लिए समूह और समितियाँ बनाते हैं। पास में एक हिंदू समुदाय रहता है, फिर भी यह मुसलमानों से घिरा हुआ है। विभाजन की घोषणा के बाद, हिंदुओं ने एकजुट होकर 'मोहल्ला समितियों' के गठन का प्रस्ताव रखा, जिसमें एक 'स्वयंसेवी कोर' और 'युवा विंग' शामिल होंगे, जिनका कर्तव्य क्रमशः संकट में हिंदुओं की सहायता करना और अशांति के दौरान लड़ना होगा।

उपसंहार :–

भीष्म साहनी के "तमस" और खुशवंत सिंह के "ट्रेन टू पाकिस्तान" के तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि दोनों उपन्यास भारत के विभाजन के दौरान हुई भीषण हिंसा और मानवीय पीड़ा का सशक्त चित्रण करते हैं, तथा सांप्रदायिक घृणा, विस्थापन और सामाजिक ताने–बाने के विघटन के समान विषयों का उपयोग करते हैं, लेकिन अलग–अलग दृष्टिकोण और कथात्मक फोकस के साथ, जहां "तमस" हिंसा में फंसे व्यक्तियों के

मनोवैज्ञानिक आघात की गहराई से पड़ताल करता है, वहीं "ट्रेन टू पाकिस्तान" अधिक स्थानीय दृष्टिकोण से विभाजन के कारण हुए सामाजिक विघटन पर एक व्यापक सामाजिक टिप्पणी प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. ट्रैन टू पाकिस्तान (उपन्यास), खुशवंत सिंह।
2. मस (उपन्यास), भीष्म साहनी।
3. कुशवंत सिंह, ट्रैन टू पाकिस्तान 1956, Bombay india book house 1976, P. 2.
4. Rajinwale, Sharad, partition language and Indian English writer, studies in literature in English, (ed) Ray MK Vol. 14, New Delhi Atlantic publishers, P. 197
5. तमस उपन्यास, भीष्म साहनी, पृ. 338

ई मेल : bijijv19@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642
Bohal Shodh Manjusha
March 2026
ISSN : 2395-7115
Page No. : 177-181
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

Artificial Intelligence in Predictive Analytics for E-commerce : Leveraging Data to Forecast Market Trends

Dr. S. Jayanthi Sobhana, Assistant Professor, Department of Commerce with PA,
Sri Ramakrishna College of Arts & Science, Nava India, Coimbatore -641006
Ms. Vijaya Priya. A , Assistant Professor, Department of Computer Technology,
Sri Ramakrishna College of Arts & Science, Nava India, Coimbatore -641006
Dr. C.Thangamani, Assistant Professor, Department of Information Technology,
Sri Ramakrishna College of Arts & Science, Nava India, Coimbatore -641006
Dr. S. Swarnalatha, Associate Professor, Department of Hindi,
Sri Ramakrishna College of Arts & Science, Nava India, Coimbatore -641006
Dr. Charlesbabu. J, Associate Professor, Department of ECS,
Sri Ramakrishna College of Arts & Science, Nava India, Coimbatore -641006

Introduction :

Artificial Intelligence (AI) has become a revolutionary force in the business world, especially in sectors like e-commerce, where rapid data processing and decision-making are crucial. With its ability to analyze large datasets, AI is playing a central role in predictive analytics, enabling e-commerce companies to anticipate market trends, optimize inventory, personalize marketing strategies, and improve customer experiences. This article explores how AI-driven predictive analytics is transforming e-commerce, helping companies forecast market trends, and utilizing data to stay ahead of the competition.

In this article, we will examine the following :

- The fundamentals of predictive analytics and AI.
- How AI is used in predictive analytics for e-commerce.
- The benefits of leveraging AI in forecasting market trends.
- Real-world applications of AI in e-commerce.

- Challenges and the future of AI in predictive analytics for e-commerce.

To provide depth and credibility to this exploration, we will also reference several significant books and academic papers that offer insights into the practical implementation and theoretical foundations of AI in e-commerce predictive analytics.

The Fundamentals of Predictive Analytics and AI :

Predictive analytics is a branch of data analytics that uses historical data, statistical algorithms, and machine learning techniques to predict future events. In e-commerce, predictive analytics helps companies forecast customer behavior, demand patterns, and overall market trends. The core of predictive analytics is data, and AI is the engine that powers its ability to make accurate predictions from this data.

AI, particularly machine learning (ML) and deep learning (DL), uses algorithms to learn from data and make predictions. In predictive analytics, AI models are trained on historical data to identify patterns and make forecasts about future behaviors or trends. These models continuously improve as they are exposed to new data, enhancing their accuracy over time.

How AI Is Used in Predictive Analytics for E-commerce :

AI-powered predictive analytics in e-commerce has a broad range of applications, from demand forecasting to customer segmentation. By leveraging the vast amount of data generated by online platforms, AI models can provide deep insights that improve decision-making processes across several areas of the business.

1. Demand Forecasting :

One of the most critical applications of AI in e-commerce is demand forecasting. Predicting demand for products is a complex task that requires analyzing historical sales data, seasonality patterns, economic factors, and external events (e.g., holidays or marketing campaigns). Traditional methods of demand forecasting often fall short due to the complexity and volume of data involved. AI models, on the other hand, can analyze vast datasets in real-time, factoring in multiple variables simultaneously to provide accurate demand predictions.

For example, AI can predict when a specific product will experience a surge in demand based on patterns of previous sales, trends, and even external factors like weather. This helps e-commerce businesses manage their inventory, avoid stockouts, and minimize overstocking, thereby optimizing supply chain operations.

2. Customer Segmentation and Personalization :

AI is also integral to customer segmentation, a process that groups customers based on their behavior, preferences, and purchasing patterns. Predictive analytics allows e-commerce companies

to create more refined and dynamic customer segments, leading to personalized marketing and product recommendations.

For instance, AI algorithms can predict which products a particular customer is likely to purchase next based on their browsing and purchasing history. With this information, businesses can tailor product recommendations, email campaigns, and discounts, thus improving the customer experience and increasing conversion rates.

3. Market Trend Forecasting :

AI's ability to analyze and identify trends in large datasets is particularly useful for forecasting broader market trends. By processing data from social media, customer reviews, and online search patterns, AI can detect shifts in consumer preferences, emerging trends, or even early indicators of market disruptions.

For instance, e-commerce platforms can use AI to track online discussions about specific products, identify trending keywords, and monitor sentiment across social media platforms. This helps businesses adjust their strategies to capitalize on emerging trends or mitigate potential risks.

Moreover, AI models can help businesses anticipate future market conditions by incorporating macroeconomic factors, such as economic growth, inflation, or regulatory changes, into their predictions.

The Benefits of Leveraging AI in Predicting Market Trends :

The integration of AI into predictive analytics provides several key advantages for e-commerce businesses, ranging from cost savings to enhanced customer experiences.

1. Improved Decision Making :

AI-driven predictive analytics enables e-commerce businesses to make data-driven decisions rather than relying on intuition or gut feeling. Whether it's forecasting demand, identifying new trends, or segmenting customers, AI provides insights that reduce the uncertainty involved in decision-making processes.

2. Enhanced Customer Experience :

By predicting customer needs and behaviors, AI allows e-commerce companies to offer highly personalized experiences. From product recommendations to tailored marketing messages, AI-driven insights help businesses engage customers in meaningful ways, thereby increasing customer satisfaction and loyalty.

3. Operational Efficiency :

AI allows e-commerce companies to optimize their operations, reducing costs related to overstocking or stockouts. Predictive analytics can also help businesses optimize their pricing

strategies by forecasting when demand will peak or when competitors will adjust their prices. This leads to smarter inventory management, more efficient supply chains, and better pricing decisions.

4. Competitive Advantage :

E-commerce businesses that leverage AI in predictive analytics gain a competitive edge by staying ahead of market trends and adapting to changes faster than their competitors. AI enables businesses to act proactively, rather than reactively, ensuring they remain at the forefront of the industry.

Real-World Applications of AI in E-commerce :

Several e-commerce giants and startups have successfully implemented AI-powered predictive analytics to stay competitive in an ever-evolving market.

1. Amazon :

Amazon is a leader in the use of AI for predictive analytics in e-commerce. The company uses AI models to predict demand for millions of products, optimize its pricing strategy, and recommend products to customers based on their browsing and purchasing history. Additionally, Amazon's recommendation engine, which accounts for a significant portion of its revenue, relies heavily on machine learning algorithms to predict what customers are likely to buy next.

2. Alibaba :

Alibaba, one of the largest e-commerce platforms in China, utilizes AI and machine learning to enhance customer experience and improve operational efficiency. The company's AI-driven logistics system predicts demand across different regions, optimizing warehouse and inventory management. Additionally, Alibaba's marketing platform uses AI to target ads more accurately, resulting in higher engagement and conversion rates.

3. Zalando :

Zalando, a European online fashion retailer, uses AI-driven predictive analytics to forecast fashion trends and customer preferences. By analyzing past purchase data, customer profiles, and online behavior, Zalando can predict which clothing items will be in demand in the coming months. This allows the company to optimize inventory levels and ensure it has the right products in stock at the right time.

Challenges of AI in Predictive Analytics for E-commerce :

While AI offers immense potential, several challenges need to be addressed for its successful implementation in e-commerce.

1. Data Quality and Quantity :

AI models rely heavily on high-quality data to make accurate predictions. Incomplete,

inconsistent, or biased data can lead to incorrect forecasts, which can harm business operations. Ensuring that data is cleaned, preprocessed, and regularly updated is crucial for the success of AI-driven predictive analytics.

2. Privacy and Security Concerns :

E-commerce companies collect vast amounts of customer data, and AI models rely on this data for analysis. However, privacy concerns around data collection and usage are growing. Businesses must comply with regulations like GDPR and ensure that customer data is handled securely.

3. Integration with Legacy Systems :

Many e-commerce businesses still rely on legacy systems that may not be compatible with AI-powered predictive analytics tools. Integrating AI solutions with these older systems can be challenging, requiring significant investments in technology upgrades and training.

The Future of AI in Predictive Analytics for E-commerce :

As AI continues to evolve, its role in predictive analytics for e-commerce is expected to grow. Future advancements in natural language processing (NLP), computer vision, and autonomous decision-making will enhance the capabilities of AI models, enabling even more accurate forecasts and personalized experiences.

Moreover, the integration of AI with emerging technologies like the Internet of Things (IoT) and blockchain will further revolutionize e-commerce predictive analytics, providing real-time insights and enhancing supply chain transparency.

Conclusion :

Artificial intelligence is transforming the way e-commerce businesses leverage data to forecast market trends and make data-driven decisions. By using AI-powered predictive analytics, businesses can enhance operational efficiency, improve customer experiences, and gain a competitive advantage. However, challenges such as data quality, privacy concerns, and integration with legacy systems must be addressed to unlock the full potential of AI in e-commerce.

As AI technologies continue to evolve, the future of predictive analytics in e-commerce holds tremendous promise, enabling businesses to anticipate market trends, optimize their strategies, and stay ahead in an increasingly competitive market.

References :

- **"Prediction Machines: The Simple Economics of Artificial Intelligence"** by Ajay Agrawal, Joshua Gans, and Avi Goldfarb

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 182-185
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

रामगढ़ प्रखंड में प्राथमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति

सत्येन्द्र कमार
शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग,
राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़।

किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। शिक्षा न केवल व्यक्ति के बौद्धिक विकास का माध्यम है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक चेतना को भी विकसित करती है। विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा किसी भी शिक्षा प्रणाली की आधारशिला होती है, क्योंकि इसी स्तर पर बालक के व्यक्तित्व, विचार और बौद्धिक क्षमता का प्रारंभिक निर्माण होता है। यदि प्राथमिक शिक्षा मजबूत और गुणवत्तापूर्ण होगी तो आगे की शिक्षा भी सुदृढ़ होगी। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा के प्रसार और विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए अनेक प्रयास किए गए। संविधान के अनुच्छेद 21–ए के अंतर्गत 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाया गया। इसके अतिरिक्त सर्व शिक्षा अभियान, मिड–डे मील योजना तथा समग्र शिक्षा अभियान जैसी योजनाओं के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाने का प्रयास किया गया।

झारखंड राज्य के विभिन्न जिलों की भाँति रामगढ़ जिले में भी प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कई प्रयास किए जा रहे हैं। रामगढ़ प्रखंड (सदर) जिले का एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक क्षेत्र है जहाँ ग्रामीण तथा शहरी दोनों प्रकार की आबादी निवास करती है। इस क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, शिक्षकों की उपलब्धता, अधोसंरचना, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि जैसे अनेक पहलू प्राथमिक शिक्षा की स्थिति को प्रभावित करते हैं। वर्तमान समय में यह आवश्यक है कि किसी भी क्षेत्र की शिक्षा व्यवस्था का यथार्थपरक अध्ययन किया जाए, ताकि उसकी उपलब्धियों और चुनौतियों को समझा जा सके। इसी उद्देश्य से प्रस्तुत शोध–आलेख में रामगढ़ प्रखंड में प्राथमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

प्राथमिक शिक्षा शिक्षा प्रणाली का प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण चरण है। इसी स्तर पर बालक पढ़ना–लिखना, गणना करना तथा सामाजिक जीवन के मूलभूत सिद्धांतों को सीखता है। प्राथमिक शिक्षा का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है :–

1. **बौद्धिक विकास का आधार :** बालक के मानसिक विकास की नींव प्राथमिक शिक्षा में ही रखी जाती है।
2. **सामाजिक चेतना का विकास :** विद्यालय में बालक सामाजिक व्यवहार, अनुशासन और सहअस्तित्व के सिद्धांत सीखता है।
3. **भविष्य की शिक्षा का आधार :** यदि प्राथमिक स्तर मजबूत होगा तो माध्यमिक और उच्च शिक्षा भी सुदृढ़

होगी।

4. **राष्ट्र निर्माण में योगदान :** शिक्षित नागरिक ही राष्ट्र के विकास में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।
5. **समानता और सामाजिक न्याय :** प्राथमिक शिक्षा समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करती है।

इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी महत्वपूर्ण साधन है।

रामगढ़ प्रखंड झारखंड राज्य के रामगढ़ जिले का प्रमुख प्रशासनिक क्षेत्र है। यह क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से विविधता से युक्त है और यहाँ ग्रामीण तथा नगरीय दोनों प्रकार की बस्तियाँ हैं। यहाँ विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के लोग निवास करते हैं। रामगढ़ प्रखंड में अनेक सरकारी तथा निजी प्राथमिक विद्यालय संचालित हो रहे हैं। इनमें सरकारी प्राथमिक विद्यालय, उत्क्रमित मध्य विद्यालय तथा कुछ निजी विद्यालय भी शामिल हैं। सरकारी विद्यालयों में अधिकांशतः ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। इस क्षेत्र की शिक्षा व्यवस्था पर कई सामाजिक–आर्थिक कारकों का प्रभाव पड़ता है, जैसे– परिवार की आय, अभिभावकों की शैक्षिक स्थिति, विद्यालय की दूरी, अधोसंरचना की उपलब्धता तथा शिक्षकों की संख्या आदि।

प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता काफी हद तक विद्यालय की अधोसंरचना पर निर्भर करती है। रामगढ़ प्रखंड के कई प्राथमिक विद्यालयों में आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध हैं, परंतु कुछ विद्यालय अभी भी संसाधनों की कमी से जूझ रहे हैं।

1. **भवन और कक्षाएँ** – अधिकांश सरकारी विद्यालयों के पास पक्के भवन उपलब्ध हैं, लेकिन कई स्थानों पर कक्षाओं की संख्या कम है। इसके कारण एक ही कक्षा में कई वर्गों के विद्यार्थियों को पढ़ाना पड़ता है।
2. **शौचालय और स्वच्छता** – स्वच्छता शिक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। कई विद्यालयों में शौचालय की व्यवस्था है, किंतु कई स्थानों पर उनकी स्थिति संतोषजनक नहीं है। विशेष रूप से बालिकाओं के लिए स्वच्छ और सुरक्षित शौचालय की आवश्यकता अधिक महसूस की जाती है।
3. **पेयजल की सुविधा** – अधिकांश विद्यालयों में हैंडपंप या अन्य पेयजल स्रोत उपलब्ध हैं, लेकिन कुछ विद्यालयों में जल की नियमित उपलब्धता नहीं रहती।
4. **खेल मैदान और पुस्तकालय** – कुछ विद्यालयों में खेलकूद की सुविधा उपलब्ध है, किंतु अधिकांश विद्यालयों में खेल मैदान और पुस्तकालय की व्यवस्था सीमित है।

शिक्षक और शिक्षण व्यवस्था :

शिक्षक किसी भी शिक्षा प्रणाली के सबसे महत्वपूर्ण घटक होते हैं। रामगढ़ प्रखंड के प्राथमिक विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति की गई है, परंतु कई विद्यालयों में शिक्षक–छात्र अनुपात अभी भी संतुलित नहीं है।

1. **शिक्षक–छात्र अनुपात** – कुछ विद्यालयों में छात्रों की संख्या अधिक और शिक्षकों की संख्या कम होने के कारण शिक्षण कार्य प्रभावित होता है।
2. **प्रशिक्षण और दक्षता** – सरकार द्वारा शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते

हैं, जिससे शिक्षण पद्धतियों में सुधार हो सके। फिर भी आधुनिक शिक्षण तकनीकों का पूर्ण उपयोग अभी भी सीमित है।

3. **बहुस्तरीय कक्षाएँ** – ग्रामीण क्षेत्रों में कई विद्यालयों में एक ही शिक्षक को कई कक्षाओं को पढ़ाना पड़ता है, जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षण में कठिनाई होती है।

रामगढ़ प्रखंड में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में नामांकन दर में वृद्धि देखी गई है। सरकारी योजनाओं जैसे मिड–डे मील और निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण के कारण विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ी है। हालाँकि नामांकन बढ़ने के बावजूद नियमित उपस्थिति एक चुनौती बनी हुई है। कई बच्चे पारिवारिक कारणों, आर्थिक समस्याओं या घरेलू कार्यों के कारण विद्यालय से अनुपस्थित रहते हैं।

प्राथमिक शिक्षा के विकास के लिए सरकार द्वारा कई योजनाएँ लागू की गई हैं।

1. **मिड-डे मील योजना** – इस योजना के माध्यम से विद्यार्थियों को विद्यालय में भोजन प्रदान किया जाता है। इससे विद्यार्थियों की उपस्थिति में वृद्धि हुई है।
2. **सर्व शिक्षा अभियान** – इस योजना का उद्देश्य सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराना है। इसके तहत विद्यालय भवन, शिक्षक नियुक्ति और शैक्षिक सामग्री की व्यवस्था की गई है।
3. **समग्र शिक्षा अभियान** – यह योजना शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए कार्य कर रही है, जिसमें डिजिटल शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम भी शामिल हैं।

रामगढ़ प्रखंड में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कई उपलब्धियों के बावजूद कुछ समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं।

1. शिक्षकों की कमी।
2. विद्यालयों में संसाधनों की कमी।
3. विद्यार्थियों की अनियमित उपस्थिति।
4. अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी।
5. डिजिटल शिक्षा की सीमित उपलब्धता।

इन चुनौतियों के कारण प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाती।

रामगढ़ प्रखंड में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं :–

1. विद्यालयों में पर्याप्त संख्या में शिक्षकों की नियुक्ति की जाए।
2. विद्यालयों की अधोसंरचना को सुदृढ़ किया जाए।
3. डिजिटल शिक्षा के साधनों का विस्तार किया जाए।
4. अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाए।
5. विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ाने के लिए प्रेरक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि रामगढ़ प्रखंड में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। विद्यालयों की संख्या में वृद्धि, सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन और नामांकन दर में वृद्धि इस प्रगति के प्रमुख संकेतक हैं। इसके बावजूद अधोसंरचना की कमी, शिक्षकों की संख्या में असंतुलन तथा विद्यार्थियों की

अनियमित उपस्थिति जैसी समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं। इसलिए आवश्यक है कि सरकार, विद्यालय प्रशासन, शिक्षक और अभिभावक मिलकर प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए संयुक्त प्रयास करें। यदि इन समस्याओं का समाधान प्रभावी ढंग से किया जाए तो रामगढ़ प्रखंड में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति और अधिक सुदृढ़ हो सकती है। प्राथमिक शिक्षा का सुदृढ़ीकरण न केवल क्षेत्र के शैक्षिक विकास को गति देगा, बल्कि सामाजिक और आर्थिक विकास के मार्ग को भी प्रशस्त करेगा। इसी से एक जागरूक, शिक्षित और सशक्त समाज का निर्माण संभव हो सकेगा।

संदर्भ सूची :

1. अग्रवाल, जे. सी. शिक्षा का दर्शन और समाजशास्त्र. नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस, 2018, पृ. 45
2. शर्मा, आर. ए. भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास और समस्याएँ. मेरठ : आर. लाल बुक डिपो, 2016, पृ. 120
3. सिंह, एम. के. भारत में प्राथमिक शिक्षा. नई दिल्ली : एपीएच पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, 2017, पृ. 75
4. Government of India. Right to Education Act, 2009. New Delhi : Ministry of Human Resource Development, 2010, pp. 14
5. Ministry of Education. Educational Statistics at a Glance. New Delhi : Government of India, 2022, pp. 85
6. Government of Jharkhand. Jharkhand Education Project Council Report. Ranchi : Department of School Education, 2021, pp. 33
7. NCERT. National Education Policy 2020. New Delhi : National Council of Educational Research and Training, 2020, pp. 12
8. Tilak, Jandhyala B. G. Education in India : Policy and Development. New Delhi : Sage Publications, 2013, pp. 90
9. UNESCO. Primary Education in India : Progress and Challenges. Paris : UNESCO Publishing, 2019, pp. 40
10. Kumar, Krishna. Quality of School Education in India. New Delhi : Oxford University Press, 2014, pp. 60

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 186-191
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

Impact of Contemporary Economic Policies of the USA on India

Dr. Satyawan Jatain
Associate Professor, GPGCW Rohtak, Haryana
Sohit Jatain
Research Scholar, GJUS&T, Hisar, Haryana.

Abstract :

The United States plays a central role in shaping the global economic order through its trade, monetary, fiscal, and strategic policies. As one of the world's largest economies and a key trading partner of India, contemporary U.S. economic policies have significant implications for India's growth trajectory, trade dynamics, financial markets, and policy framework. This research article examines the impact of recent U.S. economic policies—including protectionist trade measures, Federal Reserve monetary policies, industrial subsidies, and geopolitical economic strategies—on the Indian economy. The study analyzes how U.S. tariff regimes, monetary tightening cycles, supply chain restructuring, and technological policies influence India's exports, capital flows, exchange rate stability, and investment patterns. While these policies create challenges such as trade disruptions, currency volatility, and shifts in global value chains, they also generate opportunities for India through increased strategic cooperation, diversification of global supply chains, and investment inflows. The paper highlights key policy responses required from India, including strengthening domestic manufacturing, diversifying export markets, reforming trade policies, and deepening financial resilience. The article concludes that while U.S. economic policies exert considerable influence on India's economic landscape, proactive domestic reforms and strategic diplomacy can convert many of these challenges into opportunities for sustainable growth.

Introduction : Global Economic Interdependence :

In the contemporary globalized economy, national economic policies rarely remain confined within domestic borders. Decisions taken by major economic powers often ripple across international markets, affecting trade flows, capital movements, and macroeconomic stability worldwide. Among

these powers, the United States occupies a uniquely influential position due to its large economic size, technological leadership, and dominance of the U.S. dollar in global finance. India and the United States have developed a deep economic partnership over the past two decades. The United States is among India's largest trading partners, a significant source of foreign direct investment, and a major destination for Indian services exports, particularly in information technology and business process outsourcing.

However, the contemporary phase of U.S. economic policymaking has been characterized by several shifts. These include protectionist trade measures, strategic industrial policies, tightening and loosening cycles of monetary policy by the U.S. Federal Reserve, and efforts to restructure global supply chains. Each of these policy developments has direct and indirect implications for India.This research article examines how recent U.S. economic policies influence India's economic environment. The discussion focuses on four major dimensions: trade policies, monetary policies, industrial strategies, and geopolitical economic initiatives.

I. Overview of Contemporary U.S. Economic Policies :

- **Trade Protectionism and Tariff Policies :** Recent U.S. administrations have increasingly adopted protectionist trade measures aimed at reducing trade deficits and promoting domestic manufacturing. Tariffs on imported goods, especially from major trading partners, have been used as instruments of economic diplomacy and industrial protection. Such tariff measures have affected several Indian export sectors, including textiles, engineering goods, pharmaceuticals, and electronics. Analysts suggest that new U.S. tariffs could reduce India's GDP growth by 20–40 basis points due to declining exports and reduced investment confidence. Higher tariffs also threaten India's trade surplus with the United States, which is one of India's largest bilateral surpluses. If the surplus declines significantly, the impact may extend to exchange rate stability and the current account balance.
- **U.S. Federal Reserve Monetary Policy :** Monetary policy decisions of the U.S. Federal Reserve significantly affect global capital flows and exchange rates. When the Federal Reserve raises interest rates to control inflation, global investors often shift capital toward U.S. financial markets. Such shifts lead to capital outflows from emerging markets like India, putting pressure on domestic currencies and financial markets. Conversely, when the Federal Reserve lowers interest rates, capital flows into emerging economies increase, strengthening financial markets and easing borrowing conditions. Changes in U.S. monetary policy also influence Indian bond yields and monetary policy decisions by the Reserve Bank of India, as central banks often adjust policies to maintain financial stability.
- **Industrial and Technology Policies :** The United States has increasingly adopted industrial

policies aimed at strengthening domestic technological and manufacturing capabilities. Programs encouraging semiconductor manufacturing, clean energy technology, and advanced manufacturing are intended to reduce reliance on foreign supply chains. While such policies aim to boost U.S. production, they can also reshape global supply chains. Countries like India may benefit from supply chain diversification as multinational corporations seek alternatives to concentrated manufacturing hubs.

II. Impact on India's Trade and External Sector :

- **Export Market Disruptions :** The United States represents a crucial export destination for India. Indian exports to the U.S. include pharmaceuticals, textiles, IT services, and engineering products. Tariff increases and regulatory changes can significantly influence these sectors. Trade tensions and tariff measures have already caused export contractions in some sectors, affecting employment and industrial output. Some estimates suggest that U.S. tariff policies could reduce India's trade surplus and weaken export growth in labour-intensive industries.
- **Supply Chain Reconfiguration :** Recent U.S. policies encouraging "friend-shoring" and diversification away from certain regions have created opportunities for India to position itself as a global manufacturing hub. India's initiatives such as Production Linked Incentive (PLI) schemes and infrastructure development aim to attract companies seeking alternatives for global supply chains. If implemented effectively, these initiatives may partially offset the negative impact of protectionist trade policies.
- **Impact on Services Exports :** India's services sector—particularly information technology—remains closely linked to the U.S. economy. U.S. corporate spending on IT services strongly influences India's software export revenues. During periods of economic slowdown or restrictive immigration policies in the U.S., Indian IT companies may face declining contracts or increased regulatory hurdles.

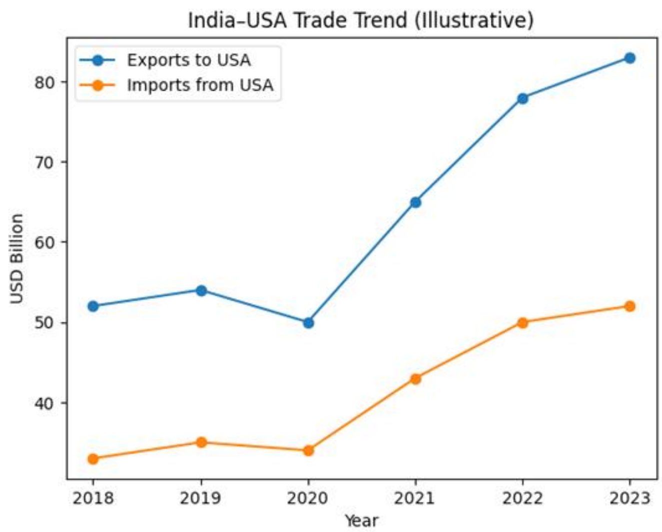

Figure 1 : India–USA Trade Trend (2018–2023)

III. **Financial Market and Monetary Effects :**

- **Exchange Rate Volatility :** U.S. monetary policy strongly influences global currency markets. Rising U.S. interest rates often strengthen the dollar relative to emerging market currencies. For India, a stronger dollar leads to depreciation of the rupee, increasing the cost of imports such as crude oil and affecting inflation dynamics. Recent global geopolitical developments and U.S. policy actions have also contributed to currency volatility, with the Indian rupee experiencing fluctuations amid rising oil prices and global uncertainty.
- **Capital Flows and Investment :** Foreign portfolio investment is highly sensitive to interest rate differentials between advanced and emerging economies. Higher U.S. interest rates can trigger capital outflows from India as investors seek safer and higher returns in U.S. assets. Conversely, when the U.S. adopts accommodative monetary policies, capital flows into India increase, supporting equity markets and investment.
- **Impact on Inflation and Monetary Policy :** Fluctuations in global oil prices and currency exchange rates—often influenced by U.S. policies—affect India's inflation trajectory. Higher oil prices, triggered by geopolitical conflicts or economic sanctions, can increase India's import bill and widen the current account deficit. Rising energy prices also influence domestic inflation and fiscal policy decisions.

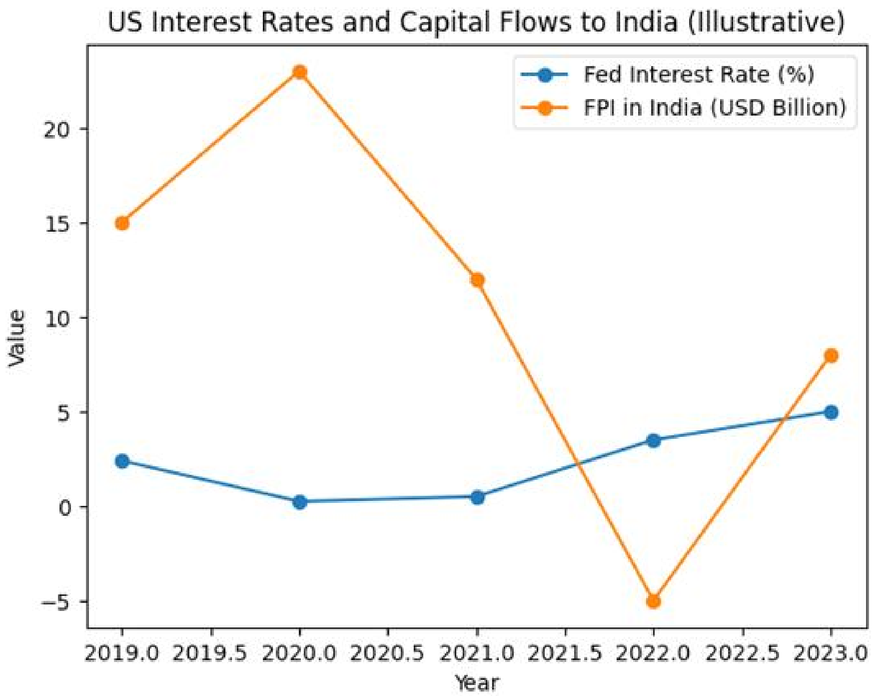

Figure 2: US Interest Rates and Capital Flows to India

IV. **Geopolitical and Strategic Economic Implications :**

- **Strategic Economic Partnerships :** Despite occasional trade disputes, India and the United

States maintain strong strategic economic cooperation. Bilateral initiatives in technology, defence production, clean energy, and supply chain resilience have strengthened economic ties. Recent developments indicate ongoing negotiations to deepen trade and economic collaboration between the two countries.

- **Technology and Innovation Cooperation :** The United States remains a key partner in technology transfer and research collaboration. Initiatives involving semiconductor manufacturing, artificial intelligence, and digital infrastructure provide opportunities for India to strengthen its technological capabilities. Such collaborations can enhance India's innovation ecosystem and reduce dependence on other technological supply chains.
- **Energy and Climate Policies :** U.S. policies promoting renewable energy and climate action influence global investment patterns in clean energy technologies. India, which is rapidly expanding renewable energy capacity, can benefit from technological partnerships and investment flows. However, carbon border adjustment mechanisms or environmental trade policies may create additional compliance requirements for Indian exporters.

V. Challenges and Risks for India :

Frequent changes in U.S. trade policies create uncertainty for exporters and investors. Firms may delay investments or adjust supply chains in response to shifting tariff regimes. Policy uncertainty in the United States can reduce investment and economic growth in partner countries such as India. Because the U.S. dollar dominates global financial markets, policy changes in the United States can quickly transmit shocks to emerging economies. Sudden capital outflows, currency depreciation, and financial market volatility pose challenges for macroeconomic stability in India. Large-scale subsidies and industrial support programs in the United States may divert investment away from other countries. India must strengthen its domestic manufacturing competitiveness to remain an attractive destination for global investors.

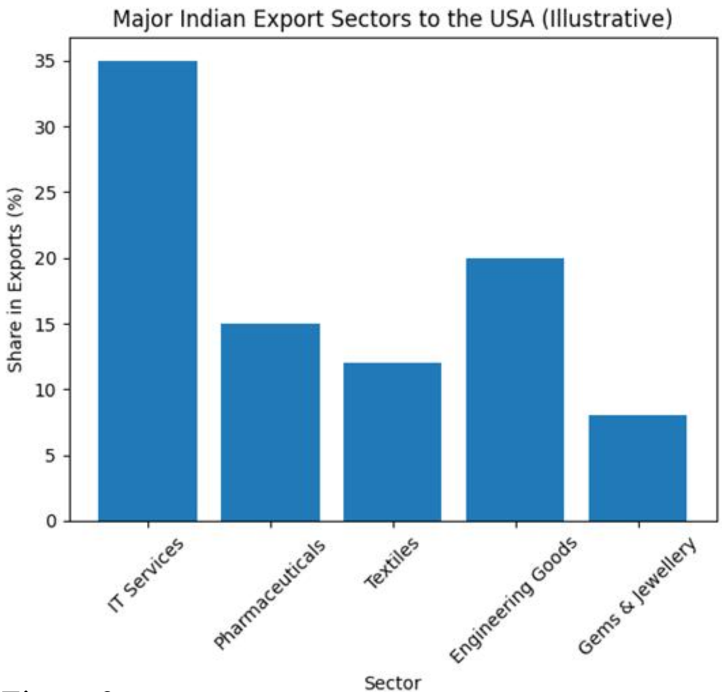

Figure 3 :

India can reduce dependence on any single export market by expanding trade relations with Europe, Africa, Southeast Asia, and Latin America. Trade agreements and regional partnerships can help diversify export destinations and reduce vulnerability to U.S. policy changes. Policies such as "Make in India" and Production Linked Incentives aim to increase domestic manufacturing capacity and enhance global competitiveness. Expanding domestic production can reduce import dependence and increase resilience against global economic shocks.

India's central bank and financial regulators must maintain strong foreign exchange reserves and prudent macroeconomic policies to manage capital flow volatility. Stable macroeconomic fundamentals increase investor confidence and reduce vulnerability to external shocks. Despite occasional policy conflicts, strengthening economic cooperation with the United States remains beneficial for both countries. Collaboration in technology, defense, infrastructure, and clean energy can create mutually beneficial economic outcomes.

VII. Conclusion :

The economic policies of the United States exert profound influence on the global economic landscape. For India, these policies present both challenges and opportunities. Trade protectionism, shifts in monetary policy, and industrial subsidies can create disruptions in exports, capital flows, and financial stability. At the same time, supply chain diversification, technological cooperation, and strategic partnerships offer significant opportunities for economic growth. India's response must involve proactive policy adjustments, including diversifying export markets, strengthening domestic manufacturing, enhancing financial resilience, and deepening international cooperation. By adopting a balanced and strategic approach, India can navigate the evolving global economic environment and transform external challenges into opportunities for sustainable development.

References :

[1] International Monetary Fund. (2023). World Economic Outlook.

[2] Reserve Bank of India. (2024). Annual Report.

[3] World Bank. (2023). Global Economic Prospects.

[4] U.S. Federal Reserve. (2024). Monetary Policy Report.

[5] Goldman Sachs Economic Research. (2025). Global Trade Outlook.

[6] Reuters. U.S. tariffs expected to slow India's GDP growth.

[7] Mint. Impact of U.S. tariffs on India's trade surplus.

[8] Reuters. Rupee volatility amid global economic tensions.

[9] Reuters. India's current account deficit and trade dynamics.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 192-196

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की समुद्री निगरानी प्रणाली और तकनीकी विकास

कुमारी निधि कुमारी, शोधार्थी,
डॉ० प्रवीन कुमार सिंह, सहायक आचार्य
रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

सारांश –

भारत की समुद्री सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिए अत्याधुनिक तकनीकी नवाचारों, जैसे कि AI–आधारित निगरानी, स्वदेशी एंटी–ड्रोन सिस्टम, परमाणु पनडुब्बियां, समुद्रयान (मानवयुक्त गहरे समुद्र अन्वेषण), और एकीकृत समुद्री डोमेन अवेयरनेस (MDA) प्रणालियों को अपनाया जा रहा है। 'आत्मनिर्भर भारत' के तहत 'मैरीटाइम इंडिया विजन 2030' इन तकनीकों का केंद्र है। साथ ही सागर और महासागर के माध्यम से अपनी सामुद्रिक सुरक्षा बढ़ाने के लिए पड़ोसी प्रथम नीति को भी मजबूत किया जा रहा है। कनेक्टिविटी और संचार का नया मार्ग प्रशस्त कर रहा है जिससे व्यापार को बढ़ावा मिले हिंद महासागर क्षेत्र में अमेरिका, रूस, फ्रांस, चीन, और यूरोपीय संघ जैसे देशों ने अपनी ताकत को मजबूत किया है। इसलिए भारत को अपना तकनीकी नवाचार बढ़ाने की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में भारत को चीन के नीतियों का सामना करने के लिए नौसेना की मजबूती और भी ज्यादा जरूरी हो गया है। हिंद महासागर में भारतीय व्यापार 80% से अधिक होता है जिसके लिए सुरक्षा बढ़ाना आवश्यक हो गया है। इतना ही नहीं अमेरिका की कुछ बड़ी कंपनियों का अनुमान है कि 2050 तक चीन की कुल डीजीपी 10 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ जाएगा और भारत की डीजीपी अमेरिका से 10 ट्रिलियन डॉलर कम हो जायेगी। जिसके लिए भारत की तकनीकी सहयोग बढ़ाने की जरूरत है।

शब्द कुंजी – महासागर में चीन के बढ़ते प्रभाव से निपटने के लिए और पाकिस्तान के हिंद महासागर रणनीति का मुकाबला करने के लिए भारत को अपने लाख तकनीकी नवाचार बढ़ाने की जरूरत है।

प्रस्तावना –

हिंद महासागर में भारत के सुरक्षा के लिए आई ड्रोन पनडुब्बी समुद्रियांन के माध्यम से भारत को अपनी तकनीकी क्षमता को मजबूत करना होगा। जिससे चीन से निपटा जा सके चीन की स्टिंग आफ पल्स रणनीति का सामना करने के लिए भारत को अपने तकनीकी नवाचार को बढ़ाना होगा। इतना ही नहीं भारत को पड़ोसी प्रथम नीति को मजबूत करने की जरूरत है। भारत में सुरक्षा को बढ़ाने के लिए निम्न संगठनों में सम्मिलित है जैसे बिम्सटेक सार्क जैसे संगठन में शामिल है और क्वाड जैसे संगठनों में भागीदार है। इन तकनीकी नवाचारों

का उद्देश्य मैरीटाइम इंडिया विजन 2030 और अमृत काल विजन 2047 के अनुरूप आत्मनिर्भरता हासिल करना है। भारत को 2047 तक अपनी सामुद्रिक सुरक्षा को सबसे अधिक मजबूत करना है। भारत की जागरूकता विकास को लेकर एतिहासिक काल से जो सीख मिलती है उससे भारत को अपनी सामुद्रिक सुरक्षा और तकनीकी नवाचार बढ़ाने की जरूरत है जिसमें आने वाले समय में भारत एक आत्म निर्भर बन सके। और इसे मजबूत बनाने के लिए भारत अन्य देशों के नौसैन्य संयुक्त अभ्यास भी करता है जिससे भारत की सामुद्रिक सुरक्षा मजबूत हो। इस क्षेत्र में चीन का तेजी से बढ़ता प्रभाव भारत के लिए चुनौतीपूर्ण सावित हो रहा है और साथ ही पाकिस्तान से भी भारत के लिए चुनौतीपूर्ण मामला है। इसका उदाहरण मुम्बई में 26/11/2008 के हमलों याद दिलाता है। मुंबई हमलों के बाद, भारत ने अपनी तटीय सुरक्षा को मजबूत करने के लिए कई उपाय किए हैं, जैसे कि तटीय निगरानी प्रणाली और तटीय पुलिस बल को मजबूत करना। जिससे भारत की सामुद्रिक सुरक्षा बढ़ाने में सहायक होता।

भारत की सामुद्रिक सुरक्षा को उन्नत करने के लिए 'डीप ओशन मिशन' के तहत 'मत्स्य–6000' मानव पनडुब्बी, स्वदेशी 'समुद्र प्रताप' पोत, एआई–आधारित निगरानी, और वीओसी बंदरगाह पर एंटी–ड्रोन तकनीक जैसे तकनीकी नवाचारों को अपनाया जा रहा है। 'MAHASAGAR' पहल और उन्नत साइबर सुरक्षा प्रणालियों के माध्यम से हिंद महासागर में निगरानी और रणनीतिक सुरक्षा को और भी मजबूत किया जा रहा है। डीप ओशन मिशन के तहत, 'मत्स्य–6000' नामक मानवयुक्त पनडुब्बी विकसित की जा रही है, जो 6000 मीटर की गहराई तक जा सकती है। समुद्री डोमेन अवेयरनेस (MDA) बढ़ाने के लिए एआई (AI), मशीन लर्निंग, और स्वचालित पहचान प्रणाली (AIS) का उपयोग किया जा रहा है। भारतीय नौसेना ने स्वदेशी साइबर सुरक्षा प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने के लिए स्टार्टअप्स के साथ मिलकर काम किया है।

भारत ने समुद्री डकैती और अवैध तस्करी को रोकने के लिए इस बल की कमान संभाली है। इन तकनीकी प्रगति से न केवल समुद्री संसाधनों की खोज में मदद मिल रही है, बल्कि भारत के समुद्री हितों की सुरक्षा भी सुनिश्चित हो रही है। यह सामान्य परिस्थितियों में 12 घंटे और आपातकालीन स्थिति में 96 घंटे तक काम कर सकता है। इसे चेन्नई स्थित राष्ट्रीय महासागर प्रौद्योगिकी संस्थान (NIOT) (पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तहत) द्वारा डिजाइन और विकसित किया जा रहा है। इस मिशन के साथ भारत अमेरिका, रूस, जापान, फ्रांस और चीन जैसे चुनिंदा देशों के क्लब में शामिल हो जाएगा, जिनके पास मानव–चालित गहरे समुद्र अन्वेषण की क्षमता है। भारत अपनी नौ सेना को मजबूत करने के लिए प्रोजेक्ट 75I की पहली AIP करने वाली पनडुब्बी को 2034–2035 तक भारतीय नौसेना में शामिल होने की उम्मीद किया जा रहा है। इन पनडुब्बीयो को डिजाइन करने में लग भग 18 महीने लगेंगे।

भारत की समुद्री रणनीति क्या है – भारत की सामुद्री रणनीति नौसेना को मजबूत करना जिससे नौसैनिक क्षमता को बढ़ाना और भारत की सामुद्री रणनीति जो इसकी विदेश नीति का महत्वपूर्ण अभिन्य अंग है और यह विकास व्यवस्थित दृष्टिकोण को दर्शाता है। इस नए सुरक्षा परिवेश में, समुद्री सुरक्षा के प्रति भारत के समकालीन दृष्टिकोण को क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास (SAGAR) की व्यापक छत्रछाया में रखा गया है, एक ऐसी अवधारणा जिसे विश्व के किसी भी समुद्री क्षेत्र में दोहराया जा सकता है। SAGAR के अंतर्गत, हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में भारत की समुद्री गतिविधियों को कई संरचनाओं और ढाँचों के तहत वर्गीकृत किया

जा सकता है। भारत की समुद्री सुरक्षा रणनीति तीन स्तंभों को मजबूत करने का लक्ष्य रखती है : स्थिरता को बढ़ावा देना, सुरक्षा बनाए रखना और शांति का संरक्षण करना। भारत द्वारा शुरू किया गया सागरमाला कार्यक्रम मेरीटाइम विजन 2030 तक पुरा होने की सम्भावना है और दुसरा जो है जिससे भारत सरकार ने शुरू किया है। मेरीटाइम अमृतकाल विजन जो 2047 तक का लक्ष्य रखा गया है। इतना ही नहीं नेट जीरो उत्सर्जन की दिशा में भी भारत बढ़ रहा है जिससे पुरा होने की सम्भावना 2050 तक रखा गया है।

सामुद्रिक सुरक्षा के महत्व के कारण – भारत की विदेश नीति में समूह सुरक्षा के बढ़ते महत्व की कई कारण है जो इस प्रकार से देखा जा सकता है।

- **आर्थिक हित :** भारत का अधिकांश व्यापार समिति करने से होता है इन मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित करना भारत के आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है।
- **रणनीतिक हित :** हिंद महासागर भारत के लिए राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र ऊर्जा आपूर्ति और व्यापार के लिए भी महत्वपूर्ण है।
- **सुरक्षा हित :** समुद्री सीमाएं आतंकवाद समुद्री डकैती अवैध गतिविधियों के लिए और सुरक्षित हो सकती हैं।

भारत की सामुद्रिक सुरक्षा नीति – भारत में अपनी सामाजिक सुरक्षा को मजबूत करने के लिए कई कदम उठाए हैं जो इस प्रकार से हैं।

- **'सागर' नीति (2015) :** यह हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षा और विकास को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। जिससे भारत की सामुद्री सुरक्षा बढ़ाया जा सके भारतीय नौसेना को मजबूत करना है।
- **नौसेना का आधुनिकीकरण :** भारत अपनी नौसेना को आधुनिक बनाने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है जिसमें नए उत्पाद पनडुब्बिया और विमान शामिल है। भारत ने कई देशों के साथ समुद्री सुरक्षा क्षेत्र में सहयोग समझौते किए हैं जैसे कि अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया क्वाड समूह इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।

सामुद्रिक सुरक्षा के समक्ष चुनौतियां –

- **चीन का बढ़ता प्रभाव –** चीन हिंद महासागर क्षेत्र में अपनी सैन्य उपस्थिति बड़ा रहा है जो भारत के लिए एक चुनौती है। और स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स जैसी उसकी रणनीतियाँ भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए दीर्घकालिक रणनीतिक चुनौतियाँ पेश करती हैं।
- **समुद्री डकैती और आतंकवाद :** समुद्री डकैती और आतंकवाद भारत के समुद्री मार्ग के लिए खतरा बने हुए हैं। (जैसे 26/11 मुंबई हमला), हथियारों और नशीले पदार्थों की तस्करी, तथा अवैध घुसपैठ जैसी गतिविधियाँ तटीय और समुद्री सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बनी हुई हैं।
- **जलवायु परिवर्तन :** जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्र का स्तर बढ़ रहा है जिससे तटीय क्षेत्र में बाढ़ का खतरा बढ़ रहा है। समुद्री प्रदूषण भी तटीय बुनियादी ढाँचे और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करते हैं, जिससे सुरक्षा पर अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।
- **अवैध मत्स्य पालन :** अवैध मत्स्य पालन भारत के संबंध संसाधनों को नुकसान पहुंचा रहा है। और अवैध मछली पकड़ने की गतिविधियाँ न केवल समुद्री संसाधनों को नुकसान पहुँचाती हैं, बल्कि घुसपैठ और तस्करी

के लिए एक आवरण भी प्रदान करती हैं।

- **समुद्री सीमा विवाद :** कुछ देशों के साथ भारत के संबंधीय सीमा विवाद में का नाम बताएं बन सकते हैं। इसलिए भारत को अपने समुद्री सुरक्षा को मजबूत करना होगा जिससे खतरों का समाधान किया जा सकता है जिससे आने वाले चुनौतियों का सामना हो सके।

निष्कर्ष :

भारत के आर्थिक विकास, ऊर्जा सुरक्षा और राष्ट्रीय हितों के लिए समुद्री सुरक्षा एक अपरिहार्य आवश्यकता है। 7,516 किलोमीटर लंबी तटरेखा और विशाल विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र के साथ, भारत को समुद्री डकैती, आतंकवाद, अवैध तस्करी और भू–राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता जैसी बहुआयामी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने के लिए एक एकीकृत, बहु–एजेंसी और प्रौद्योगिकी–आधारित दृष्टिकोण आवश्यक है। 'सागर' जैसी पहल और 'महासागर' (MAHASAGAR – Mutual and Holistic Advancement for Security and Growth in the Regions) जैसे विस्तारित दृष्टिकोण के माध्यम से भारत अपनी समुद्री शक्ति का विस्तार कर रहा है। क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के साथ–साथ तटीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी भारत की समुद्री सीमाओं को सुरक्षित करने और हिंद महासागर को शांति एवं समृद्धि के क्षेत्र में बदलने के लिए महत्वपूर्ण होगी। भारत का समुद्री सुरक्षा परिदृश्य जटिल है, जिसके लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, समुद्री सुरक्षा से जुड़ी बदलती चुनौतियों के अनुरूप निरंतर नवाचार और अनुकूलन करना महत्वपूर्ण है।

हिंद महासागर से, विश्व के लिए" का दृष्टिकोण वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को समुद्री शासन में लागू करता है। ब्लू इकोनोमिक के माध्यम से भारत न केवल क्षेत्रीय स्थिरता सुनिश्चित कर सकता है, बल्कि वैश्विक सतत विकास लक्ष्यों (SDG-14) की प्राप्ति में भी निर्णायक योगदान दे सकता है। भारत की ब्लू इकोनोमिक रणनीति सहकारी प्रबंधन, जलवायु समुत्थानशीलता और समावेशी विकास पर केंद्रित है। सरकार ने कई योजनाएं शुरू की हैं जो हिंद महासागर क्षेत्र में ब्लू इकोनोमिक को मजबूत करती हैं। और साथ ही भारत के संबंधित सुरक्षा को मजबूत बनाते हैं। वर्तमान परिदृश्य में भारत की सामुद्रिक सुरक्षा को और भी तेजी से विकास कर रहे हैं। तकनीकी नवाचार के माध्यम से भारतीय नौसेना अपनी क्षमता को और भी मजबूत बना रही है जिससे पाकिस्तान और चीन जैसे देश का चुनौतियों से सामना किया जा सके और हिंद महासागर क्षेत्र में भारत भी एक शक्तिशाली देश बनने के अवसर पर है। भारत द्वारा शुरू किया गया सागरमाला कार्यक्रम मेरीटाइम विजन 2030 तक पूरा होने की सम्भावना है और दूसरा जो है जिससे भारत सरकार ने शुरू किया है। मेरीटाइम अमृतकाल विजन जो 2047 तक का लक्ष्य रखा गया है। इतना ही नहीं नेट जीरो उत्सर्जन की दिशा में भी भारत बढ़ रहा है जिससे पुरा होने की सम्भावना 2050 तक रखा गया है। यह सब बातो का इस शोध लेख में संक्षिप्त में बताया गया है वर्तमान परिदृश्य में भारत ने किन–किन पहलो का लक्ष्य रखा है। उन सबके बारे में भी इस शोध लेख में चर्चा संक्षिप्त में किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/crafting-india-s-maritime-grand-strategy-naval-priorities-for-the-21st-century

- https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/quad-ports-plan-resilient-indo-pacific-maritime-hub
- https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/competitive-regionalism-in-the-indian-ocean
- https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&opi=89978449&url=https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/navigating-india-s-strategic-seas-the-evolving-role-of-the-navy&ved=2ahUKEwjyr4GIxc6SAxVwimMGHWJ4KBU4FBAWegQIMhAB&usg=AOvVaw3ZEEO95IdrabXRfRxlWbQK
- https://journal.ijarps.org/index.php/IJARPS/article/view/903/836
- https://ddnews.gov.in/deep-ocean-mission-manned-submersible-matsya-6000-is-being-developed-likely-to-be-built-by-2026/
- https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/rethinking-india-s-submarine-procurement-strategy
- https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/the-indian-navy-s-emerging-constabulary-role-in-indo-pacific
- https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/india-s-re-election-to-the-imo-council-implications-for-ocean-governance
- https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/indias-maritime-security-coordinator-has-his-mission-cut-out
- https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/as-unsc-president-india-aims-to-enhance-maritime-security-envisioning-leadership-with-a-global-roadmap.

Nidhikumari706825@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 197-201

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

'शहर गवाह है' में पारिवारिक विघटन, राजनीतिक मोहभंग और सामाजिक चेतना

मनीषा पाठक, शोधार्थी,
हिंदी साहित्य, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर।
डॉ. वंदना चराटे, सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,
भेरुलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू।

शोध सार :-

प्रस्तुत शोध–पत्र रूपसिंह चंदेल के उपन्यास 'शहर गवाह है' के संदर्भ में पारिवारिक विघटन, राजनीतिक मोहभंग और सामाजिक चेतना के अंतर्संबंधों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का केंद्र आधुनिक शहरी जीवन, सांप्रदायिक तनाव, उपभोक्तावादी मानसिकता, स्त्री उत्पीड़न, प्रशासनिक भ्रष्टाचार और मानवीय संवेदनाओं के क्षरण से जुड़ी समस्याएँ हैं। उपन्यास में दिलीप सिंह, खलीलुर्रहमान और राधिकारमण सिंह के चरित्रों के माध्यम से सामाजिक सद्भाव, विभाजन की त्रासदी तथा स्वतंत्रता–उत्तर भारत में आदर्शवाद के पतन को रेखांकित किया गया है। 'कोठी ठकुरान' को स्मृति, इतिहास, वर्गीय उन्नति और पारिवारिक सत्ता–संघर्ष के प्रतीक के रूप में देखा गया है। प्रभावती, शैलजा, नमिता और धर्मेंद्र के प्रसंगों के माध्यम से स्त्री विमर्श, मानसिक स्वास्थ्य, पीढ़ीगत संघर्ष तथा सामाजिक विघटन के आयाम उजागर होते हैं। इस प्रकार यह उपन्यास समकालीन भारतीय समाज की जटिलताओं को उद्घाटित करते हुए सामाजिक चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और पाठक को नैतिकता, सह–अस्तित्व तथा सामाजिक न्याय के प्रति सजग बनाता है।

महत्वपूर्ण शब्द – सामाजिक चेतना, पारिवारिक विघटन, राजनीतिक मोहभंग, शहरी जीवन, उपभोक्तावाद, शहर गवाह है।

2007 में प्रकाशित, रूपसिंह चंदेल का उपन्यास 'शहर गवाह है' समकालीन हिंदी कथा–साहित्य में सामाजिक यथार्थ, पारिवारिक संरचना के विघटन, राजनीतिक निराशा, सांप्रदायिक तनाव और मानवीय संवेदनाओं के संकट को अभिव्यक्त करने वाला एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। यह उपन्यास आधुनिक शहरी जीवन के अंतर्विरोधों, बदलते मूल्यों, उपभोक्तावादी मानसिकता, सत्ता–संरचना की विफलता तथा सामाजिक चेतना के बहुआयामी स्वरूप को उजागर करता है। व्यक्ति और समाज के बीच विकसित होते तनावों को रेखांकित करता है। इस दृष्टि से यह उपन्यास व्यक्तिगत कथा से आगे बढ़कर व्यापक सामाजिक संरचना का आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत करता है। परिवार को डॉ. हरदेव बाहरी ने शब्दकोश में "एक घर में और एक के ही संरक्षण में

रहने वाले लोग।"[1] के रूप में परिभाषित किया है। परिवार का महत्व बताते हुए श्यामाचरण दुबे लिखते हैं कि "मानव की समस्त सामाजिक संस्थाओं में परिवार एक आधारभूत और सर्वव्यापी सामाजिक संस्था है। संस्कृति के सभी स्तरों में चाहे उन्नत हों या अवनत, किसी न किसी प्रकार का पारिवारिक संगठन अनिवार्यतः पाया जाता है।"[2] आधुनिक समय में तीव्र शहरीकरण, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, वैश्वीकरण और व्यक्तिवाद ने भारतीय समाज की पारंपरिक संरचनाओं को गहरे स्तर पर प्रभावित किया है। संयुक्त परिवार, सामूहिकता और नैतिक मूल्यों का स्थान धीरे–धीरे निजी स्वार्थ, संपत्ति और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा ने ले लिया है। 'शहर गवाह है' इसी संक्रमणशील समाज का चित्र प्रस्तुत करता है जहाँ शहर केवल भौगोलिक इकाई नहीं बल्कि सामाजिक विघटन का साक्षी बनकर उभरता है। शहर अवसरों, संघर्षों, असमानताओं और अकेलेपन का जटिल केंद्र बन जाता है। इस संदर्भ में शहर आधुनिक मनुष्य की मानसिक और भावनात्मक स्थिति का प्रतीक बन जाता है, जहाँ व्यक्ति भीड़ में रहकर भी अकेला है।

उपन्यास का प्रारंभ राधिकारमण सिंह और दिलीप सिंह के चरित्र से होता है। राधिकारमण जोकि मिडिल में पूरे जिले में चौथे स्थान पर आया है और आगे की पढ़ाई के लिए कानपुर चला जाता है। दिलीप सिंह, जो एक कस्बे में कपड़े का व्यवसाय करता है। उसकी महत्वाकांक्षा और दूरदृष्टि उसे कानपुर शहर की ओर ले जाती है। इस प्रकार कानपुर इस उपन्यास का कथा क्षेत्र है। दिलीप सिंह कानपुर खलीलुर्रहमान नामक एक मुस्लिम व्यापारी के भरोसे पर आता है, जिनसे बाद में उसके गहरे मानवीय और व्यावसायिक संबंध स्थापित होते हैं। यह संबंध केवल व्यापार तक सीमित नहीं रहते, बल्कि सांप्रदायिक सद्भाव, विश्वास और सह–अस्तित्व के प्रतीक बन जाते हैं। खलीलुर्रहमान दिलीप सिंह के संघर्ष में सहायक बनते हैं और उसे शहर में स्थापित होने का अवसर प्रदान करते हैं। दिलीप सिंह और खलीलुर्रहमान के बीच का यह संवाद देखिए –

"चचा, कोयले का काम करने के लिए कितना रुपया चाहिए होगा!" दिलीप सिंह ने पूछा

"उसकी चिंता न करो। मैं हूँ न!" खलीलुर्रहमान ने कहा"[3]

यह प्रसंग इस तथ्य को रेखांकित करता है कि भारतीय समाज की वास्तविक शक्ति धार्मिक सहिष्णुता और मानवीय संबंधों में निहित रही है।

कानपुर में होने वाले सांप्रदायिक दंगे इस सौहार्द को गहरे स्तर पर आहत करते हैं। अंग्रेजों द्वारा बोयी गई सांप्रदायिकता के बीज धीरे–धीरे फलने लगते है तथा देश में अनेकों स्थानों पर हिंदू–मुस्लिम दंगे होने लगते हैं। "सांप्रदायिकता के लिए अंग्रेजी में कम्युनलिज्म शब्द प्रचलित है। सांप्रदायिक आधार पर बंटे दो समुदायों के बीच के झगड़े और मारकाट को सांप्रदायिकता कहते हैं।"[4] दंगों का वातावरण भय, अविश्वास और असुरक्षा को जन्म देता है। परिणामस्वरूप खलीलुर्रहमान को कानपुर छोड़कर लाहौर जाना पड़ता है। जाने से पहले वे दिलीप सिंह की पुत्री प्रभावती के नाम एक प्लॉट दे जाते हैं।

"मैं यह प्लॉट बिटिया प्रभावती को देना चाहता हूँ।....... मेरी ओर से मेरी पोती के लिए यह एक तोहफा समझो।"[5]

यह घटना सांप्रदायिक हिंसा के बीच मानवीय संबंधों की स्थायित्व और संवेदनात्मक गहराई को दर्शाती है। इस प्रसंग के माध्यम से लेखक यह संकेत करते हैं कि राजनीति और सत्ता के स्तर पर भले ही विभाजन हो, परंतु मानवीय स्तर पर संबंध अधिक गहरे और स्थायी होते हैं।

इसी प्लॉट पर आगे चलकर 'कोठी ठकुरान' का निर्माण होता है। इसका नाम दिलीप सिंह ने 'सद्भावना' रखा। यह कोठी उपन्यास में बहुस्तरीय प्रतीक के रूप में उपस्थित है। यह कोठी आर्थिक उन्नति, सामाजिक प्रतिष्ठा और वर्ग–उत्थान का संकेत देती है, वहीं यह इतिहास, स्मृति, विभाजन, सांप्रदायिक संबंध और पारिवारिक सत्ता–संघर्ष का भी प्रतीक बन जाती है। कोठी का नामकरण भी परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व को उजागर करता है। प्रारंभ में यह कोठी सुरक्षा, स्थिरता और परिवार का केंद्र है, किंतु अंत में यह स्वार्थ, लालच का स्थल बन जाती है।

दिलीप सिंह की पुत्री प्रभावती का विवाह राधिकारमण सिंह से होता है। राधिकारमण सिंह उपन्यास का वैचारिक और राजनीतिक केंद्र हैं। कॉलेज जीवन में वह क्रांतिकारी विचारों से प्रेरित रहे और परिवर्तन के लिए संघर्ष किया तथा राजनीतिक गतिविधियों के कारण छह माह तक जेल में रहे। स्वतंत्रता और लोकतंत्र के आदर्श उनके जीवन का आधार रहे हैं किंतु स्वतंत्रता के बाद की राजनीति का भ्रष्ट और अवसरवादी स्वरूप उन्हें गहरे स्तर पर आहत करता है। उनका मोहभंग केवल व्यक्तिगत निराशा नहीं, बल्कि स्वतंत्रोत्तर भारत में आदर्शवाद के पतन का प्रतीक है।

राधिकारमण सिंह का चरित्र यह प्रश्न उठाता है कि क्या स्वतंत्रता के बाद सामाजिक न्याय के सपने पूरे हुए? उनका जीवन इस द्वंद्व को प्रकट करता है कि जिस व्यवस्था के लिए संघर्ष किया गया, वही व्यवस्था भ्रष्टाचार और असमानता को जन्म देती है। इस प्रकार उपन्यास राजनीतिक चेतना का एक गंभीर विमर्श प्रस्तुत करता है। उनका मौन, उनकी निराशा और उनका आंतरिक संघर्ष आधुनिक भारतीय बौद्धिक वर्ग की स्थिति को भी दर्शाता है। उदाहरण देखिये "प्रभा, तुम नहीं समझोगी। नयी पीढ़ी बहुत तेज है। मुकदमे जीतने के हजार गुण उन्हें आते हैं। जजों के साथ अच्छा तालमेल रखते हैं। तालमेल के विषय में मैं खुलकर नहीं कहूँगा, लेकिन न अब वे पुराने जज रहे न वे वकील जो सिद्धान्त की डोर थामे रहते थे। अब कचहरियों में बहुत कुछ होता है। वह मेरे वश में नहीं है। मैं सिद्धान्तों की हत्या नहीं कर सकता। आजादी के इतने सालों में बहुत कुछ बदल गया है।"[6]

प्रभावती और राधिकारमण सिंह की पाँच संतानें 'ब्रजेंद्र, पवित्रा, शैलजा, धर्मेंद्र और नमिता' आधुनिक समाज के विभिन्न आयामों का प्रतिनिधित्व करती हैं। ब्रजेंद्र का चंडीगढ़ जाना सामाजिक गतिशीलता और पारिवारिक दूरी का, पवित्रा का विवाहोपरांत आगरा में बस जाना पारिवारिक विघटन को दर्शाता है। शैलजा का प्रेम विवाह कर दिल्ली जाना आधुनिकता, स्वायत्तता और आत्मनिर्णय का प्रतीक है, किंतु यही स्वायत्तता आगे चलकर स्वार्थ में बदल जाती है।

यह परिवार आधुनिक शहरी समाज की संरचनात्मक वास्तविकता को उजागर करता है। संयुक्त परिवार का विघटन, भावनात्मक दूरी, पीढ़ीगत संघर्ष और संबंधों का औपचारिक होना आधुनिक जीवन की विशेषताएँ बन जाती हैं। राधिकारमण सिंह इन परिवर्तनों को असहाय दृष्टि से देखते हैं।

नमिता का चरित्र भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति को उजागर करता है। उसका विवाह दहेज, हिंसा और अपमान के कारण विफल हो जाता है। तलाक के बाद उसका मायके लौटना सामाजिक संरचना की विफलता को दर्शाता है। यह प्रसंग स्त्री विमर्श के संदर्भ में महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह दिखाता है कि आधुनिकता के बावजूद स्त्री की असुरक्षा बनी हुई है। उपन्यास में स्त्री केवल पीड़िता नहीं, बल्कि संवेदनात्मक केंद्र के रूप

में उपस्थित है।

शैलजा आधुनिक उपभोक्तावादी समाज की प्रतिनिधि है। वह अपने पिता को धोखे में रखकर 'कोठी ठकुरान' अपने नाम करवा लेती है।

"बिल के दो ड्राफ्ट तैयार करवाए थे एडवोकेट आर. के. शर्मा ने। पहला ड्राफ्ट वैसा ही था जैसा शिवम सिद्धार्थ ने राधिका बाबू को सुझाया था। दूसरे ड्राफ्ट में लिखा गया था कि राधिका बाबू की मृत्यु के पश्चात कोठी ठकुरान की सर्वाधिकारणी शैलजा सिद्धार्थ होगी।'[7] यह घटना संपत्ति, शक्ति और नियंत्रण की आधुनिक मानसिकता को उजागर करती है। परिवार अब भावनात्मक संस्था न होकर आर्थिक इकाई बन जाता है। यह प्रसंग बाजारवाद और नवउदारवादी मानसिकता की आलोचना भी है।

धर्मेंद्र का चरित्र आधुनिक युवा पीढ़ी की त्रासदी को सामने लाता है। असफलता, बेरोजगारी, पहचान का संकट और भावनात्मक अकेलापन उसे आत्महत्या की ओर ले जाते हैं। लेखक यह दिखाते हैं कि प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिवाद व्यक्ति को मानसिक रूप से कमजोर बना देते हैं। धर्मेंद्र अपने सुसाइड नोट में शिवम सिद्धार्थ को दोषी ठहराता है, किंतु शैलजा पुलिस को रिश्वत देकर साक्ष्य मिटवा देती है।

"आप जो चाहेंगे हम देंगे...........पत्र नष्ट कर दें सर!" शैलेजा के स्वर में पूर्ववत गिड़गिड़ाहट थी।

"दस लाख लेंगे" थानेदार बोला

"सर, सात लाख दे सकते हैं।" शैलजा ने कहा।

"अभी..........इसी क्षण।" थानेदार ने कहा।"[8]

यह प्रसंग प्रशासनिक भ्रष्टाचार और न्याय व्यवस्था की विफलता को उजागर करता है। लोकतांत्रिक संस्थाओं का पतन राजनीतिक मोहभंग को और गहरा करता है। राधिकारमण सिंह का चरित्र यहाँ विशेष रूप से प्रासंगिक हो उठता है, क्योंकि वे इस व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष कर चुके हैं।

उपन्यास का अंतिम चरण अत्यंत मार्मिक है, जहाँ नमिता मानसिक संतुलन खो बैठती है।

"...गंदे चिथड़े कपड़ों में एक विक्षिप्त औरत को 'कोठी इस्माइल खां' के सामने खड़े देखा था, जो कुछ बुदबुदाती हुई ठहाका लगा रही थी। लोगों ने उसे पहचानने की कोशिश की थी। "शायद वो राधिका बाबू की छोटी बेटी नमिता है।" कुछ उम्रदराज लोगों ने आँखे मिचमिचाते हुए कहा........."यह स्थिति आधुनिक जीवन की संवेदनहीनता और अकेलेपन का प्रतीक है। जहाँ परिवार, समाज और संस्थाएँ व्यक्ति को सहारा देने में असफल हो जाती हैं। यह प्रसंग सामाजिक चेतना को झकझोरता है और सहानुभूति की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह कृति परिवार, विवाह, पीढ़ीगत संघर्ष और सामाजिक संस्थाओं के संकट का विश्लेषण प्रस्तुत करती है। सांस्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से यह सांप्रदायिकता, सत्ता, पहचान और विचारधारात्मक संघर्षों को उजागर करती है।

इस प्रकार 'शहर गवाह है' पारिवारिक विघटन, राजनीतिक मोहभंग और सामाजिक चेतना को एक साथ जोड़ते हुए आधुनिक भारतीय समाज का व्यापक और यथार्थपरक चित्र प्रस्तुत करता है। 'कोठी ठकुरान' इस समूची प्रक्रिया का केंद्रीय प्रतीक बनकर उभरती है, जहाँ इतिहास, स्मृति, वर्ग, सांप्रदायिकता, राजनीति और परिवार की परतें एक–दूसरे से जुड़ती हैं। राधिकारमण सिंह का चरित्र स्वतंत्रता–उत्तर भारत में आदर्शवाद से

मोहभंग की प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि नई पीढ़ी उपभोक्तावाद, स्वार्थ और व्यक्तिवाद से प्रभावित दिखाई देती है। यह उपन्यास पाठक को सामाजिक न्याय, नैतिकता, सह–अस्तित्व और मानवीय मूल्यों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करता है। अंततः यह कहा जा सकता है कि यह कृति समकालीन हिंदी साहित्य में सामाजिक चेतना के निर्माण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है और आधुनिक भारतीय समाज के अंतर्विरोधों को समझने का सशक्त माध्यम प्रदान करती है।

सन्दर्भ :–

1. राजपाल हिंदी शब्दकोश, डॉ हरदेव बाहरी, 2016, राजपाल एंड सन्ज दिल्ली।
2. श्यामाचरण दुबे, मानव और संस्कृति, 1960, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. 99
3. रूपसिंह चंदेल, शहर गवाह है, 2007, भावना प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ 31
4. डॉ. अमरनाथ, हिंदी आलोचना की परिभाषिक शब्दावली, 2023, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ 367
5. रूपसिंह चंदेल, शहर गवाह है, 2007, भावना प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ 157
6. वही, पृष्ठ 220
7. वही, पृष्ठ 368
8. वही, पृष्ठ 381
9. वही, पृष्ठ 384

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 202-205

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

झारखंड में औद्योगिक विकास की चुनौतियाँ

डेगलाल महतो
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग
राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़।

झारखंड भारत का एक ऐसा राज्य है जो प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध माना जाता है। यहाँ प्रचुर मात्रा में कोयला, लौह अयस्क, तांबा, बॉक्साइट, यूरेनियम, चूना पत्थर और अन्य खनिज उपलब्ध हैं। यही कारण है कि झारखंड को भारत का "खनिज भंडार" भी कहा जाता है। औद्योगिक दृष्टि से भी यह क्षेत्र लंबे समय से महत्वपूर्ण रहा है। ब्रिटिश काल से ही यहाँ खनन और धातु उद्योग का विकास प्रारंभ हो गया था। जमशेदपुर में टाटा स्टील की स्थापना ने इस क्षेत्र को औद्योगिक मानचित्र पर विशेष पहचान दिलाई। सन् 2000 में बिहार से अलग होकर झारखंड एक स्वतंत्र राज्य बना। राज्य गठन के समय यह अपेक्षा की गई थी कि प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता और औद्योगिक आधार के कारण झारखंड देश के अग्रणी औद्योगिक राज्यों में शामिल हो जाएगा। किंतु वास्तविकता यह है कि राज्य बनने के दो दशक बाद भी झारखंड अपेक्षित औद्योगिक विकास हासिल नहीं कर सका है। उद्योगों की स्थापना, निवेश आकर्षण, रोजगार सृजन और संतुलित आर्थिक विकास के क्षेत्र में कई बाधाएँ सामने आती रही हैं।

झारखंड में औद्योगिक विकास की प्रक्रिया अनेक प्रकार की चुनौतियों से प्रभावित रही है। इनमें अवसंरचना की कमी, राजनीतिक अस्थिरता, प्रशासनिक जटिलताएँ, भूमि अधिग्रहण की समस्याएँ, आदिवासी समुदायों के अधिकारों से जुड़े प्रश्न, पर्यावरणीय चिंताएँ तथा निवेश की कमी जैसी अनेक समस्याएँ शामिल हैं। इन चुनौतियों के कारण राज्य में औद्योगीकरण की गति अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाई है। वर्तमान संदर्भ में झारखंड के आर्थिक विकास के लिए औद्योगीकरण अत्यंत महत्वपूर्ण है। औद्योगिक विकास न केवल राज्य की आय बढ़ाने में सहायक होता है बल्कि रोजगार के अवसर उत्पन्न करता है, क्षेत्रीय असमानताओं को कम करता है और सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन को भी गति देता है। अतः यह आवश्यक है कि झारखंड में औद्योगिक विकास की चुनौतियों का गहन अध्ययन किया जाए और उनके समाधान के लिए उपयुक्त रणनीतियाँ तैयार की जाएँ।

इसी उद्देश्य से प्रस्तुत शोध आलेख में झारखंड के औद्योगिक विकास की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करते हुए उन प्रमुख चुनौतियों पर विस्तार से विचार किया गया है जो राज्य के औद्योगिक विकास में बाधा उत्पन्न कर रही हैं।

झारखंड का औद्योगिक इतिहास काफी पुराना है। ब्रिटिश शासन के दौरान इस क्षेत्र में खनन गतिविधियों

की शुरुआत हुई थी। कोयला खदानों के विकास ने यहाँ उद्योगों की स्थापना के लिए आधार तैयार किया। इसके बाद लौह और इस्पात उद्योग का विकास हुआ। जमशेदपुर में टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टाटा स्टील) की स्थापना ने झारखंड को भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों में शामिल कर दिया। स्वतंत्रता के बाद भी झारखंड क्षेत्र में कई बड़े उद्योग स्थापित किए गए। बोकारो स्टील प्लांट, हेवी इंजीनियरिंग कॉरपोरेशन (राँची), मेकॉन, सीसीएल और बीसीसीएल जैसी संस्थाओं ने इस क्षेत्र के औद्योगिक विकास को बढ़ावा दिया। इन उद्योगों के कारण झारखंड देश के प्रमुख औद्योगिक केंद्रों में से एक बन गया। हालाँकि झारखंड का औद्योगिक विकास मुख्यतः खनिज आधारित उद्योगों तक सीमित रहा है। यहाँ इस्पात, कोयला, एल्यूमीनियम और ऊर्जा उद्योगों का अधिक विकास हुआ, जबकि अन्य प्रकार के विनिर्माण उद्योग अपेक्षाकृत कम विकसित हो सके। राज्य गठन के बाद यह उम्मीद थी कि विविध औद्योगिक क्षेत्रों में निवेश बढ़ेगा और उद्योगों का विस्तार होगा, लेकिन कई कारणों से यह प्रक्रिया धीमी रही।

झारखंड जैसे संसाधन–समृद्ध राज्य के लिए औद्योगिक विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं –

- पहला, औद्योगिक विकास राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाता है। उद्योगों के माध्यम से उत्पादन बढ़ता है और राज्य की आय में वृद्धि होती है।
- दूसरा, औद्योगीकरण रोजगार सृजन का प्रमुख साधन है। झारखंड में बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए उद्योगों का विकास आवश्यक है।
- तीसरा, औद्योगिक विकास से क्षेत्रीय असमानताएँ कम होती हैं। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना से वहाँ आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ती हैं।
- चौथा, औद्योगिक विकास सामाजिक परिवर्तन को भी गति देता है। इससे शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन और संचार जैसी सुविधाओं का विस्तार होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि झारखंड के समग्र विकास के लिए औद्योगिक विकास अत्यंत आवश्यक है। किंतु इसके मार्ग में अनेक चुनौतियाँ मौजूद हैं।

झारखंड में औद्योगिक विकास की प्रमुख चुनौतियाँ :

1. **अवसंरचना की कमी :** औद्योगिक विकास के लिए मजबूत अवसंरचना अत्यंत आवश्यक होती है। झारखंड में सड़क, रेल, बिजली और संचार जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी कई क्षेत्रों में अभी भी देखी जाती है। राज्य के कई औद्योगिक क्षेत्रों में परिवहन सुविधाएँ पर्याप्त विकसित नहीं हैं। खराब सड़क व्यवस्था और सीमित रेल संपर्क के कारण उद्योगों को कच्चा माल लाने और उत्पादों को बाजार तक पहुँचाने में कठिनाई होती है। इसके अतिरिक्त बिजली आपूर्ति की अनियमितता भी औद्योगिक उत्पादन को प्रभावित करती है। अवसंरचना की इस कमी के कारण निवेशक झारखंड में उद्योग स्थापित करने से हिचकते हैं, जिससे औद्योगिक विकास की गति धीमी पड़ जाती है।

2. **भूमि अधिग्रहण की समस्या :** झारखंड में भूमि अधिग्रहण औद्योगिक विकास की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। राज्य की बड़ी आबादी आदिवासी समुदाय से संबंधित है, जिनकी आजीविका भूमि और जंगलों पर निर्भर करती है। जब उद्योगों की स्थापना के लिए भूमि अधिग्रहण किया जाता है तो स्थानीय समुदायों में

असंतोष उत्पन्न होता है। कई बार विस्थापन, पुनर्वास और मुआवजे से जुड़े मुद्दों के कारण आंदोलन और विरोध प्रदर्शन भी देखने को मिलते हैं। भूमि अधिग्रहण की जटिल प्रक्रिया और सामाजिक विरोध के कारण कई औद्योगिक परियोजनाएँ वर्षों तक लंबित रहती हैं या पूरी तरह बंद हो जाती हैं।

3. **राजनीतिक अस्थिरता :** राजनीतिक स्थिरता किसी भी राज्य के आर्थिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। झारखंड में राज्य गठन के बाद लंबे समय तक राजनीतिक अस्थिरता बनी रही। सरकारों के बार–बार बदलने और नीतिगत निरंतरता की कमी के कारण औद्योगिक नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन नहीं हो सका। इससे निवेशकों का विश्वास भी प्रभावित हुआ। राजनीतिक अस्थिरता के कारण कई महत्वपूर्ण औद्योगिक परियोजनाएँ समय पर पूरी नहीं हो सकीं।

4. **प्रशासनिक जटिलताएँ और भ्रष्टाचार :** औद्योगिक परियोजनाओं के लिए अनेक प्रकार की सरकारी अनुमतियों की आवश्यकता होती है। झारखंड में प्रशासनिक प्रक्रियाएँ कई बार जटिल और समय–साध्य होती हैं। लाइसेंस, पर्यावरण स्वीकृति, भूमि हस्तांतरण और अन्य औपचारिकताओं में लंबा समय लगने के कारण उद्योगों की स्थापना में देरी होती है। इसके अतिरिक्त भ्रष्टाचार की समस्या भी औद्योगिक विकास के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती है।

5. **कौशलयुक्त श्रम की कमी :** हालाँकि झारखंड में श्रमबल की कमी नहीं है, लेकिन प्रशिक्षित और कौशलयुक्त श्रमिकों की कमी एक बड़ी समस्या है। आधुनिक उद्योगों के लिए तकनीकी ज्ञान और विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। राज्य में तकनीकी शिक्षा और कौशल विकास संस्थानों की संख्या अभी भी सीमित है। इसके कारण कई उद्योगों को बाहर से श्रमिकों को लाना पड़ता है, जिससे स्थानीय युवाओं को अपेक्षित रोजगार नहीं मिल पाता।

6. **पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियाँ :** खनन और भारी उद्योगों के कारण झारखंड में पर्यावरणीय समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। वनों की कटाई, जल प्रदूषण और वायु प्रदूषण जैसी समस्याएँ कई क्षेत्रों में गंभीर रूप ले चुकी हैं। इसके अतिरिक्त उद्योगों के कारण स्थानीय समुदायों का विस्थापन भी एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा है। यदि इन समस्याओं का उचित समाधान नहीं किया जाता, तो औद्योगिक विकास के विरुद्ध जन–आंदोलन बढ़ सकते हैं।

7. **निवेश की कमी :** झारखंड में प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता होने के बावजूद अपेक्षित स्तर पर निवेश नहीं हो पाया है। निवेशकों के लिए अनुकूल वातावरण, पारदर्शी नीतियाँ और बेहतर अवसंरचना का अभाव निवेश को प्रभावित करता है। इसके परिणामस्वरूप कई संभावित औद्योगिक परियोजनाएँ प्रारंभ ही नहीं हो पातीं।

झारखंड में औद्योगिक विकास को गति देने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं :–

- सबसे पहले राज्य में अवसंरचना का व्यापक विकास किया जाना चाहिए। सड़क, रेल, बिजली और संचार सुविधाओं को सुदृढ़ बनाकर उद्योगों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया जा सकता है।
- दूसरा, भूमि अधिग्रहण और पुनर्वास की नीतियों को अधिक पारदर्शी और न्यायसंगत बनाया जाना चाहिए। स्थानीय समुदायों की सहभागिता सुनिश्चित करके उनके हितों की रक्षा की जानी चाहिए।
- तीसरा, राज्य में राजनीतिक स्थिरता और नीतिगत निरंतरता बनाए रखना आवश्यक है। इससे निवेशकों का विश्वास बढ़ेगा और औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन मिलेगा।

- चौथा, कौशल विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि स्थानीय युवाओं को उद्योगों में रोजगार के अवसर मिल सकें।
- पाँचवाँ, पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए सतत औद्योगिक विकास की नीति अपनाई जानी चाहिए।

निष्कर्ष :

झारखंड प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध राज्य है और औद्योगिक विकास की अपार संभावनाएँ यहाँ मौजूद हैं। इसके बावजूद राज्य अपेक्षित औद्योगिक प्रगति हासिल नहीं कर पाया है। अवसंरचना की कमी, भूमि अधिग्रहण की समस्याएँ, राजनीतिक अस्थिरता, प्रशासनिक जटिलताएँ, कौशलयुक्त श्रम की कमी और पर्यावरणीय चुनौतियाँ इस विकास प्रक्रिया में प्रमुख बाधाएँ रही हैं।

इन चुनौतियों का समाधान समन्वित और दूरदर्शी नीतियों के माध्यम से ही संभव है। यदि राज्य सरकार प्रभावी औद्योगिक नीतियाँ अपनाए, निवेश के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करे और स्थानीय समुदायों के हितों को ध्यान में रखते हुए विकास योजनाएँ लागू करे, तो झारखंड औद्योगिक विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति कर सकता है।

झारखंड का औद्योगिक विकास केवल आर्थिक समृद्धि का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन और क्षेत्रीय संतुलित विकास का भी आधार बन सकता है। इसलिए आवश्यक है कि राज्य में औद्योगिक विकास की चुनौतियों को गंभीरता से समझकर उनके समाधान के लिए ठोस कदम उठाए जाएँ।

संदर्भ सूची :-

1. झा, बी. एन. झारखंड का आर्थिक विकास. नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन, 2012, पृ. 45
2. सिंह, के. के. झारखंड की अर्थव्यवस्था और विकास. पटना : बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2015, पृ. 78
3. प्रसाद, रामदेव. झारखंड का सामाजिक और आर्थिक इतिहास. नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन, 2010, पृ. 120
4. कुमार, अजय. खनिज संसाधन और औद्योगिक विकास. दिल्ली : ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, 2014, पृ. 90
5. शर्मा, आर. एन. भारतीय औद्योगिक विकास. नई दिल्ली : अटलांटिक पब्लिशर्स, 2013, पृ. 150
6. मिश्रा, एस. सी. भारत का आर्थिक भूगोल. इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 2011, पृ. 210
7. चौधरी, महेंद्र. झारखंड में औद्योगीकरण और विकास. राँची : झारखंड हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2016, पृ. 55
8. भारत सरकार. आर्थिक सर्वेक्षण (Economic Survey). नई दिल्ली : वित्त मंत्रालय, 2022, पृ. 230
9. झारखंड सरकार. झारखंड आर्थिक सर्वेक्षण. राँची : योजना एवं विकास विभाग, 2023, पृ. 85
10. दत्त, रुद्र और सुंदरम, के. पी. एम. भारतीय अर्थव्यवस्था. नई दिल्ली : एस. चंद एंड कंपनी, 2018, पृ. 310–328।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 206-211

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

डॉ० बालकिशन शर्मा के काव्य में ग्राम्य-जीवन का सौन्दर्यबोध और सांस्कृतिक अस्मिता

रिद्धि वधवा, षोधार्थी,

डॉ० बाबूराम, षोध निर्देषक एवं प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,

हिंदी विभाग, बाबा मस्तनाथ विष्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा।

शोध पत्र :-

भारतीय साहित्य में ग्राम्य–जीवन का चित्रण प्राचीन काल से ही एक सशक्त परंपरा के रूप में विकसित हुआ है। वेदों से लेकर आधुनिक कथा–साहित्य और कविता तक गाँव भारतीय चेतना का मूल आधार रहा है। इसी परंपरा को डॉ. बालकिशन शर्मा आधुनिक सामाजिक यथार्थ के संदर्भ में पुनर्स्थापित करते हैं। उनके यहाँ ग्राम्य जीवन का चित्रण केवल सौन्दर्याभिव्यक्ति या स्मृतिमूलक दृष्टि तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक सांस्कृतिक और वैचारिक हस्तक्षेप का रूप ले लेता है। वे गाँव को बाह्य दृश्य के रूप में नहीं, बल्कि उसकी अंतःचेतना, उसकी संवेदनात्मक संरचना और उसके मूल्यबोध के साथ प्रस्तुत करते हैं।

'गाँव की छाँव' मात्र एक काव्य–संग्रह ही नहीं वरन् उन सभी बिन्दुओं की अभिव्यक्ति है जो धीरे–धीरे विवशतावश अथवा जान बूझकर भारत के ग्रामों से दूर होते जा रहे हैं या दूर किये जा रहे हैं। कवि की रचनात्मक दृष्टि और उद्देश्य स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आते हैं। यहाँ 'छाँव' केवल आश्रय या शीतलता का प्रतीक नहीं है, बल्कि वह ग्राम्य जीवन की उस सांस्कृतिक सुरक्षा का बोध कराती है, जो आधुनिकता, शहरीकरण और बदलती सामाजिक संरचनाओं के कारण संकटग्रस्त होती जा रही है। कवि यह संकेत देता है कि ग्राम्य संस्कृति के अनेक तत्व सामुदायिकता, लोकाचार, परस्पर सहयोग, प्रकृति से आत्मीय संबंध और नैतिक मूल्यों की सहजता आदि धीरे–धीरे लुप्त हो रहे हैं। यह लोक केवल समय का परिणाम नहीं, बल्कि कई बार योजनाबद्ध l kekft d &v kÆFkd i fj orZkad k Hkh i fj . kke gS[1]

इस प्रकार, डॉ. बालकिशन शर्मा का ग्राम्य चित्रण परंपरा का पुनरावर्तन मात्र नहीं है, बल्कि वह आधुनिक संदर्भों में उसकी पुनर्व्याख्या है। वे गाँव को स्थिर और पिछड़े हुए रूप में नहीं, बल्कि मूल्यसम्पन्न, जीवंत और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध इकाई के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनकी दृष्टि में ग्राम्य जीवन का संरक्षण केवल अतीत–प्रेम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा का प्रश्न है। यही कारण है कि गाँव की छाँव एक साधारण काव्य–संग्रह से आगे बढ़कर भारतीय ग्राम्य संस्कृति के संरक्षण का साहित्यिक घोष बन जाता है।

ग्राम्य-जीवन का सौन्दर्यबोध :

डॉ. शर्मा के काव्य में ग्राम्य जीवन का सौन्दर्य केवल प्राकृतिक छवियों का संयोजन नहीं है, बल्कि वह स्मृति, अनुभव और सांस्कृतिक चेतना के माध्यम से निर्मित एक समग्र सौन्दर्य–दृष्टि है। गाँव की छाँव की प्रारम्भिक कविता में कवि अतीत के ग्राम्य परिवेश को स्मरण करते हुए उसे पुनर्जीवित करता है –

'पीपल की छाया, वो बरगद की बाहें,
घासों-पलाशों से झूमती वो राहें।
आमों के बौर, वो कोयल की बोली,
सावन के झूले वो रंगों की होली।'[2]

ग्राम्य जीवन का सौन्दर्य उसके वृक्षों, ऋतुओं और पगडंडियों में जितना है, उतना ही उसमें निहित आत्मीय संबंधों और सामूहिक जीवन की लय में भी है। इस प्रकार डॉ. शर्मा ग्राम्य–जीवन के सौन्दर्य को एक बहुआयामी अनुभव के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जहाँ प्रकृति, स्मृति और सांस्कृतिक चेतना एक–दूसरे में विलीन होकर जीवन की समग्रता को अभिव्यक्त करती हैं।

प्रकृति और ग्राम्य चेतना :

हर्‌या–भर्‌या हरियाणा में कवि अपनी जन्मभूमि के प्रति जिस आत्मीय गौरव को व्यक्त करता है, वह केवल क्षेत्रीय प्रेम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना की गहरी अभिव्यक्ति है :

'बैठ देवता जलैं सुर्ग में, क्यूँ हर्‌या-भर्‌या हरियाणा।
इसा रंगीला और सजीला, सुर्ग में कहाँ ठिकाणा?
इसके बरगद, पिप्पल, पनघट, मन्दिर और शिवाले,
खिले कमल वो ताल-तलैया, मर्द बड़े मतवाले।'[3]

यहाँ सौन्दर्य किसी कृत्रिम वैभव का परिणाम नहीं, बल्कि प्रकृति और संस्कृति के स्वाभाविक मेल से उत्पन्न है।

खेत-खलिहान का सांस्कृतिक रूप :

ग्राम्य जीवन की आत्मा कृषि में निहित है, और डॉ. शर्मा इस सत्य को आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान करते हैं –

'आओ चलें खेत की ओर,
जी भर कर लें इनके दर्शन।
कण-कण इस पावन भू का,
शत-शत मन्दिर का दर्शन।'[4]

इन पंक्तियों में खेत को केवल अन्नोत्पादन का स्थान नहीं माना गया, बल्कि उसे पवित्र स्थल के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। "दर्शन" शब्द का प्रयोग यह संकेत देता है कि खेत मात्र भौतिक संपदा का स्रोत नहीं, बल्कि श्रद्धा और कृतज्ञता का केन्द्र है। "कण–कण इस पावन भू का" कहकर कवि भूमि को मातृरूप में प्रतिष्ठित करता है, जिसके प्रत्येक अंश में पवित्रता और जीवनदायिनी शक्ति समाई है।

"शत–शत मन्दिर का दर्शन" खेत को आध्यात्मिक स्तर पर मन्दिर के समकक्ष स्थापित करता है। यहाँ

श्रम पूजा के समान है और कृषक उपासक के रूप में उभरता है। यह दृष्टि ग्राम्य जीवन के सौन्दर्य को आध्यात्मिक आयाम प्रदान करती है–भूमि माँ है, बीज श्रद्धा है और श्रम साधना है। खेत–खलिहान इस प्रकार केवल आर्थिक संरचना का आधार नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान का केन्द्र बन जाते हैं।

बरगद और चौपाल : सांस्कृतिक अस्मिता का केन्द्र :

ग्राम्य जीवन में चौपाल केवल एक भौतिक स्थान नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक संरचना का जीवंत केन्द्र होती है। डॉ. शर्मा इस सत्य को अत्यंत संवेदनात्मक रूप में अभिव्यक्त करते हैं –

'बरगद छाँव, गाँव थे बसते।
पिता–गोद ज्यों बालक हँसते।।
लम्बी बाहें, शीतल छाया।
उसमें सुख-संसार समाया।।'(5)

यह ग्रामीण लोकतंत्र का जीवंत रूप है, जहाँ बुजुर्गों का अनुभव, युवाओं की ऊर्जा और बच्चों की चंचलता एक साथ उपस्थित रहते हैं। बरगद इस सामाजिक संरचना का मौन संरक्षक है, उसकी छाया में "सुख–संसार समाया" है। इस प्रकार बरगद और चौपाल मिलकर ग्राम्य सांस्कृतिक अस्मिता के केन्द्रीय प्रतीक बन जाते हैं, जो परंपरा और सामूहिक जीवन की निरंतरता को व्यक्त करते हैं।

सांस्कृतिक अस्मिता और लोकधर्म :

डॉ. बालकिशन शर्मा के काव्य में ग्राम्य जीवन का स्वरूप केवल प्राकृतिक सौन्दर्य तक सीमित नहीं है; वह एक सुदृढ़ सांस्कृतिक अस्मिता और लोकधर्म का आधार भी है। उनके अनुसार गाँवों की सामाजिक संरचना का मूल तत्व 'अन्योन्याश्रय' था एक ऐसी व्यवस्था जिसमें प्रत्येक व्यक्ति दूसरे का पूरक था। वे लिखते हैं –

'ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था अन्योन्याश्रित थी, अतः जाति–धर्म,
ऊँच–नीच के नाम पर मनों में भेदभाव की दीवार नहीं थी।
किसान को प्रतिदिन हल की फाली, खुरपा, दरांती पैनी कराने हेतु लुहार से,
हुक्के की चिलम, घड़ा मटकी लेने हेतु कुम्हार से काम पड़ता था।'(6)

ग्राम्य जीवन में सांस्कृतिक अस्मिता का आधार परस्पर विश्वास, श्रम–सम्मान और सामाजिक सहभागिता है।

इसी भाव को हर्या–भर्या हरियाणा की भूमिका में भी रेखांकित किया गया है –

'उसमें झूठ–कपट, छल, बेईमानी और
दिखावा नहीं था। सरलता, सादगी,
ईमानदारी और प्यार–ही–प्यार भरा था।
आदमी, आदमी को चाहता था क्योंकि एक
को दूसरे की जरूरत थी।'(7)

यहाँ सांस्कृतिक अस्मिता का मूल तत्व नैतिकता और मानवीय संबंध हैं। "एक को दूसरे की जरूरत" केवल आर्थिक वाक्य नहीं, बल्कि सामाजिक और भावनात्मक सत्य है। यह पारस्परिक आवश्यकता ही प्रेम, विश्वास और सहयोग को जन्म देती है। ग्राम्य जीवन में व्यक्ति का अस्तित्व समुदाय से जुड़ा है; वह अकेला

नहीं, बल्कि सामूहिक जीवन का अंग है। यही लोकधर्म है, जहाँ संबंध स्वार्थ से नहीं, बल्कि सहभागिता और अपनत्व से संचालित होते हैं।

'जोहड़-बावड़ी, कुआ-पूजन, सांझी, सांझ-सबेरा देखो,
साधु रूप बणे ईश्वर का, बाहर गाम ते डेरा देखो,
यज्ञ-हवन और जगराते में, हुआ सन्त का फेरा देखो,
ब्याह-भात की जात-स्यात में, के मेरा, के तेरो देखो।'(8)

इन पंक्तियों में ग्राम्य जीवन की सामूहिकता अपने चरम रूप में अभिव्यक्त होती है। जोहड़, बावड़ी और कुआ–पूजन जल–संस्कृति और प्रकृति के प्रति श्रद्धा के प्रतीक हैं। यज्ञ–हवन और जगराते धार्मिक–आध्यात्मिक चेतना को सुदृढ़ करते हैं। "ब्याह–भात की जात–स्यात में, के मेरा, के तेरो देखो" यह पंक्ति ग्राम्य संस्कृति की समरसता का शिखर है। विवाह जैसे सामाजिक अवसरों पर व्यक्तिगत स्वामित्व का भाव मिट जाता है; सब कुछ सामूहिक हो जाता है।

इस प्रकार डॉ. शर्मा के काव्य में सांस्कृतिक अस्मिता का आधार लोकधर्म, पारस्परिक आवश्यकता, नैतिक मूल्यों और सामूहिक उत्सवधर्मिता में निहित है। गाँव उनके यहाँ केवल निवास–स्थल नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक चेतना है जहाँ 'मैं' और 'तू' का भेद मिटकर 'हम' की भावना में रूपांतरित हो जाता है।

युगबोध और सामाजिक चेतना :

डॉ. शर्मा का काव्य ग्राम्य जीवन के माध्यम से समकालीन समाज की विडम्बनाओं पर तीखी टिप्पणी भी करता है। वे लिखते हैं –

'चोरी, जारी, नशा, गरीबी, इन चारों नै जो खोया।
तीन लोक में हांडे जा, ना मिलै ठिकाणा टोह्या।।
चोर आदमी, चोरी करता, लोभ के वश में हो कै,
कुछ तंगी, अधनंगी कर दे, ना पूरा पाटै रो-रो कै।'(9)

इन पंक्तियों में सामाजिक बुराइयों का यथार्थ चित्रण है। चोरी, नशा और गरीबी केवल व्यक्तिगत दोष नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना के संकट के संकेत हैं। "तीन लोक में हांडे जा" यह अतिशयोक्ति उस बेचैनी और अस्थिरता को दर्शाती है, जो इन बुराइयों के कारण उत्पन्न होती है। लोभ के वशीभूत होकर व्यक्ति अपनी मानवीयता खो देता है। यहाँ कवि ग्राम्य समाज में प्रवेश करती उन प्रवृत्तियों को चिन्हित करता है, जो पारंपरिक संतुलन को भंग कर रही हैं।

ग्राम्य स्मृति और पुनर्स्थापन की आकांक्षा :

डॉ. शर्मा केवल विघटन का वर्णन कर निराश नहीं होते; उनके काव्य में पुनर्स्थापन की तीव्र आकांक्षा भी विद्यमान है। खो गया मेरा हरियाणा में वे लिखते हैं –

'माणस, माणस नै प्यारा था, दिल-तै-दिल खिलज्यां थे,
लाख लड़ाई, फेर समाई, मन-तै-मन मिलज्यां थे,
चौपाल बणी थी माँ की जाई, बूढ़े बापू बणज्यां थे,
देर बात में के रह थी, जब गल-तै-गल मिलज्यां थे।'(10)

इन पंक्तियों में कवि उस बीते समय की स्मृति को जीवंत करता है, जब मनुष्यता संबंधों का आधार थी। "दिल–तै–दिल खिलज्यां थे" और "मन–तै–मन मिलज्यां थे" आत्मीयता और सहज क्षमाशीलता के प्रतीक हैं। "चौपाल बणी थी माँ की जाई" यह उपमा चौपाल को मातृरूप में प्रतिष्ठित करती है, जहाँ सबके लिए समान स्नेह और संरक्षण उपलब्ध था।

यह स्मृति केवल अतीत–प्रेम नहीं, बल्कि पुनर्स्थापन की आकांक्षा है। कवि चाहता है कि ग्राम्य जीवन की वह सामुदायिक चेतना, प्रेम और समरसता पुनः स्थापित हो। इस प्रकार डॉ. शर्मा का काव्य ग्राम्य सौन्दर्य, सामाजिक विघटन और पुनर्सृजन की आकांक्षा तीनों को एक साथ समेटे हुए है। गाँव उनके यहाँ केवल स्मृति का विषय नहीं, बल्कि भविष्य की सांस्कृतिक दिशा का संकेत भी है।

निष्कर्ष :

डॉ. बालकिशन शर्मा का काव्य ग्राम्य जीवन की सौन्दर्य चेतना, लोकधर्म और सांस्कृतिक अस्मिता का एक सशक्त और बहुआयामी साहित्यिक दस्तावेज़ है। उनके लिए गाँव केवल खेत–खलिहान, वृक्षों और पगडंडियों का भौगोलिक विस्तार नहीं, बल्कि जीवन–मूल्यों का जीवंत केन्द्र है। उनके काव्य में प्रकृति की हरियाली, श्रम की पवित्रता, चौपाल की सामूहिकता, पनघट की आत्मीयता और त्यौहारों का उल्लास सभी मिलकर एक ऐसी सांस्कृतिक संरचना का निर्माण करते हैं, जिसमें मनुष्य और समाज के बीच गहरा सामंजस्य विद्यमान है।

वे ग्राम्य जीवन के सौन्दर्य को केवल दृश्यात्मक स्तर पर नहीं, बल्कि भावात्मक और आध्यात्मिक धरातल पर स्थापित करते हैं। खेत उनके यहाँ मन्दिर है, श्रम साधना है, बरगद सांस्कृतिक संरक्षक है और चौपाल लोक–लोकतंत्र का प्रतीक है। पनघट सामाजिक समरसता का स्थल है, जहाँ जल के साथ संबंधों की भी धारा प्रवाहित होती है। त्यौहार सामूहिक जीवन की ऊर्जा और लय को पुनर्जीवित करते हैं। इस प्रकार उनका काव्य ग्राम्य संस्कृति की समग्रता को अभिव्यक्त करता है।

साथ ही, वे आधुनिकता के अंधाधुंध विस्तार, धन–प्रधान मानसिकता, राजनीतिक विकृति, नैतिक पतन और सांप्रदायिक विघटन के प्रति सजग और संवेदनशील हैं। उनके व्यंग्य में तीखापन है, परंतु उसमें करुणा भी निहित है। वे केवल विघटन का चित्रण नहीं करते, बल्कि उस सांस्कृतिक संतुलन के खो जाने की पीड़ा व्यक्त करते हैं, जो कभी ग्राम्य जीवन की पहचान था।

अंततः उनका काव्य एक स्पष्ट संदेश देता है, सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा बाह्य आडंबर से नहीं, बल्कि मानवीय संबंधों की पुनर्स्थापना से संभव है। प्रेम, विश्वास, अन्योन्याश्रय और सामूहिकता जैसे ग्राम्य मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा ही समाज को स्थायित्व और संतुलन प्रदान कर सकती है। इस दृष्टि से डॉ. बालकिशन शर्मा का काव्य केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान के लिए चेतावनी और भविष्य के लिए मार्गदर्शन भी है।

संदर्भ सूची :

1. बालकिशन शर्मा, गाँव की छाँव. माण्डवी प्रकाशन, ग़ाजियाबाद (उ.प्र.), 2002, पृ. 1.
2. बालकिशन शर्मा, गाँव की छाँव. माण्डवी प्रकाशन, 2002, पृ. 13.
3. बालकिशन शर्मा, हर्‍या–भर्‍या हरियाणा. लता साहित्य सदन, ग़ाजियाबाद (उ.प्र.), 2011, पृ. 20.

4. बालकिशन शर्मा, गाँव की छाँव. माण्डवी प्रकाशन, ग़ाजियाबाद (उ.प्र.), 2002, पृ. 38.
5. बालकिशन शर्मा, गाँव की छाँव. माण्डवी प्रकाशन, ग़ाजियाबाद (उ.प्र.), 2002, पृ. 49.
6. बालकिशन शर्मा, गाँव की छाँव. माण्डवी प्रकाशन, ग़ाजियाबाद (उ.प्र.), 2002, पृ. 54.
7. बालकिशन शर्मा, गाँव की छाँव. माण्डवी प्रकाशन, ग़ाजियाबाद (उ.प्र.), 2002, पृ. 99—100.
8. बालकिशन शर्मा, हर्‍या—भर्‍या हरियाणा. लता साहित्य सदन, ग़ाजियाबाद (उ.प्र.), 2011, पृ. 24.
9. बालकिशन शर्मा, हर्‍या—भर्‍या हरियाणा. लता साहित्य सदन, ग़ाजियाबाद (उ.प्र.), 2011, पृ. 64.
10. बालकिशन शर्मा, हर्‍या—भर्‍या हरियाणा. लता साहित्य सदन, ग़ाजियाबाद (उ.प्र.), 2011, पृ. 116.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
March 2026 Page No. : 212-215

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
https://doi.org/10.5281/zenodo.18621821

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिन्दी साहित्य की संभावनाएँ

हर्षा, शोधार्थी
डॉ. अरविंद दीक्षित, शोध पर्यवेक्षक एवं सह आचार्य,
डॉ. प्रवीन शर्मा, सह शोध पर्यवेक्षक एवं सहायक आचार्या,
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ।

सार :

डिजिटल युग ने साहित्यिक सृजन, प्रकाषन, वितरण और पाठकीय अनुभव को पूरी तरह बदल दिया है। हिंदी साहित्य, जो परंपरागत रूप से पुस्तकों, पत्रिकाओं और मुद्रित माध्यमों तक सीमित था, आज डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे ब्लॉग, वेबसाइट, ई–पुस्तकें, सोशल मीडिया, यूट्यूब चैनल और ऑडियोबुक्स के माध्यम से वैश्विक स्तर पर पहुँच बना रहा है। यह शोध–पत्र डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी साहित्य की संभावनाओं, अवसरों, चुनौतियों तथा भविष्य की दिशा का विश्लेषण करता है। साथ ही यह भी दर्शाता है कि डिजिटल माध्यम कैसे हिंदी साहित्य को नए पाठक वर्ग, नई अभिव्यक्ति शैली और वैश्विक पहचान प्रदान कर रहा है।

1. प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य भारतीय संस्कृति और भावनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रहा है। परंपरागत रूप से यह साहित्यिक पत्रिकाओं, पुस्तकों और मंचीय पाठ तक सीमित था। लेकिन 21वीं सदी में इंटरनेट और डिजिटल तकनीक के विकास ने साहित्य के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म ने साहित्य को "कागज से स्क्रीन" तक पहुँचा दिया है। अब कोई भी लेखक बिना किसी प्रकाशक के अपनी रचना सीधे पाठकों तक पहुँचा सकता है। ब्लॉगिंग, सोशल मीडिया पोस्ट, ऑनलाइन पत्रिकाएँ, ई–पुस्तकें और ऑडियो–विजुअल माध्यमों ने हिंदी साहित्य को एक नया आयाम दिया है।

आज का पाठक मोबाइल और लैपटॉप पर साहित्य पढ़ रहा है, जिससे साहित्य अधिक सुलभ, तेज और व्यापक हो गया है।

2. शोध के उद्देश्य :

इस शोध-पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

- डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी साहित्य के विकास का अध्ययन करना।
- नए माध्यमों द्वारा साहित्यिक प्रसार की संभावनाओं को समझना।
- लेखकों और पाठकों के बीच बदलते संबंधों का विश्लेषण करना।
- डिजिटल युग में हिंदी साहित्य की चुनौतियों को पहचानना।

- भविष्य में हिंदी साहित्य की दिशा का मूल्यांकन करना।

3. शोध पद्धति :

यह शोध गुणात्मक प्रकृति का है। इसमें विभिन्न स्रोतों जैसे–

- ऑनलाइन लेख।
- डिजिटल साहित्यिक प्लेटफॉर्म।
- शोध पत्र।
- ब्लॉग और ई–पत्रिकाएँ।
- सोशल मीडिया अध्ययन

का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है।

4. डिजिटल प्लेटफॉर्म और हिंदी साहित्य का विकास :

डिजिटल प्लेटफॉर्म ने हिंदी साहित्य को नई गति प्रदान की है।

4.1 ब्लॉगिंग का योगदान :

ब्लॉगिंग ने लेखकों को स्वतंत्र मंच दिया है। अब कोई भी लेखक अपनी कहानियाँ, कविताएँ और विचार सीधे पाठकों तक पहुँचा सकता है।

4.2 ई-पुस्तकों का विस्तार :

Kindle, Google Books जैसी सेवाओं ने हिंदी ई–पुस्तकों को लोकप्रिय बनाया है। इससे पुस्तकें सस्ती और सुलभ हो गई हैं।

4.3 सोशल मीडिया का प्रभाव :

Facebook, Instagram और Twitter (X) जैसे प्लेटफॉर्म पर साहित्यिक रचनाएँ तेजी से वायरल होती हैं। छोटी कविताएँ और शॉर्ट स्टोरीज अत्यधिक लोकप्रिय हो रही हैं।

4.4 यूट्यूब और ऑडियो साहित्य :

यूट्यूब चैनलों पर कविताएँ, कहानियाँ और साहित्यिक विश्लेषण वीडियो के रूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। ऑडियोबुक्स ने दृष्टिहीन और व्यस्त पाठकों के लिए साहित्य को आसान बनाया है।

5. हिंदी साहित्य की नई संभावनाएँ

5.1 वैश्विक पहुंच :

डिजिटल माध्यमों के कारण हिंदी साहित्य अब भारत तक सीमित नहीं रहा। यह विदेशों में बसे हिंदी भाषी लोगों तक भी पहुँच रहा है।

5.2 नए लेखकों का उदय :

डिजिटल प्लेटफॉर्म ने नए और युवा लेखकों को मंच दिया है। अब किसी प्रकाशक की अनुमति की आवश्यकता नहीं होती।

5.3 रचनात्मक स्वतंत्रता :

लेखक अपनी शैली, विषय और भाषा में अधिक स्वतंत्रता के साथ लिख सकते हैं।

5.4 इंटरएक्टिव साहित्य :

पाठक अब सीधे प्रतिक्रिया दे सकते हैं, जिससे लेखक और पाठक के बीच संवाद बढ़ा है।

5.5 मल्टीमीडिया साहित्य :

अब साहित्य केवल टेक्स्ट नहीं रहा, बल्कि ऑडियो, वीडियो और ग्राफिक्स के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

6. हिंदी साहित्य के सामने चुनौतियाँ

6.1 गुणवत्ता की समस्या :

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हर कोई प्रकाशित कर सकता है, जिससे गुणवत्ता का स्तर कभी–कभी प्रभावित होता है।

6.2 कॉपीराइट उल्लंघन :

डिजिटल साहित्य में चोरी (Plagiarism) की समस्या बढ़ रही है।

6.3 पाठक ध्यान की कमी :

सोशल मीडिया के तेज कंटेंट के कारण पाठक लंबे साहित्यिक लेख पढ़ने में रुचि कम दिखाते हैं।

6.4 आर्थिक अस्थिरता :

डिजिटल लेखकों के लिए आय का स्थायी स्रोत नहीं होता।

6.5 तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता :

हर लेखक के पास डिजिटल कौशल होना आवश्यक है, जो सभी के लिए संभव नहीं।

7. हिंदी साहित्य का बदलता स्वरूप :

डिजिटल युग में हिंदी साहित्य का स्वरूप निम्न प्रकार से बदल रहा है :

- लंबी कहानियों की जगह माइक्रो स्टोरीज।
- कविताओं की जगह शॉर्ट पोएट्री।
- पत्रिकाओं की जगह ऑनलाइन ब्लॉग।
- पाठक की जगह "यूजर" की अवधारणा।

यह परिवर्तन साहित्य को अधिक गतिशील और आधुनिक बना रहा है।

8. पाठक और लेखक संबंध में परिवर्तन :

पहले लेखक और पाठक के बीच दूरी होती थी, लेकिन अब

- पाठक तुरंत प्रतिक्रिया देता है।
- लेखक कंटेंट अपडेट कर सकता है।
- कमेंट और शेयर से साहित्य वायरल होता है।

इससे साहित्य एक "सामाजिक संवाद" का रूप ले चुका है।

9. डिजिटल हिंदी साहित्य का भविष्य :

भविष्य में हिंदी साहित्य और अधिक डिजिटल होगा।

- रूप आधारित लेखन सहायता।

- वर्चुअल रियलिटी स्टोरीटेलिंग।
- ऑडियो–विजुअल नॉवेल्स।
- इंटरएक्टिव ई–बुक्स।

इसके साथ हिंदी साहित्य का वैश्विक प्रभाव और बढ़ेगा।

10. समाधान और सुझाव :

- डिजिटल साहित्य के लिए गुणवत्ता मानक तय किए जाएँ।
- कॉपीराइट कानून को मजबूत किया जाए।
- लेखकों को डिजिटल प्रशिक्षण दिया जाए।
- हिंदी कंटेंट को वैश्विक स्तर पर प्रमोट किया जाए।
- ई–पब्लिशिंग प्लेटफॉर्म को अधिक संगठित किया जाए।

11. निष्कर्ष :

डिजिटल प्लेटफॉर्म ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा और ऊर्जा दी है। यह न केवल साहित्य को अधिक सुलभ बना रहा है, बल्कि इसे वैश्विक स्तर पर पहचान भी दिला रहा है। हालांकि इसके साथ कई चुनौतियाँ भी हैं, लेकिन संभावनाएँ कहीं अधिक व्यापक और उज्ज्वल हैं।

यदि सही दिशा में प्रयास किए जाएँ तो डिजिटल हिंदी साहित्य भविष्य में विश्व साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकता है।

संदर्भ :

- हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
- डिजिटल मीडिया अध्ययन –विभिन्न शोध पत्र।
- भारतीय साहित्य और इंटरनेट –ऑनलाइन लेख।
- ई–पब्लिशिंग प्लेटफॉर्म रिपोर्ट्स।
- गीना शोध संगम, अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका।
- शोध समालोचन, अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका।

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
द्वारा भिवानी (हरियाणा), काठमाण्डू (नेपाल) से प्रकाशित

ISSN : 2395-7115
Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मंजूषा
Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY, MULTIPLE LANGUAGES PEER REVIEWED, REFREED RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Website :
www.bohalshodhmanjusha.com
Email : grsbohal@gmail.com

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Adv.
M. : 8708822674, 9466532152

गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा श्रीगंगानगर, (राजस्थान), पटियाला (पंजाब) व नेपाल से प्रकाशित

ISSN : 2321-8037
Impact Factor : 7.834

Gina Shodh SANGAM

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Website : www.ginajournal.com
Email : grngobwn@gmail.com
Office : 8708822674

Editor :
Dr. Rekha Soni, Vice Principal
Education, Tantia University
M. 9828531975

गिरधारीलाल घासीराम शोधपीठ
द्वारा नई दिल्ली, आगरा, गाजियाबाद एवं नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2348-5639
Impact Factor : 6.521

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Website : https://ginajournal.com/shodh-samalochan/
Executive Editor : Dr. Varsha Rani M. 9671904323
Managing Editor : Dr. Mukesh Verma M. 9627912535

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate
M. 8708822674

सानिया प्रकाशन एवं गिना प्रकाशन द्वारा
संयुक्त रूप से नई दिल्ली, आगरा, गाजियाबाद एवं नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2394-6458
Impact Factor : 6.521

RESEARCH JOURNAL OF MEEMANSA

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Website : https://ginajournal.com/shodh-samalochan/
Editor-in-Chief : Dr. Lata S. Patil
Managing Editor : Dr. Jaivir Langyan M. 9728790909

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate
M. 8708822674

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395:7115

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Pushpita Dasgupta
Assistant Professor, Department of Science & Humanities,
Christian College of Engineering & Technology.

for the paper titled

Aurobindo Ghosh : Pioneering the Global Expansion of Indian Literature

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 10-21

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. यतीन्द्र सिंह कुशवाहा

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,
डी. ए.वी. कॉलेज, कानपुर।

for the paper titled

हिन्दी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता : एक अवलोकन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 22-28

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

मीना कुमारी, शोधार्थी

डॉ. अजयपाल सिंह, शोध निर्देशक, अध्यक्ष,

हिन्दी विभाग, देश भगत विश्वविद्यालय मंडी गोबिन्दगढ़, पंजाब।

for the paper titled

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' का विदेशी यात्रावृत्त लेखन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 29-39

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Vidyavati
Assistant Professor,
S.V.P.G. COLLEGE, DEORIA.

for the paper titled

Towards Gender Equality — Achieving SDG-5

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 40-44

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

धूडाराम महरिया, शोधार्थी,
डॉ. सचिन कुमार, शोध निदेशक,
भूगोल विभाग, श्री खुशालदास विश्वविद्यालय हनुमानगढ राजस्थान।

for the paper titled

**सीकर जिले का जनसंख्या प्रतिरूप :
एक भौगोलिक अध्ययन**

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 45-51

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

शिवानी व्यास, रिसर्च स्कॉलर,
डॉक्टर प्रीति ग्रोवर, प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग, टाटिया यूनिवर्सिटी गंगानगर, राजस्थान।

for the paper titled

भारतीय शिक्षाविदों के शैक्षिक चिंतन के आलोक में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता : एक समकालीन अध्ययन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115
March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 52-61

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Rajender Kumar, RESEARCH SCHOLAR,
Dr. Arvinder Kumar Bhrdwaj, ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF MATHEMETRICS,
SHRI KHUSHAL DAS UNIVERSITY, HANUMANGARH

for the paper titled

STUDY OF ZERO DISTRIBUTION AND MAXIMUM MODULUS OF ANALYTIC FUNCTIONS

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 62-75

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

प्रो. विजय श्रीवास्तव, प्राचार्य,

मनोज कुमार, शोधार्थी

हिंदी विभाग, आर. बी. एस. कॉलेज, आगरा।

for the paper titled

ब्रजभाषा काव्य में लोकगीत्मकता

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 76-79

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Sanjay Kulshrestha
Prof. & Head, Institute of Law,
Jiwaji University, Gwalior.

for the paper titled

Climate Change Litigation in India : Role of Judiciary and Green Tribunals

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 80-84

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Bhartendu Chaudhary
Research Scholar,
Jiwaji University, Gwalior (M.P)

for the paper titled

Judicial Interpretation of Pension Laws in India : An Analytical Study of Supreme Court and Madhya Pradesh High Court Decisions

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 85-88

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

प्रियंका सिंह, शोधार्थी

डॉ. विष्णु प्रसाद शुक्ल, शोध निर्देशक

नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज, यू.पी.।

for the paper titled

कवि निराला का निरालापन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 89-92

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

ओमप्रकाश, शोधार्थी (राजनीति विज्ञान)
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यायल, दुर्ग (छ.ग.)
डॉ. नागरत्ना गनवीर, शोध निर्देशक (प्राध्यापक–राजनीति विज्ञान)
शासकीय नवीन महाविद्यालय, रिसाली, जिला–दुर्ग (छ.ग.)
डॉ. शकील हुसैन, शोध सह–निर्देशक (प्राध्यापक–राजनीति विज्ञान)
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यायल, दुर्ग (छ.ग.)

for the paper titled

कबीरधाम जिले के स्थानीय निकायों में अनुसूचित वर्ग की महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अध्ययन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 93-101

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

धन्नू कुमार साहू, सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र),
सुश्री रेणुका कुंजाम, सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)
संत गुरूघासी दास बाबा शासकीय नवीन महाविद्यालय, ठेलकाडीह,
जिला– खैरागढ़–छुईखदान–गंडई (छ.ग)

for the paper titled

बिहान योजना से संबद्ध महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 102-112

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. रामप्रसाद यादव

सहायक आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग,
दिग्विजयनाथ पी. जी. कॉलेज गोरखपुर।
(संबद्ध : दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)

for the paper titled

डिजिटल युग में साइबर युद्ध की चुनौतियाँ और भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 113-117

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

कपिल कुमार, शोधार्थी,

डॉ. नीलम राणा, शोध निर्देशिका,

जनता वैदिक कॉलेज बड़ौत, बागपत।

for the paper titled

तुलसीदास के काव्य में निहित समन्वय के विभिन्न आयाम

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 118-124

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

अजय कुमार उदय

UGC-NET, एम.ए. (राजनीति विज्ञान)

for the paper titled

पंचायती राज के सशक्तिकरण में एकात्म मानव दर्शन की भूमिका (भिण्ड जिले के विशेष संदर्भ में)

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 125-128

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. चारु आर्या

सहायक आचार्य,

माता सुंदरी कॉलेज फॉर वुमेन, दिल्ली विश्वविद्यालय।

for the paper titled

मानवता, सदाचार और जीवन–दर्शन : रज्जब अली के काव्य का पुनर्मूल्यांकन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 129-134

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

छाया बरसेना

UGC-NET, एम.ए. (भूगोल)

for the paper titled

चंबल के बीहड़ों के कायाकल्प में अटल प्रगति पथ की भूमिका (भिण्ड जिले के विशेष संदर्भ में)

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 135-138

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

पाण्डु राम हाईबुरू

शोधार्थी, जनजातीय एवं क्षेत्रीय (हो) भाषा विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

for the paper titled

हो लोक कथाओं में हो जनजाति के जीवन दर्शन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 139-144

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. रीता

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग

माता सुंदरी कॉलेज फॉर वीमेन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

for the paper titled

मीरा का काव्य : भक्ति और विद्रोह का प्रतीक

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 145-149

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. अशोक कुमार

सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग

जीडीसी मेमोरियल महाविद्यालय, बहल (भिवानी)

for the paper titled

1857 के राष्ट्रीय विद्रोह में नारी पराक्रम

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 150-155

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. महेन्द्र कुमार

पूर्व शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
नव नालंदा महाविहार, नालंदा।

for the paper titled

शिशुपालवध महाकाव्य में भाव एवं रसाभिव्यक्ति

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 156-159

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. नीतू गुप्ता

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
दौलत राम कॉलेज।

for the paper titled

सालवती और पुरूष चरित्रम

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 160-166

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

सरिता

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग,
चौधरी बंसी लाल विश्वविद्यालय (भिवानी)

for the paper titled

हरियाणा में छठा पंचायती राज चुनाव : लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के परिप्रेक्ष्य में एक समालोचनात्मक अध्ययन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 167-170

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

बिजी जे. वी.

शोधार्थी, हिंदी विभाग,

यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवंतपुरम।

for the paper titled

उपन्यास ‘‘ट्रैन टू पाकिस्तान’’ और ‘‘तमस’’ में अभिव्यक्त विभाजन की त्रासदी – तुलना

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 171-176

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. S. Jayanthi Sobhana, Assistant Professor, Department of Commerce with PA,
Sri Ramakrishna College of Arts & Science, Nava India, Coimbatore -641006
Ms. Vijaya Priya. A, Assistant Professor, Department of Computer Technology,
Sri Ramakrishna College of Arts & Science, Nava India, Coimbatore -641006
Dr. C.Thangamani, Assistant Professor, Department of Information Technology,
Sri Ramakrishna College of Arts & Science, Nava India, Coimbatore -641006
Dr. S. Swarnalatha, Associate Professor, Department of Hindi,
Sri Ramakrishna College of Arts & Science, Nava India, Coimbatore -641006
Dr. Charlesbabu. J, Associate Professor, Department of ECS,
Sri Ramakrishna College of Arts & Science, Nava India, Coimbatore -641006

for the paper titled

Artificial Intelligence in Predictive Analytics for E-commerce : Leveraging Data to Forecast Market Trends

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 177-181

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

सत्येन्द्र कमार

शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग,
राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़।

for the paper titled

रामगढ़ प्रखंड में प्राथमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 182-185

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Satyawan Jatain

Associate Professor, GPGCW Rohtak, Haryana

Sohit Jatain

Research Scholar, GJUS&T, Hisar, Haryana.

for the paper titled

Impact of Contemporary Economic Policies of the USA on India

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 186-191

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

कुमारी निधि कुमारी, शोधार्थी,

डॉ० प्रवीन कुमार सिंह, सहायक आचार्य

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग,

दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

for the paper titled

हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की समुद्री निगरानी प्रणाली और तकनीकी विकास

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 192-196

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

मनीषा पाठक, शोधार्थी,
हिंदी साहित्य, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर।
डॉ. वंदना चराटे, सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,
भेरुलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू।

for the paper titled

'शहर गवाह है' में पारिवारिक विघटन, राजनीतिक मोहभंग और सामाजिक चेतना

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 197-201

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डेगलाल महतो

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग

राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़।

for the paper titled

झारखंड में औद्योगिक विकास की चुनौतियाँ

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 202-205

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

रिद्धि वधवा, शोधार्थी,

डॉ० बाबूराम, शोध निर्देशक एवं प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,

हिंदी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा।

for the paper titled

डॉ० बालकिशन शर्मा के काव्य में ग्राम्य-जीवन का सौन्दर्यबोध और सांस्कृतिक अस्मिता

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 206-211

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

हर्षा, शोधार्थी

डॉ. अरविंद दीक्षित, शोध पर्यवेक्षक एवं सह आचार्य,

डॉ. प्रवीन शर्मा, सह शोध पर्यवेक्षक एवं सहायक आचार्या,

श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ।

for the paper titled

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिन्दी साहित्य की संभावनाएँ

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN:2395-7115

March 2026, Vol. 23, Issue -3, Part-2, Page No. 212-215

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007